बृहत्—

॥ जर्राही प्रकाश ॥

पांचों भाग

जिसमें

जर्राही विद्या का सविस्तार वर्णन है और सुजाक,
आतशक, प्रमेह, बवासीर, इत्यादि भयानक
रोगों की चिकित्सा तथा अनेक प्रकार के
शस्त्रों का हाल है ।

❀ जिसको ❀

मथुरा निवासी

बाबू ब्रजवल्लभ प्रसादजी ने

बड़े परिश्रम से संग्रहीत किया

और

लाला श्यामलाल हीरालाल ने

अपने 'श्यामकाशी' यन्त्रालय में

मुद्रित

करके प्रकाशित किया

❀ भूमिका ❀

जर्राही की विद्या भारतवर्ष में बहुत प्राचीन समय से चली आती है। आर्य ग्रन्थों में इसका अधिकतर वर्णन है परन्तु [illegible] से अब [illegible] हमारे जैसा कि [illegible] की [illegible] की भी हिन्दुस्तान के गांव २ और शहर २ में ऐसे २ काबिल कुशल मनुष्य विद्यमान हैं जिन के द्वारा घर २ इलाज हुए हैं जिनको देखकर पश्चिमी डाक्टर और हकीम लोग भी चकित हो जाते हैं। चरक, सुश्रुत, वाग्भट इत्यादि प्राचीन चिकित्सकों ने अपनी पुस्तकों में इस विषय को बहुत विस्तार के साथ लिखा है और जिन असाध्य रोगों को डाक्टर के हाथ में देखकर पर उन्हीं को इलाज समझी जाती है उनको [illegible] इलाज की क्रिया और काम में लाने की रीति सब कुछ उनके ग्रन्थों में लिखी है।

उर्दू भाषा में भी कई एक ग्रन्थ इस शास्त्र में प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु हिन्दी भाषा में ऐसे ग्रन्थों की बहुत कमी है, इसी कमी के पूरा करने के लिये यह उद्योग किया गया है। इस ग्रन्थ में जर्राही के कामकाज यथा शक्ति पूरा २ विवरण दिया गया है और अनेक चित्रों से इसको चित्रित किया गया है। सूचीपत्र पर सरसरी नज़र डालने से विदित होगा कि जर्राही विद्या के अतिरिक्त और भी अनेक रोगों के उपाय और परीक्षित प्रयोग इसमें लिखे गये हैं। इसके बनाने में उर्दू के सुप्रसिद्ध [illegible], उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी ग्रन्थों से सहायता ली गई है। आशा है कि सर्व साधारण और मुख्य [illegible] लोगों को इस ग्रन्थ से पूरी २ मदद मिलेगी॥

ग्रन्थकार

विषय सूची वृहत् जर्राही प्रकाश

❀ तीसरा भाग ❀

चौथा भाग

॥ इति ॥

॥ श्रीजगदीश्वरायनमः ॥

बृहत जर्राही प्रकाश

प्रथम भाग।



❀ मस्तक के फोड़े का वर्णन ❀

एक फोड़ा (देखो चित्र नं० १) सिर के तालू पर पोस्त के



इस के तालू पर फोड़ा है और जो इस चित्र के सिर पर महीन स्याही की छई है वही फोड़े का निशान है और जो सफ़ेदी है वही स्याह सूजन है।

चित्र नं० १

दाने की बराबर होता है और उसके आस पास हथेली के बराबर स्याही होती है, वह स्याही आंधी सदृश दौड़ती है और जहरबाद से सम्बन्ध रखती है यहां तक ये स्याही फैलती है कि समस्त शरीर श्याम वर्ण होजाता है ऐसा रोगी चार या आठ पहर के अनन्तर मृत्यु के सन्मुख पहुंच जाता है। यदि कोई उत्तम मरहम और चतुर उस्ताद जर्राह मिल जाय तो

चिकित्सा करने में आराम हो भी जाता है और जो वरम की स्याही कंठ से नीचे उतर आई होय तो रोग को असाध्य जानो और फोडे का निशान ऊपर लिखे चित्र में देखलो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से होती है कि पहिले सेरू की फस्द खोले और तीन छटांक रुधिर निकाले और फस्द के पीछे वमन कराना हित है क्योंकि यह रोग दिल अर्थात् हृदय के समीप में होता है ऐसा न हो कि मवाद नीचे उतर आवे। वमन की औषधि यह है।

❀ नुसखा वमन कराने की ❀

सिरका १० तोले, लाल बूरा २ तोले, मैनफल ६ माशे इन सबको दो सेर जल में औटावे जब आधा जल बाकी रहजाय तब उतार कर रखले फिर इसको दो तथा तीन बार में पिलादे तो वमन हो जायगी और उस दाने पर तथा उस स्याही पर तेजाब लगावें तथा प्लास्टर रक्खें जब छाला पडजाय तो दूसरे दिन प्रातःकाल काट डालें फिर ऐसा मरहम लगावै कि जिस से घाव न भर जावे और खूब मवाद निकल जावे। वह मरहम यह है।

❀ नुसखा मरहम ❀

तूतिया हारुनी ... .ला; ... हरा १ तोले; तबकी हरताल ६ माशे ... म्हा ... ५ १ तोले, खिरोजा तर तोले, ... ६ १ तोले इन ... उस में गौका ... थो ... शराब तथा ... पर लगावै

जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब यह दूसरा मरहम ल-गाना चाहिये ।

❀ दूसरा मरहम ❀

कालेतिल का तेल ऽ। सेर लेकर गरम करे फिर आदमी के सिरकी हड्डी २ तोले, नीमके पत्ते १ तोले इन दोनों को तेल में डालकर जलावे जब जल जाय तब तेल का छान डाले पीछे दो तोल मोम मिलावै और मुर्दासंग ६ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे, इन सबको पृथक पृथक पीस छानकर पृथक पृथक उस तेलमें डाले और मंदी आगपर पकाकर चाशनी करे जब उस चाशनीका तार बंधने लगै तो अफीम छःमाशे मिलावे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठण्डा करके रख छोडे फिर इस मरहम को उस घाव पर लगावे और देखे कि कहीं और सूजन तो नहीं है और जो सूजन होय तो उस सूजन पर यह लेप लगावे ॥

❀ लेप की विधि ❀

सुरंजान कडवा ६ माशे, नाखूना १ तोले अमलतास का गूदा २ तोले, बाबूने के फूल १ तोल, अफीम दो माशे इन सबको हरी मकोय के रस में पीसकर गुनगुना करके लगावे फिर दो चार दिनके पीछे देखे कि उस घाव में से पीब निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो उस मरहम का लगाना बंद करे और यह दूसरा मर हम लगावे ।

❀ दूसरा मरहम ❀

पहिले रोगन गुल १२ तोले गरमकरै और पीला मोम २

तोले उसमें डालकर पिघलावै फिर संग जराहत २ माशे, रस कपूर २ माशे, सफेदा काशगरी २ माशे, मुर्दासंग २ माशे मुर्गी के अण्डे के छिलके की भस्म ३ माशे, नीलाथोथा जला हुआ २ रत्ती, इन सबको पीस छानकर उस तेल में मिलावे जब थोड़ी चाशनी हो जाय तो नीचे उतार लेवे और ठण्डा करके घावपर लगावै और रोगी को हलवान का शोरवा और रोटी या मूंगकी दाल रोटी खिलानी चाहिये और खटाई-लाल मिर्च आदि सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बन्द न हो तो इस की चिकित्सा करनी छोडदे और जानले कि यह फोडा जहरवादका है। यदि आदि में छालाप्रगट होवेतो उसमें चीरादेय और दोतीन दिन तक नीम के पत्ते बांधे पीछे यह मरहम लगावे।

❀ मरहम की विधि ❀

हले ११ तोले रोगनगुल गरम करे फिर उसमें नीमके पत्तों का रस ४ माशे बकायन के पत्तों का रस ४ माशे. बाग बेरके पत्तों का रस ४ माशे, हरे अमल तास के पत्तों का रस ४ माशे, हरे आमले का रस चार माशे, इन सब रसों को उस तेल में मिलावे जब रस जलजाय और तेल मात्र रहजाय तब पीलामोम २ तोले, सफेद मोम १ तोले डाले फिर सफेदा १ तोले, मुर्दासंग ४ माशे. दम्मुल अखवेन ४ माशे नीलाथोथा ४ रत्ती इन सबको महीन पीसकर उस तेल में मिलावे जब चाशनी हो जाय तब उतारलें फिर उसको घावपर लगावे।

और एक फोडा माथेपर तथा कनपटी तथा गुद्दी पर ऐसा

होता है कि उसमें कुछ भय नहीं होता या तो वो आपही फूट कर अच्छे हो जातेहैं या चीरने वा मरहम लगाने से अच्छे हो जाते हैं ऐसे सब प्रकार के फोडों के वास्ते बहुत अच्छे २ दोचार मरहम इस ग्रन्थ के अंत में लिखेंगें जो सब प्रकार के फोडों और घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देते हैं।

और एकरोग सिरमें यह होता है कि (देखो चित्र नं० २)

इस फोड़े का निशान यह है कि इस
के दाग चोटी से लेकर सब नाड़ि कों
पर होते हैं वह इस चित्र में दि-
खाया गया है ॥



चित्र नं० २

बहुतसी छोटी २ फुन्सी होकर सिर में से पानी निकलता है और जहां वह पानी लगजाता है वहां सब दानों की सूरत एकसी होजाती है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होताहै इन फुंन्सियों का स्थान ऊपर लिखे चित्र में समझ लेना उस पर यह मरहम लगाना चाहिये ॥

❀ मरहम की विधि ❀

गौका घृत धुला हुआ आधपाव, कबेला ६ माशे, काली मिर्च २ माशे, सिंगरफ २ माशे, इन सबको पीस छानकर उस घीमें मिलावे फिर उस को एक रातभर ओसमें धर-

माशे नाखूना ६ माशे, उशरु रूमी ६ माशे, मगज फल्लूम २ तोले इन सबको हरी मकोयके अर्कमें पीसकर गुन गुना लेप करै और सरेरू नसकी फस्त खोले जब उस फोड़े की सूरत बदलजावै तब वह मरहम लगावे जो पाहिले वर्णन की गई है और घावपर यह दवा लगावै ।

नुसखा १.

नानपाव का गूदा ५ तोले लेकर बकरीके दूधमें भिगादे फिर उसको निचोडकर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवेन केसर, अंजरूत, अफीम ये सब दवा छः माशे और शहत ४ तोले, मुर्गीके ३ अंडेकी जर्दी इन सबको एकत्र कर खरल करे और फोडा जहांतक फैलाहो उतना ही बड़ा एक फाया बना कर उसपर इस दवाको लगाकर इस फाये को फोडे पर लगादे जब उसमेंछीछडे दीखें तो काटकर निकाल देवैजब फोडालाल होजाय और उसमेंसे दुर्गंधि न आवै तब इस दवा को बंद करे यह मरहम लगाना शुरू करे ।

मरहम की विधि ।

पहले गुलरोगन दो छटांक गरम करके उसमें रतजोति दो तोले कूटकर डाले जब उसका रंग अत्यन्त लाल होजावै तब उसको छानले फिर उसमें मोम २ तोले, नीलाथोथा हरा १ रत्ती मिलावे और इसमें १ तोले, जैतूनका तेल मिलाकर रख छोडे और उसघावपर लगावे और इस रोगवाले मनुष्यको धोवा मूंगकी दाल और रोटी खिलाना चाहिये और पानीको औटावे जब आधापानी जलजावै तबठंडा करके रखछोडै प्यास लगे जब इसी पानी को पिलावे कच्चा पानी न पिलावे ॥

कानकी लौके फोड़े का यत्न।

एक (फोड़ा देखो चित्र नं० ४) कानकी लौके पास होता है



चित्र नं० ४

कान के फोड़े की तसवीर

इसमें केवल सूजन की गांठसी होती है पीछे पककर फोड़ा होजाता है इस फोड़का निशान ऊपर लिखी तसवीरमें है इस फोडकी चिकित्सा इस प्रकार करना चाहिये कि पहिले इसपै ऐसी दवा लगावे जिससे ये फोड़ा नरम होजावे क्यों कि जो इस कच्चे फोड़े में चीरा लगाया जावे तो रोग बढ़ जाता है इस-लिये चार दिनकी देरी होजाय तो कुछ हानि नहीं परन्तु कच्चे पर चीरा देनेसे रोगकी वृद्धि होती है और पहले लगाने की दवा यह है :—

नुसखा।

शहतूत के पत्ते २ तोले, नीमके पत्ते २ तोले, सफेद प्याज १ तोले, सांभर नोन ६ माशे इन सबको महीन पीस गरम करके लगावे जो इनके लगाने से फूट आयतो अच्छा है नहीं तो इसको नशतर से चीर देवे अथवा जैसा समय

पर उचित समझे वैसा करे फिर यह मरहम लगावैः—

मरहम की विधि ॥

सरसों का तेल ७ तोले लेकर आगपर गरम करे फिर इसमें पीला मोम १ तोले, संग बसरी २ तोले, उरदका आटा २ तोले इन सबको उस तेल में मिलाकर खूब रगड़े और ठंडा करके फोड़े पर लगावे और जो इस मरहम से आराम न हो, तो वह मरहम लगावै कि जिससे रत्नजोत मिली है और जब मांस बराबर हो जावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावैः—

काली मरहम।

कडवा तेल १० तोले, सिंदूर ४ तोले, इन दोनों को लोहे की कढ़ाई में आगपर पकावे और नीमके सोटे से घोटता रहे जब इसका तार बंधने लगे तब उतार कर रख छोड़े और फोड़े पर लगावे और फोड़े में चीरा देना हो तो चौड़ा चीरा देवे क्योंकि कम चीरा देनेसे इसमें मवाद रह जायगा।

आंख के फोड़े का यत्न।

एक फोड़ा आंख के कोए में होता है यह आपही फूट जाता है इस फोड़े को इस तसवीर में देखो [चित्र नम्बर५]

चित्र नं० ५



आंख का फोड़ा।

इस फोड़े की चिकित्सा यह है कि पहले वह मरहम लगावे

जिसमें नीलाथोथा और जंगाल पड़ा है जो इस पुस्तक में ऊपर वर्णन हुई है जब उसका मवाद निकल जाय तब यह मरहम लगावैः—

॥ मरहम की विधि ॥

ऊंट के दाहिने घुटना की हड्डी २ तोले घी में जलाकर निकाल ले और मोम सफेद नौ माशे, सिंदूर गुजराती ४ माशे मिलाकर रगड़ और लगावे और नाक में यह हुलास सुंघावैः—

॥ सुंघाने की हुलास ॥

नकछिकनी एक तोले, सूखा तमाखू ६ मासे, काली मिर्च २ माशे सबको पीस कर सुंघावै क्योंकि मवाद ऊपरकी ओर झुक जायगा तो अच्छा होगा यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम न हो तो ऊंटके दाहिने घुटनेकी हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बत्ती रक्खे और उसीका फाया बनाकर रक्खे क्यों कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोड़ा भी नासूरही के भेदोंमें से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है ॥

॥ नेत्रों की चाकनी का यत्न ॥

एक रोग पलकोंमें ऐसा होता है कि वह पलकके बालोंको उड़ा देता है और पलके लाल पड़जातेहैं इसका इलाज यहहैः—

नुसखा ।

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर कांच के पात्रमें धरै और उसमें गुलाब के ताजी फूल ५ तोले मिलाकर ४० दिन तक रक्खा रहने दे अगर ताजी फूल न मिलें तो सूखे फूलोंको

दोसेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब छानकर फिर एक सेर तिलका तेल डाल कर औटावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब ठंडा करके शीसी में भर रक्खे इसको हकीम लोग गुल रोगन बोलते हैं और अकसर बना बनाया अत्तारों की दुकान पर मिलता है ऐसा गुल रोगन दो माशे, मुर्गी के अण्डे की सफेदी दो माशे, कुलफा के पत्ते दो माशे, इन सबको मिलाकर पलकों पर लेप करे ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

बादाम की मींगी स्त्री के दूध में घिस कर लगाया करे ॥ अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी में घिस कर लगाया करे अथवा धतूरेके पत्तोंका अर्क और भांगरेके पत्तों का अर्क इन दोनों को मिलाकर इसमें सफेद कपडा भिगोकर सुखाले और गौके घीमें उस कपडे की बत्ती बनाकर जलावे और मिट्टी के बरतन में उसका काजल पाड कर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक होकर असली सूरत पर आजांयगीं ॥

दूसरा रोग ।

इस में नेत्र के ऊपर की बाफनी में खपटा सा जम जाता है इस रोगके होने से पलक भारी हो जाते हैं और भैंडे आदमी की तरह देखने लगता है ऐसे रोगमें आंखमें चांदीकी सलाई का फेरना बहुत गुण करता है ॥

नेत्र के नासूर का इलाज ॥

एक फोड़ा आंख के कोए में होता है जहां से गीड अर्थात् आंख का मल निकलता है (देखो चित्र नंबर ६)



चित्र नं० ७

इस चित्र की आंख के कोने में जो स्याही की बूंद मालुम होती है उसको नासूर जानना चाहिये।

और इस फोड़े की यह परीक्षा है कि पहिले तो इसकी रंगत लाल होती है फिर इसका मुख सफेद होजाता है फिर पक कर घाव होजाता है फिर घाव के होने पर नेत्रों को बड़ा कष्ट होता है इसको पहिले हकीमो ने नासूर वर्णन किया है और इस फोड़े में और पहिले लिखे हुए आंखके फोड़े में इतनाही भेद है कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोड़े का मुख लाल होता है यह फोड़ा रिसने लगता है और कभी फिर भर आता है इसकी चिकित्सा यह है ॥

इलाज ।

(१) अलसी और मेथी का लुआब निकाल कर आंखों में टपकाने से यह रोग जाता रहताहै अथवा (२) मुर्गी के अंडेकी जर्दी और केशर इन दोनों को पीस कर घाव पर लगावे अथवा [३] अफ़ीम और केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगावे ॥

और जो यह रोग बहुतही दुख देने लगे तो कुत्तकी जीभ को जलाकर उस मनुष्य की लार में घिसकर नेत्रोंमें लगाने से नासूर बहुत जल्दी अच्छा होता है आंखके कोये के फोडों का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसमें गुण करते हैं, अथवा एलुआ, लोबान, अनार के फूल, सोना मक्खी, दंमुल अखवेन; फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे ले और इनको महीन पीसकर गुलाब जल में मिलाकर इसकी लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुंह को पोंछ कर उस में टपकावे तो सात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा।

नेत्र के घाव का यत्न।

एक फोड़ा [चित्र नंबर ७] इस प्रकार का होता है कि

इस तसवीर में नेत्र का घाव कोयों के पास नं० ७ ।



चित्र नं० ७

नेत्रों में गेहूँ के आकार कासा दिखाई देने लगता है इसकी चिकित्सा यह है ॥

नुसखा गोली।

सोनामक्खीको गधी के दूध में आठ पहर भिगोकर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ माशा कतीरा ३॥ माशे, दरयाई १॥ माशे, कुंदरू गोंद १॥ माशे, सफेदा २ तोला चार माशे, बबूल का गोंद १४ माशे, इन सबको कूट छान कर मुर्गी के अंडेकी सफेदी में मिलाकर गोलियां बनावे और १ गोली को पानी में घिसकर हररोज आंखों में लगाया करे तो यह घाव शीघ्र अच्छा होजायगा।

पलकों की सूजन का यत्न।

एक रोग ऐसा होताहै कि पलकों के किनारे पर सूजन होजाती है उसका इलाज यह है [१] मोम को गरम करके लगावे। (२) किसमिस को चीर कर उसे गरम करके सूजन पर लगावे। [३] बड़ी कौड़ी पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगावे। [४] मक्खी के सिरको काट कर सूजनपर लगावे तो सूजन अच्छी हो जाती है [५] रसोत को पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगाया करे तो जाती रहती है॥

नोट--प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस लिये उन सबके इलाज विस्तार पूर्वक अन्य भाग में लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोड़ा की चिकित्सा वर्णन की गई है।

नाक के फोड़ों का यत्न।

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकड़ा कहते हैं॥ इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर (चित्र नं० ८) में



नाकड़ा रोग।

चित्र नं० ८

समझ लेना इस रोग की चिकित्सा यह है कि पहिले यह सूंघनी सुंघावेः—

सूँघनें की दवा।

सैंधा नमक, चौकिया सुहागा, कच्ची फिटकरी, जंगाल जला हुआ इन सब औषधियों को बराबर ले महीन पीसकर सुंघावे जब वह फोड़ा चारों ओर से नाककी त्वचा को छोड़ देवे तो उस सड़े हुए मासको सुई से छेदकर निकाल डाले फिर यह मरहम लगावेः—

मरहम की विधि।

गौ का घी २ तोले, नीला थोथा २ माशे, जंगाल २ माशे, पीली राल २ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर उसको घृतमें मिलाकर पानी से खूब धोके लगावे तो ईश्वर की कृपा से बहुत जल्दी आराम होगा।

नाक के भीतर घाव की दवा।

मोंम पीला एक तोला, गुलरोगन २ तोले लेकर इसमें मोंम

पिघलावै, फिर उसमें मुरदासंग २ माशे, [illegible]ग ४ माशे ये सब मिलाकर नाकमें भरे तो घाव शीघ्र अच्छा हो जायगा अथवा वनशन के फूल ९ माशे, बीहदाने ६ माशे, इन दोनों को थोडे पानी मे औटावे फिर मसल कर छानले फिर इसको २ तोले गुलरोगन में मिलावै, और एक तोले सफेद मोम मिलाकर मरहम बनाकर घाव पर लगावेः—

❀ नाक के दूसरे घाव की दवा ❀

मुरगी की चर्बी और मोम इन दोनों को बराबर लेकर घी में पकावै जब ठंडा होजाय तब उसमें सफेद कपड़े की बत्ती बनाकर नाक में रक्खे अथवा सफेद कत्था और मुर्गी की चरबी इन दोनों को पीसकर नाकके भीतर लेप करे अथवा मुर्दा संग; भैंस के सींग का गूदा, मुर्गे की चरबी इन सब को गुल रोगन में पकावे जब मरहम बनजाय तब फिर उस में रुई की बत्ती भिगोकर नाक में रक्खे।

अथवा मोम ३॥ माशे, कपूर ३॥ माशे, सफेदा १। तोले, गुल रोगन १४ माशे पहिले गुलरोगन को गरम कर फिर उसमें मोम को मिलावै और सफेदा के पानी से धोकर मिलावै फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मरहम के सदृश हो जाय तब रख छोड़े फिर उस घाव को देखै जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवे तो इसकी बत्ती बनाकर नाकमें रक्खे और जो घाव पास हो तो वैसे ही लगादेः—

❀ नकसीर की चिकित्सा ❀

जो नाक से रुधिर बहा करता है उसे नकसीर कहते हैं यह दो प्रकार की होती है एक तो बोहरान से दूसरा खून

की गरमी से जो नकसीर वाहरान के कारण से हो तो उस



चित्र नं० ९

के लक्षण ये हैं कि चौथे सातवें नवें ग्यारहवें और चौदहवें दिन गरमी के दिनों में उत्पन्न होती है उसे बन्द न करें क्योंकि इसके बन्द करने से जान का भय है और जो बोह-रान के कारण से न हो तो कुदरू गोंद के द्वारा बंद करदेवे

❀ नुसखा ❀

जहर मोहरा खताई, वंश लोचन, सफेद कत्था बड़ी इला-यची के बीज, सेलखडी, इनकी बराबर लेके पीसकर रख छोड और माथे पर तथा कनपटी पर लगावें।

❀ नुसखा ❀

बबूलकी फली १ तोले, बबूल के पत्ते १ तोले, हरी मेंहदी १ तोले, सूखे आमले १ तोला, सफेद चन्दन १ तोले इन सबको पीसकर लगावै और जो इस से भी बन्द न हो तो यह लगावैः—

❀ नुसखा ❀

तुखमरेहाँ १ तोला, सफेद चन्दन १ तोला, कपूर ६ माशा इनको महीन पीसकर हरे धनिये के अर्क में मिलाकर लेप कर यह औषधि बड़ी विचित्र चमत्कारक है:—

❀ पीनस की चिकित्सा ❀

एक रोग नाक में होता है उसे पीनस कहते हैं यह रोग उपदंश से सम्बन्ध रखता है जो रोगी यह बात स्वीकार न करे और कहै कि उपदंश नहीं हुआ तौ विश्वास न करै क्यों कि उपदंश बाप दादे से भी हुआ करते हैं यह बात बहुत से हकीम और डाक्टरों ने पुस्तकों में लिखी है और किसी २ का मत है कि पीनस गरम नजले से भी होती है यह अपनी आंखों से भी देखा है। इस रोग में प्रथम सुगंधि और दुर्गंधि कुछ नहीं प्रतीत होती फिर मस्तक और ल-लाटमें पीड़ा हुआ करती है और आवाज में भी कुछ फरक होजाता है और उसकी चिकित्सा यह है कि उस रोगी को जुलाब देवै और फस्द खोले और वमन करावे और नीचे लिखी हुई नास सुँघावे:—

❀ नास की विधि ❀

पलास पापड़ा; कंजाकी मिंगी, लाल फिटकरी, लाल नकछिकनी; सूखी तमाखू इन सबको समान भाग ले पीस छान कर सुंघावे जो अधिक छींक आवे तौ शीघ्र आराम हो जायगा नहीं तौ नाकके बीचमें की हड्डी जाती रहती है उसके लिये देवदारू का तेल और अंगरेजी तारपीन का तेल बहुत गुणदायक होता है अथवा कद्दू का तेल व बादाम

का तेल वा पेठ का तेल गुण करता है और जो और सामर्थ्य हो तो चोवचीन या उशवा का माजून का सेवन करावे अन्त को हड्डी निकल कर नाक वैठ जाती है और वाणी वदल जाती है ऐसी दवाइयों से घाव अच्छा होजाताहै परन्तु रूपतो विगडही जाता है और जो ये रोग उपदंश के कारण से होतो उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करे कि पहिले तो जमालगोटा का जुलाव देवे फिर वेगोलियां खिलावे जो इस पुस्तक में उपदंश की चिकित्सा में लिखी हैं और नुसखा भी इसी रोगकाहै जो उपदंशके संवधसेहै

❀ नुसखा ❀

काली मिर्च, पीपल वडी. सूखे आमले एक एक तोले ले और सवको कूट छानकर सातवर्ष के पुराने समान भाग गुड में मिलाके छोटे जंगली वेर के प्रमाण गोलिया बनावै और प्रातःकालके समय एक गोली दहीकी मलाईमें लपेटकर खिलावे और ऊपरसे दहीका तोड पिलावे और कलिया या दाल और रोटी खिलावे और औटाहुआ जल पिलावे इस गोली के सेवन करने से नाकके सवरोग अच्छे होजांयगे।

❀ नाक की नोक के फोडे का इलाज ❀

एक फोडा नाककी नोक पर होताहै (देखो चित्र नं० १०) उसकी सूरत काली होती है और वह जोक सदृश वढ़जाता है परंतु उसका काटना कठिन है क्यों कि इसका रुधिर वन्द नहीं होता है मैं ने एक वार एक मनुष्य के यह रोग देखा उस की चिकित्सा अपने हाथ से की परन्तु ठीक न बनी अन्त को लाचार होकर मैं ने और मेरे मित्र डाक्टर

बाबू जमना प्रसाद साहब ने उस के घर के लोगों से



इस चित्र में नाक की नोक पर फोड़ा है।

चित्र न० ९०

कहदिया कि रोग असाध्य है और प्राणका संकट है और उनकी अनुमति लेकर उसकी चिकित्सा अनेक प्रकार से की परन्तु बस न चला ये बातें इस लिये वर्णन की हैं कि यदि कोई चिकित्सक इस फोड़े वाले मनुष्यको देखे तो बिना विचारे इसकी चिकित्सा का साहस न करे क्योंकि मेरी बुद्धिमें यह रोग असाध्य है।

एक फोडा मुख के भीतर कौवा के पास होता है उसको खुनाक कहते हैं उसका इलाज यह है कि पहिले सरू नस की फस्द खोले फिर यह ग़रारा करावेः—

नुसखा।

शहतूत के पत्ते ४ नग, कोकनार ४ नग, असवंद १ तोले, साबत मसूर २ तोले, इन सब चीज़ों को दो सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहजाय तब इसके ग़रग़रे करावे और जो आराम न हो तो यह औषधि देवे।

खरगोशकी खाल, गोमाका रग, छयोंढ के पत्तों का रस इनमें से एक एक औषध पीसकर लगावे जब रुधिर बंद हो जाय तब जुल्लाव देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे और ये औषधि घावपर लगावे।

❀ नुसखा ❀

फिटकरी कच्ची ४ माशे, नीलाथोथा भुना ४ माशे, गौका घृत ४ तोले इन दोनों को दवाइयों को पीसकर घी में मिलावे और जलसे खूब धोकर लगावे।

दूसरा फोड़ा जो पहलू की ओरको झुका हुआ होता है और उसकी गुठली बाहर को होती है उस गुठली पर तो वह लेप करे जो पहिले इस रोग पर वर्णन कर चुके है और भीतर को नीचे लिखी दवा लगावे॥

नुखसा।

रूमीमस्तगी, सफेद कत्था, माजूफल भुनाहुआ, वंसलोचन, गाजमां की भस्म य सब दवा चार २ माशे ले इन सबको महीन पीसकर लगावे और मूंगकी धोवादाल और विना चुपडी गेहूं की रोटी खाने को दे।

होठके फोडे का इलाज।

एक फुंसी होठों पर होती है उसपर शुद्ध करने वाला मरहम लगावे कि जिससे वह मवादको शीघ्रही निकाल देता है और केले के पत्तों पर गुलरोगन लेकर गले में बांधे इससे सूजन दूर होजाती है इसकी इलाज शीघ्र ही करना चाहिये क्यों कि ये फोडा पेटमें उतर जाता है इस का मुख बाहर की ओर करने के लिये नीचे लिखी हुई मरहम काम में लावे॥

नुसखा ।

बिरोजा दो तोले, रेवत चीनी छः माशे, अंजरूत चार माशे, इन सबको पीसकर मिलावे और फिर इस मरहम को जलमें धोकर लगावे जब फूट जावे और मवाद निकल जावे तो यह दवा लगावेः—

नुसखा ।

रसौत १ माशे, तगर की लकडी तीन माशे इन सबको पीसकर गोके घी में मिलावे और जो कढाई में डालकर खूब घोटे तो बहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच वार लगाने से आराम होजाता है ॥

एक फोड़ा डाढ़में होता है उसका इलाज यह है ।

नुसखा ।

नीम के पत्ते, बकायन के पत्ते, संभालू के पत्ते, नरम्मा के पत्ते, इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटाकर बफारा देवे, और उसी को बांधे और उसी के जलमें कुल्ले करावे ॥ और जो भीतर ही फूट जावे तो उत्तम है और बाहर फूटे तो दांतके उखाडे बिना आराम न होगा और जो यह फोडा बाहर हुआ हो और बाहर ही फूटे तो उसको चीर डाले और पार फांक करे तथा नीमके पत्ते और नमक बांधे और जो मरहम ऊपर वर्णन किये गये हैं उन में से कोई मरहम लगावे ॥ और जो इनसे आराम न होतो उसपर यह मरहम लगाना चाहिये ॥

नुसखा ।

काले तिलों का तेल ५ तोला, मोंम सफेद १ तोला, लो-

खरगोशकी खाल, गोमाका रत, छयोंढ के पत्तों का रस इनमें से एक एक औषध पीसकर लगावे जब रुधिर बंद हो जाय तब जुल्लाव देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे और ये औषधि घावपर लगावे।

❀ नुसखा ❀

फिटकरी कच्ची ४ माशे, नीलाथोथा भुना ४ माशे, गौका घृत ४ तोले इन दोनों को दवाइयों को पीसकर घी में मिलावे और जलसे खूब धोकर लगावे।

दूसरा फोड़ा जो पहलू की ओरको झुका हुआ होता है और उसकी गुठली बाहर को होती है उस गुठली पर तो वह लेप करै जो पहिले इस रोग पर वर्णन कर चुके है और भीतर को नीचे लिखी दवा लगावे॥

नुखसा।

रूमीमस्तगी, सफेद कत्था, माजूफल भुनाहुआ, वंसलोचन, गाजमां की भस्म य सब दवा चार २ माशे ले इन सबको महीन पीसकर लगावै और मूंगकी धोवादाल और बिना चुपडी गेहूं की रोटी खाने को दे।

होठके फोडे का इलाज।

एक फुंसी होठों पर होती है उसपर शुद्ध करने वाला मरहम लगावे कि जिससे वह मवादको शीघ्रही निकाल देता है और केले के पत्तों पर गुलरोगन लेकर गले में बांधे इससे सूजन दूर होजाती है इसकी इलाज शीघ्र ही करना चाहिये क्यों कि ये फोडा पेटमें उतर जाता है इस का मुख बाहर की ओर करने के लिये नीचे लिखी हुई मरहम काम में लावे॥

नुसखा ।

विरोजा दो तोले, रेवत चीनी छः माशे, अंजरूत चार माशे, इन सबको पीसकर मिलावे और फिर इस मरहम को जलमें धोकर लगावे जब फूट जावे और मवाद निकल जावे तो यह दवा लगावेः—

नुसखा ।

रसौत १ माशे, तगर की लकडी तीन माशे इन सबको पीसकर गोके घी में मिलावे और जो कढाई में डालकर खूब घोटे तौ वहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच वार लगाने से आराम होजाता है ॥

एक फोड़ा डाढ़में होता है उसका इलाज यह है ।

नुसखा ।

नीम के पत्ते, वकायन के पत्ते, संभालू के पत्ते, नरम्मा के पत्ते, इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटाकर बफारा देवे, और उसी को बांधे और उसी के जलमें कुल्ले करावे ॥ और जो भीतर ही फूट जावे तौ उत्तम है और बाहर फूटे तो दांतके उखाडे बिना आराम न होगा और जो यह फोडा बाहर हुआ हो और बाहर ही फूटे तौ उसको चीर डाले और घार फांक करे तथा नीमके पत्ते और नमक बांधे और जो मरहम ऊपर वर्णन किये गये हैं उन में से कोई मरहम लगावे ॥ और जो इनसे आराम न होतौ उसपर यह मरहम लगाना चाहिये ॥

नुसखा ।

काले तिलों का तेल ५ तोला, मोम सफेद १ तोला, लो-

वान एक तोला मुर्दासंग ५ माशे, नीलाथोथा एक माशे पहिले तेलको गरम करके फिर उसमें मोम डालकर पिघलावे पीछे सब दवाइयों को पीसकर मिलावे जब मरहम खूब पकजावे तब खूब रगडे और ठंडा करके काममें लावे और जो भीतर फूटे तो वह कुल्ले करावे जो खुनाक रोग में वर्णन किये गये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध होजाय तो वह तेल भरदे जो ऊपर कह आये हैं ॥ और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल तारपीन या जलपाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होंय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चय आराम हो जायगा ॥

ठोड़ी के फोडे का इलाज।

एक फोडा ठोडी पर होता है उसके आस पास लालसूजन होती है, इस फोडेका चिह्न चित्रनम्बर ११ में देखो

चित्र नं० ११



इलाज।

इस फोडे पर जंगालका मरहम लगाना चाहिये अथवा वह मरहम लगावे जिसमें रेवतचीनी और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जावे तब स्याह मरहम लगावे और जो उसके नीचे गुठली हो जाय तो उसपर नीमके पत्ते अथवा जैतके पत्ते और नोंन पीसकर बांधे जब वह पक जावे तब वे मरहम लगावे जो ऊपर लिखे गये हैं।

❀ कान के रोगों की चिकित्सा ❀

(१) यदि कान बहता हो तो उस की यह औषधि है कि हरी मकोय, नीम के पत्ते लेकर दोनों को जोश करे पहिले भपारा कान में दे फिर उसी जलको कान में डाल और निकाल उसके पीछे नीम की पत्ती का अरक और शहद मिलाकर गर्म करे और डालेः—

(२) कान के भीतर एक छोटासा फोड़ा होता है (देखो

चित्र नं० १२



चित्र नम्बर १२) उसकी चिकित्सा यह है कि फिटकरी स-

वान एक तोला मुर्दासंग ५ माशे, नीलाथोथा एक माशे पहिले तेलको गरम करके फिर उसमें मोम डालकर पिघलावे पीछे सब दवाइयों को पीसकर मिलावे जब मरहम खूब पकजावे तब खूब रगडे और ठंडा करके काममें लावे और जो भीतर फूटे तो वह कुल्ले करावे जो खुनाक रोग में वर्णन किये गये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध होजाय तो वह तेल भरदे जो ऊपर कह आये हैं ॥ और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल तारपीन या जलपाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होंय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चय आराम हो जायगा ॥

ठोड़ी के फोडे का इलाज ।

एक फोडा ठोडी पर होता है उसके आस पास लालसूजन होती है, इस फोडेका चिह्न चित्रनम्बर ११ में देखो

चित्र नं० ११



इलाज ।

इस फोडे पर जंगालका मरहम लगाना चाहिये अथवा वह मरहम लगावै जिसमें रेवतचीनी और बिरोजा मिला है जब मवाद निकल जावै तब स्याह मरहम लगावै और जो उसके नीचे गुठली हो जाय तो उसपर नीमके पत्ते अथवा जैतके पत्ते और नोंन पीसकर बांधे जब वह पक जावे तब वे मरहम लगावै जो ऊपर लिखे गये हैं।

❀ कान के रोगों की चिकित्सा ❀

(१) यदि कान बहता हो तो उस की यह औषधि है कि हरी मकोय, नीम के पत्ते लेकर दोनों को जोश करे पहिले भपारा कान में दे फिर उसी जलको कान में डाल और निकाल उसके पीछे नीम की पत्ती का अरक और शहद मिलाकर गर्म करै और डालेः—

(२) कान के भीतर एक छोटासा फोड़ा होता है (देखो

चित्र नं० १२



चित्र नम्बर १२) उसकी चिकित्सा यह है कि फिटकरी स-

न्द तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डालदेवे और ऊपरसे कागजी नींबू का अर्क डालदे यदि वह फोड़ा फूट जाय तो मादर का पत्ता गर्म करके अर्क उसका निचोड़े जब मवाद बंद होजाय और पीड़ा शांत हो जाय तो मूली के पत्ते मीठे तेलमें जला के छानले और उस तेलको कान में डालतो आराम होजायगा—

❀ दांतोंकी पीड़ाका इलाज ❀

जो दांतोंमें पोडाहो अथवा हिलतेहों या उनमें से रुधिर बहताहो तथा दांतो से दुर्गंधि आती हो तो ये दवाई करेः-

✻ नुसखा ❀

कत्था सफेद १ तोला, फिटकरी सफेद ६ माशे, माजूफल ६ माशे इन तीनो को जौकुट करके सेर भर पानी में जोश करै जब आधा जल जाय तब कुल्ली करै दूसरी औषधि यह हैः—

॥ नुसखा ॥

फिटकरी सफेद ३ माशे, अनारका छिलका तीनमाशे बड़ी हर्ड ३ माशे इन को एक सेर पानीमें औटाकर कुल्ले करावे और जम्हीरीके पत्ते दांतोंपर मले (दूसरा नुसखा) हरा धनीयां तेज सिरकेमें पीस कर मले (तीसरा नुसखा) ताड़के वृक्षका छिलका, कचनार के वृक्षका छिलका, खजूर का छिलका; महुए की छाल इन सबको अलग अलग जलांवे और उनकी राख एक एक तोला और रूमी मस्तगी चार माशे सफेद गूंगे की जड़ छः माशे माजू मज्ज भुना हुआ ६ माशे कत्था सफेद ६ माशे सोना मक्खी

तीन माशे. इन सबको पीसकर मिस्सी के सदृश दांतों पर मले, (चौथा नुसखा) सफेद-कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छः माशे माजूफल छः माशे इन तीनों को जौकुट करके एक सेर जलमें औटावे जब आधा पानी जलजाय तब कुल्ले करावे [पांचवा नुसखा लोह चूरा ८ तोले, हरा माजूम ४ तोले, नीला थोथा भुना हुआ १ तोले, सफेद कत्था २ तोले; छोटी इलायची के दाने ६ माशे इन सबको महीन पीसकर मिस्सी की तरह दांतोंपर मले (छटा नुसखा) लोह चूरा पाव सेर विना छेदके माजूफल आध पाव छोटी इलायची छिलके समेत १ तोले, नीलाथोथा १ तोला, लाल कत्था १ तोला, रूमी मस्तंगी४माशे, हरांकशीश४माशे सोना माखी ४ माशे इन सबको महीन पीसकर दांतोंपर मले (सातवां नुसखा) तांबे का बुरादा १ छटांक, अनारका छिलका १ छटांक माजूफल २॥ तोले, फिटकरी १ तोले इन सबको महीन पीसकर दांतोंपर मले (आठवां नुसखा) रूमी मस्तंगी, माजूफल; हरांकशशि, माई बड़ी, हडेका छिलका, फिटकरी भुनी, नीलाथोथा भुना, मौलसरीके पेड़की छाल सबको बरावर लेके महीन पीसकर दांतोंपर मंजन करे और मुखको नीचा करके लार टपकावे फिर पानखाकर लारको बंदकरे (नवां नुसखा) कपूर को गुलाब जलमें और सिरके में मिलाकर इन तीनोको गौके दूधमें मिलाकर कुल्ले करावे (दसवां नुसखा) कपूर और नमक दोनों को पीसकर दांतों पर मले (ग्यारहवां नुसखा) फिटकरी भुनी एक भाग, शहत दो भाग, सिरका १ भाग इन तीनों को [illegible] पकावे जब गाढ़ा

फेद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डालदेवै और ऊपरसे कागजी नींबू का अर्क डालदे यदि वह फोड़ा फूट जाय तो मादर का पत्ता गर्म करके अर्क उसका निचोड़ै जब मवाद बंद होजाय और पीड़ा शांत हो जाय तो मूली के पत्ते मीठे तेलमें जला के छानले और उस तेलको कान में डालेतो आराम होजायगा—

❀ दांतोंकी पीड़ाका इलाज ❀

जो दांतोंमें पीडाहो अथवा हिलतेहों या उनमें से रुधिर बहताहो तथा दांतो से दुर्गंधि आती हो तो ये दवाई करैः

❀ नुसखा ❀

कत्था सफेद १ तोला, फिटकरी सफेद ६ माशे, माजूमज्ज ६ माशे इन तीनो को जौकुट करके सेर भर पानी में जोश करै जब आधा जल जाय तब कुल्ली करै दूसरी औषधि यह हैः—

॥ नुसखा ॥

फिटकरी सफेद ३ माशे, अनारका छिलका तीनमाशे बड़ी हर्ड ३ माशे इन को एक सेर पानीमें औटाकर कुल्ले करावै और जम्हीरीके पत्ते दांतोंपर मले (दूसरा नुसखा) हरा धनीयां तेज सिरकेमें पीस कर मले (तीसरा नुसखा) ताड़के वृक्षका छिलका, कचनार के वृक्षका छिलका, खजूर का छिलका; महुए की छाल इन सबको अलग अलग जलावै और उनकी राख एक एक तोला और रूमी मस्तगी चार माशे सफेद सूंगे की जड़ छः माशे माजू मज्ज भुना हुआ ६ माशे कत्था सफेद ६ माशे सोना मक्खी

इस घावके आस पास स्याही आजाय और घावसे पानी निकलता होतो बहुत बुरा है ॥

अथवा जो स्याही न हो और गांठ फूटी भी न हो तो उसके बैठानेको और दवा लिखते हैं ।

छुहारे की गुठली, इमलीके पत्ते, इमली के चीयां, महँदीके पत्ते इन सबको बाराबर ले महीन पीसकर गुनगुना करके पतला पतला लेप करै ॥

अथवा एक मूसेको तिलके तेलमें पकावेफिर उस तेलको लगावे तो गांठ बैठ जायगी:—

अथवा दो मुख के सांपको मारकर जमीन में गाढ़दे जब उसका मांस गल जावे तब हड्डीको डोरेमें बांधकर गले में बांधना अथवा बूदार चमडा बांधना अच्छा होता है:—

अथ धुकधुकी कों यत्न ।

एक घाव कंठमें होता है उसको धुकधुकी कहते हैं[देखो] चित्र नं० १४ उसकी सूरत यह है कि उसमें से दुर्गंध आया



चित्र नं० १४

करती है और कंठसे लेकर छातीके नीचेतक घाव होता है

आर वा दाहिनी ओर गले में गुठली सी होजाती है फिर बढ़कर बडी गांठ होजाती है ॥ इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि पहिले तो तहलील अर्थात् बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्योंकि जो यह बैठ जावे तो बहुत ही अच्छा है आर बठाने वाली दवा यह है।

❀ नुसखा ❀

खत्रकंला पांच तोले सूरंजान कडवा एक तोले कुदरूगोंद एक तोले इनसब को हरी कासनी के रसमें पीसकर लगावे और उसके पत्ते गरम करके बांध जब वे गुठलीयां न दीखे तो फस्त खोले और वमन करावे और जो इससे आराम न होय तो उक्त दवाइयों की सोयेके अर्कमें पीसकर लगावे और जो वर्णन की हुई दवाइयों से गुठलियां न बैठें तो यह लेप करे जो नीचे लिखाजाता है ॥

। लेप ।

गुलावके फूल, गिले अरमनी गुलनार, सूखी मकोय, दम्मुल अखवैन तुख्ममोरद इन सव दवाइयोंको एक एक तोला लेकर मुर्गीके अंडेकी सफेदीमें मिलाकर गोलियां बनाकर छाया में सुखावे फिर एक गोली अंगूर के सिरके में घिसकर लगावे और जो इसके लगाने से भी न बैठे और पक जावे तो यह दवा करे ॥

❀ नुसखा ❀

रविवार वा मंगलवार को एक गिरगट को मारे आक के पत्ते नग७ मिलाये नग७ इनसबको आधपाव कडवे तेल में जलाकर खूबघोटे और ठंडा करके लगावे और कदाचित

यूनानी में खनाज़ीर कहते हैं (देखो चित्र नं० १५) उसकी सूरत यह है कि किसी २ मनुष्य के वगल में कई गुठलियां होती हैं और एक उनमें से पकजाती है जब तक मवाद निकल कर वह अच्छी नहीं होने पाती तबतक और दूसरी पैदा होजाती है इसी प्रकार से कई वार करके छः सात होजाती हैं और एक सूरत यह है कि एक गुठलीसी होकर पकजाती है वह फूट गई तो बहुत अच्छा है नहीं तो चीरा देना पड़ता है विना चीरनेके अच्छी नहीं होती। जो रोगी बलहीन हो तो फोड़े की यह सूरत होती है जो ऊपर कह आये हैं और जो बलवान हो तो यह सूरत होती है कि पहिले कांखमें सूजनसी होती है और बहुत कड़ी होती है वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण नश्तर वा तेजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है बस यही हानि है जब नीम बंध चुकती है तो मरहम लगाने के पीछे पानी निकला करता है बस इसी प्रकार से रोग बढ़ जाता है। इस फोड़ेकी चिकित्सा यह है कि पहिले वे पसियां बांधे जो डाढ़ के फोड़े के वास्ते वर्णन कर चुके हैं जब नरम होजाय तब वह मरहम लगावे जिस में नान पाव का गूदा लिखा है अथवा यह औषध लगावेः—

नुसखा।

गेहूं का मैदा, शहद, और मुर्गी के अण्डे की जर्दी इन तीनों को मिलाकर लगावे इस दवा के लगाने से बहुत जल्दी फूट जावेगा और नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पत्ते नमक और शहत बांधे और यह मरहम लगावेः—

❀ मरहम ❀

नीलाथोथा तीनमाशे, अनार की कली जलाहुआ एकतोले इन दोनों को पीसकर खालिस शहद मिलाकर रगडे जब मरहम के समान होजाय तब लगावै और जो इससे आराम न हो तो यह दवा लगावैः—

नुसखा।

सूअर की हड्डी और सूअर के बाल जलाकर दोनों एकर तोले लेकर सूअर की चरबी में मिलाकर खूब रगडे और लगावै और घाव न सूखा हो तो सूअर की हड्डी या बालों की भस्म उसपर बुरके तो घाव सूख जावेगा और जर्राहको चाहिये कि घावपर निगाह रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घावमें से पानी निकलता हो तो उसके कारण को जानना उचित है कि किस कारण से उसमें से पानी निकलता है॥ प्रकृति मनुष्य की चार प्रकार की होती है। पानी तो रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित्त के कारण से और पीली पीब कफके कारण से और खालिस पीब खुश्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मरहम हितकर प्रतीत हो वही लगावै।

छाती के फोड़े का इलाज।

एक फोड़ा छाती से तीनचार अंगुल ऊपर होता है देखो (चित्र नं० १६) उसकी सूरत यह है कि पहिले तो डोरासा होता है और फिर बढजाता है इस फोड़ा को बढजाने पर तहलील करना अर्थात् बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि बाईं ओर को होता है तो इसमें बड़ा भय रहता है कि नीचे न

उतर जाय और जो दाहिनी ओर होवे तो कुछ डर नहीं ओर जो आदि में बैठ जाय तो भी कुछ डर नहीं और पक



चित्र नं० ७

जावे तो चीर डालें और नीम के पत्ते बांधें फिर उस के घाव पर यह मरहम लगावें ।

❀ मरहम की विधि ❀

राल सफेद २ तोले, नीलाथोथा १ रत्ती, विलायती साबन एक माशे इन सबको पीसकर गौके पांच तोले घीमें मिलावे फिर इसको पानी से धोकर घाव पर लगावे ऐसी सूरत का फोड़ा बालकके हो अथवा तरुण के बुद्धिमानी से चिकित्सा करें और ख्याल रक्खें कि पानी रतूबत से देता है और खून पित्त से और पतली पीप बरूदत से देता है जो पीप का रंग सफेद जर्दी लिये हुए हो और गाढ़ा हो तो मिजाज के अनुसार जानो । और इस फोडे की पीप सफेद पीलापन लिये निकले तो शीघ्र आराम होजायगा और जो सफेद लाल रंग मिला हो तो इसी महरम में जो

अभी ऊपर वर्णन की है काशग़री सफेदा चार माशे मिलावे और इसी घाव पर लगावे ईश्वर की कृपा से बहुत शीघ्र आराम हो जायगा आगे जैसी सलाह उस्तादों की हो वैसा करे ।

स्त्री की छाती के फोड़े का इलाज

एक फोड़ा दूधवाली स्त्रीके स्तनपर होताहै उसकी चिकित्सा भी इसी प्रकार से होसकती है जैसी कि ऊपर छाती के फोडे में अभी लिख चुके हैं और उस फोड़े पर पहिले वोही मरहम लगावे जिसमें अंडेकी जर्दी लिखी है अथवा वह मरहम लगावे जिसमें नानपाव का गूदा लिखा है इन मरहमों के लगाने से फोडा फूट जाय तो उत्तम है और इनके लगाने से न फूटे तो वह मरहम लगावे जिसमें आंवा हल्दी लिखी है और जो इस से भी न फूटे तो इसमें चीरा देवै और जो आपही फूट जावे तो बहुत ही उत्तम है और जो फूटे फोड़े के घावका मुख ऊपर को हो और दवाने से पीव निकलती हो तो उसके नीचे नश्तर देवे वा गुदी के नीचे बांधे और वालक को दूध पिलाना बंद न करे और जो दूध पिलाने में हानि समझें तो न पिलावे और यह मरहम लगावे ।

❀ मरहम ❀

सुपारी अधभुनी ६ माशे, कत्था अदभुना सफेद ६ माशे, सिंदूर गुजराती ६ माशे, सफेदा काशगरी ६ माशे; गौका घृत साततोले पहिले घीको गरमकरके उसमें एक तोले पीला मोम डाले फिर सब दवाईयों को पीस कर मिलादे और खूब

घोटे जब ठण्डा होजाय तब छः माशे पारा मिलाकर खूब रग
डे फिर इसको लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय ।

एक फोड़ा दूध रहित स्तनों में होता है उसकी सूरत यह है कि पाहिले मांसके ऊपर एक फुन्सी मसूर की दालकी बराबर होतीहै और भीतर एक गुठली चनेके प्रमाण होती है वह दिनप्रति दिन बढ़ती जाती है और वह फुन्सी अच्छी हो जातीहै और वह गुठली यदि तरुणी स्त्री के हो तो एक अथवा दोवर्ष के पीछे आम की बराबर होजातीहै और जो वृद्ध स्त्री के होयतो आठ नौ महिनों के पीछे आमकी बराबर हो जातीहै जब गुठली इतनी बढ़जातीहै तब सूजन हो जातीहै और उस में पीड़ा होती है और ज्वर भी हो आता है और दवाइयां पिलानेसे तपजाता रहताहै और उस गुठली पर घरकी अथवा उन लोगोंकी दवाई लगातेहैं जो कुछभी नहीं जानते जब किसीसे आराम नहीं होता तब जर्राहको बुलाते हैं यह गुठली पत्थरके समान होतीहै इसे कंकर बेल कहतेहैं काटेसे भी नहीं कटती इसकी चिकित्सा में जर्राह को उचित है कि हकीम की सम्मति भी लेतारहे क्योंकि दवाओं की प्रकृति को वे लोग खूब जानतेहैं और लेप करने को यह औषधि है पहिले नीचे लिखा बफारा देवेः—

❀ बफारे की दवा ❀

संभालूके पत्ते महुएके पत्ते इन दोनों को पानीमें औटा कर बफारा देवे और यही पत्ते बांधे जो कुछ आराम हो तो यह करते रहना चाहिये नहीं तो सोवे का साग औटा कर बांधे और जो इस से भी आराम न हो तो यह लेप लगावेः—

❀ लेपकी बिधि ❀

नाखूना एक तोला, खुब्बाजीके बीज एक तोला; खतमी के फूल एक तोला, खतमीके बीज एक तोला, अमलतास का गूदा दो तोले, शोरंजन कडवा, बनफसाके फूल, उश्कस्सी, अलसी ये सब दवा छः छः माशे, इन सबको पीसकर गरम करके लगावै। जो इससे आराम होजाय तो उत्तम है और हकीम को चाहिये कि इस रोगी को जुल्लाब देवै तथा फस्त खोले और जो आराम न हो तो वह दवाई लगावै कि जिसमे खूबकला है जिनका वर्णन ऊपर कर दिया गयाहै और एक नुसखा लेप का यह है।

❀ लेपकी विधि ❀

मुर्दासंग, शारंजान कड़वा, गिले अरमनी, सूखीमकोय. सब बराबर ले, इन सबको पानी में पीसकर लगावे जो इस से भी आराम न होवै तो देखे कि फोड़ा कहां से नरम है। उस पर जैतके पत्ते, नीम के पत्त और सांभर नमक पानी में पीस कर बांधे और आस पास वह लेप लगावे जो ऊपर कह आये हैं और जो इन पत्तों से भी न फूटे तो नीमकी छाल पानी मे घिसकर लगावै और जो किसी से आराम न होवे तो ये फाया लगावै।

❀ फाये की विधि ❀

लाल भे न फल, बबूल का गोंद; लौंग, बिलायती साबुन भैसा गूगल इन सबको बराबर ले पानी मे पीसकर कपड़े पर लेप कर रखछोडे और समय पर फोड़े की बराबर फाया

कतर कर लगावे, जो इसके लगाने से फूट जावे तो जैतके पत्ते और नीमके पत्ते बांधे जब फोड़ेमें कड़ापन न रहेतो ऊपर कहे हुए मरहमोंमें से कोई तेज मरहम लगावे और जो फोड़े के फूटने के पीछे उसमें सड़ा हुआ मांस उत्पन्न होजावे तो चिकित्सा न करे और जो चिकित्सा करनी आवश्यक हो तो संपूर्ण स्तन को कटवा डालेतो आराम होगा और हकीम को चाहिये कि दवाई प्रकृति के अनुसार करे और जर्राह को उचित है कि वह मरहम लगावे जिससे घाव पानी न देवे। और जो स्तन न काटा जावे वह मरहम यह है।

❁ मरहम ❁

जंगाल एक तोला, शहद दो तोला, सिरका दो तोला; इन सबको मिलाकर पकावें जब तार बँधने लगे तब ठण्डा करके लगावे और घावको देखना चाहिये कि घावमें रुधिर निकलता है या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यहहै कि घावके चारों ओर स्याही होतीहै और दुर्गंध आती है और पीप काली निकलतीहै और फफोदीके सदृश सफेदी होती है। फिर उस घावकी चिकित्सा न करे क्योंकि उसको कभी आराम न होगा। और असाध्यका यह लक्षणहै कि घाव चारों ओरसे लाल होता है और पीव गाढा और पीलापन लिये निकलता है जो घावकी सूरत ऐसी हो तो निःसन्देह चिकित्सा करे परमेश्वरके अनुग्रहसे निश्चय आराम होगा।

एक फोड़ा छातीपर कौडी के पास अथवा कौडीके स्थान पर होता है जैसा इस नीचे लिखे चित्र नं० १७ में है इलाज इसका तेज मरहम से पकाकर फोड़े अथवा चीरडाले उसकी

भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि यह फोडा रह·



चित्र नं० १९

जाता है। और जो घावमें सामने वत्ती जावेतो चिकित्सा न करे, और जो दांहीं तथा बांई ओर वत्ती जावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करै। जैसे कि ऊपर वर्णन कर आये हैं, और एक फोड़ा पीठ पर होता है उस की भी चिकित्सा उसी रीतसे करनी चाहिये जैसा कि छाती के फोडेका वर्णन कर आये हैं; और वह मरहम लगावे जिसमें जलाहुआ कोकनार लिखाहै।

और एक फोडा नाभिके ऊपर होताहै उसके चिकित्सा वैसी करनी उचित है जैसा कि पेटके फोड़े मे वर्णन की गई है ओर वह मरहम लगावे जिसमें रसौत और तगर की लकड़ी लिखी है, इन तीनों फोड़ों की एकही चिकित्सा की जाती है एक फोड़ा पेडू के ऊपर होता है उसकी लम्बाई और चौड़ाई बहुत होती है यहां तक बढ़ता है कि तरबूज के बराबर होजाता है, इसकी चिकित्सा भी शीघ्र करनी

चाहिये कि स्याही न आने पावे और जो स्याही आजावे तो चिकित्सा न करे, क्यों कि यह असाध्य है परन्तु जो करनी आवश्यक हो तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार करे और आगे लिखी यह मरहम लगावे।

❀ मरहम ❀

नीम के पत्ते एक सेर, आंवा हलदी आध पाव, हलदी कच्ची आध पाव, काले तिल का तेल एक सेर, पहिले तेल को तांवे के बर्त्तन में गरम करे फिर उसमें नीम के पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जलकर स्याह होजावे तो उनको निकाल कर दोनों औषधियों को जौ कूट करके तेल में डाले जब वेभी स्याह होने लगें तब तेलको छानकर रक्खे और फोड़े पर लगावे और जो इसके लगाने से कुछ आराम न हो तो वही करे जो ऊपर वर्णन किया गया है और समय पर जैसी सम्मति हो वैसे करे परन्तु जहां तक हो सके इसको असाध्य कहकर छोड़ देना चाहियेः—

एक फोड़ा पेड़ू और जांघ के बीच में होता है वह भी कण्ठ माला के भेदों में से है और लौकिक में उस का नाम (वद) विख्यात है। उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठली सी होती है और लोग उसको उपदंश के संदेह में छिपाते हैं यद्यपि वह बालकों के भी हो जाता है और जो उसको न छिपावे तो शीघ्र आराम हो सक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड़ जाती है और इसका इलाज बहुत से हकीमों ने अपनी अपनी किताबों में लिखा है अ॰ अपनी बुद्धि के अनुसार इसकी चिकित्सा लिखते हैं बुद्धि-

वालों को चाहिये कि पहिले ये दवा लगावे जिससे यह बैठ जावे बैठालने की दवा यह है:—

❀ नुसखा ❀

चूना एक तोला लेकर उसे मुर्गी के एक अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे अथवा मनुष्य के सिर की हड्डी पानी में घिसकर लगावे। अथवा ईसबगोल को पानी में पीसकर बद के ऊपर लेप करे, अथवा सफेद कत्था, कलमी तज केवला, बबूल का गोंद, छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गाढ़ा २ लेप करे और जो न बढे तो पकने की दवाई लगावे वह दवा यह है।

❀ नुसखा ❀

एक अण्डे की जर्दी खालस शहत एक तोले, गेंहूं का मैदा एक तोले, इनको मिलाकर लगावे। और जो न फूटे तो नश्तर देवे और जो नश्तर देने में कच्चा निकले तो नीम के पत्ते, हरी मकोय, नरमा के पत्ते, जैत के पत्ते और बकायन के पत्ते इन सबको पानी में औटाकर बफारा देवे और इन्हीं को बांधे सात दिन तक यही करते रहें इससे खूब नरम होकर मवाद निकल जावे फिर यह मरहम लगावे

❀ मरहम ❀

प्रथम गौ का घृत आध पाव लेकर गरम करे फिर उसमें दो तोला सफेद मोम मिलजावे फिर सफेद राल सात तोले मिलावे जब खूब मिलावे तब एक सकोरे में रखकर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मिलाकर घाव पर लगावे और एक लेप यह है जो आदिम फोडे को तहलील

करता है और पके हुएको फोड देता है और अब कच्चे फोडे को पका देता है ।

❀ सुखसा लेप ❀

हालों, तज, अलसी, मैथी के बीज, ये सब एक २ तोले एलुआ कमंगरी, साबुन, भैंसागूगल, रेवत चीनी. लाल सज्जी ये सब छः छः माशे इन सबको पीस छान कर माफिक फोड़े के पानी में गरम करके लेपकरे और ऊपर से बंगला पान गरम करके बांध देवै और इस लेपके बहुतसे गुणहैं और जो इस लेपको चोटपर लगावे तो सज्जी न डाले किन्तु सज्जी के बदले सैंधा नमक मिलावे । और जो चोटसे हड्डी टूट गई होतो आंवा हल्दी और मिलादेवै तो परमेश्वर के अनुग्रह से आराम होजायगाः–

एक फोडा अंडकोशों के नीचे होताहै उसको भंगदर कहतेहैं उसमें सूजन होती है और ज्वर भी होता है उसकी चिकित्सा वदकी चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और उन्ही पत्तियोंका बफारा देवै और वह लेप लगावै जिसमें अलसी और मैथी लिखी है जब नरम होजावे तो चीरने में देरी न करे फिर पीछे नीमके पत्त और नमक बांधे और यह मरहम लगावेः–

❀ मरहम की विधि ❀

पहिले गायकाघृत सात तोले लेकरगर्म करे फिर दोतोले सफेद मोम उसमें डालकर पिघलावे फिर सिंदूर गुजराती दो तोले, सिंगरफ, सफेद जीरी, सेलखड़ी, काली मिर्च, कत्था, सफेद फिटकरी, सुपारी ये सब एक एक तोले और लाला

थोथा एक माशे ले इन सबको महींन पीसकर उसी घृत मिलावे और आगपर रक्खे जब खूब चासनी होजावे ठंडा करके लगावे और जो इससे आराम न हो तो मरहम लगावे जिसमें बेरके पत्तेहैं और जो रह जावे तेजाव लगावे जिसमें गिरगट है।

❀ गुदाके फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा गुदामें होता है इसको बवासीर कहते हैं य फोडा कई तरह का होता है एक वह है जिसमें घावहो औ उसे आराम नहो वह फिर पकेगा और फूटगा और इस प्रकारसे रहेगा और जो बहुतसे घाव होंता सबको अच्छ करदेवे और एक घाव को रहने देवै जिससे मवाद निक ता रहे इस फोडे को हकीम और डाकटर लोग असाध कहते हैं और इसीसे इसपर ये मरहम लगाना मुनासिबहै

❀ मरहम ❀

काले तिलोंका तेल छः माशे, कच्चामोम चार माशे, न सूअरकी चरवी दो तोले. राल विलायती एक तोले. इन स बको पकाकर बछिया के मूत्र में धोकर लगावे ॥ अथवा सांपका सिर नग १ छंछूदर नग १ सूअर का पिष्ट। सात तोले. सूअरकी चरबी दो तोले. हुक्का नारियल पुराना दो नग. काले तिलों का तेल १ सेर. इन सब दवाइयोंको तेलमें जलाकर तेलको छानकर लगावे जब उस ओरसे मल और वायु निकालने लगे तो चिकित्सा न करे इसघावमें से पीव नहीं निकलती है किन्तु पानी निकला करता है।

❀ गर्दन के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा दोनों कंधोंके बीच में होता है जिसको बड़े २ ग्रथों में खञ्जरवेग लिखा है और सुनाभी है और सूरत उसकी यह है कि पहिले सूजन के साथ सखती होती है जब वह फूटता है तो खराब मांस होजाता है दोनों ओरसे उसके पुठ एक जंतु के सदृश होतेहैं और लोग उसको न्यौला कहते हैं और मैंने भी सुना था कि वह रोगी का कलेजा खाताहै। परन्तु निश्चय किया गया तो मालूम हुआ कि ये बात झूठ है जब उसको गौर कर देखा तो खराब मांस मालूम हुआ परन्तु इस फोड़े को अच्छा होता कहीं नहीं देखा है। अगर खराब मांस कटजाय तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परन्तु उस मांस को जहां तक बनें वहां तक दवा से काटना चाहिये।

❀ इसके काटने की दवा आगे लिखते हैं ❀

❀ नुसखा ❀

शहद २ तो०, जंगार २ तोले, तेजसिरका७तो०, इनको मिलाके पकावे जब तार बंधने लगे तो ठंडा करके लगावै और सूखी औषध दूषित मांसके काटने की यह है।

❀ नुसखा ❀

संखिया सफेद, नीला थोथा. नौसदर. फिटकरी भुनी, कच्चा सुहागा. चौकिया. सुहागी सज्जी, हल्दी जली हुई इन सबको महीन पीसकर लगावे। अथवा काष्ठिक की बत्ती लगावै, काष्टिक एक अंग्रेजी दवा है, इस फोडे को छुरी से काटना अच्छा नहीं हैं क्योंकि नित्य घटता बढ

ता है इस लिये नश्तर से नहीं काटते हैं और सब जर्राह छुरी से काटते हैं इसी कारण वह फोडा खराब होजाता है और अच्छा नहीं होताहै। और उसके आस पास यह लेप लगाना चाहिये।

❀ लेप ❀

त्रिरी खताई, जहरमोहरा खटाई मूरिद के बीज; गुलेनार गुलाब के फूल, दम्मुल अखवेन, इन सबको बराबर ले हरी मकोय के अर्क में पीसकर लगावे। परन्तु इसरोग वाले की फस्द अवश्य खोलनी चाहिये। और वमन भी करावे, और गिजा गोस्तका शोरबा और रोटी खिलावे।

॥ कन्धे के फोडे का यत्न ॥

एक फोडा कंधे पर होता है और यह भी नासुर का स्थानहै उसको भी चीर डाले अथवा तेजाब लगावै और फो-

चित्र नं १८



ड़ डाले इसफोडा का निशान ऊपरलिखी तसवीरमें देखलो

जो यह फोड़ा आपही फूट जावे तो वह मरहम लगावे, जिसमें सुहागा और नीलाथोथा है जब वह घाव अच्छा होजाय और वत्ती जानेके माफिक स्थान रहजावे तो चीर-डाले वा तेजाब लगावे और जो चारों ओर से बराबर अच्छा होजाय तो सुखाने के वास्ते यह मरहम लगावेः—

❀ मरहम की विधी ❀

पहिले शीशे की गोली का कुश्ता करे और उसकी भस्म ६ माशे लेवे और सफेदा काशगरी ६ माशे, सिन्दुर ६ माशे, राल सफेदा २ माशे गौ का घी ६ माशे, इन सबको पीसकर गरम करके मिला देवे फिर मोम पीला ६ माशे मिलाकर खूब रगड़े उसको घाव पर लगावेः—

❀ बांहके फोडेका यत्न ❀

एक फोडा बांहपर होताहै इसका निशान चित्र नम्बर



१९ में देखलो और चिकित्सा इस प्रकार से करो जैसी कि कंधेके फोडेमें वर्णन की गईहै और कंधे से घुटने तक सात फोडे होतेहैं और एक फोड़ा कोहनी पर होताहै उसमें से पानी निकलता है उस पर यह मरहम लगावेः—

❀ मरहम ❀

काले तिलोंका तेल पावभर, सफेद मोम दो तोले नीला थोथा दो माशे, सोनामाखी दो माशे, मस्तंगी रूमी छः माशे विरोजा तर छः माशे, माजू दो तोले, वहरोजा सूखा एक तोला, नौसादर पांच माशे, मुर्दासंग ५ माशे, सेलखड़ी ३ माशे तुख्म वोरा सुर्ख २ माशे फली वोरा सुर्ख २ माशे, फली वोरा स्याह २ माशे, सुहागा चौकिया भुना २ माशे, जंगाल एक तोले प्रथम तेलको गरम करै फिर ये सब दवा महीन पीसकर डाले जब मरहमके सदृश होजावे तब ठंडा करके लगावे ॥ और घुटने के नीचे सात फोडे होते हैं निशान तसवीर में समझो ॥

❀ अँगुली के फोडेका यत्न ❀

एक फोडा अँगुली में होताहै उसको विषहारी कहतेहैं और वहुत से मनुष्य इसको विसारा कहते हैं जो उसमें बुरामांस होतो चीर डाले और जो न काटे तो तेजाब लगावे जब मांस कट जावे तो मरहम लगावे जिसमें शीशेको कुशताहै।

❀ हथेली के फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा हथेली में होताहै उसकोभी चीर डालना चाहिये और जो तुम फूटनेकी राह देखोगे तो उँगलिया जाती रहैंगी और जो उँगलियां सीधी न हों तो भेडोंकी मेंगनियां पानीमें औटाकर वफारा देय और भेडोंके दूधका मर्दन करै अथवा २ आतशी शराब मलै ॥ और कंधेसे अंगुली तक चोदह फोडे होतेहैं जिनकी चिकित्सा बहुत कठिनता से होती है और बहुत से ऐसे फोडे होतेहैं जो शीघ्र अच्छे होजाते हैं ॥

❀ पीठके फोड़ेका इलाज ❀

एक फोड़ा पीठमें होताहै उसको अदीठ कहते है। और उसके आसपास ४ फोड़े होतेहै और वह फोडा पीठ के बीचमें होताहै वह केंकडेके सदृश होताहै और लम्बाव तथा चौडाव में बहुत बड़ा होताहै और उस फोड़ेमें पकजाने के पीछे एक छिद्र होताहै और उसमें से पानी निकलता है अथवा पका पीव निकलताहै और छीछडा नहीं निकलताहै इस फोडेका निशान चित्र न० २० में देख लो।



चित्र नं० २०

इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि उसकी चार फांक करके चार अंगुल चीरडाले और उसकी आलापशको सांभर नमक, नीमके पत्ते, फिटकरी और शहत बांधकर साफ करता रहे जिससे वह शुद्ध रहे। परन्तु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन बांई ओर को न आ जावे और जो दैव योग से सूजन बांई ओर को हो आवे तो दाहिने हाथकी वासलीक नसकी फस्द खोले और पन्द्रह तोले रुधिर निकाले और जो इतना रुधिर न निकले तो चार

दिनके पीछे वाये हाथकी भी फस्द खोले और फोड़े पर ये मरहम लगावैः—

❀ मरहम की विधि ❀

मूक,चूना,सज्जी, नीला थोथा,साबुन,राई,चौकिया सुहागा आक का दुध यह सब दवा एक एक तोले गौका घृत १२ तोले प्रथम घृतको गरम करके प्रथम साबुन मिलावै, पीछे बाकी दवाइयां पीसकर जुदा जुदा बराबर तोल कर मिलावे और आग पर जब खूब चाशनी होजाय तब ठंडा कर के लगावे और जो घाव भर आनेके पीछे सूजनहो आवै और सूजनके पीछे पेचिश होजावे तो उसकी चिकित्सा करना कठिन है और ये दवाई पिलावैः—

❀ नुसखा ❀

तुख्म खतमी, रेशा खतमी, छःछः माशे इन दोनोंको रात्रि को पानीमें भिगोदे और सबेरे ही छानकर फिर पहले चार माशे तुख्म रेहाँ फँकाके ऊपर से इसे पिलादे और जो इन चारों फोड़ों में से बाईं ओरका फोडा होवै तो भी इस प्रकार से चिकित्सा करे जैसाकि अभी वर्णन कीया है और जो फोडा दाहिनी ओर हो तो उसके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोडा कुछ बहुत भयानक नहीं हैं जैसी चाहैं तैसी चिकित्सा करें ईश्वर आराम करदेगा ॥

❀ पसली के फोडे का यत्न ❀

एक फोडा पसलियों पर होता है देखो चित्र नम्बर २१ इसकी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये, क्यों कि यह स्थान नासूर का है और बांई ओर का फोडा पेटमें उतर जाता है

उसमेंसे आहार निकलता है और ये फोडा बडी मुशकिल से अच्छा होता है वरने अच्छा नहीं होता ॥



चित्र नं० २१

एक फोडा कोखपर होता है उसका चिकित्सा उसी भांति से करनी चाहिये जैसा कि ऊपर वर्णन करी गई है ॥

नाभि के फोडे का यत्न ।

एक फोडा नाभिके स्थानपर होता है देखो चित्र नं० २२



चित्र नं० २२

चिकित्सा उसकी इस प्रकार से करे कि पहिले उन पत्तियों

भेदों में से नहींहै लेकिन यह स्थान नासूर का है उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठलीसी होती है और आपही आप रिसने लगती है उसकी चिकित्सा, इसप्रकारसे करनी चाहिये प्रथम उसमें चीरा देकर उसकी चार फांक करे क्यों कि उसके भीतर एक छीछडा होता है सो वगैर चीरने के उसका निकलना कठिन है इस लिये इसमें चीरा देकर छीछडा निकालकर फिर यह मरहम लगावेः—

नुसखा।

पहिले काले तिलोंका तेल पांच तोले गरम करे फिर उसमें छः माशे मोम डाले और सोंफ गिले अरमनी, मुर्दासंग नीलाथोथा ये सब एक २ तोला लेकर महीन पीसकर मिलावे और मंदी आग में पकाकर ठंडा करके लगावेः—

❀ जांघके फोडेका यत्न ❀

एक फोडा जांघ में होता है देखो चित्र नं० २२ उसको



चित्र नं० २२

गम्भर कहते हैं इसमें भी एक व[illegible] हो
और वह सात मास के पीछे प्रगट[illegible]
है इस फोडे का नि[illegible] स।

और चिकित्सा उसकी यह है कि उसको ठीक २ चीर डाले और सब मवाद निकाल देवे पीछे उसके बुरे मासको इतना काटे कि चार २ अंगुल गड्ढा होजावे फिर उसपर नीम के पत्ते सफेद बूरा फिटकरी इन सबको एक सप्ताह तक बांधे फिर ये मरहम लगावे।

❀ मरहम की विधि ❀

राल सफेद दो तोला, नीलाथोथा एक रत्ती, इन दोनों को महीन पीसकर छः तोला घृतमें मिलावे फिर उसमें एक माशे साबुन डाले फिर उसको नदी के जल से अथवा वर्षा के जल या बरफ के जल से खूब धोकर लगावे और एक फोड़ा जांघ के नीचे की ओर होता है वह भी इनहीं मरहमों से अच्छा होता है।

❀ घोंटू के फोडे का इलाज ❀

एक फोड़ा घुटने के जोड़ पर होता है उसकी चिकित्सा बहुतही कठिन है क्योंकि पहिले एक पीली फुन्सी होती है उसकी तसवीर आगे देखलो जब वह फुन्सी फूट जाती है तो उसके चेंपे से बहुत घाव होजाता है अन्त को उसमें बत्ती जाने लगती है फिर वह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उसकी चिकित्सा करे तो इस प्रकार से करे पहिले तेजाब लगाकर घाव बढ़ादे और उसमें एक सफेदसा मांस होता है उसको निकाल डाले जब घाव कड़ा होजाय तो वह मरहम लगावे जिसमें रसत लिखते हैं और उसके लगाने से आराम न हो तो ये आगे लिखी मरहम लगावे।

❀ मरहम की विधि ❀

कुंदरू गोंद १ तोला, पारा ६ माशे, काले तिलों का तेल २ तोला, इन सबको एक कढ़ाई में डालकर खूब रगड़ डाले जब मरहम के सदृश होजाय तब लगावे।

❀ पिंडली के फोडे का इलाज ❀

एक फोडा पिंडली पर होता है उसकी सूरत यह है पहिले इसकी चिकित्सा यह है कि तहलील करने वाला लेप लगावै तो तहलील होजावे, और बासलीक नसकी फस्द खोलै और यह आगे लिखा लेप लगाना चाहिये।

❀ लेप ❀

अमलतास २ तोला, बाबूना के फूल १ तोला, खतमी के फूल १ तोला, सूखी मकोय १ तोला, नाखूना १ तोला गिले अरमनी १ तोला, सूरिदके बीज ६ माशे, अफीम २ माशे सूरंजान कड़वा ६ माशे, निर्विसी ६ माशे इन सब को पानी में पीसकर गरम करके लगावै और अरंड के पत्ते बांधे और जो घाव लाल होजाय तो वह मरहम लगावे जिसे में नानपाव का गुदा है और जो वह फूटजाय तो यह निश्चय करे कि घाव के नीचे सखती है वा नरमी जो नरमी हो तो नश्तर देवे जो [illegible] हो [illegible] नश्तर दे और वह मरहम लगावे जि[illegible] ये तसवीर पिंडली के फो[illegible] की है [illegible] दू[illegible] इस [illegible]


चित्र नं० १४

तो नश्तर देवे उसपर नीमके पत्ते और नमक बांधे फिर यह नीचे लिखा मरहम लगावे ।

❀ नुसखा ❀

पहिले काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फिर सफेद शलगम २ तोले मिलाये गुजराती नग २, नीमके पत्तों की टिकिया २ तोला उसमें जलाकर फेंकदे और ५ तोला सिंदूर मिलाकर मन्दी २ आगपर पकावे जब चाश्नी हो जाय तब ठण्डा करके लगावे ।

❀ पिंडली के दूसरे फोड़े का यत्न ❀

एक फोड़ा पिंडली से छः अंगुल नीचे होता है और वह बहुत काल में पकता है एक या दो वर्ष के पीछे फूटता है तो उसमें पानी निकलता है और रुधिर भी उसमें से निकला करता है। उस पर वह मरहम लगावे जिसमें सफेद जीरा है अथवा यह मरहम लगावे ।

❀ नुसखा मरहम ❀

लाल मैनफल, बबूल का गोंद, लौंग फूलदार, माजुन

...... इन सबको बराबर ले जलमें महीन
...... करके मोमजामा सा बना रक्खे
...... कर लगावै ये बहुत ही उत्तम
...... इसको लगाना चाहिये इस फोड़े
...... जब वह पकजावे तब उसपर वह
...... है और ......
...... साबुन है अथवा ये मरहम लगावै।

नुसखा

...... आमाहल्दी तीन तीन
...... साबुन छः माशे इन सब को
...... पानी से पीसकर लगावै।

...... होता है ...... उसमें ......

गलकर गिरपड़ती है और चिकित्सा करनेसे घाव होजाता है और पांव बेकार होजाता है।

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोड़े होते हैं उन सबकी व्यवस्था वर्णन करू तो ग्रंथ बहुत बढ़जायगा इस लिये दो चार नुस्से मरहम और तेलके लिखदेता हूं जो सब प्रकार के फोड़ों को गुणदायकहैं आगे कच्चे फोड़ों की चिकित्सा है ॥

नुसखा।

गुलाबकी पत्तियों को गुलाबजल में पीसकर गरम करके गाढ़ा गाढ़ा लेपकरै और ऊपर से बंगलापान बांधे तो सब प्रकार के फोड़ों को तहलील करै और जो मवाद तहलील होने के योग्य न होगा तो पका देवैगा ॥

अथवा--बबूलगोंद, कमेला सुर्ख, कुश्ला, एक एक तोले इनको पानी में पीसकर लगावै और उस पर बंगला पान गरम करके बांधे ॥

अथवा--पहिले घृतको गरम करके उसमें चार माशे काली मिरच और हलदीहा कलौंजी पीसकर डाले इन सबको मिलाकर पकावै जब दवा जलजावै तब लोहे के घोटे मे खूब रगडे जब मरहम के सदृश होजावै तब काममें लावै ॥

अथवा--कडवा तेल पांच तोला, कमेला, काली मिरच, मेंहदी के पत्तेहरे, नीमके पत्ते, सूखे आमले यह सब दवा छः छः माशे नीलाथोथा चार माशे इन सबको तेलमें जलाकर लोहे के दस्ते से खूब रगड कर लगावै ॥

❀ दाद का यत्न ❀

जो दाद रोग थोडे दिनोंका होयतो ये दवा लगाना चाहिये।

❀ नुसखा ❀

सूखे आमले, सफेद कत्था, पवांड के बीज, इन तीनों को बराबर लेकर दही के तोडमें पीसकर महँदी के सदृश लगावै

अथवा।

पलास पापड़ा, नीलाथोथा, सफेद कत्था, इन सबको बराबर लेकर कागजी नीबूके रसमें पीसकर दाद पर लेपकरै और थोडी देर धूप में बेठा रहे सात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा।

अथवा।

कपास के बीजों को कागज़ी नीबू के रसमें पीसकर रक्खे पहिले दादको कंडेसे खुजाकर फिर इस लेपको लगावे।

अथवा।

अफीम, पँवार के बीज, नौसादर, खैरसार, इनसब दवाइयों को बराबर ले नीबू के रसमें पीसकर दादमें लेप करै तो दाद बहुत जल्द आराम होजायगा।

अथवा।

राल, माजूफल, नीलाथोथा, इनतीनोंको बराबर ले हुक्केके पानीमें तथा कागजी नीबूके रसमें पीसकर लगावैः—

अथवा।

राई २॥ माशे कूटछानकर सिरकेमें मिलाकर लेपकरै तो दाद जाय ये। दवा उसवक्त करना उचित है कि जब दाद खालके नीचे पहुंच गयाहो। और जो खाल के नीचे न

पहुँचा हो तो यह लेप करे ॥

❀ नुसखा ❀

गंधकपीली छःमाशे लेकर कूट छानकर उसमें थोड़ा पारा कपड़े में छानकर गंधक को बराबर ले और गौका घी और बकरे की चरबी तीन बार जलसे धोई हुई इन दोनों को साढ़े सोलह २ माशे ले इन सबको मिलाकर खूब मथे कि पारा मरजावे फिर इसके दो भाग करले और इसका एक भाग धूप में वा आगके सामने बैठकर मलै फिर एक घड़ी पीछे गरम जलसे स्नान करै ये दवाई खुजली को भी दूर करती है ॥ और किसी मनुष्यके दाद बहुत दिनके होगये हों तो उसकी ये दवा करे ।

॥ नुसखा ॥

पंवार के बीज एक तोले पानीमें पीसकर और तीन माशे पारा मिलाकर खूब खरल करै जब मरहमके सदृश होजावे तो दादको खुजाके इसदवाको लगावैतो निश्चय आरामहोय

❀ अथ खुजली का यत्न ❀

जानना चाहिये कि खुजली रोग दो प्रकार का होता है एकतो सूखी दूसरीतर अवहम पाहलेतर खुजलीकेयत्नलिखतेहैं

❀ नुसखा ❀

लाल कमेला एक तोले, चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोले,इन तीनोंको महीन पीसकर दोतोले कड़वे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करै इसी तरह तीन दिन तक करै फिर तीन दिनके बाद लोनी मिट्टी शरीर में मल कर स्नान करडाले तो खुजली जाय ।

❀ अथवा ❀

कवेला, सफेद कत्था, महँदी; ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे, काली मिर्च एक माशे, इन सबको महीन पीसकर छानकर गौ के धुले हुए घृतमें मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी को शरीर पर मलकर स्नान करे तो खुजली निश्चै जाय।

और जोखुजली सूखी हो तो हम्माम में स्नान करना गुण करता है, और जुल्लाब लेना फायदा करता है तथा शातिरे का अर्क पीना फायदा करता है और करून का लेप करना भी लाभ दायक होता है:—

❀ करून के लेप की विधि ❀

करूत को पीसकर दो घडी तक गरम जलमें भिगो रक्खे, फिर इसको खूब मले जब मरहम के सदृश होजाय तब उस में खट्टा दही वा सिरका १२ तोले, और गंधक आमला सार ३॥। तोले, कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिल के तेलमें मिलाकर तीन भाग करे और सवेरेही एकभाग को शरीरपर मलकर फिर हम्माम में जाकर गेंहू की भुसी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलसे स्नान करडाले तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनों तरह की खुजली को गुण करता है।

अथवा।

पित्तके उत्पन्न करनेवाली वस्तु यिरना मदिरा और शहत न खाय और नित्य हम्माममें स्नानकरे और जुल्लाब लेवे। और मुंजिशके बाद नित्य रातको नीबूका रस वा अंगूरका रस

अथवा सिरका थोड़ा गुलाबजल और रोगन अथवा मीठेतेल मेंमिलाके गुनगुना करके मालिश करैतो सूखी खुजलीजाय और जो खुजली थोड़े दिनकी होयतो यह दवा लगावैः—

❀ नुसखा ❀

सिरसों ४ तोला लेकर जलमें महीन पीसकर गुनगुना करके उबटनाकरै फिर गरम जलसे स्नान करैतो सूखीखुजलीजाय

❀ घावोंका यत्न ❀

अब हर प्रकारके घावोंका यत्न लिखतें हैं ॥

जानना चाहिये कि मनुष्यके शरीरमें घाव बहुत प्रकारसे होताहै । सबोंको यथा क्रमसे नाम लिखूं तो ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस सबबसे सूक्ष्म घावोंके नाम लिखता हूं ॥

❀ घावोंके नाम ❀

(१) अग्निसे जला (२) तेल घृत आदिसे जला (३) चोट लगनेका (४) लाठी आदिकी चोटका (५) पत्थर ईंट की चोटका (६) तलवार का (७) बंदूककी गोलीका (८) तीरका इत्यादि आठ प्रकारके घाव हैं और बहुत से वैद्यक ग्रंन्थोंमें घाव और सूजन छःप्रकारका लिखाहै वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरके दूषित होनेका ५ किसी प्रकारकी लकड़ी आदिकी चोट लगनेका ६।

❀ अथ वायुके घावका लक्षण ❀

वायुका घाव और सूजन विषम पकता है पित्तका व्रण भी तत्काल पकताहै कफका व्रण देरसे पकताहै रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकताहै ।

❀ अथवा ❀

कबेला, सफेद कत्था, महँदी; ये तीनों दवा एक एक तोले सुना सुहागा तीन माशे, काली मिर्च एक माशे, इन सबको महीन पीसकर छानकर गौके धुले हुए घृतमें मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी को शरीर पर मलकर स्नान करे तो खुजली निश्चै जाय।

और जोखुजली सूखी हो तो हम्माम में स्नान करना गुण करता है. और जुल्लाब लैना फायदा करता है तथा शातिरे का अर्क पीना फायदा करता है और करून का लेप करना भी लाभ दायक होता है:—

❀ करून के लेप की विधि ❀

करूत को पीसकर दो घडी तक गरम जलमें भिगो रक्खे. फिर इसको खूब मलै जब मरहम के सदृश होजाय तब उस में खट्टा दही वा सिरका १२ तोले, और गंधक आमला सार ३॥। तोले. कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिल के तेलमें मिलाकर तीन भाग करे, और सवेरेही एकभाग को शरीरपर मलकर फिर हम्माम में जाकर गेहूं की भुसी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलसे स्नान करडालै तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनों तरह की खुजली को गुण करता है।

अथवा।

पित्तके उत्पन्न करनेवाली वस्तु पिस्ता मदिरा और शहत न खाय और नित्य हम्माममें स्नानकरे और जुल्लाब लेवे। और मुंजिशके बाद नित्य रातको नीबूका रस वा अंगूरका रस

अथवा सिरका थोड़ा गुलाबजल और रोगन अथवा मीठेतेल मेंमिलाके गुनगुना करके मालिश करैतो सूखी खुजलीजाय और जो खुजली थोड़े दिनकी होयतो यह दवा लगावैः—

❀ नुसखा ❀

सिरसों ४ तोला लेकर जलमें महीन पीसकर गुनगुना करके उबटनाकरै फिर गर्म जलसे स्नान करैतो सूखीखुजलीजाय

❀ घावोंका यत्न ❀

अब हर प्रकारके घावोंका यत्न लिखतें हैं ॥

जानना चाहिये कि मनुष्यके शरीरमें घाव बहुत प्रकारसे होताहै । सबोंको यथा क्रमसे नाम लिखूं तो ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस सबबसे सूक्ष्म घावोंके नाम लिखता हूं ॥

❀ घावोंके नाम ❀

(१) अग्निसे जला (२) तेल घृत आदिसे जला (३) चोट लगनेका (४) लाठी आदिकी चोटका (५) पत्थर ईट की चोटका (६) तलवार का (७) बंदूककी गोलेका (८) तीरका इत्यादि आठ प्रकारके घाव हैं और बहुत से वैद्यक ग्रन्थोंमें घाव और सूजन छःप्रकारका लिखाहै वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरके दूषित होनेका ५ किसी प्रकारकी लकड़ी आदिकी चोट लगनेका ६॥

❀ अथ वायुके घावका लक्षण ❀

वायुका घाव और सूजन विषम पकता है पित्तका व्रण भी तत्काल पकताहै कफका व्रण देरमे पकताहै रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकताहै ।

❀ सूजन के घावका लक्षण ❀

जिस व्रण में गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ी होय और उसका त्वचाके सदृश वर्ण होय और दर्द कम हो तो जान लेना चाहिये कि अभी व्रण कच्चा है व्रण उसको कहते हैं कि प्रथम शरीरके किसी स्थान पर सूजनहो और फिर वह पके और फोड़े के समान होजाय फिर फूट कर घाव होजायः—

❀ व्रणकी सूजनके लक्षण ❀

जिस मनुष्यकी सूजन अग्निकी तरह जले और खीरकी तरह पके और चेंटी की तरह काटे और हाथसे दाबने पर सुई छिदने कीसी पीड़ाहो और उसमें दाह बहुतहोय उस का रंग बदल जाय और सोनेके समय शान्तहो और उस में विच्छूके काटने कासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जितने उसके पकनेके यत्न करे तौभी पके नहीं और उस सूजनमें तृषा ज्वर अरुचि होय यह लक्षण जिसमें होय तो जानिये कि यह सूजन पक गईहै ॥ और जो सूजन पक जातीहै तो उसकी पहिचान यहहै कि उसमें पीड़ा नहोय ललाई थोडी होय बहुत ऊंचा न होय और सूजनमें तह पड़जाय और पीड़ा होय खुजली बहुत चले सबरे उपद्रव जाते रहें पीछे वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस में अंगुली लगाने से पीड़ा होय राध निकले इतने लक्षण होंय तो जानिये कि सूजन पक गई है इन कच्चे पक्के व्रणोंको जर्राह भली प्रकार से पहचान कर चिकित्सा करै ॥ और जो जर्राह कच्ची सूजन तथा फोड़ेको चीरे और उसे

यह ज्ञान न हो कि पका है या नहीं तो ऐसे जर्राह से इला-
ज नहीं कराना चाहिये । य व्रणकी सूजन के लक्षण
कहे बहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकारके लिखे हैं
यथा वातके, पित्तके, कफ के सन्निपातके, वात पित्तके, वात
कफके, पित्त कफके च.८ के ।

❀ घावों का यत्न ❀

इस प्रकरणमें अपने और उस्ताद के आजमाये हुए नुसखे
लिखता हूं कि जिसके लगानेसे हज़ारों रोगियों को आ-
राम किया है ।

❀अग्नि से जले का प्रयत्न ❀

जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उसको अग्निसे तपा
वो तो शीघ्र आराम होय ।

। अगर आदि गरम वस्तुओं का लेप करे ।

। वा औषधियोंके घृतको या गायके घृतको गरम कर
ठंडा करके लेपकरै ।

अथवा वंसलोचन वड़की जड़. रक्त चन्दन, रसोत, गेरू
, इनको महीन पीस घृतमें मिलाय लेपकरै ॥

अथवा मोम, महुआ, राल; लोध, मजीठ, रक्तचंदन,
इन सबको वराबर लेकर महीन पीसकर गौके घृत में
पीछे इस घृत का लेप करै ।

पटोल का पञ्चांग लेकर उसे पानीमें औटावै जव
जल कर चौथा हिस्सा रहजावै तव कडवे तेलमें मिला
वै जव पानी जल जाय और तेल मात्र रहजाय
। करके लगावै ॥

अथवा पुराना खाने का गीला चूना लेकर इसीको दही के तोड़ में मिलाकर लेप करै । और जो तलसे जला होगा तो उसके फफोले दूर हो जांयगे ।

अथवा जौ को जलाकर इसकी राखको तिलोंके तेलमें मिलाकर घृत मिलाकर लेप करे ।

❀ अथ तेल से जलेहुए का उपाय ❀

तिलका तेल पावभर, और खानेका चूना गीला पुराना ४ पैसेभर उसको हाथसे तीन घंटे तक मसले जब मरहमके सदृश हो जावे तब रुई के फायेसे जले हुए स्थान पर लगावै तो अच्छा होय ।

❀ तलवार के घावों का यत्न ❀

जिस मनुष्य के तलवार अथवा और किसी शस्त्र की धार लगने से खाल फट जाय अथवा और त्वचा की आकृति बदल जाय तो जर्राह को उचित है कि ऐसे रोगी को ऐसे मकान में रक्खे जिस में वायु न लगे फिर खालको सीधी कर के सूत से टांके लगावै उन टाको के घाव के स्थानमें गेहूं की मैदामें पानी और घृत मिलाय पकाले जब पानी जल जाय घृतमात्र रहजाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता २ सेक करै तो घाव तत्काल अच्छा होजायगा ।

❀ अथवा ❀

कुटकी, मोम, हल्दी, मुलेठी, कणगच की जड और कणगच के पत्ते और कणगच के फल, पटोल पत्र, चमेली और नीम के पत्ते इन सबको बराबर ले के घृत में पकावे जब सब दवा जलजाय तब इस घृत का सुहाता २ लेप करे

अथवा–शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उसके वायु की पीड़ा हो जाये उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये और जिस मनुष्य का तलवार आदि से शरीर कटजाय उस के गगेरन की जड़ का रस घाव में भरदे तो घाव तत्काल भर जाय इस घाव वाले का शीतल यत्न करना चाहिये और जो घावका रुधिर पेडू में चला जाय तो जुल्लाब देना चाहिये जिसका नुसका यह है:—

वांस की छाल, अरण्ड का वक्कल, गोखरू, पाषाण भेद इन सबको बराबर कर पानी में औटावै फिर इस में भुना हींग और सैंधा नमक मिलाकर पिलावे तो कोठे का रुधिर निकल जाय ॥

❀ अथवा ❀

जव, कुथली, सैंधानोन, रूखा अन्न इनको खाना भी बहुत फायदा करता है ॥

अथवा—चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, पटोल कुटकी, दारुहलदी, गौरीसर, मजीठ, हडकी छाल, मोम, लीलाथोथा, सहत, कणगच के बीज, ये सब बराबर ले और इन सबके बराबर गो का घृत ले और इन से अठगुना पानीले इन सबको इकट्ठा कर मंदी आग से पकावैं जब पानी जल जाय और घृत मात्र रह जावे तब उतार कर ठण्डा करे फिर इस घृतकी बत्ती करके लगावै ।

अथवा–चमेली, नीम, पटोल, किरमाला, इन चारों के पत्ते, मोम, महुआ, कूट, दारु हल्दी, पीली हल्दी, कुटकी

मजीठ हालो की छाल, लोध; तज, कमलगट्टे, गोरी रस नीलाथोथा, किरमाला की गिरी, ये सब दवा बराबर ले इनको पानी में औटावे फिर इनके पानी में मीठा तेल मिलाकर मन्दी आग से पकावे जब पानी जल जावे और खालिस तेल रहजावे तब इस तेल की बत्ती बनाकर घाव में लगावे तो घाव बहुत जल्द अच्छा होजायगाः—

अथवा--चीता, लहसन, हींग, सर फोका; और कलिहारी की जड़, सिंदूर, आतीस; कूट इन औषधियों को पानी में औटावे जब चौथाई पानी रह जावे तब उस पानी मे कड़ुवा तेल मिलाकर मन्दी आंच से पकावे जब पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाय तब इस तेल को रूई तथा कपडे की बत्ती आदि से किसी तरह घाव पर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होजायः--

अथवा--गिलोय, पटोल की जड, त्रिफला; वायविडंग इन सबको बराबर ले महीन पीस के इन सबकी बराबर गूगल मिलाकर धर रक्खे, फिर इस में से एक तोला पानी के साथ नित्य खाय तो घाव निश्चय भर आवेगाः--

अब ये जो हम ने शस्त्रादिक का मिला हुआ यत्न लिखा इस में कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी जगह शस्त्र लगा हो तो इन्ही दवाओं से यत्न करना चाहिये अब हम स्थान २ के घावों का यथाक्रम यत्न लिखते हैं।

जो किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगी हो और घाव गहरा होगया हो, और हड्डी तक उतर गई हो और चोट से हड्डी के कई टूक हो गये हों तो सब टुकड़ों को असल के

अनुमार मिलावे और जो चूरा हो तो निकाल डाले और उस घाव पर गोमा का रस लगावे फिर घाव में टांके भर देवे फिर इस दवाई से सेके।

❀ सेक की दवा ❀

आमां हल्दी, मेदा लकड़ी, काले तिल, सफेद शकर गेहूं की मेंदा, घी इन सबका हलुआ बनाकर सेके और उसी को बांधे ओर जो तलवार आडी पडी हो और सिरकी खोपड़ी जुदी हो जावे तो दोनों को मिलाकर बांधे और पूर्वोक्तरीति से सेक के मरहम लगावे ॥

❀ मरहम की विधि ❀

सफेदा कासगरी, मुर्दासंग, रसकपूर, अकरकरा गुजराती माजूः ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे, इन सबको पीसकर चार तोले घृत में मिलाकर नदी के जल से धोकर घाव पर लगाया करै और ध्यान रक्खे कि घाव में स्याही न आने पावै ॥

और जो किसी के गलेपर तलवार लगे और उसके लगने से घाव बहुत होजावे तो जर्राहको उचित है कि पहिले रुधिर से घावको शुद्ध करै फिर टांके लगादे और केवल आंवाहल्दी से अथवा हलुए से सेक कर वो मरहम लगावे जिसमें चोकिया सुहागा लिखा है जब पीव गाढी और सफेद निकले और पीलापन लिये हो तो वह मरहम लगावे जो अभी ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

और जो तलवार कांधे पर पड़े और हाथ लटक जाय तो उसको मिलाकर टांके भर देवे और उसमेंभी यही मर-

हम लगावे जो अभी ऊपर कह आये हैं। और एक सांचा लकड़ी का बनाकर कांधे पर बांधे तो आराम होजायगा।

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चाहिये और उस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करै जो टुकडे होगये हॉय तो देखे कि रोगी में सांस है वा नहीं जो सांस होतो चिकित्सा करै और जो सांस बलके साथ आता हो तो और घायल की बुद्धि और औसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि रोगी असाध्य है कोई दम का महमान है परन्तु जो हृदय में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो टांके लगाकर चिकित्सा करै जो परमेश्वर अनुग्रह करेगा तो घायल का प्राण बच जायगा और जो हृदय गुर्दे और कलेजे में घाव होगया हो तो उस घायल की चिकित्सा व्यर्थ है और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करै और उक्त मरहम को बनाकर लगावे अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करै अथवा यह तेल बनाकर लगावे।

❀ तेल की विधि ❀

दारूहल्दी, आंबाहल्दी, भडभूजे की छानसका धूम ये तीनों दोदो तोले इन सबको जौकुट करके नदीके जल में अथवा वर्षा के जलमें भिगोदे और सवेरे काले तिलों का तेल पावसेर मिलाकर मंदमंद आगपर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तो छानकर धररक्खे॥

और उसमें पुराना कतानका कपड़ा भिगोकर घाव पर रक्खे और जो यहां पर वस्त्र प्राप्त नहो सकैतौ विलायती

सूत तेल में तरकरके भरे और खूब बांधे और अंडाखानेको दे और मकोयका अर्क पिलावें वा गोमाका साग पकाकर खिलाया करै और यथोचित पथ्य करावें और घाव पर ध्यान रक्खें कि पीव पीवही के सदृश हो और स्याही नहो और ऐसे घायल को ऐसे एकांत स्थान में रक्खे कि जहां किसी का शब्द भी पहुँचन न पावे ॥ और जो किसी मनुष्य के हाथपर तलवार लगी हो और दो घड़ी व्यतीत होगई होंय तो वो घायल अच्छा न होगा और जो थोड़ी देर. हुई हो और हड्डी वराबर कटगई हो तो आराम हो जायगा । क्यों कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक साध्य है और ठंडा होगया हो तो असाध्यहै और जो तलवार से अगुलियां कट जोवें और गिर न पड़ें तो अच्छी हो सकती हैं और किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है यह स्थान बहुत भयानक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि फोते कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से फोतों का जरूप निकला रहे और उस पर वह लगावे जो अंग्रेजो के यहां लड़ाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके तो देवदारू का तेल वा छियूटा का तेल लगावें और जो चूतड से पांव के नख तक घाव होतो उसकी चिकित्सा उस है अनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करे जो कम

हाथ के घावकी वर्णन कीगई है और इन स्थानोंके सिवाय शरीर में किसी जगह तलवार के लगने से घावहों तौ सब जगह की चिकित्सा इसी तरह इनहीं औषधियों से करनी चाहिये, और तलवार, सेल, फरसा, चक्र, इतने शस्त्रों के घावों का इलाज इन्हीं दवाओ से होता है ॥

❀ अथतीर लगने के घाव का यत्न ❀

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के भीतर अटक रहा होतो घावको चारों ओर से दवा कर निकाले और घावको चौडा करै कि हाथ से तीर निकल सके और भीतर के तीर की परीक्षा यह है कि उस घाव में दूसरे तीसरे दिन रुधिर वहने लगता है और तीर जोड की जगह रह जाता है ॥

और जो मांस में लगता है तो पार होजाताहै उसके घाव पर दोनों ओर मरहम लगावै और बीच में एक गद्दी बांधे इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अपने अनुग्रह से आराम कर देता है ।

यदि किसी की छाती वा नाभि में तीर लगे और पार हो जावै तो जो तीर लगकर अलग निकल जावे तो उपरोक्त चिकित्सा करे और जो भीतर अटक रहे तो औजार से निकाल कर यह रोगन भरे ॥

❀ नुसखा रोगन ❀

भांगरे का अर्क, गोमा का अर्क, नीमके पत्तों का अर्क, हेंभूटाका अर्क, दो दो तोला, गेरू, अफीम एक २ तोले, सब को आध सेर तिलके तेल में मिलाकर चालीस दिन तक

धूपमें रक्खे और ऐसे समय पर काममें लावे ॥ यह तेल अन्य प्रकारके घावों को भी भर देता है ॥

यदि किसीके पेढू में तीर लगाहो तो बहुत समझ के चिकित्सा करे क्योंकि यह स्थान कोमल है जो इस स्थान में तीर लगकर निकल गया हो तो उत्तम है और जो रहगया होतो कठिनतासे निकलता है क्योंकि यह स्थान न तो चीरनेके योग्य है और न तेजाव लगानेके योग्य है अतएव वहां चुम्बक पत्थरको पहुंचावे तो उत्तम है ॥ क्योंकि लोह को चुम्बकका पत्थर खेंच लेताहै और जो तीर पार निकल गया होतो वह चिकित्सा करे जो ऊपर वर्णन की गई है और जिसमें भांगरे का अर्क लिखा है ॥

यदि किसीकी जंघामें तीर लगेतो वह स्थान भी तीर के भीतर रहजाने काहै क्योंकि मांस और हड्डी यहां की भीतरी है ॥ उचित है कि घावको चीरकर तीरको निकाले इसमें कुछ डर नहीं है परन्तु डर यहहै कि जो घाव भीतर रहजाय तो बहुत काल में अच्छा होता है और जोड़ो के घावोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकी है इसलिये घावको चौड़ा कर के तीर निकाले तो हड्डी का हाल जाना जावे कि हड्डी में कुछ हानि पहुँची वा नहीं जो हड्डी पर हानि पहुंची होतो हड्डी की किरचें निकालकर चिकित्सा करे ॥

यदि किसी के घुटने में तीर लगेतो उसकी भी वही व्यवस्था जानो जो जंघा के घाव मे वर्णन कीगई है ॥ और मैंने तीर के घाव घुटने से पांव तक कम देखे हैं यदि दैव योग से

नार लग भी जाय तो उसी प्रकार से चिकित्सा करै जैसा कि ... वर्णन करते चले आये हैं:—

❀ घावकी परीक्षा ❀

जिस घाव में तीर आदि शस्त्रकी नोंक रहजाय उसकी पहचान यह है कि घाव काला और सूजन से युक्त हो फुंसियों को लिये हो और उस घाव का मांस बुंद बुद स-मान ऊंचा होय और उस में पीड़ा होय तो उस घावको शस्त्र समेत जानिये ॥

❀ कोठे की परीक्षा ❀

जिस मनुष्य के कोष्ट में तीर रह गया हो उसकी पहचान यह है कि शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसोंको नांघ कर पीछे उन नसों को चीर कर और कोष्ट के विषे रहा हुआ वह शस्त्र अफरा करै और घाव के मुख में अन्न और मल मूत्र को ले आवै तब जानले कि इस के कोष्ट में शस्त्र रहा है ॥

❀ अथ गोला के घाव का यत्न ❀

जो किसी मनुष्य के सिर पर गोली लगे तो उस के दो ... एक तो यह कि लगते ... चली गई होय ... वह कि गोली दूरसे लगी ... सिरकी ... में रहजाती है इस कारण कर ... लोग ... है कि ... तर ... गोली ... घाव में ... गोली ... हड्डी

जो कुछ दूरसे लगी हो तो भेजे के भीतर रहजाती है और निकालने के समय रोगी के बलको देखना चाहिये कि गोली निकालनेमें वह मरतो न जायगा और जो उसका मरजाना संभव होतो चिकित्सा न करै और जो देखेकि रोगी इस कष्टको सहसक्ताहै और उसके बंधुलोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजेमें से गोली को निकाले और सरके घावको सेकना कम उचित है,और चिकित्सा के समय पहिले यह मरहम लगावे जिससे जला मांस निकल जावेः—

❀ मरहम की विधि ❀

जंगाल हरा, खालिस शहत, एक एक तोले, सिरका तेज दो तोले, इन सबको मिलाकर कलछी में पकावे जब चासनी होने पर आवे तब ठंडा करके लगावै।

❀ दूसरा नुसखा ❀

मुर्गी के अंडे की सफेदी दो अदद, आतशी शराब चार तोले दोनों को मिलाकर लगावै।

यदि गोली गले में लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करै जैसी कि ऊपर वर्णन की गई है।

यदि गोली किसी की छाती में लगी हो तो उसकी व्यवस्था यह है कि जिस ओर को मनुष्य फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिरजाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी,और निर्बल होगा तो रह जायगी इस पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढा होताहै और छाती की बराबरमें दिल यानी हृदय उपस्थित है उसका ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और बाजी गोली

कपडे से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल जाती है और कपडा रहजाता है और जिस ओर को गोली निकल जाती है उस ओर का घाव चौडा हो जाता है उचित है कि घावको चीरकर वा पकाकर पहिले कपडे को निकाल लेवे और कपड़े रहजाने की यह पहिचान है कि घावमें से पतली और स्याह पीव निकला करती है पहिले घाव को शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा करे घबराहट को काम में न लावै।

यदि किसी की छाती से पेड़ूतक गोली लगी हो तो उस की भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी चाहिये जैसी कि ऊपर वर्णन की गई है।

यदि किसी के अंडकोषों में वा जंघासे पिंडली तक कहीं गोली लगी हो तो चिकित्सा के समय देखे कि गोली निकलगई वा नहीं, निकलगई हो तो उत्तम है और जो रहगई होतो गोली को निकालकर घावको देखे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूटगई होतो छोटे टुकड़ों को निकाल डाले और बड़े टुकड़ों को वहांही जमादे और उसपर सुर्ख विलायती रसौत भरदे और स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगादेवे और खूब कसकर बांधे और तीन दिनके पीछे खोलकर देखेकि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई हो तो उत्तम है नहीं तो उसको भी निकाल डाले अथवा समय पर जैसी मतिहो वैसा करे और देखता रहे कि घाव

में सफेदी और उसके आस पास स्याही तो नहीं हुई और घावमेंसे दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव तो नहीं निकलता क्योंकि यह लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली के हरएक घावमें वह दवाई लगावे जो सिरके घावमें वर्णन की है अथवा उस दवाई को लगावे जिसमें अंडेकी सफेदी है उसदवाईमें पुरानी रुईको भिगोकर घावपर रखना चाहिये और सम्पूर्ण शरीर में किसी मुकामपर गोली लगी हो उन सब जगह के घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होता है।

यदि किसीके विषकी बुझी तलवार, तीर, बरछा, कटार; फरसा. चक्र, आदि शस्त्र लगेहों तो उसकी यह परीक्षाहैकि घाव तो ऊपर बढ़ता जाता है,और मांस गलताजाताहै और दुर्गंध आती है और प्रतिदिन घावका रंग बुरा होता जाता है और वहां का मांस तथा रुधिर स्याह पडजाता है बस उचित है कि पहिले सब स्याह मांसको काट डाले जो रुधिर जारी होजाय तो रुधिर बंद करने वाली दवाई करे जो ऊपर वर्णन की है और दूसरे दिन गेरू नमक फिटकरी गुनगुनी करके बांधे और यह मरहम लगावै।

❀ मरहम की विधि ❀

पहिले गौका घी आधपाव लेकर गरमकरे फिर उसमें एक तोला मोम डालकर पिघलावे पीछे कबेला १ तोले राल सफेद १ तोले, रतनजोत १ तोले, इन तीनों को भी पीसकर उसमें मिलादे फिर थोड़ासा औटावै फिर ठंढा करके एक फाया घाव के अनुसार बनाकर उसपर इस मरहमको लगाकर घाव पर रक्खे और जो कोईकहै कि यह जहरबाद है तो उत्तरदेवै

कि यह सत्य है परन्तु उसमें मैला मैला पानी निकलता है और इस में लाली लिये हुए पानी निकलता है जिसको कच्चलोहू कहतेहैं और जहरवाद घाव शीघ्र बढ़ता है और यह घाव देरमें बढता है और जहरवाद शीघ्र गलताहै और यह देरमें, जहरवाद के घाव में मनुष्य शीघ्र मरजाताहै और इसमें देरमें मरता है और जहरवाद के रोगी को किसी समय कल नहीं पड़ती और ऐसे घायलको जितनी पीड़ा होती है उसे न्यूनाधिक नहीं हो सकती॥ उचित है कि चिकित्सा बुद्धिमानी से करे और जो सूखजानेके पीछे कोई किर्च हड्डी की फिर दीखपड़े तो फिर तजाब लगावे कि घाव चौड़ा होजावे तब हड्डीको निकाल डाले।

❀ तेजाब की विधि ❀

लहसन का रस, कागजी नीबूका रस, चार चार तोले सुहागा चौकिया तूतिया सब्ज एक एक तोला, इन दोनों को महीन पीसकर पहले दोनों अर्कोंमें मिलाकर चारदिवस पर्यंत धूपमें रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावे॥ फिर किसी मरहम का फाया रक्खे॥

❀ अथ हाड़ टूटने का यत्न ❀

जानना चाहिये कि हड्डियोंके बारह भेद हैं सो यथा क्रम लिखते हैं तो ग्रंथ बहुत बढ़जाता है और कुछ मतलब हासिल नहीं होताहै इस वास्ते बहुतसा बखेड़ा नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात है सोई लिखते हैं॥

❀ अथ हाड़ टूटनेकी पहिचान ❀

अंगशिथिल होजाय और उस जगह हाथ लगानानसुहावे

नहीं और वहां शरीर फडके और शरीर में पीड़ा और शूल होय रात दिन कभी भी चैन नहीं पड़े ये लक्षण होंय तबजा निये कि इस मनुष्य की किसी प्रकारसे हड्डी टूटी हैं ।

जिस मनुष्यकी अग्नि मंद होजाय और कुपथ्य कियाकरै वायुका शरीर होय और जिसमें ज्वर अतीसार आदि भी होंय ऐसे ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचताहै ॥ औरजिस मनुष्यका मस्तक फटगयाहो कमर टूटगई होय और संधि खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाटका चूर्णहोजाय हृदय, गुदा, कनपटी, माथा, फटजाय जिसरोगीके ये लक्षण होंय वह असाध्य है और डाढ़को अच्छे प्रकार बांधे, पीछे कडा बांधे, और वह बुरी तरह बंधजाय और उसमें चोट आजाय मैथुनादिक करतारहे तो उस रोगीका टूटाहाडभी असाध्य होजाता है ॥ अब शरीरके स्थान २ के हाडोंमें चोट लगीहो उनके लक्षण कहते हैं ॥ कंठ, तालू, कनपटी, कंधा सिर पैर कपाल, नाक, आंख इन स्थानोमें किसी तरहकी चोट लगजावै तो उस जगहका हाड नवजाय और पहुंचा, पीठ आदि के सीधे हाडहैं सो टेढ़े होजांय; कपालको आदिले जो गोल हाड़ हैं सो फटिजांय और दांत वगैरह जो छोटे हाड़ हैं सो टूटजांय इन सब हाड़ों का यत्न लिखता हूं ।

जो किसी मनुष्यके चोटसे वा अच्छे कारणसे हाड और संधि टूट जावे तो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोटपर शीतल पानी डाले पीछे उसके औषधियों का सेक करै ।

अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करै सो शीतल

इलाज करे और बुद्धिमान जर्राहको चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और बहुत कड़ीभी न बांधे अच्छी तरह साधारण बांधे क्योंकि जो पट्टी ढीली बँधेगी तो हाड़ जमैगा नहीं और बहुत कड़ा बांधने से शरीर की खालमें सूजन होजावेगी और पीड़ा होगी और चमड़ी पकजायगी इसी कारण पट्टी साधारण बांधना अच्छा होता है बस जिस मनुष्यके चोट लगीहो उसके यह लेप लगावे।

ॐ लेपकी विधि ॐ

मेदा लकड़ी; आंवले, आंवाहल्दी, पंवार के बीज, साबुन पुरानी ईंट ये सब बराबर लेके महीन पीसकर और इसमेंथोड़ा काले तिलोका तैल मिलाकर आगपर रखकर गरम २ लेपकरे

अथवा--सुगास. गेरू, खतमीके बीज; उरद,एलुआ, ये सब दवा एक एक तोले लेकर और हल्दी छः माशे सोया छः माशे, लोबान छः माशे, इन सबको पीसकर लेप करे ॥२॥

अथवा--गेरू ६ माशे, झाऊ के पत्ता नौ माशे, गुलाब के पत्ता नौ माशे; बेरके पत्ता नौ माशे इनको महीन पीसकर लेप करने से लाठी आदिकी चोट, गिरपड़ने की चोट और पत्थर आदिसे कुचल जानेकी चोटको आराम होता है ॥३॥

अथवा--हल्दी, हरीमकोयके पत्ते, गेरू, ये तीनो दवा एक२ तोले, खिली सरसों दो तोले इनको महीन पीसकर लेप करने से सब प्रकार की सूजन दूर होती है ।.४॥

अथवा—गेरू कालेतिल, आंवाहल्दी, हालोंके बीज, येसब बराबर लेकर थोड़ी अलसी का तेल मिलाके लेप करने से सब प्रकार की चोट अच्छी होती है ।

अथवा—मटर का चून, चनाका चून, छे डालो अलसी के बीज ये सब दवा नौ नौ माशे ले, लाल बूरा छे माशे, काली मिरच तीन माशे, इन सबको पीसकर थोड़े सिरके में मिलाकर लेप करे।

अथवा—गेरू एक तोले, सुपारी एक तोले, सफेद चन्दन एक तोले, रसोत छः माशे, मुर्दासंग छः माशे, एलुआ छः माशे, इन सबको हरी मकोय के रसमे पीसकर लगावे तो सब प्रकार की चोट जाय।

अथवा—एलुआ तीन माशे, खतमी के बीज छः माशे, बनफशाके पत्ते छः माशे, दोनों चन्दन बारह माशे, भठवास छः माशे, नाखूना छः माशे, इन सबका चूरण करके मुर्गी के अण्डे की सफेदी में मिलाके गुनगुना करके लगावे।

अथवा—खिले काले तिल, खिली सरसों, गेरू एक एक तोले, संभालू के पत्ते डेढ तोला, मकोय के पत्ते डेढ़ तोले इन सबको पानी में महीन पीसकर गरम गरम लेप करे तो सब प्रकार की चोट अच्छी होजाती है।

❀ अथवा ❀

बारह सींगेके सींगकी भस्म तीन माशे, लोबान तीन माशे भटवास का चून दो माशे, नौसादर छः माशे बाकला का चून दो माशे, बबूल का गोंद छः माशे, कड़वे बादाम की मिंगी एक तोला, इन सबको पानी मे पीसकर लगावे तो सब प्रकार की चोट दूर होजाती है।

❀ अथवा ❀

कड़वे बादाम की मींगी, पुरानी हड्डी एक २ तोले सीप

मिलाय एक महीने तक चाटै तो शरीर की सब प्रकार की चाट और टूटी हड्डी अच्छी होजायगी और शरीर वज्र के समान होजायगा।

और जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट लगी होय उसके वास्ते यह दवा बहुत फायदा करतीहै।

❀ नुसखा ❀

मेथी, मैदा लकड़ी, सोंठ, आंवला, इन सबको महीन पीस गौ मूत्र में मिलाय जहां चोट लगी होय वहां लेप करै तो चोट अच्छी होय॥ और जो किसी मनुष्य को पशु ने मारा हो तथा किसी ऊंचे मकान से गिरा हो तथा भीत आदिके नीचे दबजाय और इस कारण से घायल होगया हो तो उस पर यह लेप लगाना चाहिये॥

❀ लेपकी विधि ❀

पुराना खोपड़ा, आंबाहल्दी, मैदालकडी, कालेतिल, सफेद मोम, ये सब दवा एक २ तोले पीसकर चोट पर लेप करै और जो उसपर घाव आगया होतो पहिले कहे हुए मरहमों का फाया बनाकर लगावे॥

अथवा-प्याज एक तोले, गेहूंकी मेदा २ तोले,प्रथम प्याज को छील उसकी मींगी निकाल कर तेल में छौंकले; फिर उस में मैदा को डाल थोड़ा पानी मिलाकर लूपरी बनावे और चोट को सेके फिर इसी को बांधे तो चोट अच्छी होय॥

और जाड़के दिनों में [illegible] में घी बासन में जम जाता है उसके [illegible] में घी की फांस लगजाती है और [illegible] यह है कि

पहले हाथको आग पर सेके फिर यह दवा लगावेः-

❀ नुसखा ❀

अजवायन खुरासानी, भैंसा गूगर, विलायती साबुन,सैंधा नमक, गुड़ ये सब बराबर ले पानी में महीन पीस, जब मरहम के सदृश होजावै तब उस घावपर लगावै और इससे आराम न होतो यह मरहम लगावे।

❀ नुसखा ❀

साबुन,गुड़,गेंहू की मैदा एक२ तोले पानी में पीस इसका फाया बनाकर लगावे,और इसके ऊपर एक पान गरम कर के बांधे और सेके और जो घाव अच्छा हो और पानी निकलना बंद न होता हो तो नीचे लिखा तेजाब लगाकर घाव को चौडा करे।

❀ नुसखा तेजाब ❀

गंधक दो तोले, नीलाथोथा दो तोले, फिटकरी सफेद दो तोले; नौसादर दो तोले, इन सबको महीन पीसकर आधपाव दही में मिलाकर एक हांडी में भरकर चोयेके सदृश तेजाब खेंचे और एक बूंद घावपर लगावे तो घाव गहराहो जायगा पीछे इसपर वही मरहम लगावै जो तेजाबके नुसखे से पहले लिखा है॥

यहां तक सब घावों का इलाज तो लिखा जा चुका है परंतु अब दो चार नुसखे मरहम के यहां इकट्ठे लिखे जाते हैं ये मरहम सब प्रकार के घावों का फायदा करती है॥

❀ मरहम १ ❀

राल एक पैसे भर;सफेदमोम दो पैसे भर,मुर्दासंग एक पैसे

भर, इन सबको महीन पीसकर रक्खे प्रथम गौका घृत छः पैसेभर लेकर गरमकरै फिर उसमें मोमडाले जब मोम पिघल जाय तब सब दवाइयोंको मिलावै फिर इसको कांसी की थाली में डालकर १०८ बार पानी में धोवे पीछे इसको घाव पर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय इसको सफेद मरहम कहते हैं ॥

❀ मरहम २ ❀

शोधा हुआ पारा १ तोले, आंवलासार गंधक एक तोले; मुर्दासंग दो तोले, कबेला चारतोले, नीलाथोथा ४ माशे गौ का घृत पावभर और नीमके पत्तों का रस अनुमान माफिक डाल कर इन सबको मिलाकर दो दिन तक खूब पीसे जब मरहम के सदृश होजाय तब घावपर लगावै ,तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ३ ❀

सफेद मोम; मस्तंगी, गोंद, मैंढल: नीलाथोथा, सुहागा. सज्जी. सिंदूर.कबेला मुरदासंग.गूगल,कालीमिर्च. सोन गेरू. इलायची, वेर, सफेदा, सिंगरफ,शोधी गंधक, ये सब दवा बराबर, ले और मोम को छोड़कर सब दवाओंका न्यारी २ महीन पीसकर रक्खे प्रथम घृतको गरमकर उसमें मोम पिपिघलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दोदिन तक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धररक्खे और घाव पर लगावे ये मरहम चोट के घाव, शस्त्रादिक के घाव फोड़े आदि के घाव, और सब प्रकारके घावोंको फायदा करता है ॥

❀ मरहम ४ ❀

नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा, खैरसार, सिंगरफ, मोम, केसर; गौका घृत ये सब बराबर ले फिर घृतको गरमकर, नीचे उतारे, इसमें पहिले; नीलाथोथा पीसकर डाले, पीछे उसी समय उसमें मोम डालकर पिघलायके फिर इसमें सब औषधि महीन पीसकर डाले इन सबको एकजीव कर कांसे की थालीमें डाले, और उसमें ज्यादापानी डालकर एक दिनभर हथेली से रगड़े फिर इसको घावोंपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ५ ❀

सिंगरफ तीन पैसेभर, सफेदमोम, तीन पैसे भर, नीमके पत्ते की टिकिया तीन पैसे भर; मुर्दासंग १ पैसे भर प्रथम घृत को औटाय उसमें नीमकी टिकिया पकाकर उन टिकियों को जलाकर फेंकदे फिर उस घृतमें मोमको पिघलावे फिर सब औषधियों को महीन पीसकर मिलावै जब मरहम के सदृश होजावै तब लगावै तो घावमात्र अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ६ ❀

जिस मनुष्य के हाथपावों में बिवाई फटीहो उसके वास्ते ये मरहम अच्छा है ॥

राल एक पैसे भर, कत्था १ पैसेभर, चमेलीका तेल चार पैसे भर, कालीमिर्च १ पैसेभर, गौका घृत दोपैसे भर, इन सबको महीन पीसकर लोहेके करछले में मरहम बनावे पीछे इसको लगावे तो हाथपांवो की बिवाई अच्छी होंय ।

❀ मरहम ७ ❀

नीमके पत्तोंका रस एकसेर ले और गौका घृत पावसेर ले प्रथम घृतको लोहे के बरतन में गरमकर उसमें नीम के पत्तों का रस मिलावै जब ये दोनों खुब गरम होजांय उसमें राल चार पैसे भर डालकर पिघलावै जब वह पत्तों का रस जल जाय और गाढ़ा होजाय तब कत्था एक पैसे भर, नीलाथोथा १ पैसेभर, मुरदासंग एक पैसे भर इन सबको महीन पीसकर उसमें डाल एक जीव कर, पीछे कपड़े में लगाय घाव के ऊपर लगावै तो घाव निश्चय अच्छा होय।

❀ मरहम ८ ❀

रांगकी भस्म छः माशे, सफेदमोम एक तोले, गुलरोगन दो तोले, इन सबको पीसकर गुलरोगनमें मरहम बनावै और घाव पर लगावै तो घावको बहुत जल्दी सुखा देती है।

❀ मरहम ९ ❀

जिस घाव में पानी निकला करता है उसके लिये यह मरहम लगाना अच्छा है:—

गूगल चार माशे, रसौत १ मासे, इन दोनों को पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे, पीलामोम मिलाके घोटके मरहम बनावै और घावपर लगावै तो घाव से पानी निकलनाबंदहोय

❀ मरहम १० ❀

उशुक पाव भर, गूगल पांच माशे, इन दोनों को चार तोले सरसों के तेलमें घोटकर एक तोले पीला मोम मिलाके आग पर धरै, और राई समुद्र फेन जरावन्द तवील. गंधक. आंवलासार पांच पांच माशे चूरन करके मिलावै

और जिस किसी फोडे को शीघ्र पकाया चाहे वहां इसी मरहम में गुलखतमी और उसके पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीसकर मिलावै और गुनगुना करके फोड़े पर लगावै तो फोडे को बहुत जल्दी पकाकर फोड देगा।

❀ मरहम ११ ❀

मीठा तेल, और कूएका पानी पांच पांच तोले मिलाकर कसकुट के पात्र में हाथ से खूब घोटे कि मही के तुल्य होजावे पीछे फिटकरी, लीलाथोथा, लाल कत्था, सफेद राल, सवा सवा तोले महीन पीसकर उसमें मिलावै और हथेली से खूब रगडे जब मरहम के समान होजाय तो चीनी के बर्तन में रख देवै और जब इस मरहम को काममें लावै तब नमक की पोटली से घावको सेककर यह मरहम लगावै बन्दूक की गोली के घावको नासूर के घावको और बुरे २ बादी आदि के घावों को अच्छा करता है।

❀ मरहम १२ ❀

आध पाव कडवे तेलमें पांच तोले पीलामोम पिघलाके उसमें एक तोले बिरोजा पिलाके पीछे दो तोले सफेद राल फिटकरी भुनी छः माशे, मस्तगी छः माशे इनका भी चूरन करके मिलावै और खूब घोटके मरहम के सदृश बनाकर घावों पर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय।

❀ अण्डकोषों के छिटक जाने का यत्न ❀

जानना चाहिये कि फतक रोग अण्डकोषों के बढ़ जाने को कहते हैं और यह रोग अंडकोषों में तीन प्रकार से होता है एकतो यही कि किसी प्रकार चोट लग जाने से

भीतर फोता बढ़ जाताहै उसकी चिकित्सा में बहुत से लेप और बफारे काम आते हैं और यह रोग इस औषधि से बहुत शीघ्र आराम होजाता है:—

❀ नुसखा नं० ३

हरी सौंफ; सुर्खीमकोय, खुरासानी अजवायन, बाबूनेके फूल, मूंगिद के बीज; गेरू ये सब दवा एक २ तोले ले इन सबको पानीमें पीसकर रक्खे और इसके पहिले फोतों पर सोये के सागका बफारा देकर यह लेप जो बना रक्खा है लगावे और फिर ऊपरसे वही साग बांधे जिसका बफारा दिया गया है इस पर पानी न लगने दे।

एक कारण इस रोग के होने का यह है कि पहिले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की विशेषता होती है। इस से प्रत्येक जोड़ में बादी उत्पन्न होजाती है और पेटके सब अवयवों को बादी भरपूर कर भीतर से फोते को बढ़ा देती है तो अज्ञान लोगोंसे उसकी चिकित्सा को पूछते फिरते हैं। और किसी उत्तम जर्राह से नहीं पूछते कि वह फस्द या जुल्लाब बतलावे या कोई लेप तथा बफारा बतावे बहुत से मूर्ख लोग उसको तमाखू के पत्ते तथा टेसू के फूल बतला देते हैं उन दवाइयों के करने से रोग और भी बढ़जाता है इस लिये [illegible] है कि [illegible] या जर्राह रोगी की प्रकृति के अनुसार [illegible] फस्द खुलवावे अथवा

हरी सौंफ मूनेकी मैंगनी एक तोले, इन सबको पानी में पीस कर गरम करके लगावें और जो जर्राह की राय हो तो पहिले वफारा देवे जिसकी यह दवा है:—

नुसखा।

सोयेके बीज, सोयेके पत्ते, चमेलीके पत्ते इमलीके पत्ते हरी मकोय, पित्त पापड़ा, इनको दोदो तोले लेकर पानी में औटाकर वफारा देवे, इसका फोक बांधे जो कुछ आराम दीख पडेतो यही करता रहे और जो इससे आराम न हो तो यह वफारा देवे:—

❀ नुसखा ❀

संभालू के पत्ते; सूखे महूवे; दो दो तोला इन दोनोंको जल में औटाकर वफारा देवे, और ऊपरसे इसीका फोक बांध देवे तीसरा कारण इस रोगका यह है कि बहुतसे मनुष्य जल पीकर दौड़ते हैं और यह नहीं जानते कि इसमें क्या हानि होगी यह काम बहुतही बुरा है और इसके सिवाय एक बात यह है कि किसी मनुष्य की प्रकृति में रतूबत अर्थात् तरी अधिक होता है और ज्वरकी विशेषतामें कोई मनुष्य पानी रुककर पीता है और कोई अधिक जल पीता है इस बहुत जल पीनेसे दो वा तीन रोग उत्पन्न होतेहैं एकतो यह कि नले बढजाते हैं और दूसरा यहकि पोतों में पानी उतर आता है तीसरा यहकि तिल्ली बढ़जाती है ऐसा करने से कभी २ फोते बढ़जाते हैं इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहुत पुस्तकों में लिखी है और हमारे मित्र डाक्टर साहबने इस की चिकित्सा इस प्रकारसे लिखीहै कि पहिले इसमें नश्तर

देवै और उसका सब पानी निकाल कर घावमें कोई ऐसी औषधि लगावै कि घाव बहता रहै और सात आठ दिनके अनन्तर अच्छा होने का मरहम लगावै और यह दवाई खिलावै क्योंकि भीतरसे पानीका विकार दूर होवे तो घाव सूखकर जल्दी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग उभर ने नहीं पाता और वह खानेकी दवाई यह है ।

❀ नुसखा ❀

कुदरूगाद, वंसलोचन लीला, जहर मोहरा, खताई, केशर, रीठा, मुलहठी, ये सब दवा एक २ तोले, अलसी छःमाशे खतमीके वीज छः माशे, इन सबको पीसकर चार माशे सबेरे खिलावै और ऊपर से एक तोला शहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिलावे ।

यह रोग इस कारण से भी होता है कि किसी मनुष्यके सोजाक होता है इससे उसकी इन्द्री में पिचकारी लगानी पड़ती है तो फोतों में पानी उतर आता है और वह पानी फोतों के भीतर तेजाब के समान मांसको काटता है जब वह मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेडूकी ओर रुकता है तो इससे भीतर का मांस कटजाने से आंतें उतर आती हैं फिर यह रोग असाध्य होजाता ॥

और यह रोग इस कारण से भी होता है कि कोई मनुष्य भोजन करके और जल पीकर बल करे वा किसी से कुश्ती लडे अथवा दीवाल पर चढ़े और कूदपडे इनके सिवाय और भी कितनेही कारण हैं कि जिनसे आंतें उतर आती हैं पहिले पेडूपर गुठली सी होती है फिर मनुष्य के

चलने फिरनेसे कुछ दिनों के पीछे वह आंत फोतोंमें उतर आती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आंतें पेट में चली जाती हैं और उठते बैठने तथा लेटते समय उसका शब्द होती है उस रोगकी चिकित्सा यह है कि एक लंगोट वा अंग्रेजी फीता जिसका नाम ट्रस है; और जिसके एक तथा दोनों सिरोंपर घुंडी होती है बांधाकरें, अथवा वे उपाय करें जो पानी के कारण फोता के प्रकरण में वर्णन कर आये हैं उस से बहुत लाभ होगा।

❀ सफेद दाग का यत्न ❀

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादिक के घाव हुए हों और वे मरहम आदि के लगाने से अच्छे हो गये हों फिर उन घावोंके निशान सफेद होगये हों तौ उसके यह औषधि लगानी चाहिये।

❀ नुसखा ❀

मैंनसिल, मजीठ, लाख, दोनों हल्दी ये सब दवा बराबर ले महीन पीस घृत और शहद मिलाय दाग के ऊपर लेप करे तो घावका चिह्न मिटकर शरीर की त्वचाके समान होजाय

❀ छीप और झांई का यत्न ❀

जो किसी मनुष्यके मुख छाती या शरीर पर किसी जगह सफेदी लिये दाग होतौ बहुतसे मनुष्य उसकोबनरफ अथवा छीप कहते हैं उसका यत्न यह है।

❀ नुसखा ❀

सफेद सनाय. ककरोंदा की जड़; मूलीके बीज, चौकिया सुहागा कच्चा, इन सबको जलमें पीसकर लेपकर और जो उससे आराम न हो तो यह दवा करे।

❀ नुसखा ❀

मूलीके बीजों को पानीमें पानीमें पीसकर लगावे और धूपमें बैठ इसी प्रकार सात दिन करे ।

❀ सूचना ❀

विदित होकि इस पुस्तकमें मैंने फोड़ा फुन्सी शस्त्रादिक के घाव आदि अनेक रोगोंके यत्न यथा क्रमें लिखे हैं परन्तु आंख बनाने की विधि और हड्डी जोड़ने की विधि और और तलवार के उस घावको जो चार अंगुल गहरा हो और उस घावको जो सबेरे हुआ और सायंकाल को अच्छा हो गया और गोलीके लगने की वह विधि कि जिससे घाव चीरा न जावे और गोली निकल आवे ये इलाज मैंने इस पुस्तक में इस वास्ते नहीं लिखे कि ये काम विना उस्ताद से सीखे नहीं आते क्योंकि ये काम बहुत कठिन है परन्तु इस पुस्तक में हरएक प्रकार के फोड़ों का इलाज लिखा है इस वास्ते मुझको विश्वास है कि इस पुस्तकको हरएक गृहस्थी गरीब तथा अमीर अपने २ घरमें रक्खेंगे क्योंकि इससे बहुतफायदा होगा और कदाचित इसमेंवेरोग जिनकोहम निषेध कर चुके हैं उनें लिख देते और कोई मनुष्य उनको लिखा देख बिना समझे इलाज करता और उस रोगी को हानि पहुंचता तो उस पापका भागी मुझको भी होना पडता क्योंकि ये नेत्रादिक के स्थान बड़े कोमल होते हैं और उस के सिवाय यह भी बात प्रत्यक्ष है कि इस सब शरीर में नेत्रही [illegible] हरएक मनुष्य को नेत्रका इलाज [illegible] और [illegible] रोग का इलाज

चतुर डाक्टर तथा जर्राह को ही करना उचितहै। तौ भी कुछ वर्णन इसका अन्य भाग में लिखेंगे जिससे मनुष्य सावधान रहकर रोगों से बचे रहें।

❀ फस्द का वर्णन ❀

अब फस्दका वर्णन किया जाता है मनुष्यों को उचित है कि निराहार होकर फस्द खुलवावे अब फस्द खोलने की तारीखों के गुणागुण लिखते हैं; दूसरी तारीख को फस्द खुलवानेमे मुखका पीलापन दूरहोता है ॥२॥

तीसरी तारीख को फस्द खुलवानेसे मुखपर पीलापन छा जाता है ॥ ३ ॥

चौथी तारीखको फस्दसे शरीर के दाग धब्बेदूर होजातेहैं॥४॥

पांचमी तारीख को फस्द खुलवानेसे मनुष्य प्रसन्नरहताहै।५।

छटी तारीखको मुखकी जोति तेज होती है ॥ ६ ॥

सातवी तारीख को शरीर मोटा होता है ॥ ७ ॥

आठवीं तारीखको शरीरमें निर्बलता उत्पन्न होती है ॥८॥

नवीं तारीख को शरीर में खुजली होजाती है ॥ ९ ॥

दशवीं तारीख में बल होता है ॥ १० ॥

ग्यारहवीं तारीख में कंपन वायु दूर होती है ॥ ११ ॥

बारहवीं तारीख को फस्द खुलवाना निषेध है ॥ १२ ॥

तेरहवी तारीख को शरीर में पीड़ा उत्पन्न होती है ॥ १३॥

चौदहवीं तारीखको नींद नष्ट हो जाती है ॥ १४ ॥

पन्द्रहवीं तारीखको बीमारी नहीं होती ॥ १५ ॥

सोलहवी को बाल सफेद नहीं होता ॥ १६ ॥

सत्रहवीं को मन अप्रसन्न नहीं होता ॥ १७ ॥

अठारहवीं को हृदय बलवान नहीं होता ॥ १८ ॥
उन्नीसवीं को मस्तक प्रबल होता है ॥ १९ ॥
बीसवीं को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ॥ २० ॥
इक्कीसवीं को प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २१ ॥
बाईसवीं को कंठ पीडा और दंत पीड़ा दूर होती है ॥ २२ ॥
तेईसवीं को निर्बलता अधिक होती है ॥ २३ ॥
चौबीसवीं को शोकित नहीं होता है ॥ २४ ॥
पच्चीसवीं को खफकान रोग दूर होता है ॥ २५ ॥
छब्बीसवीं को गुरदेकी तथा पसली की पीडा दूर होती है २६
सत्ताईसवीं को बवासीर जाती है ॥ २७ ॥
अट्ठाईसवीं को सब प्रकार की पीड़ा नष्ट होती है ॥ २८ ॥
उनतीसवीं को प्रत्येक रोगको आराम होता है ॥ २९ ॥
और तीसवीं तारीख को फस्द खुलवाने से मनको भ्रम और व्याकुलता नहीं होती ॥ ३० ॥ तीसों तारीख में फस्द खुलवाने का शुभा शुभ फल कहा गया है ये तारीख मुसलमानी महीनों की जाननी चाहिये ।

❀ वारों के अनुसार फस्द खुलवाने का फल ❀

शनिवार को फस्द खुलवाना जनून आदि रोगोंको दूर करता है, रविवार को फस्द खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है ।

सोमवारको फस्द खुलवाना रुधिर विकारको शांत करता है बुद्धवार को निषेध कहा है ॥

बृहस्पतिवार को फस्द खुलवाना खफकान रोगको उत्पन्न करता है और शरीर में वादी को बढ़ाता है ॥

शुक्रवार को फस्द खुलवाना भी जनून रोग को उत्पन्न करता है ॥

❀ फस्द के नाम ❀

और जिन नसोंकी फस्द खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ।

कीफाल १, बासलीक २, अकहल ३, हवलुल जरा ४, असीलम ५, साफन ६, अर्कुन्निसा ७, ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्द खुलवाते वा जुल्लाब लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पड़जाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्द का न खुलवाना उत्तम है, क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन हैं और रुधिर भी तीन प्रकार का होता है ॥ जो फस्द खुलवाने की आवश्यकता होतो शीतकाल में मध्याह्न के समय खुलवावै कि ऋतु में रुधिर चक्कर में होता है फिर ठहर जाता है और कोई २ हकीम यों भी कहते हैं कि रुधिर जमजाता है ॥ सो बात झूंठ है क्योंकि जो मनुष्य के शरीर में रुधिर जमजावै तो मनुष्य जी नहीं सक्ता किन्तु भीतर गरमी होती है और रुधिर निकलने में यह परीक्षा नहीं होती कि यह रुधिर अच्छा है वा बुरा और उस समय में फस्द खुलवाने से मनुष्य दुर्बल होजाता है क्यों कि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और ग्रीष्म काल में रुधिर प्रथक् २ होता है इस ऋतु में संध्याके समय फस्द खुलवाना उचित है और सवेरे खुलवाने से रुधिर कम होजाता है किन्तु खुशकी भी अधिक होती है जिन मनुष्यों को फस्दका अभ्यास पड़जाता

और फिर फस्द न खुलवावें तो उनको एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षाकाल में रुधिर मोत दिल हो-जाता है उस ऋतु में फस्द खुलवाना योग्य नहीं और जो हकीमकी सम्मति होतो खुलवा लेवे और जिन दिनों में रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण से कईरोग होजा-ते हैं और पीड़ाभी हरएक प्रकारकी होतीहै और जब फस्द खुलवाने की आवश्यकता होतो उस वक्त दिन, तारीख ऋतु और समय का कुछ विचार नहीं किया जाता आवश्यकता के समय फस्द खुलवाने में कोई हानि नहीं है ॥

❀ इति प्रथमभाग समाप्तम् ❀



श्रीजगदीश्वरायनमः ।

वृहत जर्राहीप्रकाश

दूसरा भाग



आतिशक की चिकित्सा ।

(१) उपदंश की उत्पत्ति ।

वैद्य हकीम तथा डाक्टरों का यह मत है कि उपदंश जनित विषको छोडकर ऐसा और कोई विकराल विष संसार में नहींहै जोकि प्राणियों के अंग से उत्पन्न होकर शरीर का सर्वनाश करदे यह विष रुधिर में प्रवेश करके शरीर की नस नस में घुसजाता है और नाना प्रकार के दोष उत्पन्न करके रोगीको नितांत निकम्मा बना देता है ।

डाक्टरों ने ऐसे मुर्दोंको जब चीरकर देखा है तो कोई अंग उनका ठीक नहीं पाया गया उपदंश का विष मवाद् के लगजाने से शरीर में पहुँच जाता है यद्यपि कई प्रकार से ऐसा होसकताहै परन्तु मुख्यतः उपदंश दूषित स्त्रीके प्रसंग सेही होताहै अन्यान्य कारणों में कुछ कारण ये हैं (१) उपदंश रोगी के पात्र में जलपीना (२) ऐसे रोगीको चुम्बन करना ३ ऐसे रोगीके वस्त्रोंपर शयन करना, अथवा उनको पहरना, बालक को ऐसी स्त्री का दूध पिलानाः (४)

उपदंश वाले बच्चेके मवाद से दूसरे बच्चे के मवादसे दूसरे बच्चोंको टीका लगाने से अथवा उपदंश वाले माता पिता से उत्पन्न होनेसे बालक को यही रोग होसकता है (९) उपदंश को मवाद जिस वस्त्र से पोंछा गयाहो उस वस्त्रको यदि कोई पुरुष या स्त्री अपने अंग से लगा लेवे तो यह रोग होसकता है।

(२] उपदंश के नाम।

इस देसमें इसको गर्मी बादफरंग अथवा आतिशक कह कर पुकारते हैं आतिश फारसी जबानमें आगका नाम है इस का नाम आतिशक इसकारण से हुआकि इसके विषमे शरीरमें एक प्रकारकी अग्नि लगजातीहै और जलकर सड़ जाता है अंग्रजी में इसको सिफलिस कहते हैं।

[उपदंशवती स्त्री की परीक्षा।

यदि किसी स्त्रीकी परीक्षा करनी हो कि इसको उपदंश रोग है वा नही ता [१] उसके अंगसे उसीकी हथेलीको रिगड कर उसकी गंधको सूंघे यदि मछली की सी दुर्गंध हो तो रोगिणी जाने [२] यदि उसके गुह्यस्थल से पानी बहता हो [३] उसके नीचे के वस्त्र स सड़ी हुइ गंध आती हो [४] गुह्यस्थल के होट मोटे हों [५] प्रसंग क समय सूत्रेन्द्रिय को गर्मी अधिक मालूम हो। [६] एक छोटा वस्त्र नीबू के रस तथा और किसी खट्टी चीज के रसमें भिगोकर स्त्रीके गुह्यस्थल में रक्खे यदि कोई घाव होगा तो उसको व्याकुलता होगी।

(४) उपदंश के दो प्रकार

एक प्रकार का वह उपदंश है जिसका घाव मुत्रेन्द्री पर होजाता है इसको जर्राहीमें साफ्टशंकर कहते हैं दूसरी प्रकार के उपदंश को हार्डशंकर कहते हैं इसमें प्रथम छोटे २ विकार उत्पन्न होते हैं जब रुधिर में विष फैल जाता है तब बड़े बड़े उपद्रव खड़े होकर रोग असाध्य अथवा दुसाध्य होजाताहै यह बहुत बुरा होताहै।

(५) उपदंश के लक्षण

(१) मूत्रेन्द्री पर चोट लगजाने से वा स्त्री द्वारा नख विद्ध होने वा दांत लगनेसे वा धोनेसे अथवा अत्यन्त स्त्री संसर्ग करने से अथवा गरम जल धोने से भी यहरोग हो जाताहै पेडू गुह्येन्द्रिय वा अंडकोश पर एक पीली फुंसी पैदा होजातीहै उनमें खुजली के साथ जलन होती है, ज्यों ज्यों खुजाया जाता है त्यों त्यों घाव बढ़ता चला जाताहै रोगी लज्जाके कारण रोगको छिपाताहै और रोगदिन दूना रात चौगना बढ़ता चला जाता है, मूर्ख लोगों के कहने से अहितकारी चीजें लगा देताहै,जब घाव बहुत बढ़जाताहै तब इधर उधर टक्कर खाने लगताहै कोई अनाड़ी हुक्केमें पीनेकी सर्व नाशक औषधि देदेताहै उससे मुंह आजाताहै वा वमन अथवा दस्त होने लगते हैं, ऐसी चिकित्सा से रोग को यदि कुछ दिनों के लिये आराम भी होजाताहै पर रोग की जड़ नहीं जाती है।

(६)रोगकी उत्पत्ति में आयुर्वेदिक मत।

आयुर्वेदिक विज्ञानियों ने यह रोग पांच प्रकारका लिखा है (१) वातज (२) पित्तज (३) कफज (४) सन्निपातज(५) रक्तज

(१) वातज उपदंश के लक्षण ।

वात से उत्पन्न होने वाले रोग में मूत्रेन्द्रिय के अग्र भागमें मणिके ऊपर वा मणिका वेष्टन करनेवाले चर्म के अग्रभाग में वा नीचे को अनेक प्रकारकी छोटी छोटी फुंसियां पैदा होजाती हैं, और इन्द्री में कंपन होता है ।

(२ पित्तज उपदंश के लक्षण ।

पित्त के उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में इन्द्री के अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान में क्लेदतायुक्त और पीले रंगवाली फुंसियां पैदा होजाती हैं, इन फुंसियों में जलन होने लगती है ऐसे उपदंश को पित्तज उपदंश कहते हैं ॥

(३) कफज उपदंश के लक्षण ।

कफ से उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में इन्द्रीके अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान में जो फुंसियां पैदा होजाती है उन में से गाढ़ा गाढ़ा मवाद निकलने लगता है, मणिस्थान पर वरम आजाताहै इस रोग में पशाव के साथ वीर्य भी आने लगता है, इन लक्षणोंसे युक्त रोगको कफज उपदंश कहते हैं।

(४) सन्निपातज उपदंश के लक्षण ।

सान्निपातज अर्थात् कफवात पित्तसे उत्पन्न होने वाले उपदंश में इन्द्रीके अग्रभग के चमड़े के नीचे मांसके पिंड और फोड़े होजातेहैं, इसमें कफज वातज और पित्तज तीनों प्रकार के उपदंशों के कहे हुए लक्षण मिश्रित होते हैं; इस के उपदंशको त्रिदोषज वा सान्निपातज कहतेहैं ।

(५) रक्तज उपदंश के लक्षण ।

जो उपदंश रुधिर से होताहै उस में मणि के अग्रभाग

ढकने वाल चर्मके नीचे अथवा ऊपर मांसके रंग अथवा काले रंग की फुन्सी पैदा हो जाती है इनमें से रुधिर बहने लगता है तथा पित्तज उपदंशके जो जो लक्षण कहे गये हैं वे भी सब इसमें होते हैं इन लक्षणोंसे युक्त रोगको रक्तज उपदंश कहते हैं ॥

❀ असाध्य उपदंश के लक्षण ❀

जिस उपदंश में संपूर्ण मूत्रेन्द्री को कीडा खा जाते हैं केवल अंडकोष शेष रहजाते हैं वह किसी प्रकारसे अच्छा नहीं होता है इस लिये उसकी चिकित्सा करना फलीभूत नहीं होता है ।

❀ ७ मृत्यु लक्षण ❀

जो मनुष्य उपदंश रोगके होतेही चिकित्सा न करके स्त्री प्रसंग करता रहता है तो कुछ दिनमें उसकी इन्द्री में सूजन और जलन होने लगती है अग्रभाग के घूंघटके चमड़े के नीचे जो फुन्सी होतीहैं वे पककर घाव बन जाती हैं । इस घाव में कीड़े पड़कर लिंगनाल को खाते रहते हैं और धीरे धीरे रोगी की मृत्यु निकट आजाती है ॥

❀ ८ लिंगवर्ती के लक्षण ❀

अंकुर की तरह कुछ ऊंचा ऊपर ऊपर और गिलगिला मांस का जाल लिंग नालमें उत्पन्न होकर धीरे २ मुर्गेकी चोटी के समान होकर अंडकोषके भीतर वाली रगमें पहुंच जाताहै इन लक्षणोंसे युक्त रोगको लिंगवर्ती वा लिंगार्श कहतेहैं

❀ उपदंशकी चिकित्सा ❀

(१) रोगीके बलके अनुसार जुल्लाब अथवा वमन की

औषधि देना पीड़ाके दूर करनेके लिये रातको अफीम खिलाना फायदा करता है--भोजन हलका और शीघ्र पचने वाला करना चाहिये-यदि रोगी बलवान न हो तो पुष्ट पदार्थ भी भोजन को दे सकते हैं:—

(२) पर्वल, नीमकी छाल, गिलोय, आमला; हरड़, और बहेडा इन सबको दो दो तोले लेकर आधसेर जलमें औटावे जब आध पाव रहजाय तब छानकर पीले इस क्वाथके पीने से सब प्रकारका उपदंश जाता रहता है [३] पापड़ी खैर और साल इन बृक्षोंकी छाल दो २ तोले लेकर ऊपर कही हुई रीतिसे औटाले इस क्वाथ को गूगलके साथ पीनेसे उपदंश जाता रहताहै। अथवा इसी क्वाथमें त्रिफलाका चूर्ण मिलाकर लेप करनेस भी अनेक प्रकारके उपदंश जाते रहतेहैं

[४] त्रिफलाके क्वाथ अथवा भांगरेके रससे उपदंशके घावोंको धोनेसे भी कभी उपदंश जाता रहता है।

(५) हरड़ बहेड़ा और आमला इन तीनोंको समान भाग लेकर काली मधु के साथ लोहेकी कढ़ाईमें डालकर खूब घोटे। इस लेप के लगाने से एकही दिनमें उपदंशके घावों में आराम होजाता है।

[६] रसौंतको पीसकर सिरस के बीजोंके साथ, अथवा हरड़ के साथ अथवा शहत के साथ पीसकर लेप करे तो इन्द्री संबंधी सब रोगोंको आराम होजाता है।

[७] सुपारी अथवा कचनार की जड़को पानी में पीसकर उदंदंशकी जगह लेपकरे, तथा प्रतिदिन जौकी रोटी

आदि खाकर कुएका जल पीता रहै इससे अनेक प्रकारके उपदंश जाते रहते हैं ।

(८) उपदंश में पसीने देकर इन्द्री की बीचवाली शिरा का वेधन करके जाक द्वारा रुधिर निकाल डालना विशेप उपयोगी है इन सब क्रियाओं द्वारा दोपों का हलकापन होनेमें सूजन और वेदना कम होजाती है पक जाने पर इन्द्री का नाश हो जाता है. इसलिये उन उपायों को करना चाहिये जिससे लिंग पकने न पावे ।

[८] सूखे हुए अनारका छिलका अथवा मनुष्यकी हड्डी का चूरा उपदंश के घावपर लगानेसे बहुत जल्दी उपदंशके घाव अच्छे होजाते हैं ।

[१०] चिरायता, नीमके पत्ते, त्रिफला, पर्वल, चमेली के पत्ते, कचनार के बीज खैर और शाल वृक्ष की छाल इन में से हर एक को एक एक सेर लेकर ६४ सेर पानी में औटावै, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले । ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको चार चार तोले लेकर पीसकर लुगदी करले फिर ऊपर लिखे क्वाथ में यह लुगदी और घी चारसेर डालकर यथोक्त रीति से पाक करै । इस घी का दोपानुसार सेवन करनेसे उपदंश रोगको बहुत शीघ्र आराम होजाताहै।

[११] समान भाग त्रिफला को सहत के साथ पकाकर लेप करने से उपदंशको विशेप गुणकारी होता है

[१२]सिरस, आम और सहत इन तीनोंमें से किसीएक के साथ रसौत मिलाकर इन्द्री पर लेप करनेसे उपदंश रोग तथा अन्यान्य लिंग रोगभी जाते रहते हैं ।

[१३] पारा दो रत्ती, अफीम बारह रत्ती इन दोनों को लोहे के पात्र में तुलसी के रसके साथ नीमके घोटे से घोट कर दो रत्ती सिंगरफ मिलाकर फिर तुलसी का रस डालकर घोट पीछे जावित्री, जायफल, खुरासानी अजवायन और अकरकरा प्रत्येक बत्तीस रत्ती, इन सबसे दूना खैरसार मिलाकर फिर तुलसीके रसमें घोटकर चनेकी बराबर गोलियां बना लेवे इनमें से दो दो गोली प्रतिदिन सायंकाल के समय सेवन करे इससे उपदंशादि अनेक प्रकारके घाव वाले रोग दूर होजाते हैं। यह एक प्रसिद्ध औषधि है।

❀ उपदंश रोग पर पथ्य ❀

वमनकारक द्रव्यों का आहार वा पान द्वारा सेवन; विरेचक औषधियोंका आहार वा पान द्वारा सेवन, शिश्नमें सिरावेधन; जोंक लगाना परिछेदन, प्रलेप, जौ शालिधान्य; धन्वदेशज पशुपक्षियों का मांस, मूंग का यूष और घृत, ये सब द्रव्य उपदंश रोगमें विशेष हितकर जानने चाहिये।

पुनर्नवा, संहजना, परवल, कच्ची मूली, सब प्रकारके तिक्त तथा कषाय द्रव्य, मधु, कूप का जल, अनेक प्रकारका तेल ये सब द्रव्य उपदंश को शांत करने वाले हैं इस लिये इन को विशेष पथ्य रूप समझना चाहिये।

❀ उपदंश पर कुपथ्य ❀

दिन में सोना मूत्रके वेग को रोकना, भारी तथा खट्टे पदार्थों का भोजन पान, स्त्री संग, गुड़, कसरत, कुश्ती, खाट, मांस ये द्रव्य उपदंश रोगको बढाने वाले हैं इस लिये इनका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये।

❀ यूनानी मत से उपदंश चिकित्सा ❀

❀ जुल्लाव की गोली ❀

जमालगोटेकी मिंगी, चौकिया सुहागा, मुनक्का; इन सब को समान भाग लेकर महीन पीस एक एक मासे की गोलियां बनावै परन्तु इस गोलीके खाने से पहिले नीचे लिखी हुई दवा पिलाना चाहियेः—

❀ नुसखा मुंजिज ❀

गुलाब के फूल तीन मासे, मुनक्का सात नग; सोंफ छः मासे, सूखी मकोय छः मासे; सनाय मक्की दो मासे, इन सब को पावभर जलमें औटावें जब एक उफान आजाय तब उतार कर छानले फिर इसमें एक तोले गुलकंद मिलाकर पिलावे पश्चात् खिचड़ी, भोजन करावै फिर चौथे दिन ऊपर लिखी हुई गोली के दो टुकड़े करके खिलावे ऊपर से गरम जल पिलावे और जब प्यास लगे तब गरमही जल पिलावे और सायंकाल के समय घृत डालकर खिचड़ी दही के संग भोजन करावे फिर तीन दिन तक नीचे लिखी हुई दवापिलावे।

❀ ठंडाई का नुसखा ❀

बिहीदाना दो मासे, रेशा खतमी ४ मासे, मिश्री एक तोले इन सबका लुआब निकाल कर उसमें मिश्री मिलावै पहिले छःमासे ईसबगोलको फांक कर ऊपर से उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन तक करता रहे तदनंतर नीचे लिखी गोली देना उचित है॥

❀ मिलाने की गोली ❀

खुरासानी अजवायन, देशी अजवायन, अकरकरा गुजराती

छोटी इलायची भी २ माशे भिलाये सात माशे, काले तिल दो तोले; पारा छः माशे, पुरानागुड एक तोले इन सब को मिलाकर तीन दिन खूब घोटे और माशे माशे भर की गोली बनाकर प्रति दिन एक गोली सेवन करावे और नीचे लिखी हुई मरहम घाव पर लगावे ॥

❀ मरहम की विधि ❀

प्रथम गौका घृत एक तोले लेकर खूब धोवें फिर सिंगरफ एक माशे; रसकपुर तीन माशे, मुरदासंग तीन माशे, रसौत तीन माशे गुजराती अकरकरा दो माशे, सफेदी काशगरी तीन माशे इन सबको महीन पीसकर धुले हुए घी में मिलाकर लगावे और देखे कि जुलाब देनेसे रोगीकी क्या दशाहै॥ जो रोग कमहो तो मरहम लगाना बंद करदे और ऊपर लिखी हुई भिलावे की गोलियां सात दिन तक खिलावे नहीं तो औषधी को ऐसी रीति से बदल देवे कि रोगी को मालूम न होसके ॥

❀ दूसरी गोली ❀

रस कपूर नौ माशे, लौंग फूलदार २१ नग, कालीमिरच २१ नग, अजवायन खुरासानी एक माशे, इन सबको महीन पीस सलाई में मिलाकर नौ गोली बनावे इनमें से प्राति दिन एक गोली सेवन करे और खट्टी तथा बादी वस्तुओं से परहेज करना चाहिये ॥

❀ घावका अन्यकारण ❀

कभी कभी ऐसा भी होता है कि यह रोग तो होने वाला हो और बाल साफ करते समय अचानक उस्तरा लगकर

घाव हो जाय और उसको उस्तरे का घाव समझ कर औ-षधियां की जाय जर्राहको चाहिये कि प्रथम रोगीके घाव को देखे कि किनारे उस घावके मोटे हैं और घावके भीतर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौड़ाहै और रोगी की प्रकृतिको देखे जो वह विरेचन अर्थात् जुलावके योग्य हो तो जुलाव देवे नहीं तो नीचे लिखी हुई औषधि देवै

❀ गोली ❀

नीलाथोथा ढाई माशे, कालीहर्ड २॥ माशे, सफेद कत्था २ तोले, सुपारी ७ माशे इन सबको घीस कर दोसेर नीबू के रसमें खरल कर फिर जंगली बेर के प्रणाम गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावैं खट्टी और बादी वस्तुओं से परेज करै ॥

❀ दूसरा नुसखा ❀

अजवायन खुराशानी सात माशे, काली मिरच सवा माशे; कालेतिल छः माशे, जमाल गोटा तीन माशे; पुराना गुड़ १॥ तोले, इन सबको तीन दिन तक घोटकर जंगली बेर के बँराबर गोलियां बनावे और एक गोली दही की मलाई में लपेट कर खिलादे और मूंग की दाल और मीठा कद्दू से परहेज करै इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो बमनभी होजायतो कुछ डर नहींहै क्योंकि ये रोग बिना मवाद निकले नहीं दूर होसक्ता प्रायः देखा है कि इस रोग में सिर से पांव तक घाव होजाते हैं इसलिये उचित है कि प्रति दिन मरहम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगाया जावेगा तो खुरण्ड जम जावेगा और जहां यह रोगी

बैठता है बीच होजाता है और सफेद सा पानी निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंध युक्त मवाद आता है, हाथ पांवकी अंगुलियों में भी घाव होजाते हैं इन सब शरीर के घावों के वास्ते यह औषधि करना चाहिये।

❀ मरहम ❀

गाय का माखन आध पाव, नीलाथोथा सफेद छः माशे मुर्दासंग छः माशे, इन दोनों दवाओं को पीसकर घृत में मिलाकर घावों पर लगावे और खानेको यह दवा देवेः—

❀ गोली ❀

छोटी इलायची; सफेद कत्था, तुलसी के हरे पत्ते एक २ तोले मुर्दासन छः माशे, पुराना गुड़ १॥ तोले, इन सबको कूट पीसकर गोलियां बनावे और नित्य सवेरे एक गोली खिलावे खटाई और बादी से परहेज करै और किसी वस्तु से परहेज नहीं है और यह रोग शीघ्र अच्छा नहीं हो तो दवाको सात दिन खिलाकर देखे जो कुछ आराम हो तो इसी दवा को खिलाता रहै और जो इस से आराम न होतो ये गोली खिलावे ॥

❀ अन्य गोली ❀

शिलाजीत कालीमिरच, काबली हर्ड, सूखे आमले,रसकपूर सफेद खिरमिठी, गुल बनफशा,सफेद,कत्था ये दवा चार२माशे ले इन सबको कूट पीसकर रोगनगुल में खरल करे फिर इस की चने की बराबर गोली बनावे, और एक २ गोली आम के अचार में लपेट के प्रति दिन प्रातःकाल और सांयकाल के समय खिलावे मसूर की दाल और लाल मिरच से पर-

हेज करे इस दवाईसे सब शरीर अच्छा हो जायगा परन्तु अंगुली अच्छी न होगी जो यह औषधि प्रकृति के अनुसार होजाय तो अंगुली भी सीधी होजायगी बहुधा देखने में आया है कि इस रोग वाले, मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परन्तु किसी न किसी जगह शरीर में शेष रहही जाताहै बहुत से उपद्रव उत्पन्न होतेहैं एक यह कि मनुष्य कोढी हो जाते हैं दूसरे यह सब शरीर पर सफेद दाग होजातेहैं तीसरे नाकगलकर गिरजाती है चौथेगठिया होजातीहै एक कारण यहहै कि यह रोग महागरमहै ठंडी दवाइयोंसे अच्छानहींहोता

इसमें एक डाक्टर की रायहै कि यह रोग कफ से होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगीके शरीर में छोटी २ फुंसियां रतूवत दार जर्दी लिये होती हैं बहुत से मनुष्यों का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दोचार वर्षके पीछे शरीर के निर्बल होजाने पर फिर होगया और घाव भी फिर हरे होगये जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इस के वास्ते यह दवाई बहुत उत्तम है ॥

❀ अन्य गोली ❀

भुना नीलाथोथा, मुरदासन, सफेदा काशगरी । सफेद कत्था, ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबूके रसमें खरल करके लोहे की कढाई में डालकर नीबूके सोटे से घोटे और चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली खिलावे खटाई और वादीकी चीजों से परहेज करा-ना-चाहिये और जो इससे भी आराम नहो तो ऐसी औ-षध देवे कि जिससे थोड़ासा मुंह आजावे जिससे सब शरीर

के जोड़ों की पीडा दूर होजावे और इससे आराम न हो तो अधिक मुँह आने की औषधि दे और नीचे लिखी औषधियों से घावको बफारा देवेः—

❀ नुसखा बफारे का ❀

नरसल की जड, रामसर, सोये के बीज, खुरासानी अजवायन, साबन; नरमा के पत्ते, शहतूत के पत्ते, इन सब को बराबर ले पानी में औटाकर घावों को बफारादे और रातको तेलका मर्दन करे अथवा भेड़का दूध और गौका दूध चार चार तोले; सूरंजान कडवा तीन माशे, रोगनगुल आधपाव इन सबको मिलाकर गरम कर मर्दन करै।

❀ दूसरा बफारा ❀

जो पुरुष की इन्द्री घावों के जोरसे अथवा पट्टी बांधने से सूजजाय तो उसपर त्रिफला छः माशे पानीमें औटाकर इन्द्री को बफारा दे और इसी तरह दिन भर तीन दफे बफारा दे तो एक ही दिनमें सब सूजन दूर होकर पहिले की तुल्य हो जाता है। जो मुख आजाय तो उसको अच्छा करने के लिये यह दवा करे।

❀ नुसखा कुल्ली का ❀

कचनार की छाल, महुऐ की छाल, गोंदनी की छाल एक छटांक, चमेली के पत्ते एक तोले; सफेद कत्था एक माशे इन सबको पानी में औटाके कुल्ला करै॥

❀ दूसरा प्रयोग ❀

चमेली के पत्ते छटांक भर, कचनार की छाल छटांक भर, इन दोनों को पानीमें औटाकर दोनों वक्त कुल्ले करै।

तीसरा प्रयोग ॥

अकरकरा, माजूफल सिंगरफ । सुहागा कच्चा ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इन सबको पानीमें मिलाकर चार हिस्से करे फिर रातभर एक पहरके पीछे चिलम में रख कर तमाखु की तरह पीवै और रातभर जागता रहै फिर सवेरे ही ठंडे पानी से स्नान कर और खाने को मुंगका शोरवा और गेंहू की रोटी या मूंगकी दाल रोटी खिलाना चाहिये भोजन कराके रोगी को सुलादे इस औषधिसे गर्मी अधिक मालूम होती है और दस्त वमन भी होते हैं परन्तु एकही बार में घाव तक सूख जाते हैं ॥

❀ चौथा प्रयोग ❀

सिंगरफ, माजूफल, अकरकरा; नागौरी असगंध काली मूसली, सफेद मूसली छोटे गोखरू इन सबका चूर्ण करके जंगली बेरके कोयले पर डाल कर सब देह को धूनीदे इसी तरह सातदिन करनेसे यह रोग जड़से जाता रहता है ।

❀ पांचवा प्रयोग ❀

भुना हुआ नीला थोथा, बडी हडका वक्कल, छोटी हर्ड ये सबदवा एक एक भाग, पीली कौडी चारभाग इन सबको पीस छानकर नीबूके रसमें तीनदिन घोटे फिर इसको चनेकी बराबर गोली बनावे फिर एक एक गोली नित्य खाय इस औषधि में किसी चीजका परहेज नहीं है ॥

❀ छठा प्रयोग ❀

रसकपूर, चोबचीनी । बावची ये तीनों छःछः माशे, तिवरसा गुड दोतोले इन सबको दहीके तोड़ में खरल करे और

झाड़ी बेरके बराबर गोला बनाकर रोगी को सुबह शाम एक गोली दही के संग लपेट कर खिलावे और खाने को मूंग की दाल रोटी देवे ॥

❀ सातवां प्रयोग ❀

कत्था सफेद, समुल फार, इलायची के बीज, खड़िया ये सब समान भाग लेकर गुलाब जल में पीसकर ज्वार के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य बारह दिन तक खाय और जो अजीर्ण होय तो एक दिन बाचयें देकर खाय और मूंग की दाल गेहूं की रोटी खाय परन्तु घी का अधिक सेवन करे।

❀ उपदंश के दर्द का इलाज ❀

जो उपदंश वाले की अस्थि संधियोंमें दरद होता हो तो पारा, खुरासानी अजवायन, भिलावे की मिंगी, अजमोद असगंद ये सब दवा तीन तीन माशे, गुड़ २८ माशे सब को कूट पीसकर झाड़ी बेरके बराबर गोली बनाकर एक २ गोली दोनों समय खाय और इस गोली को पानी से निगल जाय दांत न लगने दे; खाने को लाल मिरच खटाई बादी करने वाली वस्तु न खाय।

❀ अन्य प्रयोग ❀

पारा, अजवायन, काली मूसली ये दवा छः माशे भिलाये तीन माशे, गुड चार तोला इन सबको कूट पीसकर ११ गोली बनावे और एक नित्य दही के साथ खाय तो ग्यारह दिन में स[illegible] रोग जाय और दूध चावल खाने को [illegible]ता ईश्[illegible] की कृपा से बहुत शीघ्र आराम होजायगा।

❀ अन्य प्रयोग ❀

मंदारकी लकडी का कोयला पिसा हुआ साढ़ेतीन माशे, और कच्ची खांड साडेतीन माशे, इन दोनोंको मिलाकर चौदेह माशे घी में सानकर सात दिन सेवन करने से सातही दिन में उपदंशको आराम होजाताहै इस दवापर मांस पथ्यहै

❀ अन्य प्रयोग ❀

बडी हडेकी छाल,तूतिया, पीली कौड़ी की राख ये सब चीजें बराबर नींबूका रस डालकर कढाई में सोलह पहर तक घोटे फिर इसकी कालीमिरच के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य १५ दिन खाय और थोड़ी सी गोली घिसकर कागज पर लगाय घावों पर लगावे और जो मुख आजाय तौ कचनार के काढे से कुल्ला करे।

❀ अन्य प्रयोग ❀

तुलसी के हरे पत्ते एक तोले,तूतिया हरा १४ माशे इनको पीसकर चनेकी बराबर गोली बनाकर एक गोली गरम पानीके संग नित्य खाय मूंगकी दालकी खिचड़ी बिना घी डाले खाना इस दवा पर उचित है।

❀ अन्य प्रयोग ❀

कचनार की छाल दो छटांक, इन्द्रायनकी जड़ दो छटांक बबूल की फली दो छटांक, छोटी कटाई जड पत्ते समेत, दो छटांक, पुराना गुड़ दो छटांक इन सबको तीनसेर पानी में काढ़ा करे जब चौथाई जल रहै तब छानकर बोतल में भर ले फिर इसमेंसे मात्रानुसार सात दिन पीवे तो अवश्य आराम होय इसमें परहेज कुछ नहीं है॥

❀ अन्य प्रयोग ❀

सिरसकी छाल,बबूलकी छाल, नीमकी छाल, प्रत्येक सवा सेर इन सबको सात गुने पानी में काढ़ा करै जब सवा सेर जल बाकी रहजाय तब छानकर शीशी में भरले फिर इस में से दो छटांक रोज पीवै और खानेको चनेकी रोटी खाय तो पुरानी आतिशक भी जाती रहती है ॥

❀ अन्य प्रयोग ❀

सिंगरफ,अकरकरा; नीमका गोंद, माजूफल, सुहागा प्रत्येक १४ माशे इनको पीस सात पुडिया बनाले एक पुडिया चि- लम में रख बेरीकी आग से पिये तो आराम होय और इस से वमन होयतो कुछ डर नहीं, दिनभर में तीन वार पीवै और इसके गुलको पीसकर घावों पर बुरके, खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मुंह आजाय तो चमेली के पत्तों का काढा करके कुल्ली करावै ॥

❀ अन्य प्रयोग ❀

सिंगरफ दो माशे, अफीम दो माशे, पारा दो माशे, अज- वायन पांचमाशे, भिलाय सात माशे; पुराना गुड पांच माशे, पहिले पारे और सिंगरफ को अदरक के रसमें दो दिन ख- रल करै फिर सब दवा वारीक पीसकर उसमें मिलावै, और भिलावेकी टोपी दूर करके उन सब दवाओं के साथ घोट डाले फिर बेर के बराबर गोली बनावै और सात दिन एक गोली नित्य खाय और गुड़ शक्कर तेल लाल मिरचखटाई बादी चीजों का सेवन न करै ॥

यदि ऊपर लिखेहुए किसी उपाय से रोगी अच्छा न हो

तो उसे असाध्य समझना चाहिये ॥

फुंसियोंके दूर करनेकी दवा ।

इस रोगमें सब शरीरमें छोटी२ फुंसिया शीतला के सदृश होजातीहैं उनके वास्ते यह दवा करनी चाहिये सिंगरफ तीन माशे, रस कपूर छः माशे, अकरकरा एक तोला, कत्था एकतोला, छोटी इलायची एक तोला, इन सबको पान के रसमें मिलाकर चनेके बराबर गोलिया बनावे, और सबेरेही एक गोली नित्य खाया करै और चनेकी रोटी घी और दही भोजन करै, इक्कीस दिनके सेवन करने से सब रोग निश्चय जाता रहैगा ॥

दूसरी दवा ।

रसकपूर, सिंगरफ, लौंग, सुहागा, सब एक एक तोला लेकर इन सबको महीन पीसकर सात पुडिया बनावै, फिर सबेरे ही एक पुडिया दही की मलाई में लपेटकर खिलावै दूध चांवल भोजन करावै और सब चीजों को परहेज है ॥

❀ विरेचन की औषधि ❀

जो किसी मनुष्यके शरीरमें काले वा नीले दाग पडगये हों तो पहिले तीन दिन खिचड़ी खिलाकर फिर यह जुल्लाब देना चाहिये । काला दाना नौ माशे. आधा भुना और आधा कच्चा कूटकर बराबरकी शक्कर मिलाकर तीन पुडिया बनावै और सबेरेही गरम जलके संग खिलावै और प्यास लगे जब गरम पानी पिलावै ।

यदि कण्ठ का काक जिसे कौआ कहतेहैं बैठ गया होय तो यह विरेचन देवे, पिस्तेकी मिंगी, बादामकी मिंगी, चिल-

गोजे की मिंगी, पुरानी दाख; जमाल गोटा की मिंगी इन सबको बराबर ले जल में पीस कर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और गोली देने से पहिले तीन दिन तक अ. रहरकी दाल और चावलों की खिचड़ी खिलावे फिर चौथे दिन दो दो गोली मलाई मे लपेट कर खिलादे और ऊपर गरम जल पिलावे फिर दूसरे दिन यह औषधि पिलावे बीदाना दो माशे रेशा खतमी छः माशे ईसब गोल छः माशे मिश्री एक तोला इन सबको रात में भिगोदे और फिर प्रातःकाल मल छान कर पिलावे।

❀ विरेचन के पीछे की गोली ❀

मुर्दासंग एक तोला: गेरू डेढ तोले, सात वर्ष का पुराना गुड़ इन सबको पीस कर जंगली बेरके बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सबेरे ही खाय खटाई और बादी से परहेज करे।

❀ सिंगरफ के उपद्रवों का उपाय ❀

आतशक वाले रोगी को यदि किसी ने सिंगरफ बहुत खिलाया होय और इस कारण से उसका शरीर बिगड़ गया होयतो यह दवा देने योग्य है, कुटकी एक तोला; आमकी बिजली दो तोला, जमाल गोटा तीन तोला, सबको महीन पीस छानकर पुराने गुड़ में मिलाकर बारह पहर कूटे फिर जंगली बेरके बराबर गोली बनाकर खिलावे और ऊपर से सद्य जल पिलावे जो दस्त होजाय तो उत्तम है नहीं तो पहिले तीन दिन यह मुंजिज पिलावे॥

❀ मुंजिज का नुसखा ❀

हरी सौंफ गेंरू और मकोय प्रत्येक एक तोले, मनक्का १५

नग, खतमी एक तोले, खब्बाजी के बीज १ तोला, गुल कन्द दो तोला, इन औषधियों को रात को जल में भिगोदे सवेरे ही औटा कर पिलावे और खिचड़ी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे।

❀ जुलाब का नुसखा ❀

गुलाब के फूल दो तोले, खतमी के बीज एक तोले गारीकून छः माशे; सफेद निसोत छः माशे, अरण्ड के बीज १ तोले एलुआ एक तोले, सोंठ६ माशे, करतमके बीज दो तोले शकमुनियां छः माशे, सूखे आमले एक तोले, सनाय मक्की दोतोले, त्रिमफाजय एक तोल, काबली हरड एक तोले इन सबको पीस छान कर पानी के साथ घोट कर जंगली बेर के समान गोली बनावे इन में एक गोली सुबह के वक्त खिलावे फिरदोपहर पीछे मूगका घाट पिलावे और सायकाल को मूंगकी दाल की खिचड़ी खिलावे इसी प्रकार से तीन जुलाब देवै जो इसी जुलाब के देने से आराम होजाय तो उत्तम है नहीं तो नीचे लिखा अर्क तैयार करके पिलावै।

❀ अर्क मुसफ्फी खून ❀

सौंफ, सूखी मकोय, काबली हरड, छोटी, हरड सनाय मक्की, वर्यारा वायविडंग, पित पापड़ा, चिरायता, सिरफोंका, जीरा, ब्रह्म दण्डी, नकछिकनी ये सब पाव पाव सेर पुरानी सुपारी, सूखे आमले, बकायनके बीज, बबूल की फली। मुंडी, कचनार की छाल ये सब आध आध सेर अमल तासकी फली का छिलका, मँहदी के पत्ते, लाल

चन्दन. झाऊ के पत्ते ये सब पाव पाव सेर इनसब को जो कूट करके नदी के जलमें बारह पहर तक भिगोवे फिरइस का आसब खींचे फिर पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिलाकर पीवे चालीस दिवस सेवन करनेसे चार वर्षका विगड़ा हुआ शरीर भी अच्छा हो जायगा।

❋ स्त्री का इलाज ❋

जो किसी स्त्रीको यहरोग होकर जाता रहाहो और उसे गर्भ रहगयाहो और उस कालमें रोग फिर उखड़ आवे और ऐसी चिकित्सा करनीहो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहै तो इस औषधिको देना चाहिये मुर्दासंग. गेरू और चने एक एक तोले. जस्त दोतोले इनको महीन पीसकर बारह वरष के पुराने गुड़में गोली बनावे और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खिलावे तो सात दिन में रोग जाता रहेगा और जो इस गोली से पुरा आराम नहोतो यह औषधि करनी चाहिये ॥

❋ दूसरा उपाय ❋

कंघाके पत्ते दसतोले। सिंगरफ तीनमाशे इन दोनोंको महीन पीसकर तीन माशेकी गोली बनावे फिर एकगोली- चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावे फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न कर पहिले दिनका पानी रहने दे केवल नेचेको ही भिगोले इसी तरह सात दिन करने से रोग जाता रहैगा इस पर परहेज कुछ नहीं हे। बालक पैदा होजाने के पीछे ये सब उपाय काम में

लाने चाहिये जो उपदंश रोगियों के लिये लिखे गये हैं। बालकभी पेटमें से उपदंस रोग युक्त आया होतो वह भी अपनी माता के दूधपीने से अच्छा हो जायगा क्यों कि जो औषधि उसकी माताको दी जायगी उसका असरदूध के द्वारा बालक को भी प्राप्त होगा और जो दैवयोगसे पूरा आराम न होतो यह औषधि करे ॥

❀ बालक के उपदंश का उपाय ❀

कटेरी दो माशे, वायविडंग दो माशे। दाख तीन माशे इनतीनों को पीस कर आध सेर जलमें औटावें जब दो तोले रहिजाय तब किसी काच के बरतन में रख छोड़े और इसमें एक रत्ती लेकर गा के दूध में मिला कर पिलावे ॥

❀ डाक्टरों की सम्मति ❀

डाक्टरों की सम्मति है कि उपदेश दो प्रकार का होता है एक पैत्रिक, दूसरा शाररिक।

यह रोग प्रथम व्यभिचारिणी स्त्रियों के हुआ करता है फिर उस स्त्रीके साथ संगम करने से एक महीने के भीतर ही पुरुषकी मूत्रन्द्रिय पर एक समान लाल फुसीपैदाहो जाती है फिर यह फुन्सी धीरे धीरे बडी होकर बीच में से फट जाती है और उस मे एक छोटा सा घाव हो जाता है, इस घाव के किनारे कठोर होते हैं, फिर धीरे धीरे इस घाव में से पीब बहने लगता है। इस दशा में रोगी स्वस्थ रहता है। यह इस रोगकी प्रथमावस्था है ॥

फिर छः सप्ताह से १२ सप्ताह के बीच में हाथ आदि स्थानों में तांबे के रंग के घाव दिखलाई देने लगते हैं। ये व्रण अनेक प्रकार के होते हैं और कोई कोई भ्रम से इसे वसंत रोग भी बतला देते हैं। कभी कभी दादकी तरह भी हो जाते हैं। बगल कपोलकोण, गुदा और पांव की अंगुलियों में गोल गोल दाग पैदा हो जाते हैं, कभी नखों में भी पीड़ा होने लगती है इस कालमें थोडा वा बहुत ज्वर हो जाता है यह ज्वर अथवा एक ज्वर सर्दी लगकर भी होता है। इस समय मुख, ओष्ठ, जिह्वा और गले के भीतर घाव हो जाता है, नेत्रों में भी भयानक रोग होजाते हैं; कानों में दर्द होने लगता है यह इस रोगकी द्वितीय अवस्था है॥

तीन चार वर्ष में वा इससे भी अधिक काल में पेशी; अस्थि और चर्म भी भेदको प्राप्त हो जातेहैं। यह शारीरिक उपदंश की अवस्था है॥

पैत्रिक में संतान अपने माता पिता के संसर्ग से इस रोगकी अधिकारी हो जाती है॥

पैत्रिक रोग में शारीरिक उपदंश के और सब लक्षण तो दिखाई देते हैं परन्तु इन्द्री पर घाव नहीं होता है।

जन्म समयमें इस रोगके होने से बालक के हाथ पांवों में किसी प्रकार का विकार होजाता है, अथवा दुबला पतला बुरी दशामें होताहै, ऐसे बालकके ऊपर नीचेके होठोंमें घाव ओष्ठ कोणमें गढ्ढा तापतिल्ली और यकृत बढे हुएहोतेहैं॥

इस रोगीको आराम होने पर भी लगातार दो वर्षतक औषधादि सेवन कराना चाहिये नहीं तो रोग बढ़जाता है

उपदंशक पर डाक्टरों व हकीमों के मुजर्रिब नुसखे

पारा।

यह पहले दर्जेमें अधिक लाभकारी होता है इसको तीन प्रकार से सेवन किया जाता है एकतो धूनी देना दूसरे मालिश करना-तीसरे खाने को देना।

प्रथम धूनी की क्रिया

रोगीको नंगा करके कुरसी पर बिठावें और रोगी को कुरसी समेत कम्मल से ढकदें केवल रोगी का चहरा खुला रक्खें और कुरसीके नीचे एक बड़ीईंट खूब गर्म करके रक्खें और उसपर पारे का कुश्ता जो कैलोमिल कहलाताहै और अंग्रेजी दवा फरोशोंके पास मिलताहै ५ रत्ती छिड़कें आग गरमी से पाराउडकर रोगीके अंग में लगजायगा पाव घंटे तक रोगी को उसी अवस्था में बैठा रहनदें फिर उठालें यही क्रिया प्रत्येक दिन संध्याके समय करना उचित है इसके करनेसे मसूडे फूल जांयगे और उपदंशके चिह्न दूर होजांयगे धूनी बहुत सावधानी से देनी चाहिये।

❀ दूसरी मालिश की क्रिया ❀

पारे का मरहम जिसको बिल्यू आयंट मेंट कहकर पुकारते हैं हररोज जानूपर और बगलों में भीतर की ओर मले और जबतक इसका असर जाहर नहो रोगीको कपडा न बदलने दे और जो मनुष्य मालिश करै वह हाथों में चमडे के दस्ताने पहनले।

खीरा ककड़ी के बीज की मिंगी मग्ज कद्दू, कुल्फा कासनी, जीरासफेद, खरमुजे की मिंगी, अल्सी, बिहदान अस्पगोल, शोराकल्मी, जवाखार, कनूचा, बाइकारबोनट आफ पुटास, ईथर, दूधकी लस्सी,

इस दरजेमें कब्ज करने वाली औषधि न खानी चाहिये घोडे की सवारी और स्त्री प्रसंग से परहेज़ करना चाहिये, और मांस, चाय, काफी, मदिरा, शीरीनी अर्थात् मिठाई से भी परहेज करना चाहिये—हलकी और ठंढी चीज जैसेकि दूध भात, या मूंगकी दाल भात हरी तरकारी; जव का पानी आहार के वास्ते देनाचाहिये-नमक मिरच कमदेना चाहिये।

दूसरे दरजे में रोगी को लिंगोट बांधना चाहिये और अधिक परिश्रम और चलने फिरने से बचना चाहिये और हलका और नर्म भोजन देना चाहिये और जब रोग घटना आरम्भ होतो ऐसी औषधि देना चाहिये जो प्रमेह रोग में दी जाती है जैसी कुपेवा, चन्दन का तेल, कबाब चीनी, फिटकरी, इत्यादि ॥

❀ नुसखा ❀

कबाब चीनी २ तोला, शकर सफेद ७ माशे, गोंदकागुलाब ५ तोले, दारचीनी १५ तोले सबको मिलाकर दिन २ तक ढाई २ तोले दे।

तीसरे दरजेमें आहारका साधन पूर्ण रीतिसे करनाचाहिये तमाकूका अधिक पीना हानि कारक है जो औषधि दूसरे दरजे में दीजाती हैं उनको अधिक मात्रामें इसदरजे में भी देना चाहिये और पिचकारी दिनमें कई बार लगानी चाहिये

गद के दूध में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य प्रातःसमय खाकर ऊपर से गौका दूध पावसेर पीवेखट्टी और वादी वस्तुओंसे परहेज करना चाहिये।

❀ अन्य दवा ❀

यदि पीव की रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे कवावचीनी, दालचीनी, गुलाब के फूल; सफेद मूसली असगंध नागोरी, सेलखडी ये दवा छः छः माशे इन सबको महीन पीस कर एक तोले की मात्रा पावभर गौ के दूध के साथ खाय और खटाई वातकारक द्रव्य और लाल मिरच इनका परहेज करे इक्कीस दिन तक इस दवा का सेवन करै तो यह रोग अवश्य जाता रहेगा ॥

❀ पिचकारी की विधि ❀

नीलाथोथा, पीली कौडी विलायती नील ये सब दो दो तोले ले, इनको महीन पीसकर इसमें से दो माशे आध सेर जल में मिलाकर खूब हिलावे। फिर इन्द्री के छिद्र में यथा विधि पिचकारी देवे।

❀ अन्य दवा ❀

कतीरा एक तोला; ताल मखाने एक तोले; इन दोनों को वारीक पीसकर इसमें बराबर का बूरा मिलाकर चारमाशे तथा छः माशेकी फक्की ले ऊपर से पावभर गौका दूध पीवे।

❀ दवा इन्द्री जुलाब की ❀

शीतलचीनी, कलमी शोरा, सफेद जीरा. छोटी इलायची ये सब दवा एक एक तोले इन सबको पीस छानकर रक्खे और इसमेंसे छःमाशे प्रातःकाल खाकर ऊपर से सेरभर गौका

दूध पीवैतोदिनभर मूत्रआवैगाऔर जब प्यासलगै तबलस्सी पीवे और सांयकाल के समय धोवा मूंगकी दाल और चां वल भोजन करे और दूसरे दिन यह दवा खाने को देवे।

❀ दूसरी दवा ❀

गोखरू, खीराके बीज, मुंडी, ये दवा छः छः माशे लेकर रात्रिके समय पानीमें भिगोदे फिर प्रातःकाल मल छानकर पीवै और दही भातका भोजन करे और जो इस दवा से आराम न होय तो फिर ये दवा देवै।

❀ तीसरी दवा ❀

कतीरा, गेरू, सेलखडी, शीतलचीनी; ये सब दवा छः छः माशे ले और मिश्री सफेद दो तोले ले इन सबको कूटछान कर छः माशे की मात्रा गोके पावभर दूध के संग खायतो फायदा बहुत जल्दी होगा।

❀ रजस्वला से उत्पन्न सुजाक की दवा ❀

बिहीदाना तीन माशे, लेकर रातको जलमें भिगोदे फिर प्रातःकाल उसका लुआब निकालकर उसमें सवासेर दूध मिलाकर फिर सेलखडी और ईसब गोलकी भुसी छःछः माशे लेकर पहिले फांके फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खानेको मूंगकी दाल रोटी दे और प्रसूती स्त्री के प्रसंग से भी कभी सुजाक होजाताहै, उसकी चिकित्सा यह है।

बालंग के बीज, बीहदाना, खीराककडी के बीज, कुलफा के बीज, कासनी के बीज, हरी सौंफ; सफेद मिश्री ये सब छः छः माशे ले सबको पीस छानकर चार माशे नित्य खाय

और इसके ऊपर गौको दूध पावै और जो इस औषधिसे आराम न होय तो यह औषधि देनी चाहिये ॥

❀ दूसरी दवा ❀

गौके वछडे का सींग, पुरानी रुईमें लपेटकर बत्ती बनावै और कोरे दीपकमें रखकर उसमें अंडी का तेल भरदेवै फिर उसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रखकर काजल पाडे फिर उस काजल को दोनों वक्त आंखमें लगाया करे खटाई और वादी से परहेज़ करे।

सब प्रकारकी सुज़ाक की दवा।

कुल्फा के वीज,पोस्त के वीज सफेद ककडी के बीजोंकी मिंगी, तरबूजके बीजोंकी मिंगी ये सब पन्द्रह पन्द्रह माशे और छोटी गोखरू,बबूल का गोंद,कतीराये छःमाशे ले गोली बनाले फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करे तो सब प्रकार की सुजाक जाय।

पीयावांसे के छोटे पेडको जलाकर उसकी राख में कतीराका पानी मिलाकर चनेके बरावर गोली बनाले. और गुल खेरा को रातको भिगोदे सबेरेही मलकर छानले फिर पहिले उस गोली को खाकर ऊपर से इस रसको पीवै तो सब प्रकार की सुज़ाक जाती रहती है ॥

❀ अथवा ❀

हल्दी और आमले दोनों बराबर ले चूर्ण करै इसकी बराबर खांड मिलाकर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिनमें सु[illegible] ।५।

* अथवा *

सफेद रालको पीसकर उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर नौ माशे नित्य खाय तो सुज़ाक जाय और पीवका निकलना बन्दहोय ।

* अथवा *

ढाक की कौंपल,सूखे ढाक का गोंद,ढाककी छाल, ढाक के फूल,इन सबको कूट छानकर बराबर की खांड मिलाकर इसमें से पौने चार माशे कच्चे दूध के साथ खायतो सब प्रकारके सुज़ाक का हितहै ।

* नुस्खा *

काई सरोवर की ६ माशे,शोरा कलमी ६ माशे, फालसे की जड़का वक्कल ६ माशे, तीनों को चूर्ण रूप में प्रत्येक दिन प्रातःकाल ४ माशे, गायके दूधके साथ पांचदिन तक खाना चाहिये ॥

* नुसखा *

कबाबचीनी २ माशे,शोरा कलमी ढाई रत्ती, कच्ची फिटकरी ढाई रत्ती, गोंद बबूल २ माशे, इनसबको पीसकर एक पुड़िया बनावै ऐसीही तीन पुड़िया दिनमें तीन चार गायके दूध की लस्सी के साथ खावे ।

* नुसखा पिचकारी *

बकरी का दूध ८ छटांक, रसौत ३ माशे,दोनों को मिला कर पिचकारी लेवे । बहुत अजमाई हुई है ॥

* दूसरा नुसखा पिचकारी का *

गेरू २तोला,गुलाब की कली २ तोला नीलाथोथा, हरा

२ माशा, कच्ची फिटकरी १ तोला, मेंहका पानी एक सेर सब दवइयों को पानी में पीसकर सियाही सोखे कागज में छान लेवै और पिचकारी लगावै अति गुणकारी ।

❀ सुज़ाक के लिये तेल ❀

देशी अजवायन पावभर लेकर उसको कूटकर मिंगी निकाले और उसमें घी मिलाकर बोतल के यन्त्र से तेल निकाले खुराक तीन बूंद सफेद शक्कर के साथ प्रातः काल और सन्ध्या के समय खाना चाहिये खटाई और बादी चीजों से परहेज करना चाहिये ।

❀ सुज़ाक पर इन्द्री जुलाब ❀

फिटकरी १॥ तोला, सेलखड़ी २तोला, कबाब चीनी १ तोला, कलमी शोरा६माशे,गेरू,६माशे रेवंद चीनी६माशे,सब दवाइयोंको खूब बारीक पीसकर रक्खे प्रातः काल तीन पाव गाय के दूधमें दो सेर पानी मिलावै और एक तोला औषधि फांक कर वह पानी मिला हुआ दूध पी जावै तदोपरान्त कलमी शोरा एक तोला,एक बरतन में डालकर पानी भर देवै और जब पेशाब की आवश्यकता हो तो इन्द्री को उस पानी में छोड़कर पेशाब करै और पेशाब रोक२ कर करै इसी रीति से निरन्तर पेशाब करना चाहियेः—

❀ नुसखा ❀

पीपल के पेड़की कच्ची लाख खूब धोकर और सुखा कर१तोला खूब महीन पीसे और उसमें ४ तोले मिश्री मिलाकर रक्खे सन्ध्या के समय एक मिट्टी के पात्र में धनियां ३ माशे, मिट्टी की रेह ६ माशे, लौनियां साग

१ तोला; ४ छटांक पानी भर के ओस में रक्खे प्रातः काल उस पानीको नितारकर उसमें शर्वत बजूरी सर्द १ तोला मिलाकर पहिले ऊपर लिखा हुआ लाखका चूर्ण फांककर ऊपर से शर्वत मिली हुई औषधि पीजावे एक सप्ताह इसी प्रकार इस औषधि का सेवन करे खटाई बादी तथा लाल मिर्च से परहेज़ करे ।

❀ नुसखा फोते के वर्मका ❀

सुज़ाक के कारण जो वर्म फोतोंमें होजाताहै उसका यह उपाय है साग सोये पालक का लेकर उस को कूट ले और गर्म करके सन्ध्या तथा प्रातःकाल गर्म २ बांधे वर्म कम हो जायगा और दर्द जाता रहेगा ।

❀ नुसखा ❀

मेंहदी के पत्ते, आंवले, सफेद जीरा, धनियां, गोखरू, यह सब औषधि एक २ तोले लेकर जौकुट कर फिर इसमें से एक २ तोले रातका पानीमें भिगोदें । प्रातःकाल मल छान लें और तीन माशे कतीरा पीसकर पीछे इसमें खांड मिलाकर सात दिन पीने से सुज़ाक जाता रहता है ।

शंखा हुलीका काढ़ा करके पीनेसे भी सुज़ाक जातारहताहै

कुलंगा के बीज ९ माशे लेकर आध सेर दूधमें भिगो के रातको ओसमें धरदे फिर प्रातः काल छानकर उसमें थोड़ी खांड़ मिलाकर पिये परन्तु कुलंग के बीजों को पीसकर भिगोवे तो सब प्रकार का सुजाक जाता रहता है ।

बबूलकी कोंपल; गोखरू एक२ तोला लेकर उनका रसा

निकाल कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो सब प्रकार का सुज़ाक जाता रहता है—

जिरयान अर्थात् प्रमेह।

इस रोगको अरबी में सैलानेमनी कहते हैं यह रोग इन कारणों से होता है। (१) वीर्य्य की अधिकता होना (२) वीर्य्य में कोई विकार उत्पन्न होजाना (३) घुंघटका अधिक बड़ा होना अथवा उसमें मलका जमना (४) मूत्र अथवा मूत्रेन्द्रियका रुग्न होना (५) अन्यान्य रोग अर्थात् कब्ज और गुदा अथवा मस्तिष्क इत्यादि अवयओं में कोई विकार होना (६) वीर्य्य सम्बन्धी अवयओंको ढीला पड़ जाना (७) मूत्रेन्द्रिय की स्तंभन शक्तिका न्यून होजाना।

इस रोगमें मनुष्य जब पेशाब करने को बैठता है तो थोड़ जोर करने से अथवा बिना जोर किये भी वीर्य्य की कई एक बिन्दु अलग अथवा मूत्र में मिली हुई प्रथम अथवा मूत्र करनेके उपरान्त बाहर निकल आती हैं और मल बिसर्जन करने के समय मुख्यतः कब्जकी अवस्था में वीर्य्य निकल जाता है और जब रोग की अधिकता होताहै तो शौच जाने के समय सदा निकलता रहताहै वीर्य्य कभी तो पतला और अधिक बिना जलन के बाहर निकलता है और कभी थोड़ा और जलन के साथ निकालता है—जिस समय ऐसा रोगी स्त्री के प्रसंग की इच्छा करता है या तो उत्तेजनाही नहीं होती और यदि कुछ होती है तो क्षणमात्र में वीर्य्य स्खलित होजाता [illegible] बिवाय शृंगार रसकी

किसी वस्तुका ध्यान मात्र करने से ही वीर्य्यपात होजाता है—शनैः २ रागी नितान्त बलहीन और अशक्त होजाता है, वैद्योंने प्रमेह रोग का निदान और इसकी चिकित्सा का प्रयत्न इस भांति किया है—

❀ वैद्यक मतसे प्रमेह ❀

अधिक काल तक बैठने, तथा सोने और नवीन जल पान करने और भेड बकरा का मांस, गुड़, अधिक मिठाई, बहुत दही, तथा कफ कारी वस्तुओं के भोजन अधिक श्रम तथा अधिक स्त्री प्रसंग करने घाम में रहने उष्ण भोजन करने मदिरा के पान करने तिक्त वस्तु के खाने इत्यादि से यह रोग उत्पन्न होता है।

❀ प्रमेह के पूर्व रूप ❀

दांत तालू जीभ में मल अधिक हो हाथ पांव में दाह हो देह चिकनी हो प्यास अधिक लगे और मुँह मीठा रहे यदि ये लक्षण हों तो प्रमेह रोग के उत्पन्न होने की संभावना है इस अवस्था में मूत्र बहुत ठंडा, पतला, और मैला आने लगता है प्रमेह रोग के २० भेद हैं।

❀ कफादि प्रमेह का वर्णन ❀

उपरोक्त २० प्रमेह में कफसे होने वाले १० प्रकार के, पित्त से होने वाले ६ प्रकार के, और वात से होने वाले ४ प्रकार के प्रमेह होते हैं।

इक्षुमेह, सुरा मेह, पिष्ट मेह, लाला मेह, सान्द्र मेह; उदक मेह, सिकता मेह, शनैर्मेह; शुक्र मेह, शीत मेह ये दश प्रकार के प्रमेह कफकी अधिकता से होते हैं क्षार मेह, श्याम

मेह, नील मेह, हरिद्र मेह-मंजिष्ठ मेह, और रक्त मेह ये छः प्रकार के प्रमेह पित्त की अधिकता से होते हैं वसामेह, मज्जा मेह, क्षौद्र मेह और हस्ति मेह; ये चार प्रकार के प्रमेह वात की अधिकता से होते हैं।

❀ इक्षुमेह के लक्षण ❀

इक्षुमेह नाम वाले प्रमेह रोग में रोगी का पेशाब ईख के रस के समान अत्यन्त मीठे रस से युक्त होता है।

❀ सुरा मेह के लक्षण ❀

इस रोग में मद्यकी गंधके समान उग्र गंधवाला पेशाब होता है इस पेशाब का ऊपर का भाग पतला और नीचे का भाग गाढ़ा होता है।

❀ पिष्टमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब पानी में घुली पिट्ठी के समान होता है. पेशाब सादा होता है जिस समय रोगी पेशाब करता है उस समय सब देह के रोमांच खड़े होजाते हैं।

❀ लालामेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब की धार के साथ ऐसे सूत से निकलते है जैसे मकड़ी का जाला होता है। अथवा जैसे बालक के मुख से राल टपकती है वैसीही राल टपकती है इसी को लालामेह कहते हैं।

❀ सान्द्रमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब बासी फेनके सदृश गाढ़ा होता है इसी को सान्द्रमेह कहते हैं।

❀ उदकमेह के लक्षण ❀

उदकमेह में पेशाब गाढा और साधारण रंग से युक्त होता

है पेशाब में किसी प्रकारकी गंध नहीं आती है, जलके समान शब्द करता हुआ पेशाब निकलता है।

❀ सिकतामेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब को रोकने की सामर्थ जाती रहती है, पानी का रंग मैला होता है और उसके साथ बालू रेत के से कण निकलतेहैं, इन चिह्नों से युक्त पेशाब होने से उसे सिकतामेह कहते हैं।

❀ शनैर्मेह के लक्षण ❀

जो पेशाब थोडा होता है और धीरे धीरे निकलता है ऐसे रोगको शनैर्मेह कहतेहैं।

❀ शुक्रमेह के लक्षण ❀

ऐसे रोगी का पेशाब वीर्य के समान होताहै अथवा वीर्य से मिला रहता है। वीर्यसा मालूम होने के कारण इस रोग को शुक्रमेह कहते हैं।

❀ शीतमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब अत्यन्त मधुर रस युक्त और अत्यन्त ठंडा होताहै ऐसा पेशाब होने से इस रोगको शीतमेह कहते हैं

❀ क्षारमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब गंध वर्ण, रस और स्पर्श में सर्वथा क्षारजल के समान होता है इन लक्षणों से युक्त होने पर इसे क्षारमेह कहते हैं।

❀ नीलमेह के लक्षण ❀

इस रोग में पेशाब में नीली झलक मारती है, नीलकांति युक्त होने ही से इस रोगको नीलमेह कहते हैं।

* श्याम मेह के लक्षण *

जो पेशाब काली के समान काला होता है उसे श्याम मेह कहते हैं।

* हरिद्रा मेह के लक्षण *

जो पेशाब हल्दी के रंग के समान होता है और जिस में पेशाब करते समय जलन बहुत होती है, इन लक्षणों से युक्त रोग को हरिद्र मेह कहते हैं

* मंजिष्ठा मेह के लक्षण *

जिस रोग में पेशाब मजीठ रंग के समान लाल होता है और कच्चे मांस के समान गंध युक्त धातु निकलती है इसी को मंजिष्ठा मेह कहते हैं।

* रक्तमेह के लक्षण *

इस रोग में पेशाब लाल रंग का होता है गरम होता है व्रण से निकलता है इसीको वसामेह कहते हैं।

और उस में कच्चे मांसकीसी गंध आने लगती है। इसी को रक्त मेह कहते हैं॥

* वसामेह के लक्षण *

इस रोग में पेशाब चर्बी के रंग के सदृश होता है, इस में चर्बीभी मिली होती है और पेशाब अधिक निकलताहै॥

* मज्जामेह के लक्षण *

जिस रोग में मज्जा की आभा के सामान अथवा मज्जा से मिला हुआ पेशाब बार बार होता है, उसे मज्जामेह रोग कहते हैं।

❀ क्षुद्रमेह के लक्षण ❀

इसीकादूसरा नाम मधुमेह है। इसमें रूक्षगुणयुक्त पेशाव होताहै और मूत्र कषायरस युक्त अथवा मिष्टरस युक्त निकलता है इसी को मधुमेह वा क्षुद्रमेह कहते हैं।

❀ हस्तिमेह के लक्षण ❀

जो मनुष्य मतवाले हाथी के मूत्र के समान झागदार पेशाव करता है और उसमें ललाईभी हो और बार बार अधिक परिमाण में पेशाव करै। इसको हस्तिमेह कहते हैं॥

❀ साध्य मेहके पूर्व लक्षण ❀

मधुमेह रोगी का पेशाव जिस समय निर्मलहो रंगमें साधारणता हो अथवा कटु तिक्त किसी रससे युक्त हो उस समय मधुमेही निरोग हो जाता है॥

(कफादि जन्य प्रमेह साध्यासाध्य)

कफ से उत्पन्न १० प्रमेह साध्य हैं अर्थात् साधारण यत्न से दूर हो जाते हैं और पित्त के ६ प्रमेह यत्न करनेसे दबे रहते और वायु के ४ प्रमेह असाध्य हैं और शरीरके विनाश करने वाले हैं

❀ असाध्य प्रमेह का वर्णन ❀

पूर्वोक्त अजीर्ण आदि तथा अन्यान्य अशुभ उपद्रवों से युक्त होने पर अधिकतर धातु और मूत्र का स्राव होने से तथा प्रमेह रोग बहुत दिनका हो जाने से यह रोग असाध्य होता है। जब प्रमेह बहुत दिनका हो जाता है और उसकी किसी प्रकारकी चिकित्सा नहीं की जाती है तो समय पाकर यह रोग मधुमेहमें परिणत हो जाता है मधुमेह

को किसी प्रकार से आराम नहीं होता है यह निश्चय जान लेना चाहिये जिस को यह रोग पिता माता के बीजके दोष से पैदा हुआ है जो बाल्यावस्थाही मे हुआ है वह मेह रोग किसी प्रकारसेभी अच्छा नहीं होता है। कुलपरंपरागत अथवा इस प्रकार की फुँसियों से युक्त प्रमेह रोग ग्रस्त मनुष्य का जीवन इस रोग से नष्ट हो जाता है।

कफ प्रमेह पर दश काढे

यह दसो काढे पृथक पृथक सेवन करने के योग्य हैं (१) हरड़, कायफल, नागरमोथा, लोध (२) पाढ़ा वायविड़ंग, अर्जुन, धमासा (३) दारुहल्दी, हल्दी, तगर वायविडिंग (४) कंदबशाल, अर्जुन, अजमान (५) दारूहल्दी, बायविडिंग, खैर, धौके फूल (६) देवदारू, कूट, चन्दन, अर्जुन, (७) दारुहल्दी, अरणी, त्रिफला, पाढ़ा (८) पाढ़ा, मुर्वा, गोखुरू (९) अजमान वाला गिलोय हरड़ (१०) जामुन, आमला, चीता सप्तअरणी ये काढे शहद संयुक्त पीनेसे जल प्रमेह, इक्षुक प्रमेह, सांद्र प्रमेह, सुरा प्रमेह पिष्ट प्रमेह, शुक्र प्रमेह, सिकता प्रमेह, शीत प्रमेह, शनैः प्रमेह; लाल प्रमेह सबको आराम होता है॥

॥ उपरोक्त दश प्रमेहों पर पृथक २ काढ़े ॥

(१) त्रिफला गिलोय का काढा शनैः प्रमेह को नाशे (२) हल्दी, दारुहल्दी का काढा पिष्ट प्रमेह को नाशे (३) नीमका काढा सिकता प्रमेह को नाशे (४) पारिजातक का काढा उदक प्रमेह को दूर करे (५) सप्त पर्णी का काढा सांद्र प्रमेह को नाशे (६) त्रिफला, अमल-

तास, मुनक्का, दाख इनका काढ़ा लाल प्रमेह को नशे (७) दूब, शेवाल क्षुद्रमोथा, करंजा, कसेरु का काढा अथवा अर्जुन चन्दन का काढा पीने से शुक्र प्रमेह दूर होता है (८) पाढा गोखरू का काढा शीत मेह को नाशै (९) नीमका काढ़ा इक्षु मेहको नाशै (१०) शंभल का काढ़ा सुरा प्रमेहको दूर करे है ॥

❀ पित्त प्रमेह पर काढे ❀

(१) लोध, अर्जुन, बाला, पतंग का काढ़ा ॥ (२) नीम बाला, हरड, आमला का काढ़ा (३) आमला; अर्जुन, नीम, कूड़ाका काढ़ा (४) काला कमल, जीरा, हल्दी, अर्जुन का काढा ॥ इन चारों काढों में शहद मिलाकर पीने से पित्त के ६ प्रमेह नाश होवें ॥

❀ पित्त मेहोंपर ६ काढे ❀

(१) बाला; लोध; अमर कंद; चन्दन का काढा (२) बाला, नागरमोथा, अमला हरड़ का काढा (३) परवल नीम आमला गिलोय का काढा (४) नागरमोथा, हरड, पुष्कर मूल का काढा (५) लोध, बाला, दारुहल्दी, धौके फूल का काढा (६) शुंठि, कमल अर्जुन सौंफ का काढा ये छहों काढे माजिष्ठ प्रमेह; हारिद्र प्रमेह, नील प्रमेह, क्षारप्रमेह श्याम प्रमेह, रक्त प्रमेह, इन सबको नाश करते हैं ॥

❀ अन्य औषधियां ❀

(१) कपिला, मसपर्णी, अर्जुन, बहेड़ा, रोहित, कूड़ाके फूलों को दही में पीस शहद मिलाकर पीने से कफपित्त प्रमेहनाश होवें (२) हरड़, कायफल, नागरमोथा, लोध, लालचन्दन बाला

इनके काढेमें शहद व हल्दी का चूर्ण मिलाकर पीने से कफ वात प्रमेह नाश होवे ।

(३) वायविडंग दारुहल्दी, हल्दी, खैर, शाला, सुपारी, का काढा प्रातःकाल पीने से पित्त वात प्रमेह दूर हो ।

(४) त्रिफला, देवदारू, दारुहल्दी गंडूभी, नागरमोथा के काढामें हल्दी शहद मिलाकर पीनेसे सब प्रमेह नाश होता है

(५) केशूके फूलों के काढा में मिश्री मिलाकर पीने से २० प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं ॥

(६) आमला के काढा में हल्दी शहद मिलाकर पीने से व वड़के अंकुरों के काढ़ा में शहद मिलाकर पीने से व पाषाण भेद के काढा में शहद मिलाकर पीने से प्रमेह दूर होता है

(७) वायविडंग; हल्दी, मुलइठी; शुंठि, गोखरू के काढ़ा में शहद मिलाकर पाने से भयंकर प्रमेह भी नाश होजाता है

(८) कूड़ा की छाल, आमनी की छाल, नागरमोथा, त्रिफला इनका काढा सब प्रमेहों में गुणकारी है ।

❀ काढा ❀

अर्जुन, नागरमोथा, कपिला इनका एक तोला आमलाका रस शहदमें मिलाकर खाने से सब प्रमेहों का नाश करता है।

❀ गुडची व धात्री रसयोग ❀

गिलोयके रसमें शहद मिलाकर पीने से प्रमेह शान्त होताहै

❀ अकोल्यादि योग ❀

अंकोली की कली. आमला.हल्दीके चूर्ण को शहदके साथ चाटने से २० प्रकारके प्रमेह निःसन्देह दूर हों ।

❀ एलादि चूर्ण ❀

इलायची. शिलाजीत,पिपली, पाषाणभेद इनके चूर्ण.को

चांवलों के मांड के साथखानेसे प्रमेहरोग नाशकोप्राप्तहोताहै

❀ कर्कट्यादि चूर्ण ❀

ककडीका बीज, त्रिफला, सेंधानमक, ये समान भाग ले चूर्ण बना गरम पानीसे सेवन करेतो मूत्ररोधका नाश करे।

❀ गूगल ❀

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, गूगल ये समान भाग ले गोखरू के काढामें गोली बना देश काल के विचार से सेवन करे तो प्रमेहादि रोगोंपर अति लाभदायक है।

❀ गोक्षुरादि गूगल ❀

गोखरू ११२ तोले का छःगुना पानीमें काढ़ा बना आधा रहने पर उतार डाले पीछे शोधा गूगल २८ तोले मिलाय फिर पकावे गुड़ के पाक समान होनेपर त्रिकुटा, त्रिफला नागरमोथा इनका २८ तोले चूर्ण मिलावे फिर इस की गोली झड बेरी के समान बनाके खाने से प्रमेह मूत्रकृच्छ,प्रदर, मूत्रा घात, वात रक्त, वात रोग, शुक्र दोष ; पथरी आदि का नाश होता है।

❀ चन्द्रकलावटी ❀

इलायची, कपुर; शिलाजीत, आमला, जायफल, गोखरू शंभल; पारा; वंगलोह, भस्म ये समान भागले गिलोय शंभल के काढ़ा में भावना दे इसे दो माशे रोज शहद में मिलाकर चाटनेसे सब प्रमेह का नाश होता है।

❀ हरिद्र तेल ❀

हल्दी का काढ़ा २५६ तोला दूध १२८ तोला कूट असगंध, लहसन, हल्दी ,पिपली इनका काढ़ा तिलोंका तेल ६४

तोला मिला तेलको सिद्धकर और कपासके बनौला की मिंगी अंकोलके जड़ की छाल और फूल.केतकी के बीज.हरड़े इनको चौगुने पानीमें पका चतुर्थांश काढ़ा बना उपरोक्त में मिला और केतकी रस मिला फिर पकाय पीछे १ तोला रोज खाने से २० प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं।

❀ सुपारी पाक ❀

नाग केशर, नागर मोथा, चन्दन, त्रिकुटा, आमला, चिराजा, कोकिलाक्ष लज्जावंती, दालचीनी, इलायची, तमाल पत्र, जीरा स्याह, जीरा सुफेद, सिंघाड़ा, वंश लोचन, जावित्री, लौंग, धनियां, बड़ुला एक एक तोला, सुपारी ३१ तोला इनको चूर्ण कर ९६ तोला दूध में पकाय पीछे गौघृत १६ तोले, मिश्री २०० तोले, आमला १६ तोले, सतावर १६ तोले इनका चूर्ण मिला मन्द मन्द अग्नी पर पकाय चिकने बरतन में रख छोड़े इसमें से प्रातःकाल पाचन शक्ति के अनुसार खाने से प्रमेह. जीर्ण ज्वर अम्ल पित्त, रक्त स्राव, बवासीर, मन्दाग्नि आदि रोग नाश होते हैं और वीर्य्य को पुष्ट कर देता है यह प्रयोग स्त्रियों के प्रदर को भी नाश करके संतान का देने वाला है।

❀ अश्वगंधादि पाक ❀

असगंध ३२ तोला गौका दूध ६ सेर,दालचीनी, इलायची, तमालपत्र नाग केशर, प्रत्येक एक तोला- जायफल, केसर, वंशलोचन, मोचरस, जटामांसी,चन्दन; लालचन्दन, जावित्री, पिपली; पीपलामूल, लौंग, कंकोल, मेंढ़ सिंगी, अखरोट की मींगी. शुद्ध भिलावा का बीज. सिंघाड़ा. गोखरू

रस सिंदूर, अभ्रक भस्म, सीसा भस्म, वंग भस्म, लोह भस्म ये सब तीन ३ मासे मिलाय मन्दाग्नि से पकावै फिर पाचन शक्ति अनुसार सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह, जीर्ण ज्वर, गुल्म, पित्त रोग, वात रोग आदि का नाश करे तथा वीर्य्य अग्नि और कांतिको बढ़ाता है।

❀ द्राक्ष पाक ❀

दाख ६४ तोला, दूध ६४ तोला, मिश्री ६४ तोला इन को मिलाकर पकावै पीछे दालचीनी, इलायची, तमालपत्र नागकेशर, त्रिकुटा, कस्तूरी, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, केशर जावित्री, जायफल, कपूर, चांदी भस्म, कुस्तुंग वरी चंदन ये सब दो २ तोले ले चूर्ण करै पूर्वोक्त में मिला के नित्त प्रातःकाल दो तोलेके सेवनसे शरारको चिकना करे और वीर्य्य को बढ़ावे तथा प्रमेह, पित्तरोग, मूत्र घात, विड्बंध मूत्र कृच्छ, रक्त पीड़ा, नेत्र पीड़ा, हृदय, पैर, हाथ तलवा आदि के दाह को नाश करके मनुष्य को सुखदेता है।

❀ अभ्रक योग ❀

चान्द्रिका रहित अभ्रक भस्म, त्रिफला, हल्दी इनके चूर्णमें शहत मिलाकर चाटने से शीघ्र सब प्रमेह नष्ट होते है।

❀ नाग भस्म योग ❀

शोधा शीशा भस्म २ रत्ती भरमें आमला का चूर्ण, हल्दी शहत मिलाकर खाने से सब प्रमेह नष्ट होते हैं।

❀ गंधक योग ❀

शुद्ध गंधक को गुड़ के साथ एक तोला खाकर ऊपर से दूध पीने से २० प्रकारक प्रमेह दूर होते हैं।

❀ शिला जीत योग ❀

शिला जीत का दूध मिश्री में मिलाकर प्रातःकाल पीने से सब प्रमेह २१ दिन में दूर हों।

❀ स्वर्ण माक्षिका भस्म योग ❀

सोनामाखी की भंस्म शहत में मिलाकर चाटने से सब प्रमेह दूर होते हैं अथवा सोने माखी की भस्म गिलोय के सत में मिलाकर खाने से पित्त प्रमेह जाता रहता है।

बहु मूत्र मेह निदान।

शरीर दुर्बल होजाय, पसीना आवे, और अंगमें गंध आवे हाथ पैर पांव नेत्र कान आदिमें दाह होय, अंग शिथिल रहे और अरुचि हो, पिडिका उपजै, कंठ तालु, होठ सूख जांय और दाह रहे शरीरका रंग श्वेत हो पीला मूत्र हो तथा मूत्र पर मक्खी आदि देर तक बैठे ये बहु मूत्र प्रमेहके लक्षण हैं

❀ बहु मूत्रका दूसरा प्रकार ❀

पसीना आवै. अंग में गन्ध हो और अंग शिथिल हो जावे और शय्या आसन शयन इनकी इच्छा बनी रहे हृदय, नेत्र, कानमें दाह रहे शीतल पदार्थकी इच्छा बनीरहे कंठ तालु सूख जाय मुख मीठा और हाथ पैरों में दाह रहे, और मूत्रके ऊपर मक्खी बैठे वायुसे दोष क्षयहो व कफ पित्त प्रमेह उपजे व वात प्रमेह उपजे, वातके प्रमेह असाध्य पित्त के कष्ट साध्य, कफ के साध्य हैं।

❀ चिकित्सा ❀

त्रिफला, बांस पान, नागर मोथा, पाढा इनके काढ़े में शहद मिलाकर खानेसे बहु मूत्र प्रमेह दूर होता है।

दव दार्व्य रिष्ट

देवदारू २०० तोला; वांसा ८० तोला, मजीठ, इन्द्रजव जमाल गोटा की जड़, तगर, हल्दी, दारु हल्दी रास्ना वायविडिंग नागरमोथा सिरस, खैर,शंभल,ये चालीस२ तोलेले और अजमोद, कूडाकीछाल. सफेद चन्दन गिलोय कुटकी. चीता ये वत्तीस२ तोले ले इन्हें ८ द्रोण पानी में पका अष्टमांस शेप रहने पर शीतल कर धव के फूल ६४ तोले शहद १२०० तोले शुंठि, मिरच, पीपल ८ तोला दालचीनी, इलायची; तमालपत्र ये १६ तोला माल कांगनी १६ तोला नाग केशर ८ तोला, सबको चूर्णकर उपरोक्त काढ़े में मिलाय चिकने वरतनमें एक मास तक रक्खें पुनः इनके पीने से दारुण प्रमेह, वात रोग, ववासीर संग्रहणी मूत्र कृच्छ, कुष्टादि का नाश होताहै।

❀ लोध्रासव ❀

लोध, कच्चूर, पुष्कर मूल, इलायची. मुर्वा. वायाविडिंग त्रिफला. अजवायन. चावकांगनी. सुपारी गडूंभा. चिरायता कुटकी, निसोत, तगर, चीता,पीपला मूल. कूट अतीस पाढा काकड़ा सिंगी, नागकेशर, इन्द्र , नख, तमालपत्र मिरच भद्रमोथा. इन सबको एक २ तोला ले सबको एक द्रोण पानीमें पकाय चतुरांश रहने पर वराबर शहत मिलाय चिकने वरतनमें रख छोड़े १५ दिनके उपरान्त ४ तोले नित्त पीने से कफ, पित्त प्रमेह पांडु. ववासीर. संग्रहणी अरुचि. किलास कुष्ट तथा अन्य कुष्ट सबको शीघ्र नष्ट करता है।

❀ आनन्द भैरव रस ❀

मीठा तेलिया. मिर्च. पीपल. सुहागा. शिंगरफ ये सम

भाग चूर्ण १ रत्ती खाने से सब प्रमेह का नाश करता है

❀ चन्द्रोदय रस ❀

अभ्रक भस्म. गंधक. पारा. वंग भस्म. इलायची. शिलाजीत. ये सब सम भाग लें खरल कर खाने से २० प्रमेह का मल पित्त इन सबको नाश करता है।

पञ्च लोह रसायन ❀

अभ्रक भस्म, लोह कान्त भस्म, शीशा भस्म, वंग-भस्म इन्हें भाग वृद्धि से ले खरल में डाल कूटल बाराही कन्द शतावर लाल चन्दन इन के काढ़ा में एक एक पहर अलग २ भिगोवे फिर चना के बराबर गोली बना लोनी घृतके साथ सवेरे के समय खाने से सब प्रमेहोंका नाशहो इसपर चावल, परवल तांडुला, बथुआ मत्स्याक्षी, मूंगयूष-कच्चा केला के फल पथ्य हैं यह बवासीर संग्रहणी. मूत्र कृच्छ. पथरी कोयला. पांडु सोजा. अपस्मार. क्षत क्षय. रक्त. खांसी को भी दमन करता है।

❀ महा वंगेश्वर रस ❀

वंग भस्म. कांत भस्म, अभ्रक भस्म, धतूरे का फूल ये सब सम भागले घीगुवार के पाठे के रस में ७ बार भावना देकर खाने से २० प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं और मूत्र कृच्छ, सोम रोग, पांडु, पथरी, दूर होती हैं।

❀ पथ्य ❀

पहिले लंघन वमन, विरेचन प्रोद्वर्तन शमन दीपन इन का सेवन कराय पीछे नीवार, धान्य, कांगनी, यव, वांस, का फल कोदो, साम।ज्वांरि, कुरु।विन्द, मटर. गेहूं, धान, कलम धान पुरानी कुलथी मूंग अरहर चना इनका यूष व रस तिल खील शहद मठा चिरोटा कबूतर शशा तीतर लवा वाघ हिरण आदि जंगली जीवों का मांस सहोजना; परवर करेला ककेड़ा ताड़फल कटेली का फूल गूलर लहसुन, नवीन केला, पालकका शाक, गोखरू, मूपपर्णी, आकके पत्ते, गिलोय, त्रिफला, कैथ जामुन, कसेरू, कमल, तथा नील कमल की जड़, व बीज खजूर नरियल, तथा ताड़ वृक्ष का मस्तक त्रिफला, भिलावां; कत्था इन्द्रयव, चर्परे तथा कषाय ये रस हाथी घोड़ा की सवारी बहुत फिरना, सूर्य्यका तेज, कसरत ये प्रमह में पथ्य हैं।

❀ अपथ्य ❀

मूत्र का वेग, धूंआ, पीना, स्वेदन, रक्तमोक्ष, सदा बैठना दिन में सोना; नवीन अन्न, स्त्री संग. कांजी. सेंधा नोनका जल, तेल गुड; तूंबी की मींगी. विरुद्ध भोजन. कोयला, ईंप, बुरा जल. मीठे. खट्टे और खारी रस अभिष्पंदी ये सब वस्तु प्रमेह में अपथ्य हैं।

❀ प्रमेह रोग पर परीक्षित प्रयोग ❀

(१) मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में कपूर रखने से पेशाव होकर दर्द कम होजाता है।

(२) पके हुये पेठेका जल आधपाव. जवाखार दो आ-

ना भर. विशुद्ध चीनी दो आना भर. इन सबको मिलाकर सेवन करने से मूत्रबद्ध रोग में पेशाब होकर रोगी की वेदना कम होजाती है ।

(३) मिसरी के पाव भर शर्बत में एक छटांक कमला नीबू का रस मिलावे और इस में से धीरे धीरे पान करावै तो पेशाबों के होने से रोगी की वेदना कम होजाती है ।

(४) विशुद्ध चीनी में आरने उपलों की राख का पाव-भर जल मिलाकर पीने से रोगी रोगमुक्त होजाता है ।

(५) आमले का गूदा आध तोला. बकरी का दूध छटांक भर इन दोनों को मिलकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है ।

(६) जवाखार और विशुद्ध चीनी प्रत्येक दो आना भर मिलाकर शहत के साथ तीन चार दिन तक सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होकर धारा गति से पेशाब होने लगता है ।

(७) गोखरू के बीज. असगंध. गिलोय आमला और मोथा हरएक एक २ आना भर लेकर चूर्ण बनाकर शहत के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग जाता रहता है ।

(८) मूंगेकी भस्म एक रत्ती लेकर शहत के साथ मिलाकर सेवन करने से कफजन्य मूत्रकृच्छ्र रोगदूर होजाताहै ।

(९) बरना की दो तोले छाल लेकर आध सेर जल में औटावे. जब चौथाई शेष रहै तब उतार कर छानले. फिर इसमें परिष्कृत शोरा छः रत्ती मिलाकर इस जलकोदोबार पीवै. इससे पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है ।

(१०) लोहेकी भस्म दो रत्ती शहत में मिलाकर चाट-

नेसे मुत्रकृच्छ्र का कष्ट जाता रहता है। पेशाब साफ होजाता है. और रोगी बलिष्ठ होता चला आता है।

(११) पंचतृण में से हरएक को दो आने भर लेकरजो कुट करके आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतारले. ठंडा होने पर छानकर इसमें चार चार आना भर शहत और चीनी मिलाकर पान करे। इससे मूत्रकृच्छ्र का पेशाब साफ होजाता है। और किसी तरह की वेदना हो रही हो तो उसके भी शीघ्र शांत होनेकी संभावना है।

(१२) कालेगन्नेकीजड़. कुशाकी जड़. भूमिकुष्मांड. औरसोंफ प्रत्येक आधा तोला लेकर आध सेर जलमें औटावे. जब चौथाई शेष रहे तब उतार ले. औरठंडा होने पर छानकर इस क्वाथ को पीवे इससे प्रमेह से उत्पन्न मूत्र कृच्छ्र जाता रहता है॥

(१३) एक तोले कटेरीके रस में तीन माशे शहतमिला कर पीनेसे भी प्रमेह से पैदा हुए मूत्रकृच्छ्र में आराम होने की विशेष संभावना है।

(१४) गोखरू के एक छटांक क्वाथ में जवाखार दोवा तीन रत्ती मिलाकर पीनेसे निश्चयही पेशाब साफहो जाता है और सुजाक का दर्दभी कम हो जाता है॥

(१५) गोखरू और कटेरी प्रत्येक एक तोला लेकरआध सेर जलमें औटावे. चौथाईसेर रहनेपर उतार कर छानले, ठंडी होने पर इसमें बतासा डालकर पान करावे इससे कफ जनित सुजाक जाता रहता है।

[१६] पंचतृणकी जड़ सब मिलाकर दो तोला, बकरी

का दूध एक छटांक, जल एक सेर इन सबको मिला कर औटवे जब दूध शेष रहजाय तब उतार कर छानले, इसके पीनेसे इन्द्री के छिद्र में होकर रुधिर आता हो वा रुधिरका पेशाब होता हो तो शीघ्र आराम होजाता है।

(१७) आधा तोला बीदाना अनार के रसके साथमोती की भस्म चार रत्ती मिलाकर सेवन करनेसे निश्चयही पेशाब कम हो जाते हैं और दरद भी घट जाता है।

(१८) बडी इलायची के बीजों का चूर्ण दो आना भर सुंठी चूर्ण दो आनाभर इनको एक छटांक अनारके रस में मिलाकर सेवन करनेसे निश्चयही पेशाब कमहो जातेहैं और कफ प्रधान बहुमूत्र रोगमें इसदवासे विशेष उपकार होताहै।

(१९) शुद्धकीहुई बंगभस्मदो रत्ती, मधुतीनमाशे, इनको मिलाकर चाटने से बहुमूत्र रोगमें पेशाब कम होहीजाते है।

(२०) दो तोले आमलेके रसमें शहत मिलाकर दिन में दोतीनवार सेवन करनेसे बहुमूत्ररोगमें पेशाब कमहोजाता है

❀ सुजाक से उत्पन्न प्रमेह का वर्णन ❀

सुजाक से उत्पन्न हुए प्रमेह का यह लक्षण है कि मूत्रनाली के छिद्र में होकर पीव निकला करता है इसरोगपर यह दवा उत्तम चिकित्सा है:-

खरबूजेकी मिगीं तीन तोले, खीरे के बीजों की मिगीं डेढ तोले, घीया के बीजोंकी मिगीं, अजवायन खुरासानी, बंश लोचन, इसपंद के बीज, कुलफे के बीज, गेहूंका सत्त बादाम की मिगीं, कतीरा, मुलहटीका सत्त पोस्तके दाने, गेरू

अजमोद ये सब दवा सात सात माशेले महीनपीसकर छान ले फिर बीहदाना सातमाशेलेकर उसका लुआब निकालकर उस पिसीहुई दवामें मिला कर जंगली बेरके बराबर गोली बनावे और गोखरूतथा सूखाधनियां छःछः माशे कूटकरपाव सेर जलमें रातको भिगोदे और प्रातकाल इस गोली को खा कर ऊपरसे इस नितरेहुए जलको पीवै परन्तु गोली को दांत न लगावै साबतही निगलजावे तो प्रमेह जायइसदवापर खटाई तथा लाल मिरचों से परहेज करना चाहिये ॥

❀ दूसरा उपाय ❀

अलसी पावसेर; बंशलोचन चार तोले. ईसबगोल. सेल खडी । इन सबको महीन पीसकर बराबरकी खांडमिलाकर एक हथेलीभर नित्य सवेरेही खाकर ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवै तो प्रमेह जाय परन्तु गुड. खटाई तेल इसपर कुपथ्यहै

❀ अन्य प्रमेह ❀

प्रमेह में वीर्य्य बहुत पतला होकर बहा करताहै और यह प्रमेह तीन प्रकार से होता है एक तो यह कि सर्दी पाकर वीर्य्य पानीके समान होकर बहा करता है इस प्रमेह वाले को यह दवा देनी चाहिये ।

❀ पतले वीर्य्य का उपाय ❀

बर्गदकी डाढी पावसेर लेकर इसको बर्गदही के पावभर दूध में भिगोकर छायामें सुखाले और बबूलका गोंद, साल व मिसरी. सकाकुल ये सब दो दो तोले और मूसली सफेद और मूसली स्याह यह दोनों पांच २ तोले ले कूट छानकर बराबर की कच्ची खांड मिलाकर इसमें से एक तोले नि-

त्य सवेरेही खाकर ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवे और ख-ट्टी तथा वातल वस्तुओंका सेवन न करै तो सात दिनमेंनि-श्चय आराम होजाता है ॥

❀ दूसरी प्रकारका प्रमेह ❀

दूसरा प्रमेह यहहै कि गर्मी पाकर वीर्य पिघलकर पीला-पन लिये हुए बहता है इस रोगवालेको यह दवा उचित है:—

❀ गर्मीके कारण पतले वीर्यका उपाय।

बबूलकी कच्चीफली, सेमरके कच्चे फूल, ढाककी कोंपल, नया पैदा हुआ कच्चा छोटा आम, मुंडी, कच्चे अंजीर, अ-नारकी मुहमुंदी कली, जावित्री कच्ची, ये सब औषधि एक एक तोले ले इनसबको महीन पीसकर सबमे आधी कच्ची खांड मिलाकर एक तोले प्रतिदिन प्रातःकाल गौके दूधके संग सेवन करने से प्रमेह जाता रहता है।

❀ तीसरी प्रकारका प्रमेह ❀

तीसरे बात पित्त के विकार से प्रमेह हो जाता है इसके लिये यह दवा दे।

❀ उक्त प्रमेहकी दवा ❀

उर्द का आटा आधसेर; इमलीके बीजोंका चूर्ण आधसेर सेलखडी तीन तोले इन सबको पीस छानकर इसमें तीनपाव कच्ची खांड मिलाकर इसमेंसे पांच तोले नित्य प्रातःकाल के समय खाकर गौका दूध पावसेर पीवै तो सात दिन में प्रमेह जाता रहता है। और कभी कभी रुधिर विकार सेभी प्रमेह हो जाता है इसमें बासलीककी फस्द खोले और इन्द्रि-य जुलाब देकर यह औषधि देना चाहिये ॥

❀ रक्तज प्रमेहकी चिकित्सा ❀

भुने चने का चून पावसेर, शीतलचीनी एक तोले, सफेद जीरा छःमाशे, शकरतीगाल छः माशे इन सबको कूटछानकर इसमें तीन तोले कच्ची खांड मिलाकर सवेरेही चार तोले फांके ऊपरसे गौका पावभर दूध पीवै और यथोचित परहेज करै (विंदकुशाद की चिकित्सा) जब आदमी के सुजाक पैदा होताहै उसवक्त बहुतसे मनुष्य औषधियोंकी बत्ती बनाकर जननेंद्रिय के छिद्र में चला देते हैं इस लिये लिंग का छिद्र चौड़ा होजाता है इसको विन्द कुशाद कहते हैं इसरोगवाले मनुष्य को यह औषधि देनी चाहियेः—

गौका घृत दो तोले, रसकपूर, सफेदा, काशगरी, सेलखड़ी ये दवा एक एक माशे, नीलाथोथा एक रत्ती, पहिले घृतको खूब धोवै फिर सब औषधियोंको पीस छानकर घृतमें मिलाकर मरहम बनाले और रुईकी महीन बत्तीपर इस मरहम को लपेटकर लिंगके छिद्रमें रक्खे तो आराम होय।

❀ उपदंश के मेहका वर्णन ❀

जो आतशक के कारण से प्रमेह होतो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्रीके मुखपर एक छोटासा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहताहै क्योंकि एकतो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गर्मी तीसरे उन दवाइयों की गर्मी जो आतशक में दीनी गई इनने दोषोंके मिलने से यह प्रमेहरोग होताहै इसके वास्ते यह दवा देनी चाहियेः—

❀ दवा ❀

अकरकरा, सुपारीके फूल, मूसली सफेद, मोफला, मीठे

इन्द्रजौ, गोखरूबड़े, गिलोयसत, कौंचकेबीज, उटंगनकेबीज अजवायनके बीज, अजमोद, शीतलचीनी; कुलीजन, शोरंजा नमीठा, बड़ी इलायचीके बीज; दम्मुल अखवेन. ये सब दवा एक एक तोले ले सबको कूटछानकर सात तोले बूरामिला-कर एकतोले नित्य प्रातसमय खाय ऊपरसे पावभरगौकादूध पीवैतोग्यारह दिनमें प्रमेहको निश्चय जड़मूलसे नाशकरदेताहै

और जो वीर्य स्याही लिये हुए बहताहो उसके वास्ते ऐसी दवादेनी चाहिये जो प्रमेह और आतशकको गुणदायकहो ।

❀ नुसखा प्रमेह ❀

अकरकरा गुजराती, हुलहुलके बीज, गोखरू छोटे, गोखरू बड़े, सुपारी के फूल, स्याह मूसली, सफेद मूसली, सेमरका मूसला, मीठे इन्द्रजौ, गिलोयसत, लिसोड़े, कौंचकेबीज, उटं-गनकेबीज तालमखाने, शीतलचीनी, मीठा सूरंजान ये सब दवा एक २ तोले, तज बिजोरे का सत पठानी लोध ये नौ नौ माशे इन सबको कूट छानकर सब से आधा बूरा मिलाकर एक तोले नित्य गौके दूधके संग प्रातःसमय खाय तो प्रमेह जाय और खटाई आदि से परहेज़ करै ॥

जो प्रमेह लालमिर्च और खटाई तथा गरम आहारके अ-धिक खानेसे उत्पन्न होताहै उसकेवास्ते ये दवा देनीयोग्य है ।

❀ दवा ❀

दोनों मूसली पांच तोले, कलौंजी स्याह पांच तोले, सबको कूट छानकर बराबर का बूरा मिलाकर एकतोले पावभर गौ के दूधके साथ प्रातःकाल खाया करैतो प्रमेह जातारहताहै ।

❀ अन्य औषधि ❀

कुदरू गोंद पन्द्रह तोले लेकर पीस छानकर इसमें दश तोले कच्ची खांड मिलाकर नित्य सवेरेही एक तोले गौके दूध के संग खाय तो यह प्रमेह रोग जाता रहता है।

❀ वीर्य के पतलेपनकी दवा ❀

मूसली सफेद, खरबूजे की गिरी; पांच पांच तोले.पेठा आधसेर; घीग्वार का गूदा आधपाव, कबाबचीनी छःमाशे, इन सबको पीसकर एक सेर कंदकी चासनी करके इसमें सबदवा मिलाकर माजून बनाले इसमें से एक तोले नित्य सेवन करनेसे वीर्य पैदा होता है और गाढ़ाभी होजाता है।

❀ तथा ❀

एक सेर गाजरोंको छीलकर घीमें भूनले फिर आधसेर कंद मिलाकर हलुआ बनाले इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन करने से वीर्य गाढा होताहै और ताकतभी अधिक बढ़तीहै।

❀ तथा ❀

पावसेर छुहारे गौके दूधमें पकाकर पीसले और पावसेर गोहूंका निशास्ता और पावसेर चनेका बेसन इनको भूनले फिर तीनपाव खांड और आधसेर घी डालकर सबका हलुआ बनावे फिर इसमें बदाम पावसेर, पिस्ता पावसेर, चिलगोजा पावसेर, अखरोट की गिरी आधपाव, सबको बारीक करके हलुआ में मिलादे फिर इसमें से चार तोले प्रतिदिन सेवनकरैतोवीर्यगाढा होजाता है और शक्तिभी बहुत बढजातीहै

❀ तथा ❀

मीठे आमका रस तीनसेर,खांड सफेद एक सेर गौका घी

आधसेर, गौका दूध एक सेर, सहत पावसेर लाकर रखले तथा वहमन सफेद वहमनसुर्ख सोंठ सेमलका मूसला प्रत्येक एक तोला,वादामकी गिरी चारतोले, पीपल छःमाशे सालव मिश्री चार तोले, सिंघाड़ा चारतोले, खोलजान छःमाशे पिस्ता चारतोले, इन सबको अलग अलग पीसकर रखले पहिले बादाम पिस्ता और सिंघाडे मिलाकर घीमें भूनले फिर आमकारस खांड सहत और दूध इनको कलईके वर तनमें मंदी आगपर पकावे फिर सब चीजें डालकर हलुआ कीरीति मे भूनले । इसमेंसे दोतोले सेवन करनेसे वीर्य अधिक पैदा होताहै पतला होतो गाढा होजाता है

❀ तथा ❀

बबूलकी छाल, फली, गोंद और कोंपल इन सबको बराबर ले कूट छानकर सबको बराबर खांड मिलाकर एक तोले प्रतिदिन सेवन करनेसे पतला वीर्य गाढा होजाता है ।

❀ तथा ❀

बरगदके फलको सुखाकर पीसले प्रमाणके अनुसार गौके पावभर दूधके साथ फांकेतो वीर्य गाढा होजाता है॥

❀ तथा ❀

सालव मिश्री; दोनों मूसली सेमरका मूसला घाड़की सोंठ यह डेढ २ तोले सलजम के बीज, सोयाके बीज गाजर के बीज प्याजके बीज मिर्च पीपल यह सब आठ आठ माशे शहद पावसेर,लाल-बूरा पावसेर प्रथमही शहद और बूरेकी चाशनी कर उसमें ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको मिलाकर माजून बनाले फिर इसमेंसे एक तोले नित्य सेवन करने से

इन्द्री प्रबल होजाती है बिगड़ा हुआ वीर्य सुधर जाता है। इस दवा के सेवन काल में खटाई वर्जित है।

❀ तथा ❀

सालब मिश्री पांच तोले, शकाकुल मिश्री तीन तोले, अकरकरा, कुलीजन, समंदर सोख, भिलाये की मिंगी, असगंध एक २ तोला पीपल मस्तंगी हालम के बीज, जायफल, सोंठ दोनों वहमन, दोनों तोदरी छः छः माशे, छिले हुए सफेद तिल, कौंचके बीजों की मिंगी, गाजर के बीज एक माशे जावत्री केशर तीन तीन माशे सबको बराबर सफेद कन्द ले और तिगुने शहत में सब मिलाकर माजून बनावे फिर छः माशे नित खाय तो वीर्य गाढा होजाता है।

❀ तथा ❀

रेगमाही, इन्द्रजौ, सफेद, पोस्तके दाने, नरकचूर सफेद चन्दन नारियलकी गिरी, बादामकी मिंगी, अखरोटकी मिंगी, मुनक्खा, काले तिल छिले हुए ये सब दवा दो २ तोले प्याज के बीज, सलजम के बीज, कौंचके बीजकी मिंगी, हालमके बीज, माई, असवंदके बीज, गाजर, मस्तंगी नागर मोथा, अगर, तेजपात, बिजौरे का छिलका, चीता, सोयाके बीज, मूलीके बीज, दोनों तोदरी, दोनों मूसली ये सब दवा एक २ तोले सिलाजीत, अकरकरा, लौंग, जावित्री जायफल काली मिर्च दालचीनी सब दवा नौ२माशे शहत और सफेद बूरा सबसे दूना लेकर पाक बनावे फिर इसमें से एक तोले नित्य सेवन करे इस माजून के समान इन्द्री को बलवान करने और वीर्यको गाढ़ा करने में दूसरी कोई दवा नहीं है।

मान्य रीति से जुड़ा हुआ होना अथवा उस में गुप्त रहना अथवा मूत्रेन्द्रिय का प्रमाण से अधिक दीर्घ होना।

(३) मूत्रेन्द्रिय का एक न होकर दो होना।

(४) मूत्रेन्द्रिय का जन्म से टेढ़ा होना।

(५) सुपारी के ऊपर की त्वचा का जन्म से बंद अथवा रुका हुआ होना।

(६) अण्डकोषों का जन्म काल से ही अधिक छोटा, होना अथवा गुप्त होना, अथवा एक अण्ड छोटा एक बड़ा होना अथवा दोनों का नितांत अभाव होना, अथवा उन के अधिक बढ़ जाने से उत्पादक शक्ति का नष्ट होजाना।

(७) वीर्य में स्वाभविक उत्पादक शक्ति का न होना और जन्म काल से ही नपुंसक होना।

❀ जो वाह्य कारणें तथा रोगों से सम्बन्ध रखते हैं ❀

(८) उपदंश इत्यादि कोई भयानक रोग होने के कारण अथवा कोई घाव होजाने से मूत्रेन्द्रिय का कटकर गिरजाना या बिगड जाना।

(९) सुजाक के उपरांत जो प्रमेहादि रोग उत्पन्न होते हैं उनका अधिक काल तक विद्यमान रहना।

(१०) उपदंश का विष समस्त शरीर में प्रवेश होजाने से रग, पट्ठों, हड्डियों इत्यादि का विकृत होजाना।

(११) अधिक प्रसंग, हस्त क्रिया विपरीत क्रिया इत्यादि से वीर्य्य का न्यून होजाना, अथवा वीर्य्य की आकृति में विषमता होजाना।

(१२) अधिक पढ़ने मास्तिष्क सम्बन्धी अधिक परिश्रम,

मास्तिष्क में चोट लगजाने इत्यादि कारणों से अंडकोषों में रुधिर की न्यूनता होकर वीर्य्य की उत्पत्ति में ह्रास होना।

(१३) कमर में अधिक चोट लगना, चूतड़ केबल गिरना पक्षाघात रोग से अर्ध अथवा समस्त अंगको अशक्त हो जाना, दारुण अजीर्ण रोग, अथवा हृदय, मस्तष्क यकृत आदि श्रेष्ठ अवयवों का दोष युक्त होजाना।

(१४) अनुमान से अधिक शरीर का मोटा होजाना।

(१५) मादक द्रव्य अफ़यून,चर्स, भंग,गाँजा, कपूर.काफ़ी शो I.अं.यो डाइड़ अ फ़ पुटासियम वा ब्रोमाइड पुटासियम इत्यादि वस्तुओं का अधिक काल तक सेवन करते रहना।

(१६) वायु की अधिकता से शक्ति का कम होजाना।

(१७) अहार की विषमता से बल का असीय घटजाना।

(१८) श्रम और चिन्तासे नपुंसकताकी भ्रान्ति होजाना

(१९) शारिरिक दुर्बलता से शक्तिका अभाव होकर तेज हीन हो जाना।

(२०) दीर्घ कालतक एकाकी रहने ब्रह्मर्य्यादि व्रत करने वीर्य्य के स्थंभित हो जानेके कारण असमर्थता होजाना।

(२१) वीर्य्य की न्यूनता वा विकारसे शक्तिका लोप हो जाना।

(२२) अधिक स्वप्न दोषमे बलका नष्ट होजाना।

(२३) भय; शोक अथवा इच्छानुसार पुरुषार्थ न होनेसे नपुंसकता का प्रादुर्भाव होना।

(२४)प्रसंगकी अधिकता से बल वीर्य्य का क्षय होजाना.

* साधारण विवरण *

जो २ कारण ऊपर लिखगये हैं उनमें से नम्बर एकसे सात तक के कारणो को चिकित्साके लिये असाध्य जानना चाहिये शेष कारण चिकित्सा के योग्य है और उनकी चिकित्सा का उपाय यह है कि जो कारण उपस्थित हुआ है उस के निवारण और शरीर के पुष्ट और निरोग करने का प्रयत्न करना चाहिये और वल वर्धक औषधियां तथा भोजन का सेवन करना चाहिये इस स्थान पर हम वह उत्तमोत्तम प्रयोग वर्णन करेंगे जो अनेक विद्वान तथा अनुभवी डाक्टरों हकीमों और वैद्यों के बारम्बार के परीक्षा किये हैं और अवश्य फल दायक विदित होंगे।

(१) ❀ नुसखा सेक का ❀

हाथी दांत का चूर्ण मछली के दांत का चूर्ण एक २ तोला लौंग ८ माशे, गुजराती जायफल नग २ नरगिसकी जड़ नग १ इनको महीन पीसकर दो पोटली कपड़े की बनावें और आध पाव दूध भेडका लेकर पेडू और जंघा को उन पोटलियों से सेकना आरम्भ करके मूत्रेन्द्रिय को सेके तत्पश्चात बंगला पान आगपर सेककर उस पर बांध दे जल का स्पर्श न होने दे इस प्रयोग के संग खानेकी औषधि भी है जिस का नुसखा यह है।

(२) ❀ नुसखा माजून का पुष्टता के लिये ❀

मग्ज चिलगोजा, पोस्त के बीज, कुलीजन, स्याह मूसली लौंग, सालम मिश्री, जावित्री, भोंफली, ताल मखाना, बीज बन्द, सितावर, ब्रह्मदंडी, तज यह सब औषधि चार चार

तोले, काफ़ नज ९ माशे सबको महीन पीसकर चार छटांक घी गायका लेकर उसमें मिलावे और ८ छटांक निर्मल और स्वच्छ असली शहद लेकर उसकी चाशनी करके यह औषधि उसमें मिलावे और माजून जमाकर रख छोड़े इस में से २ माशा प्रातःकाल और दो माशा सन्ध्या के समय गौ के दूधके संग सेवन करै—यह औषधि निरन्तर चालीस दिन तक सेवन करना चाहिये और खटाई ल ल मिरच, तेल इत्यादि अवगुण कारी वस्तुओंसे परहेज करना चाहिये और औषधि के सेवन काल में ब्रह्मचर्य्यसे रहना चाहिये और पुष्ट पदार्थोंका भोजन करना चाहिये और कुछ व्यायाम करना चाहिये जिससे भोजन भलीभाति पचकर शुद्ध रुधिर शरीर में उत्पन्न करै और अजीर्ण आदिकी व्याधा न होने पावे।

(३) ❀ पुष्ट कारक लेपकी अन्य औषधि ❀

सफेद कनेर की जड़, जायफल गुजराती, अफयून, छोटी इलायची, जटामासी की जड, पीपलामूल, यह सब औषधि छः छः माशे लेकर महीन पीसे और दो तोला तिलके तेल मे अथवा जैतून के तेल में मिलाकर खूब घोटे और चीनी के पात्र में रखले इन तिलोंको इस भांति सेवन किया जाता है कि प्रथम इन्द्री को मोटे कपड़े से घिसकर इसको गर्म करके लेप करे और कुछ काल तक वण्ड की अग्नि से सेक कर ऊपर से बंगला पान गर्मकर के बांधे इस औषधिका सेवन दो सप्ताह तक करना चाहिये और इसके सेवन काल में एक पुष्ट चूर्ण भी खाना चाहिये जिसका नुसखा नीचे लिखा आता है।

(४) ❀ नुसखा चूर्ण वीर्य्यकी पुष्टता के लिये ❀

मूसली स्याह, असगन्ध नागौरी, धावेके फूल, भुने चने, सोंठ, गाजर के वीज, उटंगन के वीज, पिस्ता के फूल; ताल मखाना, इमलीका वीज भुना हुआ, इन सबको एक एक तोला बारीक करके बराबर वजन बूग मिलाकर एक एक तोला हर रोज प्रातःकाल पावभरया डेढ पाव गायके दूध के साथ खाय और जो परहेज खाने पीने इत्यादि का ऊपर लिखा है वह सब यथा तथ्य करता रहै इस औषधि का सेवन २१ दिन तक निरन्तर करना चाहिये परमेश्वरकी कृपा से वीर्य्य पुष्ट होगा और प्रमेह भी जाता रहेगा।

(५) ❀ नसों के मारे जानेकी पट्टी ❀

संखिया, जमाल गोटा, तिल, आकका दूध ये चारों औषधि एक एक माशा लेकर सबको महीन पीसकर जलमें लुवदी बना ले इसको इन्द्री के ऊपर लेप करे और बंगला पान गर्म करके बाधदे इस औषधि से छाला पड़ जाता है इस लिये अधिक देर तक न बाधकर खोल डाले छाले को काट कर गायका धुला हुआ घी उस पर लगादे आरोग्य होने पर नसें ठीक होजाती हैं।

(६) ❀ पुष्ट कारक रोगन ❀

बीर बहूटी १ तोला, अकर करहा विलायती १ तोला, सूखे हुये और साफ किये हुए केंचुए २ तोला, युवा घोडे के नस डेढ तोला, कुलीजन १ तोला, चिरमिटी सफेद १ तोला माल कंगनी २ तोला दारचीनी ६ माशे, धतूरा के वीज ६ माशे; चिनौले की मिंगी ६ माशे, हीरा हींग ३ माशे, इनको

होताहै । तथा अनेकप्रकारका ध्वजभंग भी जाता रहताहै ।

❀ १४ इन्द्रीलेप ❀

जायफल, जावत्री, छरीला, मनुष्यके कानका मेल प्रत्येक छःछःमाशे, गधेके अंडकोषो का रुधिर चार तोला । इन सब को दुआतशी शराबमें इतनी देरतक घोटनाचाहिये कि पाव भर शराब को सोखले फिर इसको जननेन्द्रिय पर मालिश करे तो इन्द्री पुष्ठ होतीहै और नपुंसकता दूर होती है ॥

* १५ अन्य लेप *

कडवे कद्दू की मिंगी दो तोले सफेद चिरमिठी, अकरकरा छःछःमाशे. तेजबल. और पीपलामूल तीन तीनमाशे इन सबको गौके घृतमें तिन दिन तक घोटे फिर इसको इन्द्रीपर लगाकर बंगला पान बांध दे इससे नपुंसकता-दूर हो जाती है ॥

❀ १६ अन्य लेप ❀

जमाल गोटेको गधेकी लीदके रस में औटाकर सफेद चिरमिठी, कुचला जलाहुआ, अकरकरा, सफेद कनेरकी जड़ का छिलका प्रत्येक दो दो तोले; इन सबको पीसकर गौके दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध सूख जावे । फिर यंत्रद्वारा खींच कर इसका लेप सुपारी को बचाकर इन्द्री पर करे ऊपर से पान बांधदे ॥

❀ (१७) अन्य लेप ❀

सफेद कनेर की जड़,लाल कनेरकी जड़ इन दोनोंका छिलका डेढ डेढ तोले; जायफल एक,अफीम नौ माशे, इन सबका चूर्ण करके भैसा गोह की चर्वी दो तोले मिलाकर · दिन

घोटकर गोली बनाले और शराबदुआतशीमें घिसके सुपारी को बचाकरसम्पूर्ण इन्द्रीपरलगावे और ऊपरसे बंगलापान बांधे

(१८) अन्य लेप ।

सफेद कनेरका छिलका आधपाव, सफेद चिरमिटी आध पाव, कड़वा कूट २ तोले जमालगोटा२तोले, इन सबका चूर्ण कर१५सेर गौके दूधमे मिलाकरपकावे। फिर इसकादही जमावे फिर प्रातःकाल ४ सेर पानी मिलाकर इसको रईसे बिलोकर माखन निकाल और इसके मटेको पृथ्वीमें गाढ देना चाहिये क्योंकि विषके समान है और माखनको तायकर रखले फिर इसमेंसे इन्द्रीपर लेपकरै सुपारी छोड़कर लेप करना चाहिये ऊपरसे पान बांधे और एक रत्ती के प्रमाण पानपर लगाकर खाय तो चालीस दिनमें पुष्ट होजायगा ॥

यदि किसी मनुष्यने बालकपन में अयोग्य कर्म कराया होय और इन्द्रीका मर्दन कराया हो और इसी कारण से नपुंसक हुआ हो तो उसकी चिकित्सा कठिनता से होसक्ती है इसमें नुसखा नम्बर एकसे सेक करना और नुसखा नम्बर २ माजूनका सेवनकरना चाहियेअथवा इसमाजूनको सेवनकरे

(१९) माजून पुष्ट ।

गेहूंका मैदा ५ तोला, वेसन ७ तोले पहिले इनको ५ तोले घीमें भूनले पीछे बादामकी मिंगी पिस्ताकी मिंगी चिलगोजेकी मिंगी, नारियल की गिरी, खूबानी छःमाशे, सालब मिश्री १ तोले, लाल बहमन, सफेद बहमन तीन २ माशे, सकाकुल छःमाशे, अम्बर असहब, कलमी दालचीनी प्रत्येक तीन माशे, इन सबको कूट पीसकर वेसन वा मैदामें मि-

लावे और दस तोले मिश्री तथा पांच तोले शहद इनको दस तोले गुलाव जलमें चाशनी करके उसमें सव दवा मिलाकर माजून बनाले फिर इसमें से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और खटाई और बादीकी चीज़ोंसे परहेज करे ।

(२०) अन्य माजून ।

ग्वारपाठे का रस १० तोले, मूंगका आटा १० तोले, इन दोनों को पृथक २ घृतमें भूने फिर छोटे बड़े गोखरू, पिस्ता, तालमखाने, बादामकी मिंगी, ये सव दवा दो२ तोले कूट छानकर मिलावे. और पावभर कंदकी चाशनी में सबको मिलाकर माजून बनाले और इसमेंसे दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और इन्द्री पर यह दवा लगावे ॥

(२१) अपूर्व तिला ।

अकरकरा, सफेदकनेरकी जड़, मालकांगनी, सोनामाखी, कालतिल, सिंगरफ, हरताल, तवाकिया, सफेद चिरमिठी, मूली के बीज, शलगम के बीज, बीर बहूटी, शीतलचीनी, सिहकी चरवी, यह सबदवा एकतोले लेकर सबको जौकुट करके आतशी शीशी में भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले ओर रातको सोते समय एक बूंद इन्द्रीपर मलकर ऊपर बंगलापान गरम करके बांधे तो २१ दिनमें आराम होगा ।

(२२) मालिशकी अन्य विधि ।

अकरकरा, लौंग, केंचुए, आसवच. यह सव एक एक तोले बीरवहूटी ४ माशे, मुर्दासग४माशे, राहूमच्छलीका पित्ता ४ नग सिंगरफ ४ माशे, जमालगोटा ४ माशे, सांडकी चर्वी तीन तोले, मोम दो तोले, पारा एक तोले, इन सबको मिलाके

खूब रगडे, जब मरहमके सदृश होजाय तो रातको गरम कर के जननेन्द्रिय पर लेप करे और पान गरम करके बांध देवै इस पर पानी न लगने दे ।

(२३) तिलाकी अन्य विधि ।

धतूरेकी जड़का छिलका.सफेद कनेरकी जड़का छिलका आककी जड़की छाल अकरकरा गुजराती.वीर वहुट्टी गौका दूध यह सब एकएक तोले लेकर पीसे और दो तोले तिलक तेलमें पकावे जब औषधि जलजाय तब तेलको छानले फिर इन्द्रीपर मर्दन करे ऊपर बंगलापान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे । यह बहुत बारका परिचितहै ॥

नपुंसक होनेका अन्य कारण ।

नपुंसक होनेका एक यहभी कारण होताहै कि कोईकोई मनुष्य स्त्रीको बिठाके खडे होजाते हैं और कोई विपरीति रतिमें प्रवृत होतेहैं इस प्रकार के संभोग से भी नपुंसकता होजाती है इसका यत्न यहहैः—

(२४) पुष्ट तेल ।

सफेद-कनेरकी जड़ का छिलका दो माशे मालकांगनी दो माशे कौंचके बीज. सफेद प्याजके बीज. अकरकरा. असगंद यह सब चौदह चौदहमाशे. इन सबको जौकुट करके दस तोले तिलके तेलमें मिलाकर औटावे जब दवाई जलनेलगे तब छानकर रखछोडे फिर इसमें थोड़ासा रात्रि के समय इन्द्रीपर मलकर ऊपर पान गरम करके बांधे और माजून नं०२ का सेवन करे ४० दिनतक यह औषधि सेवन करे ।

(२२) सेककी अन्य औषधि ।

बीर बहुट्टी.सूख केंचुए, नागौरी असगंध, हल्दी, आमा-

हल्दी, भुन पन य सब छः छः माशे ले इन सबको महीन पीसकर रोग़नगुलमें चिकना करदो पोटली बनावे और किसी पात्रको आग पर रखकर उसपर पोटली गरम कर जांघ पेट और उपस्थको खूब सेके और फिर पोटलीकी दवा इन्द्री पर बांधदे ।

(२६) अद्भुत तिला ।

सिंहकी चरबी, मालकांगनी. अकरकरा, सोंठ, जावित्री कुचला. तज, लोहवान कांडिया, लोंग, मीठातेलिया, हरताल तबकिया, जमालगोटा, पारा. हाथी दांतका चूरा गंधक आमलासार, कटेरी सफेद. चिरमिटी सूखे केंचुए जायफल गुजराती सफेद कनेर की जड़ अजवायन खुरासानी प्याज के बीज, असपंद, सफेद संखिया, अंडी के बीजों की मिंगी काला जीरा ये सब एक एक तोले मुर्गी के अंडों की जर्दी पांच नग इनको कूट कर आतशी शीशीमें भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाल ले फिर इसमें से एक बूंद तेल नित्य इन्द्री पर मर्दन करे और ऊपर से बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे और वह सब परहेज़ करे जो ऊपर लिखे गये हैं चालीस दिन तक इसी तरह करने से नपुंसकता जाती रहती है ।

२७ ❀ पुष्ट हलवा ❀

ग्वार पाठे का रस. गेंहुकी मैदा. बिनौलेकी, मिंगी घृत. कंद ये सब सेर सेर भरले पहिले तीनों वस्तुओं को पृथक् २ घृत में भूनकर कंदकी चाशनी करके गोखरू एक छटांक. जायफल, पिस्ता, खोपरा. चिलगोजा की मिंगी. अखरोटकी

सिंगी, यह सब दवा पौंवसर, इन सबको कूट कर उसमें मिलाकर हलुआ बना रक्ख फिर इसमें से एक छटांक वा अधिक जितना पचा सके प्रति दिन सेवन करने से नपुंसकता जाती रहती है।

जानना चाहिये कि अत्यन्त स्त्री संभोग वा बेश्यागमन से जो नपुंसकता हो जाती है उस के लिये नीचे लिखी हुई दवा देनी चाहिये।

२८ ❀ माजून ❀

कुलीजन दो तोले, सोंठ दो तोले, जायफल, रूमामस्तंगी दालचीनी, लौंग, नागरमोथा, अगर यह सब दवा एक २ तोले इन सबको पीस छानकर तिगुने बूरेकी चाशनीमें मिलाकर माजून बनाले फिर इसमें से छः माशे प्रतिदिन सेवन करने से शक्ति अधिक होगी यदि वीर्य के पतला पड़ जाने के कारणसे कामोद्दीपन न होता हो तो उसकी यह दवादे।

२९ ❀ वीर्य को गाढा करनेवाली दवा ❀

तालमखाने आधसेर ईसबगोल आधपाव इनको बरगदके दूध में भिगोकर छायामें सुखाले फिर चालीस छुहारों की गुठली निकाल कर उसमें ऊपर लिखी दवा भरकर गौ के सेर भर दूध में ओटावै जब खाय के सदृश गाढा हो जाय तब उतार कर किसी घी के पात्रमें रख छोड़े फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय पुष्ट पदार्थोंकी भोजनकरे।

३० ❀ लेप की अन्य औषधि ❀

दक्षिणी अकरकरा, लौंग, फूलदार, बीरबहुट्टी, निर्विसी। सूखे केंचुए। सब एक २ तोलेले इन सबको पावसेर मीठेतेल

में मिलाकर मिट्टीकी हांड़ी में भरकर उसका मुंह बंद करे चूल्हे में गढ़ा खोदकर उसमें इस हांड़ी को दाबकर ऊपरसे सात दिनतक बराबर रात दिन आग जलावे फिर आठवें दिन निकाले। और इसमें से एक बूंद इन्द्री पर मलकर ऊपरसे पान गरम करकेबांधे और पानी न लगने दे।

❀ तिला ❀

सफेद कनेर की जड़, केवड़े की जड़, बछनाग, घूघची सफेद, सूखा हुआ केंचुआ, सूखा हुआ जोंके, माल कागनी, काले धतूरेकी बीज, सफेद धतूरेका बीज, कुचला, हीरा हींग, जंगली कबूतर की बीट सब औषधि समान भाग और तिल का तेल इनसे दूना मिलाकर १२ घण्टे तक खरल करके चोवा की रीति से टपकावे दो सप्ताह तक निरन्तर सीवन और सुपारी बचाकर इन्द्रीपर मले सब सुस्ती दूर हो जाती है।

३२ ❀ अदभुद तिला ❀

सफेद कनेर के जड़ की छाल, अकर करहा अजमोद स्याह, धतूरेका बीज, जायफल, सबको पानी में पीसकर स्याह मिरच के बराबर, गोलियां बना आवश्यकता के समय एक गोली मनुष्य के मूत्र में घिसकर इन्द्री पर लेप करें दुर्बलता दूर हो, वीर्य्य दीर्घ काल में पतन हो—

३३ ❀ अद्भुद लेप ❀

दूधमें सफेद कनेरकी जड़का छिलका डालकर जमाकर घीनिकालले फिर उसमें थोड़ासा मवेज़ और जायफल तथा जमाल गोटा विचार पूर्वक डालकर इन्द्री पर लगाकर ऊपर

से बंगला पान बांध दे एक सप्ताह इसी प्रकार करते रहे प्रसंग से बचै तो निर्बलता दूर हो।

३४ ❀ अन्य तिला ❀

कबाब चीनी, दालचीनी कूट, अकरकरहा, सफेद कनेर की जड़ का छिलका, चौदह चौदह माशे लेकर कूटे और सेर भर पानी में एक दिन और एक रात भिगोकर उसको इस कदर जोश दे कि चौथाई पानी बाकी रहजाय तब उस को मलकर छानले उस जल को उससे आधे तिलके तेल में मिलाकर आग पर उस जलको जला दे जब तेल बाकी रहजाय और जल जलजाय तो उतारकर शीशी में रखले वादी के कारण यदि इन्द्री में शिथिलता प्रतीत हो तो सुपारी छोड़कर उसको इन्द्री पर मलना चाहिये।

३५ ❀ अन्य तिला ❀

चार नग नरगिस की जड को, एक रातदिन [illegible]में भिगोकर रक्खें फिर अकर करहा मुनक्का, दाल चीनी नौ नौ माशे कस्तूरी ३ माशे शराब २ तोला सबको पीसकर मिलाकर रक्खें और इन्द्री पर लेप करते रहें बलको बढ़ातीहै और एकाकी रहनेके कारणजो सुस्ती होतीहै उसे दूरकरतीहै।

❀ (३६) इन्द्री सूख गई हो उसकी औषधि ❀

गौका घी १ पैसा भर, श्वेत कनेर की जडकी छाल ३० टंक, लौंग २ टंक, माल कांगनी ५ टंक, कूठ ५ टंक अकर करहा ५ टंक, सफेद चिरमटी ५ टंक, कुचिला ५ टंक, कनक बीज ५ टंक, पीपल ५ टंक जायफल ५ टंक, अफीम १ टंक अरंडे के बीज १५ टंक, सुमली के बीज ५ टंक. सबको घी

में मिलाय कर रक्खे सातवें दिवस शीशीमें भर पाताल यन्त्रमें चुआवे फिर ४ रत्तीनित्य खाय खटाईका परहेज करे इस के सेवन से इन्द्रीमें उत्तेजना होतीहै तथा काम उत्पन्न होताहै

(३७) इन्द्री के टेढापन जाने की औषधि ।

बिनौलेकीमींगी और बकरे की चरबी मिलाकर लेप करे तो बांकपन जाय और पुष्ट होय ।

(३८) अन्य तेल ।

सुहागा कूठ मैनशिल बराबर लेकर कपड़ छानकर थोड़ा चमेली के पत्ता का मीठे तेल में पकावे फिर कपड़ छानकर तेल शीशी में रक्खे और इन्द्री पर लेप करे तो बांकपन दूर होकर बल आवे ।

(३९) अन्य लेप ।

दारूहल्दी, मुलहठी, शहद, अदरक के रस में लेप करे तो बांकपन दूर हो, स्थूलता प्राप्त हो ।

(४०) नपुंसकता पर औषधि ।

मेदा लकड़ी चार छटांक लेकर काली बकरी के दूध में भिगोवे फिर सुखाकर कपड़ छान करके एक सेर गौ के दूध में भिगोवे तीन दिन तक सूखने दे फिर गोखरू तीन पैसा भर चीनी खांड आध सेर मिलाकर रक्खे उस में से एक पैसाभर आध सेर गौ के दूध के साथ नित्य खाय तो शीघ्र ही पुष्टता प्राप्त होकर नपुंसकता दूरहो ।

(४१) नपुंसकता पर लेप ।

हींग, धतूरे का बीज, अकरकरहा, समुद्र फेन दालचीनी ये सब बराबर ले कपड़ छान कर ऊंटकटेरा के रस में सान

१४ दिन इन्द्री पर लेप करे तो नपुंसकता दूर हो।

(४२) नपुंसकता पर खाने की औषधि।

असगंध, जावित्री, जाय फल, लौंग, दालचीनी, ये सब समभाग ले तिल एक पाव शहद एक पाव ले गोली बांध २१ दिन खावे तो नपुंसकता का नाश हो।

(४३) नपुंसकता पर अन्य औषधि।

अकरकरहा पैसा भर, अफीम अधेला भर, दोनों मूसली पैसाभर कुलीजन पैसा भर, मौफली पैसा भर, असगंध धेला भर, खांड पैसा भर, सबको कूटकर कपड छान करके खांड के संग एक पैसा भर की गोली बनावे और १४ दिन रात में खाय तो नपुंसकता दूर हो।

(४४) ❀ नपुंसकता पर तिला ❀

कपड़ा बाफते का पाव गज़ आकके दूध में भिगो सुखा के थूहर के दूध में भिगोवे पांच पैसा भर घी उस पर लपेट संबुल फार जर्द पीस उस पर लेप कर बत्ती बनावे लोहेके गज़ पर लपेट उसका तेल निकाले यह तेल पान पर लगा कर इन्द्री पर बांधे तो नामर्दी दूर हो।

(४५) ❀ टूटी नसों के लिये लेप ❀

इन्द्रयव, चिर्मिटी, सफेद कनेर की छाल, मालकांगनी धतूर के बीज, बच खुरासनी कटाई के बीज गज पीपल इन सब को बराबर ले कूट पीसकर सिंह की चर्बी में मिलाकर इन्द्री पर लेप करे तो टूटी हुई नस जुड़ जावें।

(४६) हस्त क्रिया आदि द्वारा नपुंसकता

❀ होने पर औषधि ❀

देशी गोखरू का चूर्ण ५ टंक शहद ५ टंक वकरी के दूध के साथ २ मास सेवन करे तो नपुंसकता दूरहो बल बढ़े।

❀ वाजी करण ❀

वाजीकरण औषधों के सेवन से मनुष्य का पुंस्त्वस्थिर और दृढ रहता है वाजीकरण मनुष्य को विषयी किंवा विषयासक्त बनाने लिये नहीं किन्तु पुरुष को पुरुषार्थी बनाने वाली औषधि हैं भगवान अत्रिने कहा है।

वाजीकरण मन्विच्छेत् पुरुषो नित्यमात्मवान्।
तदा यत्ताहि धर्माथौ प्रीतिश्च यश एव च ॥
पुत्रस्या यतनं ह्यनंद्गुणाश्चेते सुताश्रयः।
वाजीकरण मग्र्यञ्च क्षेत्रं स्त्री या प्रहार्षिणी ॥

अर्थात्--अत्मानम् (जितेन्द्रिय) पुरुष प्रति दिन वाजीकरण को सेवन करे क्यों कि, अर्थ, प्रीति और यश इन चरों को वाजी करण का साधार है। पुत्र भी वाजीकरण का आश्रित है। अथात् श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करने में भी वाजीकरण मुख्य है और धर्म अर्थ प्रीती, एवं यश ये चार गुण पुत्रके आधार पर है पुनः रामेर प्रति हर्ष उत्पन्न करने वाली स्त्री वाजीकरणका सर्वोत्तम क्षेत्र है अर्थात् वाजीकरण औषधों के सेवन करने का फल स्त्री में प्रकट होता है।

शरीर को उत्तम प्रकार का पोषण करने वाले पदार्थों का सेवन करना वाजीकरण का मुख्य प्रयोग है इसी से बलवान और उत्तम सन्तान उत्पन्न हो सक्ती है जो औषधि शरीर में बल वीर्य और कान्ति को उत्पन्न करती है ऐसी औष

धियों का सेवन करना वाजी करण का मुख्य अंग है इस के व्यतिरिक्त भगवान आत्रेय का यह भी मत है कि सब से उत्तम वाजीकरण स्वयं स्त्री ही है पुरुष कैसा भी निरोगी और वलवान क्यों न हो किन्तु यदि स्त्री वलहीन और रोगणी होगी तो पुरुष का वल और वाजीकरण सब व्यर्थ जायगा भगवान आत्रेय कहते हैं कि, अत्यन्त रूपवती, तरुणी, सुशिक्षिता, स्त्री सबसे उत्तम वाजीकरण है । अच्छे गुण युक्त स्त्री हो और पुरुष भी निरोगहोय तो उसको वाजी करण औषधियों के सेवन करने की आवश्य कता न होगी इस लिये स्त्री समस्त शुभगुण युक्त, रूपवती, गुणवती, तथा प्रेमोत्पादक वाली अपने पति को प्रसन्न करने वाली होनी चाहिये पुरुषकी जिस स्त्रीके ऊपर सच्ची और दृढ प्रीति होती है और जो पतिके स्त्री अनकूल होती है वह पुरुष के लिये वाजीकरण रूप है पुरुष को चाहिये कि अन्यान्य दुष्ट चरित्रा व्यभिचरिणी वेश्या आदि कुत्सित स्त्रियोंसे कदापि संसर्ग न रक्खे जिन से वल वीर्यका नाश और अनेक रोगोंके होने की सम्भावन है । अब कुछवे प्रयोग लिखे जाते हैं जिनसे शरीरम अतुलित शक्ति उत्पन्न हो जाती है वैद्यक ग्रंथो में वाजीकरण का अर्थ यह कि वाज घोड़ेको कहते है जिन उपायोंसे पुरुषको वल और अमोघ शक्ति घोडे के सदृश रतिकी सामर्थ्य होती है और जिन औषधियोंके सेवन से रमणियोंका प्रेम पात्रवन जाता है उन्ही को वाजीकरण कहते हैं पुरुष युवा अवस्था में निरंतर वाजी करण प्रयोग का सेवन करता रहता है उसकी शक्तिको वृद्धा अवस्था पर्य

ह्रास नहीं होता और उससे सदा कामिनी प्रसन्न रहती है।

❀ वाजीकरण का साधारण उपाय ❀

जिसको वाजीकरण करना हो उसको स्निग्ध और विशुद्ध करके प्रथम घी तेल, माउल्लहम (मांसरस) दूध, मीठा; इत्यादि सेवन करना चाहिये तत्तपश्चात् वाजीकरण का प्रयोग सद्वैद्य द्वारा करावे अथवाजो औषधि नीचे लिखीजातीहैं इनमें जो प्रकृति के अनुसार हो उसका सेवन करे।

(१) * सुपारी पाक दूसरा *

दक्षिणी सुपारी ८ छटांक लेकर दोदिन जलमें भिगोवे फिर महीन कतर कर सुखा कर उसका चूर्ण करले और वस्त्र से छानकर समभाग घृत में मिला अठ गुने दूधमें उस का मावा करे फिर अठगुनी मिश्रीकी चाशनी करे उसमें सुपारी का मावा डाले और निम्न लिखित औषधियां उसमें डालदे, इलायची, खरैटी, गंगेरनकी छाल, जायफल, लवंग जावित्री, पत्रज, सोंठ, शतावरी, मूसली, कौंच के बीज, विदारी कन्द, गोखरू दाख सालब मिश्री, सिघाड़ा; जीरा सफेद,वंश लोचन,असगंध, एक एक तोला,केसर ६ माशे कस्तूरी ३ माशा, कपूर १ तोला, चन्दन १ तोला भीमसेनी कपूर ३ माशा. अगर एक तोला ये समस्त औषधियां पीस कर मिलाना चाहिये यदि मृगांक चन्द्रोदय, वंगसार अभ्रक तथा अन्य सुगंधित द्रव्य और मेवाभी अपनी रुचिकेअनुसार इसमें मिलावे तो अत्युत्तम है इसमें से एक एक तोला नित्य खाय और पथ्य से रहे तो निश्चय ही दुर्बलता दूर होकर अपूर्व शक्ति प्राप्त होता है।

(२) आम्रक पाक ।

पक्के मीठे आमका रस १६ सेर, उसमें मिश्री ४ सेर डाले और इसमें घृत १ सेर डाल और इसे मिट्टीके पात्रमें पकाय गाढाकर चाशनी करे और चांदी के बरतन में धरे तथा चीनी के पात्रमें और इसमें निम्न लिखित औषधियां डाले सोंठ ४ तोला, मिरच ४ तोला, चित्रक एक तोला, धनियां २ तोला; जीरा सफेद एकतोला, पत्रज एक तोला, दालचीनी १ तोला; नागकेसर १ तोला, केसर १ तोला छोटी इलायची १ तोला, लौंग ६ माशे, जायफल १ तोला, कस्तूरी ४ माशे, भीमसैनी कपुर १ तोला; शहद ३ पाव, पीछेइनसबको मिलाकर अमृतवानमें भर रक्खे फिर इसमेंसे १ तोला नित्यखाय तो दुर्बलता दूर हो तेज बढ़े और संग्रणी क्षयी, स्वासरोग अरुचि, अम्लपित्त; रक्तपित्त, पांडु आदि रोग दूरहों ।

(३) चन्दनादि तेल ।

रक्त चन्दन,पतंग अगर,देवदारू,चीढ़ पद्माक.कपूर, कस्तूरी केसर, जायफल, जावित्री, लवंग, दोनों इलालची, तज, कंकोल, पत्रज, नागकेसर, नेत्रवाला.खस, छड़; दारुहल्दी.मूर्वा. कचूर. नागरमोथा, सम्हालू. वान गूगल,लाखनख, राल;धवई के फूल, कुसम के फूल, पीपलामूल, मजीठ, तगर, मोम,ये सब औषधि चार चार माशे ले और इनका मधुरी आंचसे काढाकरे फिर इनका चौथाई भाग रक्खे फिरइसमें मीठातेल पावभर डाले फिर मधुरी आंच से पकावे जब काढ़ेका रस जल जाय तेल मात्र शेष रहजाय तो छानकर पात्रमें रख

छांड़े इसे शरीर में मर्दन करने से वृद्ध मनुष्यकोभी तरुणत
प्राप्त हो तथा शरीर के समस्त रोग दूरहों ।

(४) वानरी गुटका ।

कौंचके बीज पावभर इन्हें गौके पावभर दूधमें धीरे २ प
कावे फिर इनका छिलका दूर करै फिर महीन चूर्णकर दू
में उसन छोटे २ इसके वड़े बनाकर गौके घृत में तले फि
इस से दूनी मिश्री की चाशनी कर वड़ोंको पागे फिर इ
वड़ों को शहदमें डालै पीछे इनमेंसे १ तोला दो मास तव
खाय तो अत्यंतबलवीर्यउत्पन्नहोऔरस्तंभन शक्ति अधिकह

(५) बलवर्धक औषधि ।

अक्करकरहा, सोंठ, लवंग, केसर, पीपल, जायफल, जावित्रं
सफेद चंदन, ये सब छः छः माशे और अफीम २ तोला ले
फिर इनको शहद में महीन पीस उड़द के बराबर गोली बन
वे एक गोली रातको नित्त खाय ऊपर से दूध पीवै तो
स्तंभन शक्ति अत्यन्त बढ़ जाय ।

(६) मदन मंजरीगुटका ।

सोंठ मिरच पीपल चार चार तोला पारा एकतोला वंग २
तोला शतावरि, तज, पत्रजनागकेसर, इलायची जायफलमिर्च
पीपल सोंठ लवंग जावित्री दो तोला ले फिर इन सबको
महीन पीस घृत मिश्री और शहद में गोली ढाई ढाई तोले
की बांधे और एक गोली नित्य खाय ऊपर से दूध पीवै
तो बूढ़ा भी युवा होजाय ।

(७) स्तंभक औषधि ।

अफीम पारा बराबर ले इन दोनोंको धतूरे के बीज के तेऊ

में ३ दिन खरल करे पीछे मिश्री और भांग बराबर मिलाय १ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो अत्यंत स्तंभकहे।

(८) स्तंभक औषधि।

पोस्त आधसेर, माजूफल आधसेर, १ मन पानीमें औटावे जब सेरभर शेष रहे तो उतारके नीचे लिखी औषधि कपड़ छानकर मिलावे, जायफल, लौग, तज, एक एक तोला विलारीकन्द ४ तोला, सेवरके वीज ८ छटांक, नागकेसर १ तोला, सोंठ ८ छटांक, गौके दस सेर दूधमें औटावे जब औटतेर तीनसेर रहजाय तब पुराना गुड़ ८ छटांक खांड ८ छटांक डालके औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतार आंवले के समान गोली बनाय इनको प्रातःकाल तथा संध्या समय एक एक तोला खाय तो १४ दिनमें वीर्य्य सम्बन्धी समस्त रोग दूर होय।

(९) अन्य औषधि।

कौंच के बीज और जडको कूट पीसकर ४ माशे दूधके साथ मिश्री मिलाके दोनों समय कुछ दिनतक सेवन करै तो बलवीर्य्य अधिक हो।

(१०) अन्य औषधि।

उर्दका चून, यव का चून, गोखरू के वीज शतावरि इनको वरावर ले दूधमें मांडकर घृतमें वड़ा बनावे सन्ध्या समय १ खायऊपरसेदूधमिश्रीपीवेतोबूढेको युवाअवस्था का सुखहो

(११) अन्य औषधि।

किवांच की जड़, तिल, असगन्ध, विदारीकन्द, साठी चांवल, इन सबको बरावर ले पीस एकसेर दूधमें पकावे फिर

छांड़े इसे शरीर में मर्दन करने से वृद्ध मनुष्यकोभी तरुणता प्राप्त हो तथा शरीर के समस्त रोग दूरहों।

(४) वानरी गुटका।

कोंचके बीज पावभर इन्हें गौके पावभर दूधमें धीरे २ पकावे फिर इनका छिलका दूर करे, फिर महीन चूर्णकर दूध में उसन छोटे २ इसके बड़े बनाकर गौके घृत में तले फिर इस से दूनी मिश्री की चाशनी कर बड़ोंको पागे फिर इन बड़ों को शहदमें डाले पीछे इनमेंसे १ तोला दो मास तक खाय तो अत्यंतबलवीर्यउत्पन्नहोऔरस्तंभन शक्ति अधिकहो

(५) बलवर्धक औषधि।

अकरकरहा, सोंठ, लवंग, केसर, पीपल, जायफल; जावित्री सफेद चंदन, ये सब छः छः माशे और अफीम २ तोला ले फिर इनको शहद में महीन पीस उड़द के बराबर गोली बनावे एक गोली रातको नित्त खाय ऊपर से दूध पीवै तो स्तंभन शक्ति अत्यन्त बढ जाय।

(६) मदन मंजरीगुटका।

सोंठ मिरच पीपल चार चार तोला पारा एकतोला बंग २ तोला शतावरि, तज, पत्रजनागकेसर, इलायची जायफलमिर्च पीपल सोंठ लवंग जाविन्री दो तोला ले फिर इन सबको महीन पीस घृत मिश्री और शहद में गोली ढाई ढाई तोले की बांधे और एक गोली नित्य खाय ऊपर से दूध पीवै तो बूढा भी युवा होजाय।

(७) स्तंभक औषधि।

अफीम पारा बराबर ले इन दोनोंको धतूरे के बीज के तेल

में ३ दिन खरल करै पीछे मिश्री और भांग बराबर मिलाय १ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो अत्यंत स्तंभकहै।

(८) स्तंभक औषधि।

पोस्त आधसेर, माजूफल आधसेर, १ मन पानीमें औटावे जब सेरभर शेष रहे तो उतारके नीचे लिखी औषधि कपड़ छानकर मिलावै, जायफल, लोंग, तज, एक एक तोला बिलारीकन्द ४ तोला, सेंवरके बीज ८ छटांक, नागकेसर १ तोला, सोंठ ८ छटांक, गौके दस सेर दूधमें औटावे जब औटतेर तीनसेर रहजाय तब पुराना गुड़ ८ छटांक खांड ८ छटांक डालके औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतार आंवले के समान गोली बनाय इनको प्रातःकाल तथा संध्या समय एक एक तोला खाय तो १४ दिनमें वीर्य्य सम्बन्धी समस्त रोग दूर होंय।

(९) अन्य औषधि।

कोंच के बीज और जड़को कूट पीसकर ४ माशे दूधके साथ मिश्री मिलाके दोनों समय कुछ दिनतक सेवन करै तो बलवीर्य्य अधिक हो।

(१०) अन्य औषधि।

उर्दका चून, यव का चून, गोखरू के बीज शतावरि इनको बराबर ले दूधमें मांडकर घृतमें बड़ा बनावे सन्ध्या समय १ खायऊपरसेदूधमिश्रीपीवैतोबूढेको युवाअवस्था का सुखहो

(११) अन्य औषधि।

किवांच की जड़, तिल, असगन्ध, विदारीकन्द, साठी चांवल, इन सबको बराबर ले पीस एकसेर दूधमें पकावे फिर

गोली वनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पावभर गौ
का दूध पीकर रमण करने से स्तंभन होता है।

(२२) ❀ अन्य औषधि ❀

पोस्तके डोरे एक तोले पानीमें भिगोदे जब भीगजांय तब उसके नितरे जलमे गेंहूंका आटा मांढ कर उसका एक गोला वनाकर गरम चूल्हेमें दवादे जब सिककर लाल हो जावे तब निकाल कर कूटले फिर थोड़ा घी बूरा मिलाकर मलीदा बनाले जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय अत्यन्त बलकारक है।

(२३) ❀ अन्य औषधि ❀

थूहरका दूध और गौका दध इन दोनोंको बराबरले के मिलाकर चार पहर धुपमें सुखावे फिर पांवके तलुओं में लेपकर प्रसंग करै और पांवको धरतीमें न धरे तो स्तंभन हो।

(२४) ❀ अन्य प्रयोग ❀

कौंचकी जड़ एक पोरुएके बराबर लेके मुखमें रक्खे जब तक मुखमें रहगी तब तक स्तंभन होगा।

(२५) ❀ अन्य प्रयोग ❀

सिंगरफ, मोचरस, अफीम, ये दो दो माशे, सुहागा, एकमाशे, इनसबको पीसकर काली मिर्च के बराबर गोली बनावे फिर एक गोली खाकर प्रसंग करनेसे अधिक स्तंभन होगा।

(२६) अन्य प्रयोग।

अजवायन, पांच माशे, कद्दू की मिंगी छःमाशे, इसपंद नौ माशे, भांगके बीज आठ माशे, चना खिल्ला सातमाशे. पोस्त

की बोंडी दो नग; इन सबको पीस छानकर पोस्त की बोंडी के रसमें बेरके बराबर गोली बांधे फिर एक गोली खाकर एक घंटे पीछे प्रसंग करने से स्तंभन होता है।

(२७) अन्य प्रयोग।

ककरोंदा की जड, और कंघी, इन दोनों को बराबर जल में पीसे इसका इन्द्री पर लेप करके संगम करने से अत्यंत आनन्द प्राप्त होता है।

(२८) वाजीकरण का अन्य प्रयोग।

सर, ईख, कुश, काश, विदारी, और वीरण (खस) इनकी जड, कटेलीकी जड, जीवक, ऋषभक, खरेटी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, सितावरअसगंध अतिवला, कोंच, सांठ; भूम्यामलक. दुग्धिका, जीवंती, ऋद्धि रास्ना, गोखरू मुलहटी और शालपर्णी. प्रत्येकतीनपल, उरद एक आढक, इन सबको दो द्रोण जलमें पकावै एक आढक शेप रहने पर उतार ले, इस क्वाथमें एक आढक घी, विदारीकन्दका रस एक आढक. आमले का रस एक आढक, ईख का रस एक आढक, दूध चार आढक; तथा भूम्यामलक, कोंच, काकोली, क्षरिकाकोली मुलहटी. काकोडुम्बर पीपल, दाख, भूमिकूष्माण्ड, खिजूर महुआ, सितावर; इनको पीसकर छानकर सब एकप्रस्थ मिला देवै और पाकविधानोक्त रीति से पकावै पाक होजाने पर घीको छानकर उसमें शर्करा एक प्रस्थ, बंसलोचन एक प्रस्थ, पीपल एक कुडव, कालीमिरच एक पल, दालचीनी इलायची. और नागकेसर प्रत्येक आधा पल और शहद दो कुडव इनको मिलादेवै इस घृत में से

मर्दन करै तो सब प्रकार के वात प्रमेह सूजन गोला आदि को दूर करता है ॥

❀ सुंठि कल्प ❀

सोंठ ७ टकेभर और इसके बराबर एक लहसन की पोटी ले सोंठ को महीन पीस बराबर के घृत में भून ले फिर लहसनको पीस उसमें मिलाय चोखा शहद ७ टकेभर इसमें डाले फिर सबको एक रस कर एक टके भर नित्य खाय तो गठिया पक्ष घात हनुस्तम्भ कटि भंग भुजों की पीड़ा और वायु सम्बन्धी समस्त व्याधा दूर हों।

❀ विजया भैरव तेल ।

मालकांगनी असाल्ू काला जीरा अजवायन मैंथी तिल ये सब बराबर ले और तलकी घानी में इनका तेल निकल वावें फिर मर्दन करैतो वातरोग जांय ॥

❀ दूसरा विजय भैरव तेल ❀

पारा, गन्धक, हरिताल, मैनसिल ये सब बराबर ले तीन दिन तक कांजी में महीन पीस फिर एक गज कपड़े में इन चारों का लेप कर फिर उस कपड़े की बत्तीकर उसपर सूत लपेट फिर उस पर चौगुना तिलका तेल डालकर उस बत्ती को नीचे कर जलादे उसके नीचे लोहे का पात्र रक्खे उसमें जो तेल टपक पड़े उसे अन्य पात्र में छानकर भर ले फिर इसके मर्दन से सर्व प्रकारके वातरोग दूरहो जाते हैं।

❀ विषय भैरव रस ❀

हड़की छाल और चित्रक तीन तीन टके भर, इलायची, तज, पत्रज, नागरमोथा एक एक पैसे भर, सम्हालू ५ टंक

नागकेसर २ टंक सोंठ,काली मिरच, पीपरि, पीपला मूल,सों-
धी सिंगी मुहरा सार, पारा ये सब दश दश टंक शोधी गंध
क ५ टंक पाहिले पारे और गंधककी कजली करें फिर उसमें
ये सब ओषधि डाले फिर इन सब औषधियोंमें पुराना ३
वर्षका गुड़ ५० टकेभर मिलाके एक रस करें फिर घृत में
इसकी बेरके प्रमाण गोली बनावे उन्हें घीके पात्र में रक्खे
१ वा २ अथवा ३ गोली क्रमशः बढ़ाता हुआ नियम पूर्वक
दो मांस तक खायतौ कफ तथा पित्तके सब रोग जांय ४
मासे तक सेवन करने पर वायु रोगका नाश हो, एक वर्ष
लौं सेवन करने पर समस्त रोगका क्षयहो दो वर्ष तक खाय
तौ वृद्धता दूर होकर तरुण होजाय और तीन वर्षतक सेवन
करनेपर अयुर्वल बढ़े तथा शरीर निरोग हो ।

❈ वातारि रस ❋

पारा १ भाग, शोधा गन्धक २ भाग, त्रिफला ३ भाग चि-
त्रक ४ भाग, शोधी गूगल ५ भाग इन सबका अरण्ड के
तेल में एक दिन खरल कर फिर इसमें हिंग्वष्टक चूर्ण
डाले और एक दिन खरल करै फिर इसकी गोली २॥ टंक
प्रमाण बांधे फिर लवंग, सोंठ, अरण्ड की जड के काढ़े से
एक मांस तक ब्रह्मचर्य्य पूर्वक सेवन करे तौ सब प्रकारकी
वात जाय और साधारण वाततो सात दिनमें ही दूर हो ।

❋ समीर पन्नग रस ❈

शोधी गन्धक, शोधा सिंगी मुहरा, सोंठ, काली मिरच
पीपल छोटी; पारा ये सब बराबर ले फिर पारे और गन्धक
की कजली करे और कजलीमें ये सब औषधि डाले और

भांगर के रसको सात पुट दे फिर इसको १ रत्ती प्रमाण वांधे एक गोली अरकके रस के साथ ले तौ प्रत्येक भांतिक पित्त रोग दूर हों।

※ समीर गज केशरी रस ※

नवीन चोखी अफीम, कुचला. काली मिरच. ये सब बराबर ले महीन पीसकर १ रत्ती प्रमाण गोली पानके रस में बनावै १ गोली सवेरे खाकर ऊपर से पान चबावे तौ सब प्रकार की वात और सूजन जाय तथा विशूचक और मृगी दूर हों॥

※ वृद्ध चिन्तामणि रस ※

खुराशानी, अजवाइन, सफेद जीरा,अजमोद;काकडा सिंगी असगंध, ये सब बराबर ले महीन पीस एक माशा के अनुमान गर्म पानी से सेवन करे तो सब प्रकारकी वात दूरहो और स्वास, खांसी, प्रलाप, अतिनिद्रा, अरुचिये सब जाते रहें।

※ अमृत गुटिका ※

चित्रक हडकी छाल तीन तीन टंक भर पारा गंधक सोंठ मिरच पीपरि पीपला मूल नागर मोथा जायफल विधारा एक २ टकाभर इलायची ५ टकाभर अभ्रक शोधी सिंगी मुहरा पांच पांच टंक गुड८टंक भर प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन सब औषधों को महीन पीस गुड़ सहित कजली मे मिलाय इसमें जल भांगरेकी एक
फिर १ वा २ अथवा ३ रत्तीके प्रमाण
विचार तथा युवा पुरुष क्रमशः १ से
सेवन करे तो सब प्रकार की
सूजन, आम वात पाण्डुरोग धव

❀ राक्षस रस ❀

शोधी गंधक, शोधा पारा; ये दोनों बराबर ले कजलीकरे फिर इसमें दुधिया के रसकी १ पुट दे फिर तुलसी के रस की १ पुट दे फिर बावची के रसकी एक पुट दे, फिर मोर शिखा के रसकी एक पुट दे फिर मुलहटी के रसकी १ पुटदे फिर वाराही कंदकी एक पुट दे फिर बहुफली के रसकी एक पुट दे. इसका रस सुखाय पारे और गन्धककी कजलीको मुरगी के ७६ अण्डोंमें भरे फिर अंडोंको कपरोटी कर सुखा ले फिर इन अंडों को गजपुट में पकावे इसी प्रकार तीन बार करे फिर इसमें से १ रत्ती खाय तो सब प्रकारकी वात जाय और क्षुदा बहुत बढ़े।

❀ वंगेश्वर रस ❀

शोधा पारा, शोधी गंधक. इनको कजली करे और दोनों से आधी शोधी हरताल डाले और इनकी बराबर रांग डाले फिर इनको आक के दूध में सात दिन खरल करे फिर सुखाय आतशी शीशीमें कपड़ौती कर उसमें भरदे फिर शीशीको वालुका यंत्र मे १२ पहर पकावे फिर शीतल करके निकाल उसमें से आधा रत्ती के अनुमान पानमें खाय तो सब प्रकारकी वात, उन्माद, क्षीणता मंन्दाग्नि, कोढ़ व्रण विषम ज्वर ये सब दूर हों।

❀ हरिताल गुटिका ❀

शोधी हरताल, शोधी गन्धक, शुद्ध पारा शिंगरफ, सुहागा सोंठ, मिरच, पीपल, ये सब बराबर ले पारे और गन्धक की कजली करे ये सब औषधि मिलावे फिर अदरकके रस

की एक पुट देकर मूग प्रमाण गोली बांधे १ गोली खाय तो सब प्रकार की वात :सूतिका रोग मन्दाग्नि संग्रहणी, शीत ज्वर, आदि का नाश हो।

❀ लहसुन पाक ❀

लहसुन १ पैसा भर लेके उसको महीन जीरा सा कतर ले फिर १ पैसाभर दूध धेलेभर पानीमें चढ़ा कर आंच दे जब दूध लहसुन में सुख जाय तब उसको खरल करै जब लुगदी बध जाय तब धेले भर घी डालकर आंचदे जब सुर्खीपनहो आवे तब उतारले और घी अधिक रहेतो निकाल दे फिर २ पैसे भर मिश्रीकी चासनी करै उसमें कस्तूरी आधी रत्ती, लवंग ४ रत्ती, जायफल, दालचीनी सोने का वरक एक माशे पीस कर चासनी में मिलावै फिर लहसुन डाल ४ गोली बनावे और प्रभात ही १ गोली खाय और अधिक वात पीडा हो तो दूसरी गोली सन्ध्या समय खावैतो वात जाय पथ्यसे रहकर २१ दिन अथवा ४१ दिन खाय और गोली अधिक बनानी हो तो इसी हिसाब से उस लहसुन की तोल के अनुमान अन्य औषधि भी बढ़ादे इस लहसुन पाक के खानेसे सब प्रकार वात दूर हो तथा शरीर पुष्ट हो और क्षुधा बढ़े।

✻ जांघ और पीठ की पीड़ा का इलाज ❀

बूजीदा, चीता और सोंठ प्रत्येक पांच माशे, मूरजान, अजखरकी जड़; अजमोदकी जड़का छिलका, सौंफकी जड़की छाल प्रत्येक चार माशे मुनक्का और मेथी दश दश माशे इनसब को औटाकर इसमें नौ माशे अंडीका तेल मिलाकर

पीनेसे दर्द वहुत जल्दी जाता रहैगा यह दस्तावर भी है।

* अन्य प्रयोग *

सूरंजान, सौंफ, सौंफकी जड़का छिलका अजमोद अनी, सून येसव दवा पांच पांच माशे हंसराज, गावजवां और विली-लोटन चार चार माशे, गुलावके फूल सात माशे वड़ी हर्डे छःमाशे, सनाय मक्की सातमाशे, गुलकंद डेढतोले इन सवको औटाकर फिर छानकर इसमें १ तोले तुरंजवीन पीसकर मिलाकर पीवै तो दस्त होंगे इस दवा के करनेसे दर्द वहुत जल्दी दूर हो जाता है।

* कूल्हेके दर्दका इलाज *

रूमी मस्तगी अनीसून पांच पांच माशे. सोंठ, अजखर की जड तीन तीन माशे,मजीठ चीता अजमोद मेथी चार२ माशे मुनक्का १९ दाने इन सवको औटाकर उसमें एक एक तोले अंडीका तेल मिलाकर प्रात : काल पीवै इसके पीने से दस्त होंगे।

* सव प्रकारके वातज की चिकित्सा *

महुआ तीन भाग, खानेका तमाकू १ भाग इन दोनों को पीसकर गरम करके जहां शरीरमें दर्द होता हो वहां वांधदे यह दर्द गाठिया का नहीं होता है इसको साधारण वादी दर्द जानना चाहिये।

* साधारण दर्द का इलाज *

जो छाती, पीठ; हाथ पांव आदि में साधारण वादी का दरद होतो यह काम करै कि वनप्साका तेल, ५ पांच तोले आगपर धरके उसमें सफेद मोम दो तोले कतीरा नौ माशे

मिलावें जहां और दर्द होताहो वहां मर्दन करें तो इसके लगाने से बहुत जलद आराम हो जाता है।

पथरी रोग का वर्णन।

पथरी की उत्पत्ति प्राय: कफके प्रकोप से हुआ करती है

❀ पथरी के भेद

पथरी रोग चार प्रकार का होताहै- यथा-वातज, पित्तज, कफज और शुक्रज।

❀ पथरी रोगकी उत्पत्ति ❀

वस्थि स्थानमें रहने वाले वायु शुक्रके साथ मूत्रको अथवा पित्तके साथ कफको सुखायदेती है तब बालू रेतके समानरेत अथवाकंकर पैदाहो जाते है इसीको पथरीरोगकहतेहैं

❀ पथरी का पूर्वरूप ❀

पेड़में सूजन, पेडू के पास वाले स्थानों में दद मूत्रमें मस्त बकरे कीसी गंध, मूत्र का थोडा २ होना. ज्वर, भोजनमें अरुचिइन लक्षणोंके होनेसे पथरी रोगहोनेकी सम्भावनाहोतीहै

❀ पथरी के सामान्य चिन्ह ❀

नाभिके ओर पास, सीमन, नाभि और पेड़ूके वीच में शूल रोग कीसी वेदना होती है। मूत्रकी धार एक समान नहीं निकलती है। जब वायु के वेग से पथरी हट जाती है तब पेशाब लाल रंगका सुखपूर्वक होता है। मूत्र वाहिनी नाली में घाव होजाता है पेशाब के साथ रुधिरभी निकलताहै। पेशाब करनेमें घोर कष्ट होताहै ये पथरीके सामान्य चिन्हहै।

❀ पथरी के विशेष चिन्ह ❀

इन्द्री और अंडकोष के बीज में वेदना होतीहै उससे श-

करा वा रेत पैदा होजाती है। वायुके कारण इस शर्कराके टुकड़े टुकड़े होजाते हैं और मूत्रके संग थोड़ी थोड़ी बाहर निकलती रहती है और प्रायः वही मूत्रमार्गमें रुककर अनेक प्रकारके भयंकर रोगोंको उत्पन्न करती है। जब पथरी रोगके साथ शर्करा और रेत होतीहै तब शरीर बड़ा अस्वस्थ और ढीला होजाता है देह दुर्बल और पेड़ूमें शूल की सी वेदना होती है। प्यास की अधिकता होतीहै जी फिरता है और आहार में अरुची होती है।

❀ बादी की पथरी के लक्षण ❀

बादी की पथरी में अत्यन्त दरदके कारण रोगी दांतोंको पीसता और कांपने लगता है। दर्द के कारण इन्द्री और नाभिको मलता हुआ हायहाय करके डकराताहै अधोवायु के साथ मूत्र निकल जाताहै और बूंदबूंद करके टपकताहै।

❀ पित्तकी अश्मरीके लक्षण ❀

पित्तज पथरी रोगमें पेड़ू में जलन होती है, हाथ लगाने से इन्द्री गरम मालूम होतीहै, इस पथरीका आकार भिलावें की गुठली के समान होता है।

❀ कफकी पथरी के लक्षण ❀

कफकी पथरीमें पेड़ू ठंडा और भारी होता है और इसमें सुई चुभने की सी वेदना होती है।

❀ बालकोंके पथरीके लक्षण ❀

बालकोंके ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंसे ही पथरी हो जाया करतीहै बालकों का पेड़ू छोटा होता है, बालकों की पथरी औजार से पकड़कर निकाली जा सकती है।

❀ वार्य्यकी पथरी के लक्षण ❀

वीर्य्य से पथरी रोग प्रायः बड़ी उमर वाले आदमियों को हुआ करताहै, स्त्री संगमकी इच्छा होने पर जब वीर्य्य अपने स्थानको छोड़ देताहै, और स्त्रीसंग होने नहीं पाता अथवा किसी यत्न से वीर्य्य रोक लिया जाताहै तब वायु वीर्य्यको चारों औरसे खींचकर इन्द्री और अडकोषोंके बीच में इकट्ठा करके सुखा देती है। इसीको वीर्य्यकी पथरी कहते हैं इसके होनेसे पेडू में सुई चुभाने कीसी वेदना मूत्रका थोड़ा२ होना, और अंडकोषो म सूजन यह उपद्रव होतेहैं

❀ वादी की पथरी की दवा ❀

पाखान भेद, शोरा, खारी नमक, अश्मतंक, सितावर, ब्राह्म, आंवला, श्योनाक, खस, कतक रक्तचन्दन, अमरबेल, शाकफल, कटेरी, गुंठतृण, गोखरू, जौ, कुलथी, बेर, बरना और निर्मली इन सबका काढ़ा करके इसमें क्षारमृत्तिका सेंधानमक, शिलाजीत, दोनों प्रकार का कसीस, हींग और तुतिया। इनका चूर्ण मिलाकर पीने से वादी की पथरी जाती रहती है।

❀ वादीकी पथरी पर अन्य औषधि ❀

सोंठ, अरणी, पाषाण भेद कूट, वरण, गोखरू, हरड़, अमलतास, इनके काढ़ेमें हींग, जवा खार, सेंधा नमक डाल कर पीने से वात पथरी का नाश होता है।

❀ अन्य औषधि ❀

यव, बेर, कतक फल इनके चतुराश काढ़ा में घी पकाकर खाने से वात पथरी जावे।

❀ पित्तकी पथरीका उपाय ❀

कुश, काश, खर गुंठतृण, इत्कट, मोरट, पाखानभेद, दाभ, विदारीकंद, बाराहीकंद, चौलाई की जड़, गोखरू, श्योनाक, पाठा, रक्तचंदन, कुरंटक, और सोंठ इनके काढ़ेमें खीरा, ककडी, कसूम, नीलाथोथा, इन सबके बीज, मुलहटी और शिलाजीतका कल्क डालकर घी पकावै, इस घीके सेवनसे पित्तकी पथरी खंड खंड होकर निकल जाती है।

❀ पित्तकी पथरी पर अन्य औषधि ❀

पाषाण भेदके काढ़ा में शिलाजीत मिश्री मिलाकर पीने से पित्त की पथरी दूर हो।

❀ कफ की पथरीका उपाय ❀

जवाखार तीन माशे, नारियल का फूल तीन माशे, इन दोनों को जलके साथ पीस कर सेवन करनेसे एक सप्ताह में उत्कट पथरी रोग जाता रहता है।

❀ दूसरी औषधि ❀

सहजना की छाल, बरना की छाल के काढ़े में जवाखार मिलाकर पीने से कफ की पथरी दूर होती है।

❀ पथरी रोगकी सामान्य चिकित्सा ❀

सोंठ, अरनी, पाषाण भेद, कूट गोखरू, अरण्डकी छाल किरमालीकी गिरी ये सब भागले जम कूटकर ५ टंक का काढ़ा कर उसमें भुनी हींग १ रत्ती जवाखार, सेंधा नमक एक एक माशा ये तीनों डाल पथरी वाला पीवे तो पथरी, मूत्र कृच्छ्र कोष्ठकी वात उपदंश तथा बवासीर दूरहो।

❀ अन्य औषधि ❀

इलायची, पीपल, महुआ, पाषाण भेद, पित्त पापड़ा, गोखरू, अडूसा, अरण्ड की जड़ छः छः माशे ले जब कूट कर काढ़ा करके उसमें शिलाजीत १ माशा डाल के पीवे तो पथरी तथा मूत्र कृच्छ्र दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

पेठे के रस एक छटांक में भुनी हींग दो रत्ती डालकर पीवे तो पेड़ू की पीड़ा और पथरी दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

अरनी की छाल, छः माशे; पाषाण भेद तीन माशे सोंठ गोखरू चार माशे. इनका काढ़ा कर जवाखार दो माशे डाल पिये तो पथरी जाय।

❀ अन्य औषधि ❀

नौ माशे गोखरू के चूर्ण में ५ टंक शहद मिला भेड़ के दूध में पिये तो पथरी दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

दो तोले वरनाके जड़का काढ़ाकर उसमें एक तोला गुड मिलाके पीये तो पथरी जाय तथा पेडू शूल दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

अदरख का रस, हरड़की छाल, मलयागिर चन्दन का काढ़ा दही डालकर पिवे तो पथरी दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

दो तोला कुलथी का काढ़ाकर उसमें सेंधा नमक, शरफोंकाका रस दो दो माशे मिलाकर पीवे तो पथरी दूर हो।

❀ अन्य औषधि ❀

हल्दीका चूर्ण ५ टंक, गुड १० टंक इनको १ माशा कांजी में डाल पीवे तो पथरी जाय।

❀ अन्य औषधि ❀

काला नोंन, दूध, तिलेठीकी राख, सबको मदिरामें मिला ३ दिन पीवे तो पथरी जाय।

❀ अन्य औषधि ❀

तिलेठी की राख २॥ टंक, शहद पांच टंक दूध में मिला १५ दिन पीये तो निश्चय पथरी निकल पड़े।

❀ अन्य औषधि ❀

एरंड काकड़ीकी जड़ २ टंक, रातको भिगो रक्खे सवेरे उस पानीको पीवे तो सात दिनमें पथरी इन्द्री द्वारा झड़पड़े।

❀ अन्य औषधि ❀

कुलत्थ, सेंधानमक, वायविडंग, सार मिश्री, सोंठी, जवाखार, पेठेका रस, तिलका खार, पेठेके बीज, गोखरू, इनसबका काढा कर इसमें गीका घी पकाय १ टके भर नित्य खाय तो पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात, शुक्रबन्ध आदिरोग जांय

❀ पथरी पर कुपथ्य ❀

मूत्र और शुक्र के वेगको रोकना खटाई का सेवन अफरा करनेवाले भोजन पान, रूक्ष गुणवाले खाने पीने के पदार्थ पेटको भारी करने वाले आहार विरुद्ध द्रव्य जैसे दूध और मछली मिलाकर खाना आदि २ को पथरी रोगमें सर्वथा त्याग देना चाहिये।

❁ पथरी रोगपर पथ्य ❁

मन विरेचनादि औषधियों का सेवन उपवास, टबमें बैठ स्नान करना और कुलथी पुराना शालीधान्य, पुरानामद्य जज देशके पशुपक्षियों के मांसका यूप पुराना कुम्हड़ा, ड़ाकेडंठल, गोखरू, अदरख, पाखानभेद, जवखार बांस ,ये सब पथरी रोग पर पथ्य हैं।

अर्श (बवासीर) रोगका वर्णन।

नुष्य के गुदामें शंखकी भीतरली नाभिके तुल्य ऊपर वे ४ अंगुलीके ३ चक्र हैं, मल पवन आदिको ऊपर का नीचेकी ओर लाताहै और बीचका चक्र उनका त्याग ता है और तीसरा नीचेका चक्र मल पवन निकलनेके छे गुदाको ज्यों का त्यों बन्द कर देताहै इन्हीं तीनों च में अर्ष रोग पैदा होताहै वही बवासीर का स्थान है ब सीर छः प्रकार से होता है (१) वात (२) पित्त (३) फ (४) सन्निपात (५) रुधिर (६) मौरूसी अर्थात् जो से हो उत्पन्न हो बहुधा यहरोग बादी, गर्म, कफकारी, कनी मीठी वस्तुओं के अधिक सेवन से होताहै जो कि त पित्त कफ दोषोंको उभार कर गुदा के चक्रों में त्वचा, स मेदा को बिगाडकर नानाप्रकार के अधिक मांसके अं रों को मस्से रूपसे उत्पन्न करतेहैं यद्यपि बवासीर उक्त प्रकार का है परन्तु लौकिक में प्रकार प्रसिद्ध (१)खूनी (२)बादी, जिसमें रुधिर खूना

❀ ववासीर का पूर्वरूप ❀

खाया हुआ भोजन पूर्ण रूपसे परि पक्क नहो और आंतों में मल रुका रहे, वद्ध कोष्ट और मन्दाग्नि हो, शरीर कृश हो जाय, पेटमें अफरा हो अंग में पीडा हो, ये लक्षण हों तो ववासीर का रोग जानना चाहिये।

ववासीर, अतिसार, संग्रहणी ये रोग प्राय, आपसमें सम्बन्ध रखते हैं, और जठराग्नि को मन्द करते हैं इस लिये इन रोगों में विशेष कर अग्नि की रक्षा करना उचित है, इस रोगमें औषधि मुख्य है और सूजा हुआ कठिन मस्सा हो तो उसे श्रेष्ठ जर्राह द्वारा कटवाना भी किसी २ अवस्था में हित होता है अथवा जोंक लगवा कर रुधिर निकलवाया जाता है।

जो वायुका अनुलोमन और अग्निका दीपन करे ऐसेपान और औषधि ववासीर रोग में गुण दायक हैं वायुकी ववासीर में स्नेह व स्वदेन हित है और पित्त का ववासीर में रेचन हितहै कफकी ववासीर में वमन हित है और मिले हुये दोषोंकी ववासीर मे संग्रहणी की चिकित्सा हित है और रक्त की ववासीर में कई वार पतला दस्त होता होतो वातातीसार का उपाय करे, गाढ़ा दस्त आनेपर उदावर्त्त की चिकित्सा करै, और रक्त वहने पर पित्त नाशक औषधियों का सेवन करावै और दस्त न आने पर कब्ज के दूर होने का उपाय करे।

❀ वात ववासीर के लक्षण ❀

जिसके गुदाके मस्से चिमचिमी, और ललाई लिये खर

दरे, कठोर, वांक, तीक्षण, फटे मुखके गुदा के ऊपर हों और छोटे बेर अथवा कपास के गूलर अथवा कदम के फूल समान होंग और सिर, पसली कन्धे, कटि, जंघा पेडू इन में व्यथा होय, छीक और डकार आवै नहीं हृदय में पीड़ा हो और क्षुधा का अभाव हो कास, श्वास, मन्दाग्नि, कर्ण में शब्द, भ्रम, वायुगोला उदर रोग जिसमें ये लक्षण होंय उसे वात की ववासीर जानिये ।

❀ वात की बवासीर का यत्न ❀

जिमीकन्द का कपड़ा मिट्टीमे लपेट भाड़ में खूब भ रता कर घीमें तल २१ दिन १ टके भर नियम से खायतो वात की बवासीर अवश्य जाय ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

आक के नवीन पत्रों में पाचो लवण और तेल खटाई प्रमाण से लगावे और उन्हें जला के राख करे फिर गर्म पानीसे वहराख १ या २ टंक १५ दिन खावेतो वातववासीर जाय

❀ अन्य औषधि ❀

गौके मठे में सेंधा नमक प्रमाण से मिलाय अच्छे प्रकार बहुत दिन सेवन करे तो वात ववासीर जायतथा शरीर पुष्टहो

❀ अन्य औषधि ❀

हड़का वक्कल ५ टके भर, चित्रक १ टके, भर, सोंठि १ टके भर, शोधा भिलावा ५टके भर, काली मिरच, पीपलामूल, पीपरि, सफेद जीरा, चव्य एक २ टके भर, पकाया जिमी कन्द १ पाव, जवखार ४ टकाभर इन सबको महीन पीस

सबसे दूना गुड़ मिलाय १ टकेभर गोली बनाएक नित्य खाय तो बातकी बवासीर निश्चय जाय ।

* अन्य औषधि *

वन्दाल के पत्ता को औटाय इसके पानीसे आबदस्त लेवे तो बवासीर के मस्से दूरहों अथवा वन्दाल के डोंढों की धूनी दे या सैंधा नमक और वन्दाल के टोढों को कांजी में पीस लेप करे तो मस्से जावें ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

नीब तथा कनेर के पत्ते, गुण. कडवी तूंबी की जड इन सबको कांजी के पानीमें पीस मस्सोंपर लेपकरे तो मस्से दूर हो

❀ अन्य प्रयोग ❀

हल्दी, कडवी तोंरइकी जड़, आक के पत्ते सहजने की जड़ इन सबको कांजी के पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्से जावें ।

❀ अन्य औषधि ❀

अरड की जड़, मुलहठी, रास्ना, अजवायन, महुआइन सबको कांजी मे पीस लेप करे अथवा इनसे सेक करे तो मस्से की पीडा जाय और मस्मे झड़ पड़े ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

हीरा कसीस, सेंधा लवण. पीपरि, सोंठि, कूट, पाषण. भेद, कनेर की जड, वायविडंग, दात्यूणी चित्रक हरिताल सत्यानाशी की जड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस इन. का तिगुना तेल लेके थूहड और आक के दूध और गोमूत्र तीनो तेल से चौगुने ले इन सबको इकट्ठा करके पकावे- जब

जल जाय और तेल मात्र शेष रहजाय तब उतार कर छान कर उस तेलका मर्दनकरे तो मस्से दूर हों ववासीरको आरामहो

❀ अन्य प्रयोग ❀

पकाया जमींकन्द १६ भाग, चित्रक और सोंठि आठ आठ भाग कालीमिरच ४ भाग, त्रिफला २ भाग, पीपलामूल, शोधाभिलावा शतावरि आठ आठ भाग विधारा १६ भाग, भंग ८ भाग, इलायची ४ भाग वायविडंग ८ भाग इन सबको महीन पीस सब औषधियों से दूना गुड़ मिलाके ६ मासे की गोली बनावे ३० दिन तक १ गोली नियमसे सेवन करैतो बवासीर. हिचकी, श्वास, काम, राजरोग, प्रमेह, फिया, दूरहों।

❀ पित्त ववासीर का लक्षण ❀

मस्सों का मुँह नीलवर्ण लाल पीला सफेदाई लिये हो और उन मस्सों में से गर्म २ महीन धारसे रक्त निकले और मस्से महीन और कोमल हों तथा मस्सों का मुंह जोंकसा हो और शरीर में दाह ज्वर मूर्च्छा और अरुचि हो और नीला पीला लाल मल उतरै और त्वचा नख नेत्र श्वेत हों तो उसे पित्त की ववासीर जानिये।

❀ रुधिरकी ववासीर का लक्षण ❀

गुदा के मस्से घुंघची के रंग के समान हों और मस्सों से रुधिर की धार गर्म और वहुत गिरे और गाढ़ा कच्चा रक्त निकले और रुधिर के अधिक निकलने से शरीर ढाक के पुष्प समान पीला होजाय और उसका बल, उत्साह, पराक्रम सब जाता रहै और शरीर सूख जाय अधोवायु अच्छी प्रकार नहीं निकले मस्सोंमें से रुधिर निकलते हुए झाग होंय

और कटि, जंघा, और गुदा में पीड़ा होय, शरीर दुर्बल हो जाय तो रुधिरकी ववासीरमें वायुका भी मेल जानिये और जिसका मल चिकना भारी ठंडा होय और मस्सों में से रुधिर की धार मोटी तथा गर्म निकले और गुदामें कफ साही लगा रहे तो रुधिर की ववासीर कफ संयुक्त जानिये।

❀ ववासीर के रुधिर स्तंभ की औषधि ❀

बड़के पत्ते, और सूखे आमले चार चार पैसे भर लेके पावभर गौके मक्खन को लोहकी कढाही में खूब तप्त करै फिर इन दोनो वस्तुओं को धीमे डालै जब ये तीनों जल जांय तब उतार ठंडाकर चीनीके पात्रमें भर रक्खे फिर इन सबको खरलमें डाल महीन पीस एक रस करै पीछे ववासीर वाले रोगी को यह औषधि ९ माशे प्रति दिन प्रातःकाले २१ दिवस तक दे और गर्म वस्तु, बाजरा, करेला, मिरच पेड़ा अचार, वैगन, उर्द आदि न खाय तो ववासीर का खून थम जाय।

❀ रुधिर रुकने की अन्य विधी ❀

निबौली की मिंगी, एलुआ इन दोनों की बराबर ले पानी से महीन पीस १ रत्ती की गोली रसौतके पानीमें ११ दिवस प्रात काल सेवन करने से ववासीर का रुधिर निश्चय थम जाय।

❀ ववासीर के मस्से दूर करने की औषधि ❀

रसौत, चीनिया कपूर निबौली की मिगीं इन तीनों को पानी में महीन पीस लेप करै तो मस्से दूर हो।

जल जाय और तेल मात्र शेष रहजाय तब उतार कर छान कर उस तेलका मर्दनकरे तो मस्से दूर हों ववासीरको आरामहो

❀ अन्य प्रयोग ❀

पकाया जमींकन्द १६ भाग, चित्रक और सोंठि आठ आठ भाग कालीमिरच ४ भाग, त्रिफला २ भाग, पीपलामूल, शोधाभिलावा शतावरि आठ आठ भाग विधारा १६ भाग, भंग ८ भाग, इलायची ४ भाग वायविडंग ८ भाग इन सबको महीन पीस सब औषधियों से दूना गुड़ मिलाके ६ मासे की गोली बनावे ३० दिन तक १ गोली नियमसे सेवन करता बवासीर. हिचकी, श्वास, काम, राजरोग, प्रमेह, फिया, दूरहों।

❀ पित्त बवासीर का लक्षण ❀

मस्सों का मुँह नीलवर्ण लाल पीला सफेदाई लिये हो और उन मस्सों में से गर्म २ महीन धारसे रक्त निकले और मस्से महीन और कोमल हों तथा मस्सों का मुंह जोंकसा हो और शरीर में दाह ज्वर मूर्च्छा और अरुचि हो और नीला पीला लाल मल उतरे और त्वचा नख नेत्र श्वेत हों तो उसे पित्त की बवासीर जानिये।

❀ रुधिरकी बवासीर का लक्षण ❀

गुदा के मस्से घुंघची के रंग के समान हों और मस्सों से रुधिर की धार गर्म और बहुत गिरे और गाढ़ा कच्चा रक्त निकले और रुधिर के अधिक निकलने से शरीर ढाक के पुष्प समान पीला होजाय और उसका बल, उत्साह, पराक्रम सब जाता रहे और शरीर सुख जाय अधोवायु अच्छी प्रकार नहीं निकले मस्सोंमें से रुधिर निकलते हुए झाग होय

❀ अन्य औषधि ❀

वडी हड़ की छाल, पुराना गुड़ दो दो टंक दोनों को मि-लाय जलसे प्रति दिन ले और ऊपर से गो के मठा का सेवन करै तो ववासीर जाय।

❀ मस्सों की चिकित्सा ❀

खाने का चूना, सज्जी सुहागा, नीला थोथा; इन सब को वरावरले नीबू के रसमें तीन दिन तक भिगोवे फिर म-स्से पर लगाने से मस्से दूर होते हैं।

❀ अन्य औषधि ❀

शीशे की गोलीको गौ घृत में घिसे और १० दिन तक ववासीर पर लगावे तो मस्से जाते रहैं।

❀ अन्य औषधि ❀

विष्णु कान्त जड़ी काली मिर्च दो दो टंक भंग आधा मासा घोटकर पीवै तो ववासीर दूर हो।

❀ इति दूसरा भाग समाप्तम् ❀



॥ श्रीगणेशायनम ॥

बृहत् जर्राहीप्रकाश

* तीसरा भाग *

॥ नेत्र रोगों का वर्णन ॥

वैद्यक शास्त्र के मत से नेत्र रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और चिकित्सा का वर्णन करके यूनानी औरडाक्टरी चिकित्सा का विवरण भी इस स्थान पर किया जायगा।

❀ आयुर्वेदोक्त नेत्र रोग चिकित्सा ❀

❀ नेत्र रोग का कारण ❀

नेत्र मंडल दो ढाई अंगुल प्रमाण है. नेत्र मंडल में ७२ रोग मुख्य हैं, धूपादिसे गर्मी पहुंचने के पश्चात् शीतलजल के तात्कालिक संयोगसे दूरकी वस्तु अधिक गौर से देखने से, दिन के सोने से, रज अथवा किसी वस्तु के पड़ जाने से. धुंआ के लगने से. वमन का वेग रोकने से. अधिक वमन करने से. बहुत उष्ण वस्तु के भोजन से अधो वायु. मलमूत्र अधिक रोकने से, ऋतु के परि वर्त्तन से अधिक मैथुन से अश्रुके अवरोध से. अति सूक्ष्म वस्तु के अधिक देखने से. नेत्रों में पीड़ा होती है।

❀ नेत्ररोग निदान ❀

दृष्टि के चार पटल हैं, प्रथम पटल तेज और जलके आश्रय है द्वितीय पटल मास के आश्रय है तृतीय पटल मेदक आश्रय है और चतुर्थ पटल रुधिर, तेज, मांस, मेद. और अस्थि, इन पांचों के आश्रय हैं।

* प्रथम पटल में रोग का लक्षण ❀

नेत्रके प्रथम पटल में दोष होतो उस रोगी को कम दिखाई देने लगता है और आंखों में सुरखी आजाती है और पीड़ा होती है, इस प्रकार का रोग साधारण चिकित्सा से जाता रहता है।

❀ दूसरे पलट में हुए रोगका लक्षण ❀

नेत्र के दूसरे पटल में जो दोष प्राप्त हो उससे मक्खी. मच्छड़, केश आदिका समूह भली भांत दीख पडता है और निकट का दूर तथा दूर का निकट दिखाई देता है दृष्टि भ्रमती रहती है और बहुत यत्नसे भी, सुईका छिद्र नहीं दिखाई देता

❀ तीसरे पलटमें हुए रोगका लक्षण ❀

ऊंची वस्तु दिखाई दे. नीचे की दिखाई न दे. आंखोंके आगे परदा पड़ा हुआ मालूम हो दृष्टि मे अधिक दोष -
तीत हो आंखों के सामने चका चौंध रहे बड़ो वस्तु
दीखे. कभी कभी निकट की वस्तु एक की दो
और बगल की वस्तु दो की तीन दिखाई दें
होवे तो उनकी संख्या न हो सके।

चतुर्थ पटल में हुए रोगका लक्षण

चौथे पटल में जो रोग उत्पन्न होता है उसे तिमिर लिंग नाशक कहते हैं नेत्रोंकी तेजोमई पुतली नीली कांचके समान होतीहैं और चन्द्रमा, सूर्य्य, नक्षत्र, बिजुली इत्यादि ऐसी वस्तुऐं भी अच्छी तरह दिखाई नदें इस दोष को नजला और मोतिया बिंदभी कहते हैं।

❀ मोतिया बिंदका लक्षण ❀

मोतिया बिन्द रोग छः प्रकार का है, (१) वायुका, (२) पित्तका, (३) कफ का, (४) सन्निपातका, (५) रुधिरका (६) परिम्लायनका (नोट) रुधिर से मूर्छितकफ होजाता हैउसको परिम्लायिन कहते हैं।

❀ १ वायुके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सम्पूर्ण वस्तु घूमती हुई, मलीन, और अरुणतायुक्तप्रतीतहों

❀ २ पित्तके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सूर्य्य, चद्रमा, नक्षत्र अग्नि, इन्द्र धनुष बिजली येसब चीजें घूमतीहुई नजर आवें और सबवस्तु नीलीसी दिखाई दें

❀ कफके मोतिया बिन्दका लक्षण ❀

सबवस्तुचिकनी और स्वेत दिखाईदें और नेत्रमेंजल भरारहे

❀ ४ सन्निपातकेमोतियाबिन्दका लक्षण ❀

सन्निपात के मोतियाबिन्दमें ऊपर लिखे हुए समस्त लक्षण के व्यतिरिक्त नाना प्रकारकी प्राकृति दिखाई देती हैं और चारों ओर तेजही तेज प्रतीत होताहैसबही वस्तुऐं तेजोमई जान पड़ती हैं।

❀ ५ रुधिरके मोतिया विन्दका लक्षण ❀

लाल, श्वेत, हरी काली और पीली सबवस्तु दिखाईदेवें।

❀ ६ परिम्लायिन के मोतिया विन्दका लक्षण ❀

दशों दिशा पीली ही दीखें मानों स्वर्णमई हैं वृक्ष आदि सब वस्तु जलती हुई दिखाई दें।

❀ मोतिया विन्द का सरूप ❀

वायु कोआदि ले छः प्रकारके मोतिया विन्दकहेहैं जो नेत्र मंडल के स्वरूप से जान जाते हैं (१) वायूका नेत्र मंडल अरुण चंचल और कठोर होता है (२) पित्तका नेत्र मंडल कांसी के सदृश अथवा पीला होता है (३) कफका मंडल बहुत चिकिना और शंख या कुन्द के पुष्प के समान पीला तथा चंचल हो और उसमें एक विन्दु श्वेत रंगका दिखाई दे (४) सन्निपात का नेत्र मंडल मूंगे अथवा अरुण कमल दलके तुल्य होजाता है तथा उपरोक्त लक्षण भी उसमे होते हैं (५) रुधिरका नेत्रमंडल साधारण लाल रंगका होता है (६) परिम्लायिन में नेत्र मंडल मद रंगा, पीला रूखा मैला, तथा नील वर्णकाहोता है।

पीलिया का लक्षण।

जिसके शरीर में पित्त दुष्ट हुआहो उसमनुष्यकी दृष्टि पीली होजानेसे उनको सब पदार्थ पीलेही दिखाई देते हैं।

धूम दर्शी रोग का लक्षण॥

शोक वा ज्वर के कारण सिरमें गर्मी पहुंचने से दृष्टि में धुवा समान अंधकार होजाता है और सर्वत्र धुवांही धुवां दिखाई देता है।

❀ नेत्रके रोगोंका विभाग ❀

नेत्रके कृष्ण भागमें चार रोग हैं।
(१) सव्रणशुक्र, (२) अव्रणशुक्र, (३) अक्षिपकात्यय, (४) अजका जात,

(१) सव्रण शुक्रका साध्य लक्षण।

नेत्रकी काली पुतलीके ऊपर दोष उत्पन्न होकर तारा ढक जाता है और उसमे सुईका सा चवका चलने लगता है और गर्म २ आंसू वहते रहतेहैं।

❀ सव्रण शुक्र का कष्ट साध्य तथा असाध्य लक्षण ❀

जब नेत्र में चवका न चले और अधिक आंसू न आवें, और पीड़ा कम हो तो रोग को कठिन साध्य अथवा असाध्य जानना चाहिये।

❀ अव्रण शुक्रका साध्य लक्षण ❀

काली पुतली के तारेपर शुक्र की बूंद आई हो और वह बूंद हिलती चलती रहे और शंखचन्द्रमा, कुन्द पुष्प, के समान हो तो साध्य है।

❀ अव्रण शुक्रका कष्ट साध्य तथा असाध्य लक्षण ❀

जिसके नेत्रका मांस यथावत न रहे और शुक्रकी बूद आडी तिरछी प्रतीत हों भदरंगी हो,चारों ओरसे लाल हों और अधिक दिनों का होजाय तो कष्ट साध्य है और यदि नेत्रों से आंसू गरम गिरैं नेत्रमें फुंसियां होजांय, और शुक्र का बूंद पुतलियोंके ऊपर मूंगके दाने के समान उभरी हुई हों और उसका रंग तीतरके पंख के समान हो तो रोग को असाध्य जानना चाहिय।

अक्षिपाकात्यय रोगका वर्णन ।

नेत्रका सफेद स्थान सब सूज जाय, पकजाय अश्रुपात अधिकहो पीड़ाभी अधिकहो तो अक्षिपाकात्यय रोग जानो यह असाध्य है ।

❀ अजकाजात रोगका लक्षण ❀

आंख बकरे की मैंगनी अथवा विष्ठा के समान होजाय और उसमे शूल अधिक हो रक्त वर्ण होजाय और आंसू रक्तके समान निकलें तो अजकाजात रोग समझना चाहिये यहभी असाध्य है ।

नेत्र के शुक्ल भागमें कफके दूषित होनेसे दसरोग होतेहैं अर्थात् (१) प्रस्तार्म (२) शुक्लार्म (३) रक्तार्म (४) अधि मासार्म (५) शुक्ति (६) अर्जुन (७) पिष्टक, (८) शिरा जाल (९) शिरापीडिका (१०) बलासग्रथिता

(१) प्रस्तार्म का लक्षण ।

नेत्रके श्वेत भागमें गरमीलिये बड़ा और काला या लाल चिह्नहो वह प्रस्तार्म कहलाता है ।

शुक्लार्म का लक्षण ।

नेत्रका श्वेत तथा कोमलमांस बढ़जायउसको शुक्लार्म कहतेहैं

❀ रक्तार्म का लक्षण ❀

इसरोग में भी नेत्रके सफेद भागमें कमलके समान कोमल मांस बढ़जाता है ॥

(४) अधिमासार्म का लक्षण ।

नेत्र के सफेद भागमें मांस बहुत बढ़ जाता है कभी वह कोमल औरकभी कठोरहोताहैउसको अधिकमासार्मरोगकहतेहैं

(५) शुक्ति नामका लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भागमें मांस का एक बिंदु श्यामरंगका पैदा होजाता है उसे शुक्ति नाम रोग कहते हैं ॥

(६) अर्जुन का लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भाग में शशा के रुधिरके समान एक बूंद पड़ जातीहै उसे अर्जुन कहते हैं ।

(७) पिष्टकका लक्षण ।

नेत्रके शुक्ल भागमें वायु कफके कोपसे पिसे आटेके समान मांस ऊंचा होय उसे पिष्टक रोग कहते हैं ।

(८) शिरा जालका लक्षण ।

नेत्रके श्वेत भागमें नसों के समूह कठिन और पीले होजाय तो शिराजाल रोगहै ।

(९) शिरा पीडिका का लक्षण ।

नेत्र के सफेद भागमें नसोंसे ढकी सफेद फुंसियांहों उसे शिरा पीडिका रोग कहते हैं ।

(१०) बलास ग्रथित का लक्षण ।

नेत्र के सफेद भागमें कांसीकी भांति स्वेत अथवा कमल समान लाल रंगके कठोर चिह्नहों उसे बलासग्रथितरोगकहतेहैं

नेत्रकी सन्धिमें जो नवरोग होतेहैं उनके नाम ये हैं (१) भूपाल (२) उपनाह (३) पैत्तिक श्राव (४) कफश्राव (५) सन्निपात श्राव (६) रक्तश्राव (७) पर्वणीश्राव (८) अजल (९) जन्तु ग्रन्थि ॥

(१) नेत्रके बीच पुतलीके समीप कोये के अन्त में जो सन्धिहै वह पीड़ा कर और पककरै सूज जाय तथा उसमें

कीचड राध के समान गाढा बहुत आवै तो उसे पूपालस नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ।

(२) नेत्रकी दृष्टिकी सन्धिमें बड़ी गांठ हो और वह पके नहीं उसमें खाज आवे उसे उपनाह नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ॥

(३) आंख में पीडा अधिक हो और रोमांच तथा खुजली हों तथा नेत्र कडुवे हों और सिरमें अग्नि जले और जिसके नेत्रकी सन्धिमें अश्रुपात हल्दी के समान पीले अधिक आवें उसे पैत्तिक श्राव नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ।

(४) नेत्रकी सन्धि में सफेद मंद रंग और चिकने आंसू आवै उसे श्लेष्मश्राव नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ॥

(५) नेत्रकी सन्धिमें नासूर पडजांय और उसमें दुर्गंधियुक्त राध निकले तो उसे सन्निपात श्राव नेत्रकी संधिका रोग कहतहैं

(६) नेत्रकी सन्धिमें यदि गर्म रुधिर बहुत निकले तो उसे रक्त श्राव नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ।

(७) नेत्रकी सन्धि तांबेके रंग समान लालहो दाह और शूल युक्तहो जिस का शोथ गोल हो उसे पर्वणी नाम नेत्र की सन्धिका रोग कहते हैं ।

(८) नेत्रकी सन्धि तांबेके समान लाल और दाहशूल युक्त हो उसे अलजी नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहते हैं ॥

(९) नेत्रकी सन्धिकी गांठ में कृमि पड़जांय और उससे वाफणी जाती रहै तथा उस स्थानपर खुजली हो और नेत्रों की सन्धिमें अनेक महीनमार्ग होजावे और नेत्रोंके पीड़ा अधिक हो तो उसे जन्तुग्रन्थिनाम नेत्रकी सन्धिरोग कहते हैं

ॐ नेत्रके समस्त रोगोंकी संख्या और उनके नाम ॐ

(१) वायुका अभिष्यन्द, (२) पित्तका आभिष्यन्द, (३)

कफका अभिष्यन्द (४) रक्तका अभिष्यन्द (५) वायुका अधिमंथ (६) पित्तका अधिमंथ (७) कफका अधिमंथ (८) रक्त का अधिमंथ (९) सशोथ पाक (१०) अशोथ पाक (११) हताधिमंथ (१२) वात पर्य्याय (१३) शुष्काक्षि पाक (१४) अन्यतो वात (१५) अम्लाध्युषित (१६) शिरोत्पात (१७) शिरोहर्ष (१८) नेत्रोंकी श्यामता (१९) नेत्रोंकी निरामता,।

(१) यदि आंखों में पीडा बहुत हो और रोमांच हों आंखों में खुजली आवै नेत्र कड़े हो, मस्तक जलै अश्रु शीतल पड़ें तो उसे वाताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहते हैं।

(२) यदि नेत्रमें दाह अधिक हो और आंखें पकजावें तथा नेत्रोंको शीतलता भावे और नेत्रोंसे धुवां निकले, गर्म आंसू गिरें और नेत्र पीले होजांय तो पित्त का अभिष्यन्द रोग कहते हैं।

(३) आंखोंको गरमी सुहावै तथा नेत्र भारी सूजन युक्त हों और खुजली उठे कीचड़ बहुत आवे तो उसे कफके अभिष्यन्द नेत्रका रोग कहते हैं।

(४) नेत्रके कोये लाल हो और जिमसे तांबे के रंग का आंसू गिरे और नेत्रों मे दाह हो, शीतलता सुहाये गर्म आंसू गिरे उसे रक्ताभिष्यन्द नेत्रका रोग कहते हैं।

(५) दुखती आंखों में कुछ पथ्य करे उससे शूल अधिक बढ़जाय, आधासिर नीचा होजाय आंसू शीतल गिरे मस्तक में दाह हो तो वायु का अधिमंथ नेत्रका रोग जानिये।

(६) आंखें दुखनेपर गर्म वस्तु वा खटाई आदिक सेवन से आंखों में बहुत हलें उठें दाह हो पकजांय तथा शीतलता

भावै और आंसू बहें तथा पीले नेत्र होजांय तब पित्त के अधिमन्थ रोग जानिये ।

(७) आंखोंमें अधिक रुलें चलें मानों फूटी जाती हैं सूजन होय और गर्मी भावै तो इसे कफका अधिमंथन रोग कहते हैं ।

(८) आंखें दूखती हों और रुधिर बिगड़े इस प्रकारका कुपथ्य करे उसकी आंखोंमें रुलें बहुत चलें, आंखें बैठीसी जांय और तांबेके रंगके गर्म आंसू गिरें आंखें लाल होजायें पकजांयतो रक्तका अधिमन्थ कहते हैं ।

(९) जिसके नेत्रों मे आंसू आवे और खाजहो और नेत्र पक्के गूलर की भांति पकजाय और सूजन भी हो तो उसे संशोथ पाक कहते हैं ।

(१०) जिसके नेत्रो के ऊपर सूजन न हो परन्तु पके गूलर समान पकजाय उसे अशोथ पाक कहते हैं ।

(११) नेत्रोंसे दीखे नही और उसमें अधिक पीड़ा हो सूखे कमल समान नेत्र होजांय तो उसे हतोधिमन्थ रोग कहते हैं

(१२) भौंहे और नेत्रों में वारम्वार बहुत पीड़ा हो तो वात पर्याय नेत्र रोग कहते हैं ।

(१३) नेत्र मुदजांय और जलैं भली भांति दिखाई न दें और नेत्र रूखे होजांयतो "शुष्काक्षिपाक" नेत्ररोग कहते हैं

(१४) कन्धे, सिर, कान,डाढ़ी, भौंह आंखें इनमें वायुकी अधिक पीड़ा चले तो इसे अन्य तिवातनेत्र रोग कहते हैं

(१) नेत्र काले और लाल हों, पकजावें उनमें सूजन हो तथा [illegible] आवे तो उसे अम्लाध्युषित नेत्ररोग कहते हैं

(१६) आंखम पाड़ा हो अथवा   हो, जिसकी आंखों की नसें चारों ओरसें तांबे समान लाल होजावें उसे शिरोत्पात सवल वायु नेत्र रोग कहते हैं।

(१७) यदि अज्ञानतासे सवल वायू का यत्न न किया गया तो आंखोंमें वहुत आंसू वार वार वहता रहे और उसे नेत्रों से किसी भांति से दिखाई न दे तो उसे शिरोहर्ष नेत्र रोग कहते हैं।

❀ रोगी आंखों की पहिचान ❀

(१८) नेत्रमें वहुत पीड़ाहो और ललाई रहे, खुजली तथा शूलहो तो इसे जानिये कि नेत्रोंमेंरोगहै गया नहीं।

❀ निरोगी आंखों की पहिचान ❀

(१९) नेत्रों में कुछ भी पीड़ा नहीं रहे और कुछभी खाज वा सूजन न हो, आंसू आदि न गिरें नेत्रों का वर्ण अच्छा हो और सूक्ष्म वस्तुभी यथावत् दिखाई देवै ऐसी आंखों का रोग रहित जानना चाहिये।

❀ नेत्रके समस्त रोगोंकी चिकित्सा ❀

विदित हो कि नेत्रके रोगीको लंघन, लेप, स्वेद कर्म सिर के नसकी फस्त जुलाव आदि हित हैं—आंखोंके दूखने के पश्चात् तीन दिन तक अंजनादिका लगाना वर्जितहै क्यों कि तीन दिन तक नेत्र अच्छे रहते हैं और चौथे दिन पक जातेहैं तव नेत्रमें कोइ औषधि लगानी चाहिये।

❀ लेप ❀

रहकी छाल, सेंधा लवण, गेरू रसौत, इन को समान

लेकर जलमें महीन पीसकर नेत्रों पर लेप करें तो दुखि-
ती हुई आंखें तथा समस्त नेत्र रोग अच्छे हों ।

❀ दूसरा लेप ❀

अफीम १ माशे फुलाई फिटकरी १ माशे इन्हें नीबूके रस
में पीस लोहे की कढ़ाई में थोड़ी गरम कर आंखों पर लेप
करे तो नेत्र पीड़ाका नाशहो ।

❀ अन्य लेप ❀

मुलहठी, गेरू, सेंधा लवण, दारू हल्दी, रसौत इनको बरा-
बर लेकर जलसे पीस नेत्रों पर लेप करै तो नेत्र दुखने के
सर्व रोग अच्छे हों ।

❀ पोटली ❀

पठानी लोंध,फुलाई फिटकरी, रसौत. मुलहटी, इन सब
को एक एक माशे लेकर महीन पीस घी ग्वार पट्ठे के
रसमें अथवा जलमें १ माशे भरकी पोटली करै फिर दुखते
हुए नेत्रोंपर वार२ फेरे तो नेत्र अच्छे हों ।

❀ सेकका नुसखा ❀

पठानी लोध को महीन पीस कपड़े से छान कर घृत में
भून फिर उसको गर्म पानी से सेककरे तो वायु दोष से जो
नेत्रों की पीड़ा हो वह दूर हो ।

❀ अन्य प्रयोग ❀

हल्दी,दारुहल्दी, सेंधा नमक, दूधमें पकाय इस दूध से
आंखों के ऊपरतरेड़ादेतोवायुप्रकोपसे दुखित आंखअच्छीहों

❀ अन्य प्रयोग ❀

पठानी लोध, मुलहटी, इन्हें महीन पीस घृतमें सेके फिर

बकरी के दूधमें पकावे फिर इस दूध से आंखों के ऊपरत रेड़ा देतो गर्मी तथा रक्त दोष से आंख दुखतीहोंतोवेअच्छी हों

❀ अन्य प्रयोग ❀

त्रिफला, लोध, मुलहटी, मिश्री, नागर मोथा इन्हें ठंडे पानीसे महीन पीस नेत्रोंके ऊपर तरेड़ा देतो रुधिर दोष से दूखती आंख अच्छी हों।

❀ अन्य प्रयोग ❀

अमली के पत्तोंको कूटकर अफीम और लोंग जबकुट हुई और आग पर फुलाई हुई फिटकरी इन सबको पोटली बना कर आंखों में फेरेतो नेत्र अच्छे हों ॥

❀ अन्य औषधि ❀

स्त्री के दूधकी ८बूंदडाले तो गर्मीसे दूखती आंखअच्छीहों

❀ अन्य प्रयोग ❀

यदि वायू से आंखों में चबके चले और अन्य किसी यत्न से अच्छी नहीं तो रोगीके लिलाटकी नस का रुधिर थोडासा निकलवादे अथवाभौंहके ऊपर दागदेतोनेत्रों कीपीडा शांतहो

❀ अन्य प्रयोग ❀

आंवले को पानी से पीस उसकी टिकिया बांधे अथवा चकापन के पत्तों की टिकिया बांधे तो गर्मी से उठे शूलों को अच्छा करै।

❀ अन्य प्रयोग ❀

त्रिफला; लोध, इन्हें कांजी के पानी में पीस घी में तले फिर इसकी टिकिया बांधे तो गर्मी तथा कफ से, हुआ नेत्र शूल दूर हो।

❀ अन्य प्रयोग ❀

सोंठ नीमके पत्ते इनमें थोड़ा सैंधा नमक मिला महीन पीस इन की टिकिया नेत्रोंके ऊपर बांधेतो शूल सूजन खाज जाय

❀ नेत्र की गुहेरी का लक्षण ❀

नेत्रकी गुहेरी को घृत से सेक फिर उसे शस्त्र से फोड़ उस के ऊपर हडताल; तगर, सैंधा नमक ये बराबर ले शहद में महीन पीस इनका लेप करै तो गुहेरी जाय।

❀ नेत्र रोग पर अंजन ❀

शंख की नाभी, बहेडेकी मिगीं, हडकी मिंगी, मैनशिल पीपल कूट, खुरासानी वच ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस अंजन करै तो फूला तिमिर, मांसकी नेत्रों में वृद्धि, नेत्रों में कांच आई हो, रतौंधी, और नेत्रके रोगों को यह अंजन दूर करे।

अन्य अंजन

तिलोंके फूल ८० पीपल के बीज ६० चमेली के फूल ५० मिर्च ४६ इन्हें महीन पीस गोली बनाले फिर उस गोली को जलमें घिसकर लगावे तो तिमिर अर्जुनरोग फूला मांस वृद्धी आदि नेत्र रोग दूर हों

❀ अन्य अंजन ❀

रसोत, दोनों हल्दी, चमेली के फूल, नीम के पत्ते महीन महीन पीस गोबर के रस से अंजन करै तो रतौंधी दूर हो।

❀ अन्य अंजन ❀

आंवले, हरड, बहेडे इन तीनों के बीज महीन पीस अंजन करे तो नेत्रों के पानी को और वात रक्त के रोगों को दूर करे

❀ अन्य अंजन ❀

चीनिया कपूर को वड़ के दूध में २ माशे तक अंजन करे तो फूली अच्छी हो ।

* अन्य अंजन *

रसौत, राल, चमेली के फूल, मैंनसिल, समुद्र फेन, सैंधा नमक, गेरू, कालीमिरच ये सब बरावर ले महीन पीस शहद में अंजन करेतो नेत्रोंकी खाज बाफणी जाती रहे ।

❀ अन्य अंजन ❀

गिलोय का रस २॥ टके शहद १ माशे सैंधानमक १ माशे इन सबको इकट्ठाकर महीन पीस अंजन करेतो मोतियाविन्द और तिमिर धुन्ध आदिको दूर करे ॥

❀ अन्य अंजन ❀

सांठीकी जडको शहद के साथ अंजन करने से नेत्रों से पानी जाना वन्द हो ।

* अन्य अंजन *

साठीकी जड़ को घी के साथ रगड़ कर अंजन करने से फूली अच्छी हो ॥

❀ अन्य अंजन ❀

वबूल के पत्तोंका काढा कर रस निकाले फिर इसको और गाढा कर फिर इसमें शहद मिलाय अंजन करेतो नेत्र से पानी जाना वन्द हो ।

❀ अन्य अंजन ❀

निर्मली के फल को शहद में घिस थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करेतो आंख निर्मल हों ।

❋ अन्य अंजन ❋

काली मिर्च, पीपल, समुद्र फैन, सेंधानमक, सब दोदो माशे और सुरमा २६ माशे इन्हें महीन पीस अंजन करेतो फूली, खाज, कीच आदि सब नेत्ररोग जाय ॥

❀ सलाई ❀

शीशे को अग्नि में गला गलाकर त्रिफले के रसमें १०० वार बुझावे फिर इसी तरह भांगरे के रसमें ५० वार तथा सोंठ के रसमें भी ५० बार तथा घीमें भी ५० वार और गो मूत्र वा बकरी के दूध में पचीस पचीस वार बुझावे उसकी सलाई बनावे उस सलाई को आंखों में क[illegible] नेत्रके समस्त रोग दूरहों ॥

❀ नयनामृत गुटका ❀

सोंठ, हड़की छाल, कुलथ, खापरा, फिटकरी, मा[illegible] बराबर ले और भीमसेनी कपूर कस्तूरी, अनविधे मो[illegible] औषधिके तोलेसे आधी२ ले फिर इनको खरलमें महीन[illegible] नीम के रसमें ५ दिन खरल करे फिर उसकी गोलि[illegible] नाले एक गोली को स्त्री के दूधमें घिसकर अंजन करे तो फूला पटल जाय शहदमें घिसकर अंजन करे तो जल गिरना बन्द हो, गोमूत्रमें घिसकर अंजन करे तो रतौंधी जाय औरकेलेके रसमें घिसकर अंजनकरेतो नेत्रकीमांसवृद्धि जाय

❀ चन्द्रोदय गुटिका ❀

शंखकी नाभी, बहेड़े की मिंगी, हरड़की छाल, मैनशिल पीपल, मिर्च, कूट, खुरासानीवच, ये सब बराबर ले बकरी के दूधमें महीन पीस गोलीबनावे उस गोली को घिसकर

अंजन करे तो तिमिर, नेत्र, मांस वृद्धि, पटल, कींच रतोंधी फूला आदि दूरहों।

❀ चन्द्र प्रभा गुटिका ❀

हल्दी, नीमके, पत्ते, पीपल, मिर्च, बायबिडिंग, नागरमोथा इड़की छाल सब बराबर ले महीन पीस बकरीके मूत्रमें ३ दिन खरल कर गोली बना छाया में सुखावै और इसे गौ मूत्रमें घिस अंजन करै तो तिमिर दूरहों जलसे घिस अंजन करैतो नेत्रकी कीच दूरहो शहदमें घिस अंजन करै तो पटल दूरहो स्त्रीके दूधमें घिस अंजन करैतो फूला दूरहो।

❀ त्रिफलादि घृत ❀

त्रिफला का रस १ सेर, जल भांगरे का रस १ सेर, अडूसे का रस १ सेर, शतावरिका रस १ सेर, बकरी का दूध १ सेर गिलोय का रस एक सेर; आंवले का रस १ सेर, कमल गट्टे, मुलहटी, त्रिफला, पीपला, दाख, मिश्री, कटेली, इनसब का रस आध आध सेर ले इन सब में गौका घृत दो सेर डालें मधुरी आंचसे पकावै जबसब जलकर केवल घी मात्र रहजाय तो घृतको उतारके चिकने बरतन में रख छोडे यह घृत दो टंक भर नित्य खानेसे नेत्र के तिमिर कीच सबल बायु आदि रोग दूर होवें।

❀ मोतियाबिन्दकी चिकित्सा में नोट ❀

कच्चे मोतिया बिन्द का जाला शलाकासे नहीं उतारना चाहिये पके का जाला शलाका से उतारना चाहिये।

❀ पके मोतिया बिन्दु का लक्षण ❀

नेत्र के तिल के ऊपर दही या मट्ठे के समान बुंदआजाय

और उसे कुछभी दीखे नहीं और नेत्रमें पीड़ा आदि कुछभी न हो तब उस नेत्रका शलाका आदिसे जाला उतारे परन्तु पीनस रोग वाले, कान और नेत्र में जिसके शूल हो इनका जाला नहीं उतारना चाहिये तथा श्रावण, कार्तिक और चैत्र के मास में नहीं उतारना चाहिये साधारण काल होने पर जुलाब दे शरीर को शुद्धकर अच्छे निर्मल स्थानमें बैठावे जहां पवनादिक नहींहो दो पहर से पूर्व, नेत्रके रोगको दूर करने वाले प्रवीण वैद्य द्वारा नेत्रका जाला शलाका से उतरवावे वैद्य रोगीको सुख पूर्वक बैठावे तथा चार मनुष्य से रोगीको पकड़वाये रहना जिससे रोगी हिल न सके फिर चतुर वैद्य आंखमें शलाका डाले अत्यन्त चतुरता से उस की आंखमें शलाका फेरे, शलाका से नेत्रके प्रान्त भागमें जालेको फोड़ सब नेत्रके जाले दूर कर उस जालेमें से नेत्र के तिलके ऊपर की विकार की बूंद ढल पड़े तब उस मनुष्यको सब वर्ण यथार्थ दिखाईदे शलाकेके फेरनेसे पहिले नेत्रको मुँहकी वाफसे फूंकदे प्रस्वेदयुक्त करले और वैद्य अपने अंगूठे से उस रोगीके नेत्रको मसल कोमल करले पीछे शलाका से जालाले वैद्यभी अपना हाथ हिलने न दे इस विधि से जाला दूर करे रोगीको अच्छी वातोंसे प्रसन्न करे फिर उसको जहां पवन और रोशनीकी चकाचौंध न आवे ऐसे स्थानमें रोगी को सूघा सुलाय दे तथा उसकी आंख पर घी का फाहा बांधे और रोगीका सिर आदि हिलने और छींक, खांसी, डकार, थूकना वहुत जल पीने आदिको मना करदे और वन्त हलका भोजन करावे घी आदि

रिष्ट भोजन करने न दे इस प्रकारसे ५दिन करै पीछे थोड़ा घी डाले पतला हलका अन्न का हरीरा खिलावै इस भांति रक्खे नेत्रपर अधिक बल आने वाली कोई बारीक चीज न देखने दे ऐसा करने से मोतिया बिन्दु रोग दूर होताहै ।

यूनानी मतसे नेत्र रोग की चिकित्सा ।

आंखोंमें सात परदे होतेहैं जिनके नाम नीचे लिखजातेहैं (१) मुलताहिमा, (२) करनिया, (३), इनबिया, (४), इनकबूतियां, (५) शबकियां, (६) ममाबियां, (७) सलबियां ।

❀ मुलत हिमा के रोग ❀

यह परदा उन अज़लों से मिला हुआहै जो आंखके ढेले को हिलाते हैं यह करनियां परदेको छोड़कर आंख के सब भागों को घेरे हुए है, इस परदे में ९ प्रधान रोग हैं – यथा [१] रमद [२] तरफ़ [३] जफ़रा [४] सबल [५] इन्तफाख [६] जसा [७] हुक्का [८] दूका [तूसा ।

रमद का वर्णन

मुलताहिमा परदे पर जब सूजन आ जाती है तब उसे रमद अथवा रमद हकीकी कहते हैं रमद कभी उस ललाई को भी बोलते हैं जो आंख में धूल गिरने धूंआं लगने या सूरज की गरमीके कारण होजाया करतीहै परन्तु इसमें सूजन नहीं होती रमद पांच प्रकारका होता है यथाः–

(१) रक्तज (२) पित्तज (६) कफज (४) वातज (५) रीहसे उत्पन्न

❀ रक्तज रमज के लक्षण ❀

आंखके इस रोगमें सूजन, ललाई और खिंचावट होतीहै

मैल अधिक आता है रगोंको मवाद से भरना कनपटियों में दर्द और धमक तथा रुधिर की अधिकता ये रक्त जरमद के चिन्ह है —

❀ रक्तज रमदकी चिकित्सा ❀

गुद्दीपर पछने लगवा कर रुधिर निकालदे, फिर हरड़, आलू पित्तपापड़ा और इमली का काढ़ा पिलाकर शियाफ अवियज को अंडे की सफेदी वा मैथी के लुआव वा स्त्री के दूधमें घिसकर आंखों पर लगावै। रोगके प्रारम्भमें उक्त शियाफ को न लगाना चाहिये।

❀ शियाफ़ अवियज के बनानेकी विधि ❀

जस्त का सफेदा, गोंद, वबूलका और कतीरा इन तीनोंको कूट छानकर ईसब गोलके लुआव या अंडेकी सफेदमें मिलाकर बत्ती बनालेव अफीम और अंजरूत भी थोड़ासा मिला देवैं तो वहतर है।

❀ पित्तज रमद का लक्षण ❀

सूजन, फुलाव, खिचाव, लाली, चीपड़ निकलना और आंसू वहना रक्तज रमद की अपेक्षा इसमे कम होता है परन्तु दर्द जलन अधिक होती है।

❀ पित्तज रमदकी चिकित्सा ❀

हरड़ आदि का काढा पिलाकर दस्त
सनी के बीज का शीरा. पालक के
काय, और हरे धनियेकी पत्ती
तथा बिहीदाना, ईसब गोल
अंडेकी सफेदी आंखमें डाले,

हो तो पूरकी वत्ती और अफीम आंख पर लगावे।

❀ कफज रमद का वर्णन ❀

कफज रमदमें आंख बहुत फूल जाती है, बोझ अधिक मालूम देता है, गीड़ आंसू बहुत निकलते हैं, दोनों पलक आपसमें चिपट जाते हैं परन्तु लाली कमहोती है।

❀कफज रमद की चिकित्सा ❀

मलके दूर करने और रोकने के लिये एलुआ, रसौत, अकाकिया और केसर गुलाबमें पीसकर माथे पलक की पीठ पर लेप करे पकाने और निकालनेके लिये धुली हुई मेथीका लुआब और अलसीका लुआब आंखों में डाले, और दो तीन दिन पीछे ज़रूर अवियज आखों में लगावे।

❀मेथी को धोने की रीति ❀

मेथी को मीठे पानीमें डालकर दो पहर तक रक्खी रहने दे फिर उस पानी को निकाल कर मेथी से बीस गुना पानी डालकर औटावे, जब पानी आधा रह जाय तब लुआब बन जाता है।

❀ ज़रूर अवियज़ के बनाने की रीति ❀

अज़रूत को पीसकर गधा वा लडकी वाली स्त्रियों के दूध में सानकर झाऊ की लकड़ियो पर रख कर ऐसे चूल्हेमें रख दे जो ठंडा होने को हो। जब अंजरूत सूख जाय इस का चौथाई नशास्ता मिलाकर बारीक पीसले और थोडी मिश्री भी डाल लेवे॥

❀वातज रमद का लक्षण ❀

इस रोगमें आंखोंमें सूखापन, भारापन और रंगमें काला

मैल अधिक आता है रगोंको मवाद से भरना कनपटियं में दर्द और धमक तथा रुधिर की अधिकता ये रक्त जरमः के चिन्ह है —

❀ रक्तज रमदकी चिकित्सा ❀

गुद्दीपर पछने लगवा कर रुधिर निकालदे, फिर हरड़ आलू पित्तपापड़ा और इमली का काढ़ा पिलाकर शियाफ अवियज को अंडे की सफेदी वा मैथी के लुआब वा स्त्री के दूधमें घिसकर आंखों पर लगावे। रोगके प्रारम्भमें उक्त शियाफ को न लगाना चाहिये।

❀ शियाफ़ अवियज के बनानेकी विधि ❀

जस्त का सफेदा, गोंद, बबूलका और कतीरा इन तीनोंको कूट छानकर ईसब गोलके लुआब या अंडेकी सफेदीमें मिलाकर बत्ती बनालेवे अफीम और अंजरूत भी थोड़ासा मिला देवें तो बहतर है।

❀ पित्तज रमद का लक्षण ❀

सूजन, फुलाव, खिचाव, लाली, चीपड निकलना और आंसू बहना रक्तज रमद की अपेक्षा इसमें कम होता है परन्तु दर्द जलन अधिक होती है।

❀ पित्तज रमदकी चिकित्सा ❀

हरड़ आदि का काढ़ा पिलाकर दस्त करावे। तथा कासनी के बीज का शीरा, पालक के बीजका शीरा, हरी मकोय, और हरे धनियेकी पत्ती पीसकर आंखों पर लगावे तथा बिहीदाना, ईसब गोल का लुआब, स्त्री का दूध और अंडेकी सफेदी आंखमें डाले, जिस समय दर्द अधिक होता

हो नपूरकी वत्ती और अफीम आंख पर लगावै ।

❀ कफज रमद का वर्णन ❀

कफज रमदमें आंख बहुत फूल जाती है, बोझ अधिक मालूम देता है, गीड़ आंसू बहुत निकलते हैं, दोनों पलक आपसमें चिपट जाते हैं परन्तु लाली कमहोती है ।

❀कफज रमद की चिकित्सा ❀

मलके दूर करने और रोकने के लिये एलुआ, रसौत, अ-काकिया और केसर गुलाबमें पीसकर माथे पलक की पीठ पर लेप करे पकाने और निकालनेके लिये धुली हुई मे-थीका लुआब और अलसीका लुआब आंखो मे डाले, और दो तीन दिन पाछे ज़रूर अवियज़ आंखों मे लगावे ।

❀मेथी को धोने की रीति ❀

मेथी को मीठे पानीमें डालकर दो पहर तक रक्खी रहने दे फिर उस पानी को निकाल कर मेथी से बीस गुना पानी डालकर औटावै, जब पानी आधा रह जाय तब लुआब बन जाता है ।

❀ ज़रूर अवियज़ के बनाने की रीति ❀

अंजरूत को पीसकर गधा वा लडकी वाला स्त्रियों के दूध में सानकर झाऊ की लकड़ियों पर रख कर ऐसे चूल्हेमें रख दे जो ठंडा होने को हो । जब अंजरूत सूख जाय इस का चौथाई नशास्ता मिलाकर बारीक पीसले और थोडी मिश्री भी डाल लेवे ॥

❀वातज रमद का लक्षण ❀

इस रोगमें आंखोंमें सूखापन, भारापन और रंगमें काला

पन होता है, आंखोंमें दर्द पलकों में ललाई हुआ करती है

❀वातज रमद की चिकित्सा ❀

इस रोगमें शिरमें तरी पहुंचाने वाले उपाय करने चाहिये बनफशा का तेल नाक में सूंघे तथा बिहीदाने का लुआब आंखमें डाले अथवा बाबूना, बनफशा अलसी का पानी नीलोफरके पानी में मिलाकर आंख पर लेप करे।

❀ रीही रमद का लक्षण ❀

इनमें आंख खिची रहती है, भारापन और आंसू बिलकुल नहीं होते कभी कभी दर्दके कारण लाली भी होजाती है

❀ रीही रमद की चिकित्सा ❀

इस रोगमें बाबूना, अकलीलुल मलक और दौना मरुआ को औटाकर इस पानी को आंख पर डाले, और गेहू की भुसी तथा बाजरे की पोटली से सेके।

❀जाली नुस वटी ❀

भुनी हुई फिटकरी साढ़े तीन तोले, हलदी सात माशे, अफीम ९ माशे इनको कागजी नीबू के रस में घोटकर लोहेके पात्र में मंदी आग पर पकावे, गाढ़ा होने पर गोलियां बनारक्खे इस गोली को पानी में घिस कर नेत्रों के ऊपर पतला लेप करे और पलकों के किनारे पर लगावें इस से आंख का रोग दूर होता है

❀ आंखों पर बांधनेकी टिकिया ❀

गेहूं की मैदा, लोध और घी प्रत्येक चौदह माशे लेकर सबको सानकर चार टिकिया बना लेव। इनमें से एक टिकिया ठीकरे पर रखकर आग पर रखदे। कुछ गरम होने

पर आंख पर बांध दे इस तरह चारों टिकिया के बांधन से फायदा होजाता है ॥

❀ आंख पर लगाने का लेप ❀

हरडका छिलका. सेंधानमक. गेरू और रसौत इन को सम न ले जल के साथ पीस कर आंखों पर लेप करने स सब प्रकार के रोग जाते रहते हैं।

❀ अन्य प्रयोग ❀

अफीम, फूली हुई फिटकरी और लोध प्रत्येक एक २ माशेले नीम के रसमें पीसके लोहकी कढ़ाई में गरम करके नेत्रों पर लेप करै तो आंखों का रोग दूर होजाता है ।

❀ पोटली ❀

यदि वायु लगने के कारण नेत्रों में सुई चुभने की सी वेदना हो तो पठानी लोध को सेक महीन पास कर कपड़े में छानले और फिर घी में भूनले । इस कपड़े में बांध गरम करके आंख पर सिकताव करै तो नेत्रशूल बंद होता है।

❀ पोटली ❀

ग्वार पाठेका गूदा एक माशे और अफीम एक रत्ती इन्हें पीस एक पोटली में बांधले । और इसको पानी में भिगो भिगोकर आंखों पर फेरता रहै । इसमेंसे एक बूंद आंख के भीतर भी टपका देना गुण दायक है ॥

❀ पोटली ❀

पठानी लोध और भुनी फिटकरी एकएक माशे, अफीम चार रत्ती,इमली की पत्ती चार माशे, सबको पीस करकेकपड़े

की पोटली में बांध आंखोंपर फेरता रहै. इससे आंखों का दरद जाता रहता है।

❀ पोटली ❀

इमली की पत्ती सिरसकी पत्ती हलदी और फिटकरी इन चारों की दोदो माशे लेकर महीन पीस एक पोटली बना लेवे। इस पोटली को पानीमें भिगो भिगो कर बारबार आंखों पर फरने से आंखों का दरद बंद हो जाता है।

❀ पोटली ❀

पोस्त का डोडा एक अफीम १ रत्ती लौंग भुनी हुई नग दोवेलगीरा चार माशे चने के बराबर हलदी दो माशे इमली की पत्ती इन सबको कूट पीस कर पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगोकर आंखों पर फेरे।

❀ पोटली ❀

कपुर तीन माशे और पठानी लोध एकमाशे पीसकर पोटली में बांध कर आध घंटे तक पानीमें भिगोदे फिर इस को वार वार आंखों पर फेरे और कभी कभी एक बूंद आंखके भीतर भी टपका देवे।

❀ पोटली ❀

पठानीलोध, फिटकरी मुरदासंग, हलदी, और सफेदजीराचार चार माशेएकरत्ती अफीम काली मिरच चार नीलाथोथा आधा रत्ती इन सब को कूट पीस पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगोकर नेत्रों पर फेरना चाहिये।

❀ पोटली ❀

वडी हरड का बक्कल, बहेड़े का बक्कल आमला रसौत, गेरू, इमली की पत्ती, अफीम, फूलीहुई फिटकरी और सफेद जीरा यह सब समान भाग लेकर कूट पीस कपड़े में पोटली बांध कर गुलाबजल अथवा पानीमें भिगोभिगोकर नेत्रों पर बार बार फेरे।

❀ पोटली ❀

अफीम एक माशे. फूली हुई फिटकरी दो माशे इमली की पत्ती एक माशे इन सबको महीन पीसकर कपड़े की पोटली में बांध कर आंखों पर फेरे।

❀ पोटली ❀

सफेद जीरा. लोध और भुनी हुई फिटकरी इन सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर ग्वार-पाठे के रसके साथ साथ घोटकर कपडेकी पोटली में बांधे और इस पोटली को पानी में भिगोभिगोकर आंखों पर फेरता रहै।

❀ पोटली ❀

फूली हुई फिटकरी एक माशे और अलसी दो माशे इन दोनों को पीसकर कपड़े की पोटली में बांध कर जलमें भिगोभिगोकर बार बार आंख पर फेरे।

❀ अन्य उपाय ❀

जिसदिन आंख दुखनी आवै उसी दिन धतूरेका रसकुछ गुनगुना करके कानमें टपकाना चाहिये। यदि बांई आंख दुखती होतो दाहिने कानमें और दाहिनी आंख दुखती हो तो बांए कान में टपकाना उचित है॥

❀ बालकोंकी आंख का इलाज ❀

जो किसी बालककी आंख दुखनी आगई होतो नीमकी पत्तियों कारस बांई आंखदुखती होतो दाहिने कानमें और दाहिनी आंख दुखती होतो बांये कानेंमें टपकावे ॥

बिहीदाने का लुआब और धनिये के पत्तों का रस स्त्री के दूध में मिलाकर छानले, इसे आंखों में टपकाना हित कारक है।

❀ उपाय ❀

सूखी इमली के बीजों को पानीमें भिगो मसल कर छानले फिर इसमें तीन रत्ती अफीम और पांचरत्ती फिटकरी डाल कर किसी लोहे के पात्रमें भरकर आग में पकावे। जब रस गाढा होजाय, तब इसको सीपमें धरकर पतलापतला लेप आंखों पर करे। यदि इमली के बीज न मिलें तोपत्तों के रसको ही काममें लाना चाहिये ॥

❀ उपाय ❀

चौशठ तोले पानी में चार तोले दारू हलदी को डाल-कर पकावे जब आठवां भाग शेष रहे, तब उतार कर छान ले फिर इसमें शहत मिलाकर आंखों पर डालने से सब प्रकार कार के आंख दूखनें में लाभ पहुंचता है।

❀ उपाय ❀

केवल सहजने के पत्तों के रसमें शहत मिलाकर लगाने से बादी पित्त, कफ, त्रिदोष से आई हुई आंख अच्छी हो जाती हैं।

❀ उपाय ❀

नेत्र बाला, तगर कंजाकी बेल और गूलर इन सबकी

छालको बकरीके दूध और जल में पकावे । पकने पर छान आंखों में टपकावै इससे दरद दूर होता है ।

❀ उपाय ❀

मजीठ हलदी लाख किस मिस दोनों प्रकार की मुलहटी और कमलके काढेमें चीनी मिला ठंडा करले इसको आंखो में टपकाने से रक्त पित्त के कारण जो आंख दूखनी आई हों तो आराम होजाता है ।

❀ उपाय ❀

कसेरू और मुलहटी को पीसकर पतले कपड़े में रख कर पोटली बना लेवे इसे फिर वर्षा के जलमें भिगो भिगो कर आंखों में निचोड़ेतो आंखोंकी गर्मी शान्त हो

❀ उपाय ❀

सफेद कमल मुलहटी हलदी पीसकर पोटली बना लेवै इस स्त्री वा बकरी के दूधमें बूरा डाल भिगो भिगोकर आंखों में निचोड़नेसे दाह वेदना ललाई और आंसुओंका गिरना बंद हो जाता हैं ।

❀ उपाय ❀

सफेद लोध और मुलहटी को घीमें भुनकर महीन पीसकर पोटली बना लेवै । इस पोटली को स्त्री के दूध में भिगो भिगोकर आंखों में टपकावै तो पित्त रक्त और चोट से उत्पन्न हुए नेत्र के रोग दूर होते हैं ।

❀ उपाय ❀

सोंठ त्रिफला नीम अड़ूसा लोध सबका काढा कर

के ठंडा होने पर आंखमें टपकाने से कफ के कारण दु खती हुई आंख को हितकारक है ।

❀ प्रयोग ❀

अमचूर को लोहे के खरलमें डाल लोहेके दस्ते से थोडा थोडा पानी डालकर खूब घोटे इसका पतला पतला लेप आंखोंके ओर पास करना बहुत उपयोगी है ।

❀ प्रयोग ❀

वडके पेडका दूध आंखोमें आंजना नेत्र रोगमें बहुत गुण कारक है ।

❀ उपाय ❀

सोंठ और नीमके पत्तों को समान पानीके साथ पीसकर गोलियां बना रखले । दरद होने पर पानीमें घिसकर लेप करना उपयोगी है ।

❀ उपाय ❀

काली मिरच और चूल्हेकी जली मिट्टी इन दोनों को चीनी के प्यालेमें घोटे । जब घोटते घोटते काला रंग होजाय तब काजल की भांति आंखों में आंजने से नेत्रोंकी ललाई बगल गंध दूर हो ।

उपाय

अडूसा के पत्तोंको पीस टिकिया बनाके आंखों पर बांधे तो शीघ्र दिनमें बगलगंधादिक रोग जाते रहतेहैं ।

उपाय

कपास की पत्तियों को पीस दही में मिलाके आंखों पर लेप करने से बगलगंध जाती रहती है ।

❀ उपाय ❀

अनारकी पत्तियों को पीस टिकिया बनाके सोते समय आंखों पर बांधनेसे बगलगंध दूर हो।

❀ उपाय ❀

नागर मोथा, मुलहटी आमला, मकोय, खस, नीलकमल के बीज प्रत्येक तीन माशे मिश्री दो तोले इन सबको कूट छानकर इस में से सात माशे प्रतिदिन सेवन करनेसे आंख छाती और पेट की जलन जाती रहती है।

❀ उपाय ❀

धुली हुई मेथीके लुआब में थोड़ेसे कतीरा मिलाके आंख में टपकाने से शूल नाश होता है।

❀ उपाय ❀

छिली हुई मुलहटीको कुछ कूट थोड़े पानीमें पीसके उसमें रुई भिगो नेत्रों पर रखने से नेत्रोंकी ललाई जाती रहती है

❀ प्रयोग ❀

लोध दो भाग बड़ी हरड़का बकल आधा भाग इन दोनों को अनारके पत्तोंके रसके साथ पीस रुई भिगोकर आंखों पर तीन दिन तक लगानेसे सब प्रकारका दर्द जाता रहताहै

❀ प्रयोग ❀

बीस मुंडी निगलजानेसे एकबरस तक और चालीस मुंडी निगलजाने से दो बरस तक आंख दुखनी नहीं आतीहैं।

❀ प्रयोग ❀

जो आंख दुखनी न आईहो और गरमीके कारण खुजली चलतीहो तो त्रिफलाको कूटकर रातके समय पानीमें भिगो

तीनोंको बराबर कूट पीसकर आंख में लगावे ।

❀ शियाफ अहमरकी विधि ❀

धुला हुआ सादना इक्कीस माशे बबूल का गोंद साढ़े सत्रह माशे जला हुआ तांबा और जला हुआ जंगाल प्रत्येक सात माशे, अफीम और एलुआ प्रत्येक पौने दो माशे, केसर और मुरमकी प्रत्येक आठ माशे, इन सबको पीस कर सलाई बनाकर आंख में लगावै।

❀ अन्य ओषधि ❀

माजूफल, बालझड, छोटी हरड, और बडी हरडका छिलका इन चारों को समान भाग लेकर पानीमें पीसकर गोली बना लेवै । इस गोली को पानी में घिसकर लगाने से ढलका बन्द हो जाता है ।

❀ अन्य औषधि ❀

सफेद कत्था समुद्रफेन, भुनी हुई फिटकरी बड़ी हरड का छिलका रसौत अफीम नीलाथोथा इन सबको समान भाग लेकर पानी के साथ घोटकर बहुत महीन करले इसको आंखमें लगाने से आंखों की खुजली, ललाई पानीका बह ना यह सब जाते रहते हैं ।

❀ अन्य औषधि ❀

आबनूस की लकडी को घिसकर आंखों में लगाने से पानी बहना भी बन्द होजाता है ।

❀ कंजी आंख का वर्णन ❀

जिस मनुष्यकी आंखों की पुतली बिल्ली की आंखों के समान सफेद होती है उन आंखों को कंजी कहते हैं, कंजापन

दो तरह से होता है एक जन्म से दूसरा जन्म लेने के पीछे जो जन्म से होता है उसका इलाज कुछ नहीं है।

जन्म लेनेके पीछे कंजेपन के सात कारण हैं जो कंजापन ठंडी प्रकृति से हुआ हो तो कडवे बादामका तेल, वेद अंजीरका तेल नाकमें सुंघना चाहिये तथा शादनज पीपल और पीली हरड आंख में लगावे जो गरम प्रकृति हो तो काला सुरमा तथा वंशलोचन आंख में लगाना गुण कारक है।

गुलरोगन कानमें डालना बहुत गुण कारक है चाहे कंजपन ठंडी प्रकृति से हो, तो चाहे गरम से।

कंजपन को दूर करने के लिये केसरका तेल आंखमें डालना बहुतही गुण कारक है चाहे कंजापन किसी कारणसेहो

इन्द्रायण के ताजेफल के भीतर सलाई करके उस सलाईको आंखोमें फेरने से कंजापन दूर होजाता है इससे बिल्लीकी सी आंख भी काली होती हैं।

जो रोग खुश्की से होते हैं उन में दिखलाई देना बिलकुल बंद होजाता है इसमे जहांतक बने तरी पहुंचाने का उपाय करना चाहिये।

❀ आंखके बाहार निकल आने वर्णन ❀

इस रोग के तीन कारण हैं एक तो यह है कि बादी के मवाद के आंख में इकट्ठा होजाने से आंखका ढेला बाहर को निकल पडता है इसमें मवाद को निकालने वाली दवायें काम में लावे फिर शियाफ सिमाक लगावे।

❀ शियाफ सिमाक की विधि ❀

सिमाक को पानी में औटाकर छानले और इस छानेहु

पानी को फिर औटावै कि गाढ़ा होजाय तब इसमें रागका सफेदा एक भाग, कपूर चौथाई भाग, कतीरा छटा भाग, मिलाकर सलाई बना लेवै।

दूसरा कारण यहहै कि गला घुटना सिरदर्द की आधीक्ता, वमन, बहुतसे वेगसे चिल्लाना मलका रुकना, प्रसवकी वेदना श्वास रुकना, इन कारणोंसे आंखका ढेला बाहर निकल पडताहै। इस दशा में शीशे का एक टुकडा वा एक थैली में बारीक सुरमा भर कर गुद्दी के ऊपर रक्खे और आंख के ऊपर कसकर पट्टी बांधदे और रोगी को सीधा सुला दे। तथा मवाद के रोकने वाले तत्व जैसे अनारकी छाल, अकाकिया. अलीक और उमारे लोहयत्तस आंखपर लगावै बहुत ठंडे पानी से मुख धोना भी इस रोगमें लाभ कारक है पर कभी केवल ठंडे पानी से मुख धोनसे लाभ नहीं होताहै तब ऐसा करे कि अनार के फूल, जैतून के पत्ते और खशखाश के पत्ते पानी में औटाकर इस पानी को ठंडा करके मुख धोवे।

तीसरा कारण यह है कि आंखके जोडोंके ढीले होने से आंखका ढेला बाहरतो नहीं निकलता पर बेचैनी और निर्बलता अधिक होजाती है। इसमें आंखके बंधनों को सुस्त करने वाली रतूवतों के निकालनेके लिये अयारजात किबार देवै। फिर इमली के बीज की राख, गुलाब के फूल, कुंदरू गोंद और बालछड आंख के ऊपर लगावै।

॥ मोतियाबिंद का ॥

एक रतूवत सिरसे उतरकर.

आकर करानियां परदे तथा रतूबत बैजिया के बीच में ठहर जाती है यही छेद प्रकाश के आने जाने का मार्ग है। जब इस छिद्र का जितना भाग उक्त रतूबत से बंद होजाता है, उतनी ही आंख की दृष्टि नष्ट हो जाती है और शेष खुले हुए भाग से यथावत् दिखलाई देता है इस रोग के कारण और लक्षण बहुत से हैं, पर वे विस्तर भयसे यहां नहीं लिखे गये हैं।

❀ वचकी माजून ❀

वच, हींग, सोंठ और सौंफ इन चारों को समान भाग लेकर कूट छान कर शुद्ध सहत में मिलाकर, इसमे से प्रति दिन प्रातः काल चार मासे सेवन करे।

❀ हबुज्जहबके बनानेकी विधि ❀

एलुआ ३ तोला, तुर्बुद २ तोला, मस्तगी, गुलाब के फूल प्रत्येक नौ नौ माशे, केशर २ माशे, पीली, हरड़ ७ तोला, सकमूनिया १ तोला इसकी मात्रा ९ माशे है, इसकी गोलियां बना लेना चाहिये।

❀ अन्य उपाय ❀

दोना मरुआ कलौंजी और चमेली सूघना, तथा दौना मरुआ का तेल सिर पर लगाना लाभ दायक है।

❀ अन्य उपाय ❀

ये सब दवा अलग २ आंख मे आंजने की हैं (१) निर्मली शहत में पीसकर (२) प्याजका रस शहत में मिलाकर (३) गोंदीकी मिंगी दो भाग अफीम एक भाग, इसको घिसकर (४) नौसादर को बारीक पीसकर (५) हींगकोशहत

दरूगोंद को कबूतरकी बीट में लगाना (४) फिटकरी को पीसकर सुकवीनज को सिरके में मिलाकर लगाना चाहिये। इन दवाओंसे मवाद पककर खालको चीर देता है और हड्डीको नहीं सड़ने देता॥

सूजन के पकने पर बूलऔर मौलसरी पीसकर नासूरके छेद में भर देना अथवा पिसी हुई जंगारमें वत्ती लपेटकर भर देना लाभदायक है।

❀ अन्य उपाय ❀

तुतली के पत्तों को पानी में पीसकर उसमें वत्ती सानकर घाव में रखदे।

❀ बंद नासूरका उपाय ❀

जो नासूरका मुख बंदहो जाय और पीव न निकल सकता हो कलूनेके बीज कूटकर खोवा गधीके दूधमें पकाकर थोडी सी केसर डालकर नासूरपर रखनेसे उसका मुख खुल जाताहै अथवा मैदाकी रोटीका गूदाऔर कुंदरू गोंद पीसकरकीकर के पानीमें सानकर लगानेसे भी नासूरका मुख खुलजाताहै

❀ नासूर के अन्यान्य उपाय ❀

(१) सेलखडीको अरंडके तेलमें घोटकर उसमें वत्ती सानकर नासूरमें भरै (२) दीपककी कीचड कपडे पर लगाकर नासूर पर रक्खे (३) बथुए के पत्ते और तमाखूके फूल इनको घीमें घोटकर नासूर पर लगावै (४) हुक्केके नहचे की कीचड़ और अफीम दोनों को समान भाग लेकर वत्ती बनाकर नासूर पर रक्खे (५) समुद्रशोख को पानीमें घोटकर नासूर में भरे (६) नीमके पत्ते और पेंवदी बेरकेपत्ते पीस

कर कपड़े में छानकर लगावे (७) सफेद कत्था और पलु आ इनको पीसकर नासूर पर रक्खे (८) गिलोय और हलदी दोनोंको कूटकर मीठे तेल में औटाकर कपड़ेमेंछानकर नासूर पर लगावे (९) शहतको औटाकर समुद्रफेन मिलाकर उसमें रूईकी बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे (१०) भिनी हुई मसूर और अनारका छिलका दोनोंको समान भागपीस कर लगावे (११) रसौत, गेरू, जवाहरड और पोस्तक डोरे इनको पीसकर लगावे (१२) हीरा हींग को सिरके में घोट-कर गुन गुना करके लगावे ।

❀ मरहम असफेदाज ❀

चारतोले रोगनगुल में एक तोले मोम पिघला कर इसमें इतना सफेदा मिलावे कि मिलकर एकगोलासा बनजाय फिर इसमें अंडेकी सफेदी मिलादे । कभी २ थोड़ा सा कपूरभी मिलादेते हैं । दूसरी विधि यहहै कि केवल सफेदा सफेदमोम और रोगनगुल इन तीनोंकोही मिलाकर मरहमबना लेतेहैं

❀ नाखूना का वर्णन ❀

यह रोग आंखके बड़े कोएकी तरफ पैदा होता है कभी कभी छोटे कोएकी तरफ वा दोनों ओर से होता है यहां तक कि पुतली को भी ढकलेती है । इस रोग पर शियाफबीजज शियाफ दीनारगू, ये दवायें काम में आती है ॥

❀ शियाफ बीजज के बनाने की रीति ❀

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५ माशे, चांदीकामैल ७ माशे, छरीला, कुदरूगोंद, अंजरूतपापड़ा प्रत्येक १ माशे इन

भैंसे छरीला और कुदरूगोंदको शराब में घिसले और सब दवाओं को कुटपीसकर इसमें मिलाकर वत्ती वना लेवै ।

❀ शियाफ दीनारगूकी विधि ❀

सिंगरफ तांवाजलाहुआ, हरताललाल, कूदरूगोंद, मिश्री और हिंदी छरीला, प्रत्येक एक भाग, मुर्र केसर और हलदी प्रत्येक चौथाई भाग इन सब को पानी के साथ खरल करके वत्ती वना लेवे ॥

❀ अन्य औषधि ❀

साबुन छःतोले, नीला थोथा और राल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, इनमें से साबुन के छोटे छोटे टुकडे करके लोहे के पात्रमें रखआगपर लगावै । फिरनीलाथोथा पीसकर मिलादे । पीछे रालको पीसकर मिलादे । इसको आगके ऊपरही लोहेकेदस्ते से घोटता रहे, जब कालापड़जाय तवउतार कर रखले इसमें से एक खसखसके दानेके वरावर सीपामें रिगडकर आंखमें लगावै इस तरह तीसरे दिन लगातारहै इससे नाखूना सफेद और नजले का पानी सबको आराम होजाता है ।

डाक्टरी मत से नेत्र के रोगों की चिकित्सा

❀ (१)आंखमें किसी वस्तु का पड़ जाना ❀

रेत, कंकरी, कोयला, चूना, अथवा और कोई वस्तु आंख के भीतर पड़कर पलकों में लिपट जाती है तव आंख में खराश होती है और पानी वहता है और आंख खोली नहीं जा सक्ती। इसका उपाय यह है कि पलक को उल टा कर के गिरीहुई चीज़को वारीक सलाई इत्यादिसे तुर-

त निकाल देना चाहिये, यदि कोई कण आंख के परदे र जमगया होतो आंख में कोकीन लोशन डालकर आंख ो पथरा-ले फिर किसी बारीक चिमटा से सावधानी से उस ण को निकालले यदि आंख में अनबुझा चूना गिर या होतो तुरन्त आंख को साफ पानीसे पिचुकारी द्वारा ोकर शीतल जलकी गद्दी आंख पर रक्खें अथवा आंख ोने के पश्चात चार बूंद ग्लीश्रीन की आंख में डालदें, यदि लोहका रेंजा आंख में जापड़ा होतो चुम्बक पत्थर आंख क निकट लेजांय उस रेजे को खैंच लेगा यदि ऊष्ण तेल तथा अग्निमे नेत्र दग्ध होजांय तो रोगन जैतून और चूनेका पानी समभाग मिलाकर उसमें कपड़े की गद्दी भिगोकर नेत्र पर रक्खे और उसे तर करते रहें ॥

❀ नेत्र पर चोट लगजाना ❀

यदि चोटमे भौं या पपोटेपर घाव हो गया होतो स्वच्छ सूत तथा रेशम के तार से सीकर बोरक लोशन में लिन्ट तर करके चोट पर रक्खें यदि जलन होतो कनपटी पर जोंक लगवावें यदि आंखका ढेला फूट जाय तो तुरन्त किसी आंखके डाक्टर या जर्राह से इलाज करावें ॥

❀ (३) आंखका दुखना ❀

रोगीको रोशनी और गर्मी बचाकर अन्धेरे कमरे में रक्खे अथवानेत्रों पर हरा या कालाकपड़ा रक्खेया आईशेडलगावे एक एक दोदो घन्टे पीछे नीम गर्म साफ पानी से या हल्के बोरक लोशन से विल्लोरकी पिचकारी द्वारा पलकों को खोलकर आंखको अच्छी तरह धोते रहें, मैला

कपड़ा आंख के पास न आने दें आंख पोछने के लिये मल वस्त्र स्वच्छ और निर्मल काम में लावें, अधिक सूजन और पीड़ाके समय बहुत हलकी दवा आंख में डालें।

❀ (१) नुसखा ❀

बोरक एसिड २० ग्रेन, जिङ्क सलफाम २ ग्रेन, टिंक्चर ओपियम १० बूंद, निर्मलजल ८ औंस, इस में से दो दो बूंद आंख में टपकावै और एक साफ मलमल की गद्दी इसी जल में तर करके आंख पर रक्खे. जब आंखकी जलन कुछ घट जाय तो आंखको धोकर यह औषधि सेवा करे।

❀ (२) नुसखा ❀

बोरिक ऐसिड १ ग्रेन, जिंकसरफास २ ग्रेन, कोकीन २ ग्रेन, टपकाया हुआजल १ औंस इसमेंसे कईएक बूंद दिनमें तीन चार वार आंख में डाले।

❀ (३) नुसखा ❀

जिंक सल फास्ट ४ ग्रेन, गुलाब जल १ औंस अथवा

❀ (४) नुसखा ❀

अरजन्टाई नाइट्रास २ ग्रेन, गुलाब जल १ औंस आंख को धोनेके बाद दिनमें दो तीन वार डाले॥

❀ (५) नुसखा ❀

आरगाईरोलका ५ से २० सेकडे वाला सोयूल्शन दुखती हुई आंख में डालने से बड़ा लाभ होता है अधिक उत्तमता इस दवा में यह है कि यह आंख में लगता नहीं है इसको बच्चे से बूढे तक आंखों में डाल सक्ते हैं॥ रातको आंखें आपस मे चिपक न जांय इसके लिये सोते समय

पलकों के किनारों पर थोडीसी वैसीलीन या बोरिक आ इन्ट मेन्ट लगा देना चाहिये ।

विदित होकि आंखों को जितना साफ रक्खा जायगा उतनाही जल्दी आराम होगा खाने को हलकी और जल्द पचने वाली वस्तु देनी चाहिये गरिष्ट ऊष्ण और भारी पदार्थों के सेवन से तथा खटाई और मिठाई से परहेज करें ।

(४) पीपदार से.ज़ाकी अथवा रोहे वाला नेत्ररोग ॥

इन रोगों में पलकों केभीतर छोटे २ दाने पैदा हो जाते हैं आंखकी झिल्ली खुरदरी हो जाती है और डीढ निकलती रहती है यह रोग अधिक पीडित करता है यदि इलाज में गफलत होजाती है तो धुन्ध होकर दृष्टि विगड जाती है इस रोग में स्वास्थ्य रक्षा के नियमोंका भली भांति प्रति प्रादन करना चाहिये और आहार विहार में अधिक साव धानी रखनी चाहिये ।

प्रथम आंखों में ४ ग्रीन प्रति औंसवाला कोकीन लोश न डालकर और पलकोंको उलट कर (१) कापरसलफा स्ट या (२) पांच से वीस ग्रीन प्रति औंसवाला कास्टिक लोशन पलकों को उलट कर बुर्ससे लगायें और फिर आखों को शीतल जल अथवा बहुत कमज़ोर नमक के जल मे धो डालें और आरगाइ रोल लोशन २० सैकडे वाला सेवन करें ।

(नोट) इसमें से जो औषधि सेवन करना हो वह प्रत्येक दिवस सेवन न करें नहिक दूसरे या तीसरे दिन करें । एक

दवा कई दिन सेवन करके फिर दूसरी करें ढेलेपर इनदवाइयों को खासकर काष्टिक लोशन को न लगनेदें ॥

यदि रोग वहुत पुराना नहोतो बोरिक एसिड २ ड्राम टैनिक ऐसिड १ ड्राम थोडीसी दवा लेकर और पलकों को उलटाकर उन पर छिडके उपरोक्त औषधियों के अतिरिक्त आंखोंमें प्रतिदिन इन लोशनों मेंसे किसी एकका सेवन करें। जिंक लोशन २ ग्रीन प्रति आसवाला जिंक क्लोराईड लोशन एक या दो ग्रीन प्रति औंस सलफेट आफ कापर लोशन २ ग्रीन प्रति औंस वाला एलम लोशन ५ ग्रीन प्रति औंस वाला या बोरिक ऐसिड लोशन १०१ ग्रीन प्रति औंस वाला ॥

❀ ५ नाखूना ❀

नाखूना रोगपर सलफेट आफ कापर या काष्टिक लोशन १० तथा १५ ग्रीन प्रति औंस वाला लगाना चाहिये यदिइससे आराम नहो तो नाखूना को कटवा देनाचाहिये।

❀ ६ फूला या जाला ❀

इस रोगमें यह औषधि सेवन की जाती है।

(१) कैलो मिल आंख में छिड़के।

(२) पोटासी आयो डाइड ५ ग्रीन, सोडा सलफास १० ग्रीन टपकाया हुआ जल एक औंस।

(३) यलो एक साइड आफ मरकरी १ ग्रीन, वैजेलीन एक औंस दोनों को खूब मिलालें और सलाई से प्रतिदिन आंखमें लगायें यह अति लाभिकारी औषधि है॥

यदि फुल्ली बहुत पुरानी होतो असाध्य है और जो पुतली के सामने होतो दस्त कारी से कुछ ऊपर या नीचे कृतिम पुतली बना दिया करते हैं जिस से रोगी को दिखाई देने लगता है।

❋ ७ मोतिया बिन्द ❋

इस रोगमें डाक्टरों का यह मत है कि रोग के आरम्भ में नीला चश्मा लगाना चाहिये अथवा हलका अटरोपियन लोशन आंख में डालना चाहिये जिससे पुतली चौडीहोकर कुछ न कुछ निगाह स्थिर रह सकी है परन्तु जबरोग पकजाय तो ऐसी कोई तदबीर हित कारक नहीं हो सक्ती और उसका सिवाय अपरेशन अर्थात् दस्तकारी के और कोई इलाज नहीं। दस्तकारीभी उसवक्त तक नहीं करानी चाहिये जबतक कि दोनोंनेत्रोंकी ज्योति अस्त न होजाय।

❋ ८ नेत्रों की दुर्बलता ❋

यह रोग कमजोरी दिमागी महिनत तथा महीन चीजों के अधिक देखने से होता है इसमें थोडी देर लिखने पढने, या दृष्टिसे अधिक काम लेने से आंखे थक जाती हैं और इसके सामने अंधेरा सा आजाता है पुस्तक आदि पढते समय अक्षर मिलेजुले दिखाई देते हैं आंखोंसे पानी आने लगता है सिरमें कुछ दर्द की शिकायत होती है इस का इलाज यह है कि बारीक चीज़ों के देखने का काम अधिक न करें, आंखोको आराम दें नित्य प्रति स्नान करें

सन्ध्याके समय और प्रातःकाल हरेभरे वन उपानों में भ्रमण करें और पुष्ट भोजन करें और औषधि भी बल वर्द्धक जैसे सुवर्ण तथा मोती इत्यादि हैं उनका सेवन करें ।

(९) रतौंधी ।

इस रोगमें रोगीको अंधेरेमें कुछ दिखाई नहीं देताहै कभी यहरोग मौरूसी होताहै और कभी शारीरिक दुर्बलताया आंखों पर सूर्यकी तीव्र किरण पड़ने या थकावट आदि से होता है।

नोट—गर्म मुल्कोंमें तथा ग्रीषम और वर्षाऋतु में यहरोग अधिक हुआ करताहै इसरोगमें पुष्ट भोजन और बलवर्धक औषधि जैसे फौलाद का शरबत, कूनैन और स्ट्रिकनिया आदि देनी चाहिये सूर्य का तीव्र किरणों से नेत्रोंको बचाना चाहिये और आंख में दो ग्रीन प्रति औंस वाला कास्टिक लोशन डालकर उसपर दिन भर पट्टी बँधी रखकर रातको खोलना चाहिये तब रातको अवश्य दिखाई देगा ।

(१०) परवाल रोग ।

इस रोगमेंपलकके बाल मुड़करआंखके भीतर चुभने लगते हैं और पलकके नीचे गर्म जगह में भीतर की तरफ नये बाल भी पैदा होजाते हैं जो आंखोंमें सुई की तरह लगकर पीड़ा देते हैं इसका इलाज यहहै कि चिमटी से भीतर उगे हुए बाल नोंचकर निकाल डाले जांय और मुड हुए बालभी उखाड लिये जांय या काट डाले जांय ।

(११) गुहेरी ।

यहरोग दूषित जल, पवन, भोजन तथा अजीर्ण और रक्त की खराबीसे हुआ करता है रोगके आरम्भ में, इसकी यह

चिकित्सा है कि जिस स्थान पर गुहेरी निकलनेकी सम्भावना हो वहांसे पलकोंके एक दो बाल उखाडदे अथवा ठंडे पानी की गद्दी वहां रक्खे वा बर्फ लगावे या २० ग्रीन वाला कास्टक लोशन लगावै यदि फुंसी निकल आवे तो ऊष्ण जलसे या पोस्त के जोशांदे से सेके या पुलटिस बांधे यदि पीप पड़जाय तो चीरकर साफ करे और बोरिक लोशनसे खूब धोकर जिंक आइंटमेन्ट जो वैजलीन में बनाया गया हो लगादें यदि बार२ गुहेरी निकले तो रोगीको एक वा दो जुलाब देने चाहिये पीछेकैलसियम सलफइड की आधे ग्रीन की गोली दिनमें ३ बारदें और अच्छा भोजन हवा खोरी और नित्यके स्नान से शरीरको शुद्ध रक्खें तब यह रोग दूर होजायगा।

वैद्यक मतसे दांतों के रोगों का वर्णन

दांतों में निम्न लिखित रोग हुआ करते हैंः—(१)दालन (२) कृमिदन्तक (३) भंजनल (४) दन्त हर्ष (५) (६) कपालिका (७) श्यावदन्त (८) कराल और (९) हनुमोक्षइनके लक्षण इस प्रकार हैं।

(१) दालन

इस रोग में दांतके टूटने के समान पीडा होती है यह रोग वायुके दोष से होता है।

(२) कृमि दंतक

इसरोगमेंदांतों में काले छिद्र होकर दाह होती है तथा उस में से कुछ रुधिर निकलताहै और सूजन होतीहै और बिना कारणही वायुकी सी पीड़ा होती है।

(३)❀ भंजनल ❀

इस रोगमें दांत कफके दोषसे टूट जाते या टेढे होजातेहैं।

(४)❀ दन्त हर्ष ❀

इस रोग में शीतल जल, रूखी वस्तु, शीतल पवन खटाई इत्यादि से दांत खट्टे और निष्काम होजाते हैं. इसकाकारण वायु तथा पित्तका दूषित होजाना है।

(५)❀ दन्त शर्करा ❀

इसरोग में दांत मैले और खर्दरे रहते हैं और रेतकी तरह खिल जाते हैं।

(६)❀ कपालिका ❀

इसरोग में दांत मिट्टी के घड़े के समान टूटने लगते हैं और उनमें मैलभी अधिक जमजाताहै और कमजोरहोजातेहैं

(७) श्याव दन्त

इसरोग में दांत दुष्ट रुधिर से मिलकर सब दग्ध होजाते हैं और काले तथा नीले पड़जाते हैं।

(८) कराल ।

इसरोगमें दांतों को वायु शनैः २ नष्ट करदेती है और दांतों की आकृति बदल जाती है।

(९) हनुमोक्ष ।

इस रोग में वायु कुपित होकर दाढ़ और दांतों को हिला देती है और उसमें पीडा अधिक होती है।

वैधक के वडे २ ग्रन्थों में इन रोगोंकी जुदी२ लीहै जिसका विस्तार अधिक है हम यहां थोड़े और नुसखे लिखते हैं जो इन सबही रोगोंको

दन्त रक्षक लाक्षादि तैल

लाख का रस. तिल का तेल, गौका दूध एक एक पाव पा ठीन लोध; कायफल. मंजीठ. कमलगट्टे;कमलकी केसर लाल चन्दन मुलहटी इन्हें एक एक टके भर काढा करे काढे में मधुरी आंचपर तेल पकावे जब सब जलकर तेल मात्र रह जाय तो उतार के रखले इस तेलको घडी भर मुख में रक्खे इससे दांत के समस्त रोग जाते हैं।

कृमि नाशक औषधि।

हींग को थोडा गर्म कर दांतों के बीच में भरे तो दांतों से कृमि नाश हो।

❀ अन्य औषधि ❀

काग लहरी,नील की जड, कडवीतूंबी इन्हें महीन पीस दांतों पर मले तो कृमि दूर हों।

❀ अन्य (मंजन) औषधि ❀

सांभर नमक,नरकचूर, सोंठि, अकरकरा, इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो दांतों की खटाई दूरहो।

❀ अन्य मंजन ❀

पांचों नोंन, नीलाथोथा, साठि, मिर्च पीपल, पीपलामूल, हीरा कसीस, माजूफल, वायविडिंग इन्हें बराबर ले महीन पीस दांतों पर मर्दन करे तो दांतके समस्त रोग दूरहों।

❀ मिस्सी ❀

हीरा कसीद, माजूफल, लोहे [illegible] -नेन-मक्खी.म- जीठ;फुलाई, फिटकरी, त्रिफला, [illegible] स.

मान करै फिर १ माशा दो घड़ी दांतों में मलेतो दांत का ले और पुष्ट हों।

❀ अन्य औषधि ❀

फुलाई फिटकरी, नीला थोथा, तेजबल, पपड़िया कत्था पीपल का वक्कल, लाख सोंठि, मिर्च पीपल, आवला, ही शकसीस, माजूफल, मजीठ, रूमा, मस्तगी, मौलासिरी की छाल, सेंधा नमक, दक्षिणी सुपारी, इन्हें बराबर ले कूट छान निरगुडी के रस तथा मौलसिरीकी छाल के रस में इक्कीस २ बारपुट दे धूपमें सुखा उसे महीन पीस उसमें थोड़सा सेंधा नमक मिलावे फिर इसे दांतों पर मर्दन करे तो तत्काल समस्त दांतों के रोग दूर होते हैं।

❀ दुखते हुए दांत पर अन्य औषधि मंजन ❀

कूट, सोंठि, खुरासानी अजवाइन, हडकी छाल, औरकत्था सबको पांचपांच टंकले महीन पीस दांतों पर मर्दनकरे तो दांतों का दुखना बंद होता है।

❀ दुखते दांतपर अन्य मंजन ❀

तमाकू, अकरकरा, कायफल, वायबिडिंग सोंठ, मिर्च पीपल, नमक, इन्हें समभाग ले महीन पीस दांतों पर मर्दन करे तो दांतका दुखना बंद होता है।

वैद्यक मतसे मसूढ के रोगों का वर्णन।

मसूढ के रोगों का नाम ये हैः—

(१) शीतादि. (२) पुप्पुटदन्त, (३) वेष्टि, (४) सोपिर, (५) महा सोपिर. (६) परिदर. (७) उपकुश (८)

वैदर्भ, (९) खालि वर्द्धन. (१०) अधिमांस, (११) पंचनाडी (१२) दन्त विद्रधि ।

❀ रोगों के लक्षण ❀

(१) अकस्मात मसूढे में बदबूदार और काला रुधिर निकले और मसूढे नरम होजांय, पकने लगें, इस प्रकार कफ तथा रुधिर के दूषित होने से राग उत्पन्न होता है उसे शीतादिक कहते हैं ॥

(२) मसूढों में सूजनबहुतहो जांय उसे पुप्पुटरोग कहते हैं यह कफ रुधिर के कोप से होता है।

(३) जिस मसूढे में राध मिश्रित रुधिर निकले दांत हिलने लगें उसे दन्त वेष्टि कहते हैं।

(४) मसूढे में पीडा सहित सूजन हो लार गिरे और खांज हो उसे सौषिर नामक रोग कहते हैं और यह कफ वायु से होता है।

(५) दांत हिलने लगें और तालु बैठ जाय या तालु में छिद्र होजाय तो उसे महा सौषिर रोग कहते हैं और यह सन्निपात के कोप से होता है ॥

(६) जिसमेंदांतके मसूढेसूजजांय औररुधिरननिकले यह पित्तरुधिर और कफसेहोताहै इस परिदर रोग कहते हैं।

(७) मसूढे में दाह होय तथा पकजांय दांत हिलने लगें मसूढे के दबाने से रुधिर निकले और उसमें पीडा न हो तथा मसूढे में दुर्गन्ध आवे यह पित्त रुधिर से होता है उसे उपकुश रोग कहते हैं।

(८) चोट लगने अथवा रगड़ लगजाने से मसूढे में सू

जन हो तथा दांत हिलने लगे और उसमें दाह पीडा भी होतो वैदर्भ रोग कहते हैं ॥

(९) मसूढों में दांत बाहर निकल आवे और उनमें पीडा अधिक हो उसे खालि वर्द्धन नामक रोग कहते हैं।

(१०) नीचे के दाढ़के अन्त में सूजन अधिक हो और बहुत पीडा हो और मुँह में लार गिरे यह कफ के दोषसे होता है और इसे अधिमांस रोग कहते हैं।

(११) मसूढ़े का नसों, वायु, पित्त, कफ, सन्निपात और चोट लगने से जो उपद्रव हों उसे पंचनाडी कहते हैं।

(१२) दांत के मसूढे में रुधिर निकले और वहां बहुत सूजन हो उसमें दाह और पीडा भीहो रुधिर संयुक्त अधिक लार बहे उसे दन्त विद्रधि रोग कहते हैं।

❀ (१) शीतादि रोगकी चिकित्सा ❀

(१) इस रोगमें मसूढेका रुधिर निकलवाके, सोंठि, सरसों त्रिफला के काढे से कुल्ली करै ॥

(२) हीरा कसीस, पठानीलोध, पीपल, मैंनसिल, फूल प्रियंगु, तेजबल, इन्हें बराबर ले महीन पीस शहद में मिला कर मसूढोंपर लगावै।

(३) तेल अथवा घीका कुल्ला करै।

❀ (२) पुप्पुट दन्तरोगकी चिकित्सा ❀

(१) इस रोगमें मसूढे का रुधिर निकलवाके उसके ऊपर पांचों नोन, जवा खार, शहद डाल. काढाबनाके कुल्लाकरै।

❀ (३) नेष्टि रोगकी चिकित्सा ❀

(१) पठानी लोध, पतंग, महुआ, लाख, वेल, सिरसकी

छाल इन्हें महीन पीस मसूढे पर मलना चाहिये ॥

(२) नागर मोथा, हरडकी छाल, सोंठि, मिर्च, पीपल बाय विडिंग, नीम के पत्ते इन्हे महीन पीस गोमूत्रमें गोली बना छायामें सुखाय सोते समय मुँहमें रक्खे।

(३) नीलेफूल का कटसैला; धमासा. खैरसार, जामुनकी छाल, आमकी छाल, मुलहटी कमल गट्टे इन्हें दोदो टके भर ले १६ सेर पानी में औटावै, चतुरांश रहने पर तेल वा बकरीका घी मधुरी आंच से पकावे जब जलके केवल घी वा तेल रहजाय तो उतार के रखले और दो घडी मुख में रक्खे तो दांत मजबूत हों ॥

(४,५.) सौषिर और महा सौषिर रोगोंकी चिकित्सा।

(१) इस रोगमें मसूढ़े का रुधिर निकलवा के लोध नागर मोथा. रसौत को महीन पीस शहद मे मिलाके लेप कर पीछे दूधसे कुल्ली करे।

(६,७) परिदर और उपकुश रोगोंकी चिकित्सा

(१) प्रथम मसूढे का रुधिर निकलवाय फिर सोंठि. सरसों त्रिफला के काढा की कुल्ली करे।

❀ (८) वैदर्भ रोगकी चिकित्सा ❀

गूलर के पत्ते, नमक शहद, सोंठि मिर्च, पीपल इन्हें औटाकर काढ़ा बनावे और इस काढेसे कुल्ली करे फिर मसूढे पर नमक पीसकर लगावे।

(९) खालि वर्द्धन अधिमांस रोगकी चिकित्सा।

इसरोग में शहद का कुरला करे और तेज चल वच, पाढ़

जन हो तथा दांत हिलने लगे और उसमें दाह पीडा भी होतो वैदर्भ रोग कहते हैं ॥

(९) मसूढों में दांत बाहर निकल आवे और उनमें पीडा अधिक हो उसे खालि वर्द्धन नामक रोग कहते हैं।

(१०) नीचे के दाढ़के अन्त में सूजन अधिक हो और बहुत पीडा हो और मुँह में लार गिरे यह कफ के दोषसे होता है और इस अधिमांस रोग कहते हैं।

(११) मसूढ़े का नसों, वायु, पित्त, कफ, सन्निपात और चोट लगने से जो उपद्रव हों उसे पंचनाडी कहते हैं।

(१२) दांत के मसूढे में रुधिर निकले और वहां बहुत सूजन हो उसमें दाह और पीडा भीहो रुधिर संयुक्त अधिक लार बहे उसे दन्त विद्रधि रोग कहते हैं।

❀ (१) शीतादि रोगकी चिकित्सा ❀

(१) इस रोगमें मसूढेका रुधिर निकलवाके, सोंठि, सरसों त्रिफला के काढे से कुल्ली करै ॥

(२) हीरा कसीस, पठानीलोध, पीपल, मैंनसिल, फूल प्रियंगु, तेजवल, इन्हें बराबर ले महीन पीस शहद में मिला कर मसूढोंपर लगावै।

(३) तेल अथवा घीका कुल्ला करै।

❀ (२) पुप्पुट दन्तरोगकी चिकित्सा ❀

(१) इस रोगमें मसूढे का रुधिर निकलवाके उसके ऊपर पांचों नोन, जवा खार, शहद डाल, काढाबनाके कुल्लाकरै।

❀ (३) नेष्टि रोगकी चिकित्सा ❀

(१) पठानी लोध, पतंग, महुआ, लाख, वेल, सिरसकी

छाल इन्हें महीन पीस मसूढे पर मलना चाहिये ॥

(२) नागर मोथा, हरडकी छाल, सोंठि, मिर्च, पीपल वाय विडिंग, नीम के पत्ते इन्हे महीन पीस गोमूत्रमें गोली बना छायामें सुखाय सोते समय मुँहमें रक्खे ।

(३) नीलफूल का कटसैला; धमासा. खैरसार, जामुन की छाल, आमकी छाल, मुलहटी कमल गट्टे इन्हें दोदो टके भर ले १६ सेर पानी में औटावै, चतुरांश रहने पर तेल वा बकरीका घी मधुरी आंच से पकावै जब जलके केवल घी वा तेल रहजाय तो उतार के रखले और दो घडी मुख में रक्खे तो दांत मजबूत हों ॥

(४,५) सौषिर और महा सौषिर रोगोंकी चिकित्सा ।

(१) इस रोगमें मसूढे का रुधिर निकलवा के लोध नागर मोथा. रसौत को महीन पीस शहद मे मिलाके लेप कर पीछे दूधसे कुल्ली करे ।

(६,७) परिदर और उपकुश रोगोंकी चिकित्सा

(१) प्रथम मसूढे का रुधिर निकलवाय फिर सोंठि. सरसों त्रिफला के काढा की कुल्ली करै ।

❀ (८) वैदर्भ रोगकी चिकित्सा ❀

गूलर के पत्ते, नमक शहद, सोंठि मिर्च, पीपल इन्हें औटाकर काढ़ा बनावे और इस काढेसे कुल्ली करे फिर मसूढे पर नमक पीसकर लगावै ।

(९) खालि वर्द्धन अधिमांस रोगकी चिकित्सा ।

इसरोग में शहद का कल्क करे और तेज बल वच. पाढ

सज्जी, जवाखार पीपल, इन्हें महीन पीस मसूडेपर लगावे. यदिमांसबढा हुआहो तो किसीहोशियार जर्राहसेकटवादे।

(११,१२) पंच नाडी और विद्रधिरोगों की चिकित्सा।

(१) मसूड़ों का मांस कुछ शस्त्र से दूर करावे फिर पटोल अर्थात् परवर के पत्ते, नीमके पत्ते, त्रिफला, इनके गर्म सुहाते हुए काढ़े स कुल्ला करे।

(२) चमेलीके पत्ते धतूरे के पत्ते, कटेली गोखरू का पंचांग, मजीठ, लोध, खैरसार, मुलहठी, इनका काढा कर उस काढे में मधुरी आचसे तेल पकावे फिर उस तेल से कुल्ली करे तो पंचनाड़ी और विद्रधि रोग दूर होतेहैं।

डाक्टरी मतसे दांतों का चिकित्सा का वर्णन।

❀ रोगकी उत्पत्ति ❀

दांतों के साफ न रखने या अधिक शीतल अधिक ऊष्ण अधिक खटाई या मिठाई के सेवन से दांतों में पीड़ा होती है और मसूड़े फूल जाते है और कभी२ गालों पर भी वर्म होजाता है और टूटटकर झडने लग जाते हैं इसे सर्व साधारण लोग दांतों में कीड़ा लग जाना बोलते हैं, जो लोग पान तमाकू खाने का अधिक अभ्यास रखते हैं और प्रति दिन दातन या बुर्श से दांतों को साफ नहीं कर लिया करते और भोजन के उपरांत दांतों में से भोज्य पदार्थों का अंश जो दांतों में घुस जाता है उसको साफ करके कुल्ली नहीं कर लिया करते और रात्रि में सोने से पाहिले दांतों की सफाई नहीं कर लिया करते उन्हींका प्रायः यहरोगहोताहै।

चिकित्सा ।

जब दांतों में छिद्र होगया हो और पीड़ा अधिक हो दर्द के स्थान को ऊष्ण जल या कारबालिक लोशनसे धोकर पोंछ लिया जाय फिर निम्न लिखित औषधियोंमें से किसी एक औषधि का प्रयोग कियाजाय ।

औषधि ।

(१) कार बालिक एसिड १ ड्राम, रैक्टी फाइड स्पिरिट १ ड्राम, दोनों मिलकर रुई की फुरेरी उसमें डुबोकर उस फुरेरी को दांत में जहां छिद्रहो भर दें ।

(२) क्लोरो फार्म में काफूर या मस्तगी को मिलाकर उसमें रुई तर करके दांतकी सन्धि में रक्खें तो तत्काल दर्द दूर होजाता है ।

(३) टिंकचर आयुडियन और टिंकचर एकोनाईट दोनों को समान भाग लेकर मिलाके लगाना चाहिये यह औषधि मसूड़ेको साफ करकेरुईकेद्वारा उसपर मलनाचाहिये

(४) रुईकी फरेरीसे निम्न लिखित औषधि भी लगाई जाती हैं (१) ईथर (२ लोंकेतेल (३) दारचीनी का तेल (४) क्रियो जूट इत्यादि—

दांत का उखड़वाना ।

यद्यपि दांतों के दर्द में और हिलने में दांत का उखड़वा देना एक मामूली बात होरही है परन्तु बड़े२ डाक्टरों का यह मतहै कि जबतक औषधि के सेवन से रोगके दूर होने की आशाहो तबतक दांत हरगिज़ नहीं उखड़वाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने मे कभी२ दांत टूट कर मुंह सूजजा-

ताहै और दर्द बढ़ जाताहै और दांतकी टूटी हुई जड़ का निकलवाना कठिन होजाता है इसके सिवाय कभी २ ऐसा भी होताहै कि नीचेकी मजबूत डाढ़ को निकालने के उद्योगमें नीचे के जबड़े की हड्डी टूटजाती है या ऊपर की मजबूत डाढ़ के निकलने के समय उस ओर की आंखको बड़ी हानि पहुंचती है ऐसी अवस्था में रोगी को गश आजाना तो मामूली बातहै ॥ यदि दांत पुराना हो और हिलता हो और किसी उपाय से अच्छा न हो तो किसी अच्छे डाक्टर से उखड़वादेना चाहिये, याद रखना चाहिये कि जिन लोगों को खून का ऐसा रोग हो कि जब किसी कारण से खून निकलता हो तो उसका बंद होना कठिन होताहै, और खूनी प्रकृति वालों का दांत उखड़वाना अच्छा नहींहै क्योंकि ऐसे लोगोंके दांत निकालने के पीछे इतना अधिक रुधिर निकलता है कि जान के जाने का भय उपस्थित हो जाताहै इस लिये ऐसे रोगी को डाक्टर से यह हाल पहिले कह देना चाहिये यदि दांत निकालने के पीछे रुधिर बंद न होताहो तो कपड़े की एक छोटी सी गद्दी बनाकर उसे टिंक्चर स्टील या लैड लोशन में तर करके या उसपर फिटकरी लगाकर उसी दांतके छिद्रमें ठूंसदें और फिर मुंह बंद करके एक पट्टी से दोनों जबड़ोंको कसदें और रोगी को एक दो दिनतक आराम से लिटावें आहार दूध साबूदाना या फ़ीरनी इत्यादि बहुत हलका दें। गरम पदार्थों के भोजन करने और गरम मसाले से परहेज़ करावें ।

यूनानी मतसे दांतों की चिकित्सा।

यदि दांत पुराने हों और उन में छिद्र हो जाने से द
होता हो तो उसे साफ कर के उसमें काफूर और अफयू
समभाग मिलाकर भरदे या अकरकरहा या वाय विडि
कायली या भंगका बीज, या पियाजका बीज वारीक पी
कर और ज़रासी रुई में लपेटकर उसे गर्म पानी से भिग
कर दांत के छिद्रमें भरदे या लौंगका तेल या दारु हलद
का तेल या अंजीर का दूध इत्यादि लगावे अगर एक य
कई दांतों में पट्ठों का दर्द हो तो गेहुंकी भुसी, बाबूनाक
फूल और नमक एक पोटली में डालकर उसे तवे पर ग
करके उस से वाहर जबड़े पर सेक करे और अकर करह
पोदीना, काली मिर्च, प्रत्येक एक १ माशे पीसकर दांतोंप
मले वाबूना खतमी, मकोटा, अल्सी, कोकनार हर एक तीन
तीन माशे आधसेर पानी में काढ़कर कुल्ली करे।

उस्तु खद्दूस, गाव ज़बान, हंसराज, शाहतरा, अलमी, हर
एक ५ माशे, उन्नाव ७ माशे, सबको पावभर पानीमें औटा
इसमें दीनार का शर्बत मिलाकर पिलावे यदि गठिया आदि
से दर्द हो तो उचित चिकित्सा करे।

❀ दांतों के रोगोंका इलाज ❀

जो दांतों की जड़में गरमी मालूम हो, और मुखमें ठंडा
पानी भरने से रोगीको चैन पड़े, तथा मसूड़े लाल होजांय
और उनमें सूजन न हो तो सिरका गुलाब मुखमें रखना
चाहिये, यदि दर्द [illegible] त हो तो सिरके और . .

ताहै और दर्द बढ़ जाताहै और दांतकी टूटी हुई जड़ का निकलवाना कठिन होजाता है इसके सिवाय कभी २ ऐसा भी होता है कि नीचेकी मजबूत डाढ़ को निकालने के उद्योगमें नीचे के जबड़े की हड्डी टूटजाती है या ऊपर की मजबूत डाढ़ के निकलने के समय उस ओर की आं खको बड़ी हानि पहुंचती है ऐसी अवस्था में रोगी को गश आजाना तो मामूली बातहै॥ यदि दांत पुराना हो और हिलता हो और किसी उपाय से अच्छा न हो तो किसी अच्छे डाक्टर से उखड़वादेना चाहिये, याद रखना चाहिये कि जिन लोगों को खून का ऐसा रोग हो कि जब किसी कारण से खून निकलता हो तो उसका बंद होना कठिन होताहै, और खूनी प्रकृति वालों का दांत उखड़वाना अच्छा नहींहै क्योंकि ऐसे लोगोंके दांत निकालने के पीछे इतना अधिक रुधिर निकलता है कि जान के जाने का भय उपस्थित हो जाताहै इस लिये ऐसे रोगी को डाक्टर से यह हाल पहिले कह देना चाहिये यदि दांत निकालने के पीछे रुधिर बंद न होताहो तो कपड़े की एक छोटी सी गद्दी बनाकर उसे टिंकचर स्टील या लैड लोशन में तर करके या उसपर फिटकरी लगाकर उसी दांतके छिद्रमें ठूंसदें और फिर मुंह बंद करके एक पट्टी से दोनों जबड़ोंको कसदें और रोगी को एक दो दिनतक आराम से लिटावें आहार दूध साबूदाना या फ़ीरनी इत्यादि बहुत हलका दें। गरम पदार्थों के भोजन करने और गरम मसाले से परहेज़ करावें।

यूनानी मतसे दांतों की चिकित्सा।

यदि दांत पुराने हों और उन में छिद्र हो जाने से दर्द होता हो तो उसे साफ कर के उसमें काफूर और अफ़यून समभाग मिलाकर भरदे या अकरकरहा या बाय विडिंग कावली या भंगका बीज, या पियाजका बीज बारीक पीस कर और ज़रासी रुई में लपेटकर उसे गर्म पानी से भिगो कर दांत के छिद्रमें भरदे या लोंगका तेल या दारु हलदी का तेल या अंजीर का दूध इत्यादि लगावे अगर एक या कई दांतों में पट्ठों का दर्द हो तो गेहूंकी भुसी, बाबूनाका फूल और नमक एक पोटली में डालकर उसे तवे पर गर्म करके उस से बाहर जबड़े पर सेक करे और अकर करहा पोदीना, काली मिर्च, प्रत्येक एक १ माशे पीसकर दांतोंपर मले बाबूना खत्मी, मकोटा, अल्सी, कोकनार हर एक तीन तीन माशे आधसेर पानी में काढ़ाकर कुल्ली करे।

उस्त खद्दूस, गाव ज़बान, हंसराज, शाहतरा, अलसी, हर एक ५ माशे, उन्नाव ७ माशे, सबको पावभर पानीमें औटा इसमें दीनार का शर्बत मिलाकर पिलावे यदि गठिया आदि से दर्द हो तो उचित चिकित्सा करे।

दांतों के रोगोंका इलाज

जो दांतों की जड़में गरमी मालूम हो, [illegible] पानी भरने से रोगीको चैन पड़े, तथा [illegible] और उनमें सूजन न हो तो सिरका [illegible] चाहिये, यदि दर्दकी अधिकता हो तो [illegible]

पूरभी मिला लेना चाहिये, इस रोगमें गुलरोगन-रखना लाभदायकहै, दर्द बहुत ही होताहो तो गुलरोगन में अफीम मिलाकर लगाना उचित है।

❀ कफसे उत्पन्न दांत के दर्द का इलाज ❀

जो दर्द कफके कारणसे होता है, उसके यह लक्षणहैं कि सर्दी के भीतरी वा बाहरी असर से दर्द बढ़ जाताहै और गरमीसे घट जाता है। इसमें पारा वा एलवा की गोलीदे कर कफको दूर करना चाहिये, तथा पोदीना, सातरा और अकरकरहा इन तीनों को सिरकेमें औटकर कुल्ले करना उचितहै, अकरकरा, पापड़ीनोंन, सोंठ, चना और पीपल इन को महीन पीसकर मसूड़ों पर मलै, अथवा तिरिया अरबा वा तिरियाकुल अस्नान कहानियां दांतों की जड़ पर लगावै, तथा नमक और बाजरा गरम करके जाबड़ों को सेकना भी गुणकारक, तिरियाकुल अस्नान बनाने की यह रीतिहै कि जुदबेदस्तर, हींग, कालीमिरच,सोंठ, वनफला की जड़, और अफीम इन सब दवाओंको समान भाग लेकर अच्छी तरह कूट छानकर शहद मिला लेवै।

❀ बादीके दर्दका इलाज ❀

सोंफ, अफीम और जीरा प्रत्येक साढ़ेतीन माशे लेकर पानीमें औटावै और इसको मुखमें दांतोंके पास भरभर कर कुल्ले करदे, समगुल बुतम (एक प्रकारका गोंद) कालीमिरच, किब्रकी जड़की छाल, सोया इनको महीन पीसकर शहद मिलाकर दांतों पर मले।

❀ दांतोंके कीड़ों का इलाज ❀

गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, और प्याज के बीज इनको महीन पीसकर मोम अथवा बकरी की चर्बी में मिलावे, फिर इसको आगपर रखकर इसके धूंएको एक नली द्वारा दांतोंपर पहुंचावे, इससे कीड़े मर कर गिर पड़ते हैं और दरद कम होजाता है।

❀ दांतोंकी रक्षाके दस नियम ❀

(१) अजीर्णकारक भोजन, बहुत भोजन, दूध और मछली आदि विपरीत भोजन इत्यादि न करना (२) वमन कराने वाले द्रव्यों का अधिक सेवन न करना (३) सुपारी बादाम, अखरोट, आदि कठोर पदार्थों को दांतों से न चबाना (४) मिठाई आदि अन्य कठोर वस्तुओं का त्याग (५) दांतों को खट्टा करनेवाले पदार्थों का त्याग (६) गरमके पीछे ठंडी और ठंडीके पीछे अत्यन्त गरम वस्तुओं का सेवन न करना (७) दांतोंकी प्रकृतिके अनुसार हानि पहुंचाने वाले द्रव्योंका त्याग (८) भोजन करनेके पीछे दांतोंको खूब साफ करना (९) प्रतिदिन प्रातः काल पीलू जैतून आदि नरम और कड़वी लकड़ीकी दांतन करना और इतना अधिक दांतोंको न रिगड़ना कि जिससे मसूड़े छिल जांय वा दांतोंकी चमक जाती रहे (१०) सोते समय दांतों पर तेल लगाना, गरम प्रकृतिमें गुलरोगन और ठंडी प्रकृति में बकायन वा मस्तगीका तेल चुपड़ना

❀ दांतोंकी खटाई दूर करने का उपाय ❀

खुर्फाकी पत्ती, दहनी और तुलसी चबाने से दांतोंकी

काढ़ा देकर दस्त करावे फिर अधीर और मकोयके दाने सि
रके में औटाकर कुल्ले करे ।

मसूड़ों के रुधिर का उपाय ।

मसूडों से रुधिर बहता हो तो जली हुई ममूर बंशलोचन कीकर, और माजू, इन सब दवाओं को महीन पीसकर दांतो पर रिगडे और जरूर शिबी वा ज़रूर तरीखी मसूड़ों पर बुरक देना चाहिये, जरूर शिबीके बनानेकी यह रीति है कि फिटकरी को भूनकर सिरके में बुझाले फिर इससे दुगुना नमक और डेढ़ गुना लाल फिटकरी पीसकर रखले, इसी को जरूर कहतेहैं जरूर तारीख की बिधि यह है कि तारीख नामक मछली को आगमें डालदे फिर इसकी राखको मुखे हुए गुलाबके फूलों में मिलाकर पीस ले ॥

मसूडों को दृढ़ करने वाली दवा ॥

गुलाबके फूल, जुफ्त बलूत का छिलका, और हब्बुल्लास प्रत्येक १४ माशे खनंब, नख्ली समाक, अकरकरा, प्रत्येक १७॥ माशे इन सबको कूट छानकर मसूडोंपर लगाने से मसूड़े पक्के हो जातेहैं ॥

❁ गंज रोगका वर्णन ❁

सिर के बालों के छिद्रों में विकार उत्पन्न होजाता है और बाल गिरजाते हैं उसे गंज कहते हैं इस रोग के दो भेदहैं, तर और खुश्क गंज, तरमें छोटी फुंसियों से पीप निकलता है।

❁ तरगंज की चिकित्सा ।

इस रोगमें सराऽरुरग की फस्द खोलना लाभदायक है, परन्तु

यदिरोगी छोटा लडका है या अति दुर्बल है तो फस्त नहीं खोलनी चाहिये बल्कि पछने लगाकर रुधिर निलवादेना चाहिये, पित्तपापडे आदिसे तबियत नरमकरना और हल्के पदार्थों का भोजन करना चाहिये, जब मवाद दूर होजावे तब हल्दी, कडवा बादाम, अनारके फूल, रातीनज,जलाहुआ कागज,माजू, अघीरा,के पत्ते, लौला सोसनकी जड, अकाकिया, कमीला इन्हें सम भागले महीन पीस सिर्का या गुलरोगनमें मिला सिरपर लेप करना चाहिये अथवा हल्दी अनारकी छाल, मुर्दासन महँदी. इन्हें महीन पीस सिर्का या गुल रोगन में मिला लेप करै यह अति गुणकारी है।

सूखी गंजकी चिकित्सा ।

सूखीगंजमें सिरके ऊपरसे सफेद भिल्ली उतरतीहै और उसका कारण बादी वाला दोषहै जो खारी तरीमें मिलकर खालमें आजाताहै इसकी चिकित्सा इसप्रकार करनी चाहिये बादीके निकालनेके लिये आकाश वेल, हड, और पित्त पापडे का काढादें, और शरीरमें तरी पहुंचाने वाला भोजन करें तथा गर्म पानी अलसी, खतमी के बीजका लुआब गजपर डालना औरमोमका तेल, मुर्गी और बतककी चर्बी लम्बी घीयाका तेल, मीठे बादाम का तेल, बनफसा का तेल, और नीलोफरके तेलसे इसको चिकना रखना चाहिये और यही तेल नाक और कानमें डालना चाहिये इससे अधिक लाभ होताहै तथा फिटकरी. नमक. एक एक भाग गूलर, महुआ, पारा, माजू, हल्दी,जरावन्द, मुर्दासन दो दो भाग सिर्का और गुलरोगन में मिला के गंज वाले सिरपर लेप करना गुणदायक है।

गंजरोगपर अन्य औषधियां ।

पावड के बीज, सुहागा, गंधक, मुर्दासिंग, सफेद कैत, हर एक तीन माशे, कराकपुर २ रत्ती, सबको महीन पीस धुले घी में मिला सरको साफ कर के लगावे ।

(२) मुर्दासिंग, तूतिया, सुहागा, गंधक, माजूफल हरएक ६ माशे सबको महीन पीसकर ३ छटांक सरसों के तेलमें पकाकर सिरपर लेप करै ।

(३) जलाहुआ आंवला ऽ। पोस्त के डोडे जले हुए ऽ= महँदी, कबेला प्रत्येक ४ दाम, नीलाथोथा, भुना सुहागा, भड भूजे के छप्पड का धुवां, भट्टी की राख, प्रत्येक एक एक दाम कूट छानकर सरसों के तेल में मिला मर्दन करे ।

(४) राई आधी कच्ची पक्की पीसकर कडवे तेलमें मिलाकर मर्दन करै ।

(५) महँदी की पत्तियां ४ तोले, बावची, मुर्दासिंग, कबीला कत्था, सुहागा दो दो तोले, नीलाथोथा तीन माशे कूट छानकर कडवे तेलमें मिलाकर गंजपर लेपन करे ।

(६) हल्दी १० तोले. नीलाथोथा ५ तोला आधपाव मीठे तेलमें जलाकर पीसकर लेप करे ।

(७) काबली हड़का बक्कल. कत्था. जीरा. कायफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे नीलाथोथा २ माशे कूट छान कर गंजपर मले ।

(८) बकरी की मेंगनी लगाना गंजके फलने वाले फोडों को गुण करता हैं ।

(९) परासके पत्ते पीसकर टिकिया बनाकर कड़वे तेल में जलाकर छानकर गंज पर मले।

(१०) धनियां को सिर्केमें पीसकर गंजपर लगावे॥

(११) चुकन्दर के पत्ते पीसकर गंजपर लगाना लाभ कारी है।

(१२) कवेला, कत्था, गेरू, शोरा, नीलाथोथा, प्रत्येक १ भाग, मुर्दासिंग काली मिर्चे, प्रत्येक २ भाग, मेंहदी का पत्ती ४ भाग, सरसों का तेल गर्म करके उसमें मिलाकर गंजपर लेपकरें इससे लड़कोंके गंज और उन फोड़े फुंसि-यों को जो लडकों के सिरोंपर बहुधा होते रहते हैं यह लेप विशेष हितकारी है।

कंठ माला रोग का वर्णन

कंठ माला कंठ अर्थात् गरदन में उत्पन्न होती है तथा कभी २ बगल में भी होजाती है अजीर्ण और भोजनके निकम्मे पाचनसे मवाद होजानेके कारण यहरोग होता है।

❀ कंठमाला की चिकित्सा ❀

इस रोग में प्रथम वमन और दस्तोंको लाने वाली दवा दें जिस से गाढ़ा कफ निकल जाय और उत्तम तथा नर्म भोजन करे। खाली पेट परिश्रम करना खटाई, भारी भो-जन, बहुत अथवा चिल्लाकर बोलना क्रोध करना त्याग देना चाहिये, और रोगीका सिरहाना ऊंचा रखना चाहिये यदि वरम पचजाय तो अति उत्तम है नहीं तो मवादके प-काने तथा तोड़ने वाली औषधि का लेप करें तथा उस के भरने का उपाय करें।

❀ मवाद को पचाने वाली दवा ।

राई उटगन के बीज, समुद्र फेन, जरावन्द, गूगल, छडीला जैतून का तेल और सफेद मोम सबको मिलाकर मरहम बना लेप करे ।

❀ दूसरा लेप ❀

राल, जंगली प्याज, गूगल, करंबकी जड तिर्मिस के बीज कूट छानकर सिको, शहत और जैतूनमें मिलाके लेप करे ।

❀ अन्य लेप ❀

कनूआके बीज, मेथीके बीज, शराब में पकाकर उस में कबूतर की बीट मिला लेप करे तो अधिक लाभहो जब वह फूट जाय तो घाव के साफ करने का कोई मरहम लगावे जिसमे निकम्मा मवाद सब निकलजावे और जब घाव साफ होजावे तो मरहम जंगार लगावे जिससे घाव भरजाय ।

कण्ठ माला रोगपर विधि औषधियां ❀

सोंठ ३॥ माशे, कुलथाके बीज १० माशे, गायके दूध में खदकाकर ठंडा करके कंठ माला पर लगावे ।

(२) सिरसके बीज १ भाग कूट छानके दो भाग शहद में मिलाके हांडीमें रख ऊपर परिया रख उर्दके चूनका लेहे-मा लगा सात दिन तक धूपमें रक्खे फिर उसको खोलकर निकाल ले और एक तोला रोज खाय खट्टी और बादी वस्तु न खाय यह कंठ मालाको जड़से निकाल देता है ।

(३) मूलीके बीज बकरीके दूधमें पीसकर लेपकरे ।

(४) लिसोडे की नरम २ पत्तियां गर्मकरे दशदिन तक कंठ माला पर बांधे ।

(९) कतीरा ५ भाग अजवायन २ भाग कूट छान कर धनिये की पत्ती का रस निचोड कर खून मिलाके लेपकरे।

दाद रोग का वर्णन।

खालके ऊपर एक प्रकारका खुर खुरापन उत्पन्न होजाता है जिसमें दर्द तो नहीं किन्तु खाज होतीहै इसे दाद कहते हैं यह कभी २ शरीरके प्रत्येकभागोंमें होजातीहै परन्तु बहुधा पट्टी में अधिक उत्पन्न होतीहै इसका वर्ण लाल अथवा काला होता है इस रोग के तीन दरजे होते हैं।

पहिला दरजा—रोगके आरम्भ ही को कहते हैं इसका असर मांसमें नहीं होता।

दूसरा दरजा—इसमें रोगका प्रवाह कुछ मांसमें होजाता है

तीसरा दरजा—इसमें अच्छी तरह मांसमें रोगका असरहो जाताहै तथा वह गाढ़ा होजाता है अतएव इस रोगकी चिकित्सा दरजेवार लिखतेहैं।

❀ प्रथम दरजेकी चिकित्सा ❀

पहिले दरजेका दाद हलके लेपोंसे नष्टहो जातेहैं जो नीचे लिखे जाते हैं (१) हड़ सिरका में घिसकर लगावे (२) रसवत सिर्का में घिसकर लगावे, (३) गेंहूके तेलकी मालिश करे (४) दातन किये विना आदमी की लार मळे (५) मुर्गी या वतकके चरबी को मोमके तेलमें मिलाकर लगावे।

❀ दूसरे दरजे की चिकित्सा ❀

(१) जोंक लगावै (२) छरीला, नक छिका, और हल्दी पानीमें घिसकर लगावै (३) जला माज और बबूल का गोंद सिर्का में मिलाके लेप करें।

❀ मवाद को पचाने वाली दवा ।

राई उटंगन के बीज, समुद्र फेन, जरावन्द, गुग्गुल जैतून का तैल और सफेद मोम सबको मिला बना लेप करे ।

❀ दूसरा लेप ❀

राल, जंगली प्याज, गूगल, करंज की जड़ तिर्मिस कूट छानकर सिर्को, शहत और जैतून में मिलाके लेप

❀ अन्य लेप ❀

कनूचाके बीज, मेथीके बीज, शराब में पकाकर उस कबूतर की बीट मिला लेप करे तो अधिक लाभ हो जब वह फूट जाय तो घाव के साफ करने का कोई मरहम लगावै जिसमें निकम्मा मवाद सब निकलजावे और जब घाव साफ होजावे तो मरहम जंगार लगावे जिससे घाव भरजाय ।

कण्ठ माला रोगपर विधि औषधियां ❀

सोंठ ३॥ माशे, कुलथाके बीज १० माशे, गायके दूध में खदकाकर ठंडा करके कंठ माला पर लगावे ।

(२) सिरसके बीज १ भाग कूट छानके दो भाग में मिलाके हांडीमें रख ऊपर परिया रख उर्दके चून मा लगा सात दिन तक धूपमें रक्खे फिर उसको निकाल ले और एक तोला रोज खाय खट्टी वस्तु न खाय यह कंठ मालाको जड़से निकाल ५

(३) मूलीके बीज बकरीके दूधमें पीसकर लेपकरे

(४) लिसोडे की नरम २ पत्तियां गर्मकरे दशों कंठ माला पर बांधे ।

(९) कतीरा ५ भाग अजवायन २ भाग कूट छान कर धनिये की पत्ती का रस निचोड कर खूब मिलाके लेपकरे।

दाद रोग का वर्णन।

खालके ऊपर एक प्रकारका खुर खुरापन उत्पन्न होजाता है जिसमें दर्द तो नहीं किन्तु खाज होतीहै इसे दाद कहते हैं यह कभी २ शरीरके प्रत्येक भागोंमें होजातीहै परन्तु बहुधा पट्टी में अधिक उत्पन्न होतीहै इसका वर्ण लाल अथवा काला होता है इस रोग के तीन दरजे होते हैं।

पहिला दरजा—रोगके आरम्भ ही को कहते हैं इसका असर मांसमें नहीं होता।

दूसरा दरजा—इसमें रोगका प्रवाह कुछ मांसमें होजाता है

तीसरा दरजा—इसमें अच्छी तरह मांसमें रोगका असरहो जाताहै तथा वह गाढ़ा होजाता है अतएव इस रोगकी चिकित्सा दरजेवार लिखतेहैं।

❀ प्रथम दरजेकी चिकित्सा ❀

पहिले दरजेका दाद हलके लेपोंसे नष्टहो जातेहैं जो नीचे लिखे जाते हैं (१) हड़ सिरका में घिसकर लगावे (२) रसवत सिर्का में घिसकर लगावे, (३) गेहूंके तेलकी मालिश करै (४) दातुन किये बिना आदमी की लार मले (५) मुर्गी या बतकके चरबी को मोमके तेलमें मिलाकर लगावे।

❀ दूसरे दरजे की चिकित्सा ❀

(१) जोंक लगवावे (२) छाला, नक छिकनी और ... पानीमें घिसकर लगावे (३) जला पाज, और ... का गोंद सिर्का में मिलाके लेप करे

❀ तीसरे दरजे की चिकित्सा ❀

इस दरजे में औषधि सेवन करनेसे पूर्व यदि फस्त या जुलाब ले लिया जाय तो दवाका असर अधिक होता है दस्तोंके लिये अकाश बेलका काढ़ा माउल जुन्नमें मिल कर देना चाहिये जोंक लगवा कर अथवा किसी कडी खु रखुरी चीजसे दाद को रगड जरा वंद. हरिताल, छरीला गूगलराईफिर फिटरी और गेहूका तेल सिर्कामें मिलाकर को

❀ दाद रोग पर विविध औषधियां ❀

(१) पाडके बीज पारा दोनों को बराबरले खूब पी सकर दाद पर मलें।

(२) राल, गंधक, सुहागा, अजमायन, खुराशानीको कूट छानकर पानी यानीबू के रसमें गोलियां बना खुजलीपर लगावें

(३) मुर्दासंग, गंधक, नौसादर, माजू, मिर्च, सफेद कत्था अफीम चीनिया गोंद कूट छान कर गोलियां नीबू के रस वा पानीमें बनावे और नीबूके रसवा पानीमेंही घिसकरलगावें

(४) आंवला, लालचंदन, राल, चीनिया, गोंद, सुहा गा, कत्था बराबर पानीमें घिसकरदादको खुजलाकर लगावें

(५) पंवारके बीज को पानीमें भिगोदेवे सड जाने पर पीसकर दाद पर मलै फिर गर्म पानी से स्नान करले इस से हर प्रकारका दाद दूर होता है।

(६) सज्जी १ तोला कूट छानकर तीन तोला गायका घी सौ बार धोकर उसमें मिलाकर दाद पर मलै।

(१) गेहू के तेल निकालने की विधि–गेहूं को साफ पत्थर पर रख एकलोहे का सरा गर्म करके उसके ऊपर रखने और किसी वोझदार चीज से दवा दे पेस

खुजली का वर्णन ।

यह रोग प्रथम बहुधा अंगुलियों में प्रतीत होता है पीछे से शरीर के अन्य अंगों में भी फैल जाता है इस रोग के उत्पन्न होने के अनेक कारणों मे से रक्त का विकार ही इस का प्रधान कारण माना गया है यह रोग दूसरे रोगीसे उड कर भी लग जाता है और ऐसे रोगियोंके वस्त्रादिक स्पर्श से भी उत्पन्न होजाता है इसी कारण से इसका अधिक बचाव रखनेकी आवश्यकताहै इस रोग के वैद्योंने दोभेद माने है एक को तर खुजली कहते हैं दूसरी को खुश्क ।

❀ तर खुजली का वर्णन ❀

जिस खुजली में पीले रंग की छोटी २ पानी से भरी हुई फुंसिया होती हैं और उनमें खुजाने से पानी निकलता है वह तर खुजली कहलाती है ।

❀ तर खुजली की चिकित्सा ❀

जोकि यह विकार रुधिर के दूषित होनेसे पैदा होता है इसलिये इसमें वह उपाय करने चाहिये जो रक्त को शुद्ध करें और यदि उचित जाने तो प्रथम रोगीकी फस्द खोलकर थोडासा रुधिर निकलवा दे तथा जिस दोष से खुजली का होना निश्चय किया गयाहो उसीके अनुसार दस्त लाने वाली दवा दें जैसे पित्त अधिक होतो बड़ी हर्ड सनाय पित्त पापडा अफ संग तीनका काढ़ा खुजली के मवाद को निकालता है और हड तथा बनफसा की गोली तथा अमलताश का काढा देना योग्य है और एलवा का खसादा पुरानी खुजली को उखाड़ता है इसकी विधि यह है—१

एलवा को लेकर पानी या कासनी के पानी वा इमली के पानी में एक दिन भिगोकर रक्खे उसको नितार कर रोगी को पिला दे इसी प्रकार एक २ दिन छोड कर तीन दफ़ अमल करे।

यदि रोग वादी की अधिकता से प्रतीत हो तो, आकाश बेल का काढा अथवा और कोई वादी के पचाने वाली औषधि का सेवन करावे, यदि कफ अधिक हो तो एलवा, निसोत, गारी कून और इन्द्रायन के गूदे की गोलियां बनाकर इन गोलियांका सेवनकरावे जिससे विकार दूर हो जाय मलके निकल जानेके उपरान्त मुर्दासन, मेंहदी के पत्ते इन्द्रायन का गूदा, चांदी का मैल और छिली मसूर के चून तथा पारा सिर्का और गुल रोगनमें मिलाके लेप करे।

❀ खुश्क खुजली का वर्णन ❀

जिस रोगी के शरीर में फुंसियां न होकर केवल खुजली हो और कोई मवाद न निकलता हो उस को खुश्क खुजली कहते हैं।

❀ खुश्क खुजली की चिकित्सा ❀

गर्म पानी से स्नान करे तथा चनेका चून चुकन्दर के पानी में मिलाकर शरीर पर लेप करे और खुश्की होने वाली वस्तुओं का सेवन न करे।

❀ खुश्क तथा तर खुजलियों की चिकित्सा ❀

(१) गंधक २ तोला, सुहागा, मुर्दासिंग; फिटकिरी, कत्था कमीला: हर एक छः माशे सबको बारीक पीस कर १॥ सेर सरसों के तेल में पकाकर मले।

(२) शहतरा, चिरायता, सर्फोंका, कालीहड़, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, मुन्डी, मेंहदी के पत्ते हर एक ५ माशे उन्नाव ७ दाने भिगोकर मल छान कर पिलावें ।

(३) काबली हड़ का बक्कल बहेड़े का बक्कल, आंवला, काली हड, सरफोंके की पत्ती, अफीम, हर एक ७ माशे शहतरे के पत्ते ३ तोले सबको कूट छानकर गाय के घी में मकरो कर त्रिगुण बूरा मिला कर नित दो तोला सेवन करे ।

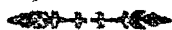
(४) नीलाथोथा, सूखा तमाकू हर एक ३ माशे कवीला ७ माशे सफेद चानी १४ माशे, कडवे तेल में मिलाकर ३ दिन लगावे ।

(५) पालक के बीज, पोरत के दाने बराबर २ पानी में पीस कर बदन पर मलै और गर्म पानी से स्नान करै खुजली ३ दिन में जाय ।

(३) गेंद के पत्ते और सूखी थूहर की लकड़ी और पोस्त के डोड़े बराबर लेकर जलावें और उसकी भस्म कडवे तेल में मिलाकर मले और थोडी देर धूप में बैठ गर्म पानी से स्नान करे ।

(७) कल्मी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे ।

(८) मर्हदी, गुल रोगन सिर्केमे मिलाकर मर्दन करे ।



बृहत जर्राही प्रकाश

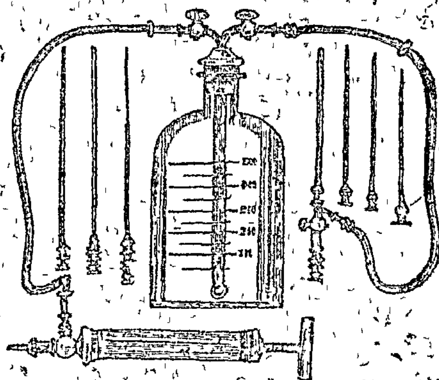
चौथा भाग

यंत्रों का वर्णन।

आज कल जितने यंत्र और अस्त्र जर्राही के कार्यमें वर्ते जाते हैं उनकी आकृति और संख्या का वर्णन करना नितांत दुःसाध्य है, ये यंत्र शरीर के अनेक विकारों के संशोधन में काम में लाये जाते हैं। और अनेक प्रकार के शल्य, कंटक, वाण इत्यादि को शरीर से निकालने में उपयोगी होते हैं शरीर के भीतर जो व्रणइत्यादि विकार उत्पन्न होते हैं उनके मवाद को तथा टूटी हुई हड्डियों के टुकड़ों को और गोलियों को भीतर से चीर कर निकाल सकते हैं तथा अर्श भगंदर आदि रोगों का प्रयत्न करने और नस्यादि कर्म करने के निमित्त और गर्भाशय से बालकों को निकालने में काम में आते हैं। एक अद्भुत यंत्र ऐसा भी बनाया गया है जो शरीर के भीतर रोशनी पहुंचा कर भीतर छिदी हुई गोली इत्यादि या टूटी हुई हड्डी और अन्दरूनी फोड़ों का यथावत् दिखला देता है और उसकी सहायता से ठीक मुकाम पर अपरेशन होकर शरीर के भीतर की निकालने लायक चीजें आसानी से निकाली जा सकती हैं इन दिनों जर्राही के काम में जो जो

औजार वर्ते जाते हैं उनका पूरा हाल बयान करना इस साधारण ग्रंथ में असम्भव है। इस समय हमारा मेज पर कई एक कारखानों के केवल जर्राही अस्त्रों के विवरण की पुस्तकें मौजूद हैं, जिनमें से एक सामान्य ग्रंथ की पृष्ठसंख्या ८५८ है और जिसमें कई हजार चित्र उन औजारों के हैं जो डाक्टरों के इस्तैमाल में आते हैं अस्त्रों द्वारा, चीर फाड़ का काम करना बिना पूर्ण अभ्यास और उचित शिक्षा पाने के सर्वथा अयोग्य है इस काम को वही कर सकता है जिसने किसी मेडिकेल कालेज में रह कर पढा और सीखा है या थोडा बहुत वह भी करलेता है जिसने किसी योग्य जर्राह से कुछ शिक्षा प्राप्त की हो, अनाडी आदमी को जर्राही अस्त्रों के प्रयोग करने का साहस कदापि न करना चाहिये।

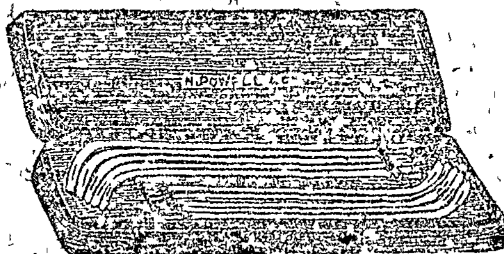
एस पिरेटर (Aspirator)



इस यंत्र के द्वारा जलोदर के रोगीके पेट में से जल निकाला जाता है इसमें जो बोतल है उसमें वह जल रबरकी नाली द्वारा पेट से आता है और इस बोतल में नाप के निशान हैं—जितना पानी लेना हो उतना लेकर जो पेच बोतल के सिरके दाहिनी तरफ लगा है उसको घुमाने से पानी लेना बंद कर दिया जाता है यदि बोतल भर जाय और अधिक पानी लेनेकी आवश्यकता हो तो नीचे की पिचकारी द्वारा वह जल बाहर फेंक दिया जा सकता है इस यंत्र में एक सुई है जो पोली होती है उसको नाभिके दो अँगुल नीचे से पेटके अन्दर पहुंचा देते हैं उसी के द्वारा पेट का जल रबर की नली में होकर बोतल में भर जाता है- जब जल का निकलना बंद हो जाता है तो सुई को बहार निकलते हैं।

यह यंत्र और भी कई प्रकारके होते हैं---साधारण यंत्र में बोतल और नापके निशान इत्यादि नहीं होते है।

कैथेटर (CatHeter)

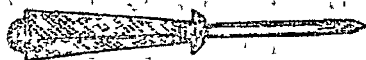


यह चित्र एक बक्स का है जिस में सलाईयां रक्खी

हुई हैं ये सलाई गिनती में बारह होती हैं और पोली हुआ करता है–और इनके अंदर एक तार पड़ा रहता है ये सलाइयां तीन धातुकी बनाई जाती हैं चांदी, जर्मन सिलवर और गम इलासटिक– Silver, German Silver, Gum Elastic इसमें जो टेढ़ा हिस्सा है उस हिस्से को पेशाब के सूराख में धीरे धीरे पहुंचाते हैं यहां तक कि वह मसाने के अन्दर चला जाता है फिर उस तारको जो उसमें पड़ा होता है निकाल लेते हैं। जो पेशाब मसाने में रुका हुआ होता है वह इस नली के सूराख में होकर नली से बाहर निकल आता है। पेशाब के रुकने का कारण बहुधा यह होता है कि सोज़ाकके रोग में पेशाबकी नाली में अधिक मांस पैदा होकर नालीको बंद करदेता है वह मांस के बढ़ने से जो पेशाब रुकता है वह औषधियों के खिलानेसे नहीं निकल-सकता उसमें इस यन्त्रका प्रयोग करना अत्यन्त आवश्यक है पेशाब निकल जाने के पश्चात् सलाई बाहर निकाल लीजाती है इस के लगानेमें रोगी को कोई कष्ट नहीं होता।

❀ हाइड्रोसीलट्रोकार और कैन्यूला ❀

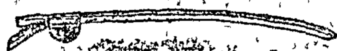
(Hydrocele Trocar and canula)



यह यंत्र लोहेका नोकदार होताहै और इसमें पीछे दस्ता लगा होता है–नोकदार सिरपर एक भोगली लगी होती है जिस को कैन्युला कहते हैं यह यंत्र फोतोंमें भरा हुआ पानी

ने के काम में लाये जाते हैं और जैसे डाढ़ दांत होते हैं उसी प्रकार के इनके आकार बने होते हैं ॥

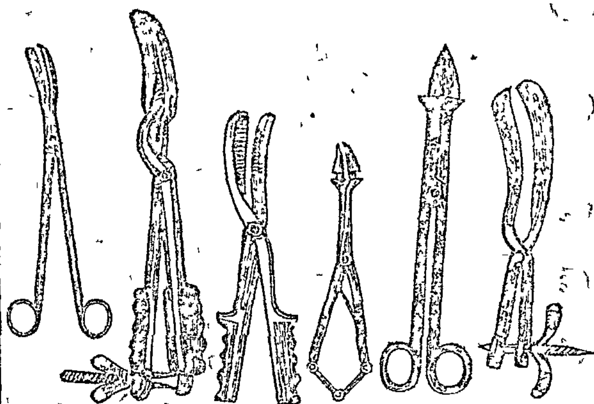
फीमेल कैथेटर (Female Catheter)



यह यंत्र स्त्रियों के पेशाब निकालने के काम में आता है। स्त्रियों की पेशाब की नालीमें इसको पहुंचाते हैं इस में भी तार पड़ा होता है वह निकाल लिया जाता है तब पेशाब जारी होजाता है स्त्रियों की भी पेशाब की नली सोज़ाक के रोग में रुक जाती है जैसा कि ऊपर पुरुषों के रोग का वर्णन किया गया है। पेशाब निकल जाने के पश्चात् नली को निकाल लिया जाता है।

मिडवाईफरी फारसैप्स (MidwiferyF orceps)

ऊपरदिये हुए७चित्र मिडवाइफरी फारसेप्स Midwifery Forcep के है ये यंत्र सब लोहे के होते हैं जब प्रसव कालमें बच्चा पेट के भीतर अटक जाता है और नहीं निकलता है तो इस को योनि में डालकर बच्चे को इस यंत्र से पकडलेते हैं और खींचकर बाहर निकाल लेते हैं यह कार्य्य बड़ीसावधानी के साथ डाक्टर या लेडी डाक्टर द्वारा कराया जाना चाहिये अनाडी से कदापि न कराना चाहिये ।



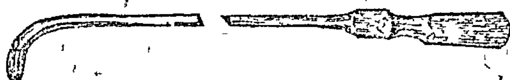
(६) (५) (४) (३) (२) (१)

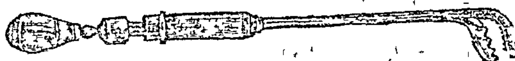
ऊपर दिये हुए ६ चित्र भी मिडवाइफरी अर्थात् बच्चा जनाने के प्रयोग में वरते जाते हैं इनका भिन्न भिन्न अवस्था मे अलग अलग प्रयोग होता हैं जिसका वृतान्त नीचे दिया जाता है ।

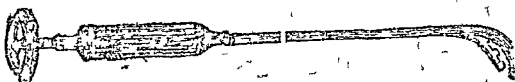
(१)यह यंत्र खोपडी पकडने काहै जिसका नाम (Cephalotribe) के फैलो ट्राइब है ।

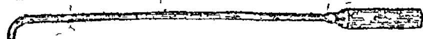
(२) व (३) जब खोपड़ी तोड़ने की ज़रूरत होती है तो यह यंत्र काम में लाया जाता है इसको (Perforator) परफोरेटर कहते हैं।

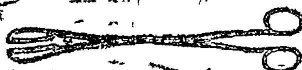
(४) (५) (६) ये तीनों यंत्र (Craniatomy Focreps) क्रेनिआटोमी फारसैप कहलाते हैं जो खोपड़ी के आपरेशन के काम में आते हैं।

(१)


(२)


(३)


(४)


(५)


ये ५ अस्त्र पथरी देखने और तोड कर निकालने के काम में आते हैं इनका जुदा जुदा नाम और काम यह है।

(१) व (४) ये (Lithotomy Sound) लिथोटोमीसौंड कहलाते हैं इनके द्वारा मसाने में पथरी की जांच की जाती है इनको मूत्रेन्द्रीमें डालकर देखा जाता है कि पथरी है या नहीं

(२) व (३) इनको मूत्रन्द्री के छिद्र में डालकर पथरीको तोड़ा जाता है और निकाल लिया जाता है इनके सिरे पर

दांते हैं जो पथरी का तोड देते हैं। इन का नाम Lithotrite लिथो ट्राइट है।

(५) इस यन्त्र के द्वारा बचे हुए टुकड़े पथरी के निकाल लिये जाते हैं इस का नाम (Lithotomy Forcepe) लिथोटोम फारसैप है।

इसके व्यतरिक्त अनेक प्रकार के नश्तर और सलाई और पिचकारी इत्यादि अस्त्र डाक्टरों के इस्तेमाल में रहते हैं जिनका प्रयोग पूर्व काल में वैद्य लोग भी किया करते थे और जिनका श्री सुश्रुताचार्य्य ने अपने ग्रन्थ में सविस्तर वर्णन किया है आगे हम उसी आर्ष ग्रन्थ के मत से कुछ अस्त्र शस्त्रों का वर्णन करेंगे।

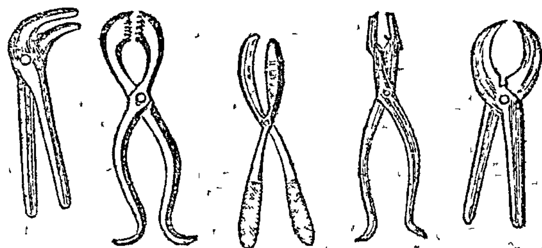
❀ वैद्यक मतानुसार यंत्रों का वर्णन ❀

यन्त्रों की कोई संख्या नहीं है और यन्त्रों से अधिक हाथ की सफाई को प्रधान माना गया है, यन्त्रों की आकृति और कार्य्य पृथक २ होते हैं बुद्धिमान वैद्य जर्राह अथवा डाक्टर अपनी विचार शक्ति की सहायता से जैसा अस्त्र जहां उपयोगी जाने उससे काम ले और इसी विचार के द्वारा नाना भांति के यन्त्र बनाये गये हैं और अद्यापि बनते चले जाते है, यन्त्रों के छे प्रकार कहे हैं। (१) स्वस्तिक यन्त्र, (२) संदंश यन्त्र (३) तालयंत्र, (४) नाड़ी यन्त्र, (५) शलाका यन्त्र, (६) उप यन्त्र।

इनमें से स्वस्तिक यन्त्र के २४, संदंश यन्त्र के दो, ताल यन्त्र के दो, नाड़ी यन्त्र के २०, शलाका यन्त्र के २८ और

उप यन्त्र के २५ भेद हैं, यन्त्र प्रायःउत्तम लोहे के बनाये जाते हैं कोई यन्त्र चांदी, जर्मन सिल्वर, अथवा और किसी धातु के भी बनते हैं, इन यन्त्रों की आकृति पशु पक्षी इत्यादि के मुख चंचु तथा नखों के समान होती है इनकी लम्बाई मोटाई उनके कार्य्य की उपयोगता पर निर्भर रहता है ये सुचिक्कन, सुन्दर, दृढ़, पैने, और सुघड़ बनाये जाते हैं इनके मुख की ऐसी पकड़ रक्खी जाती है जो पकड़ी हुई चीज़ छूट न सकै।

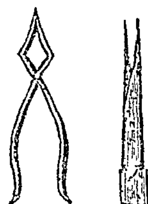
(१) स्वास्तिक यन्त्रों के भेद और आकृति।



स्वस्तिक शब्द का अर्थ साथिया है यह यन्त्र साथिये की सूरत के प्रायः अठ्ठारह अंगुल लम्बे होते हैं इन्हीं के मुख की आकृति सिंह बाघ, जरक, चीता, रीछ, भेडिया, शृगाल हिरण, बिल्ली, इन पशुओं के मुख तथा कउआ, टटा टीहरी, नील कंठ, कुही, बाज़, शिकरा, गिद्ध, बया, खंजन, चील, इत्यादि पक्षियों की चंचु के समान बनाई जाती है, सबकी बनावट में थोड़ा थोड़ा भेद रहता है, चित्र संकेत मात्र को थोड़े दिये गये हैं, बुद्धिमान

लोग स्वयं विचार कर सक्ते हैं, इन यंत्रों के दो टुकडे होते हैं जो एक दूसरे के साथ एक कील के द्वारा जिसकी घुण्डी मसूर के दाल की सदृश होती है मिलाये जाते हैं इन यन्त्रों से हड्डी और उसके टूटे हुए टुकडे और शल्य इत्यादि शरीर के भीतरसे निकाले जाते हैं और दांत उखाडे जातेहैं।

(२) संदश यंत्रों के भेद और आकृति।



संदंश यन्त्र सिंडासी या चिमटी समझना चाहिये यह दो प्रकार के होते हैं एक सनिग्रह और दूसरा अनिग्रह, संडासी सनिग्रह है और चिमटी अनिग्रह, इनकी लंबाई प्रायः १६ अंगुल, ८ अंगुल तथा क्रमानुसार कम वेश होतीहै सनिग्रह के अग्र भागमें और अनिग्रहके पिछले सिरे पर कील या जोड होता है, इन से भी त्वचा शिरा; स्नायु, और मांसमें घुसे हुए शल्य इत्यादि निकाले जाते हैं, काम लेने के पश्चात् इनको खूब धोकर और पोछ कर बक्सों में रखना चाहिये।

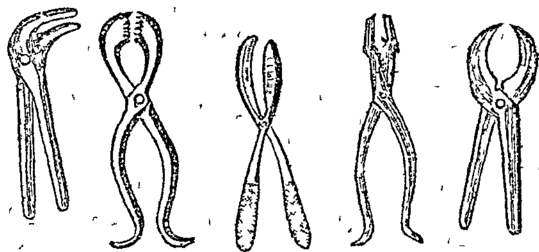
(३) ताल यन्त्रो के भेद और आकृ

एक ताल यन्त्र

द्वितल यन्त्र

उप यन्त्र के २५ भेद हैं, यन्त्र प्रायःउत्तम लोहे के बनाये जाते हैं कोई यन्त्र चांदी, जर्मन सिलवर, अथवा और किसी धातु के भी बनते हैं, इन यन्त्रों की आकृति पशु पक्षी इत्यादि के मुख चंचु तथा नखों के समान होती है इनकी लम्बाई मोटाई उनके कार्य्य की उपयोगता पर निर्भर रहता है ये सुचिक्कन, सुन्दर, दृढ़, पैने, और सुघड बनाये जाते हैं इनके मुख की ऐसी पकड़ रक्खी जाती है जो पकड़ी हुई चीज़ छूट न सकै।

(१) स्वस्तिक यन्त्रों के भेद और आकृति।



स्वस्तिक शब्द का अर्थ साथिया है यह यन्त्र साथिये की सूरत के प्रायः अट्ठारह अंगुल लम्बे होते हैं इन्हीं के मुख की आकृति सिंह वाघ, जरक, चीता, रीछ, भेडिया, शृगाल हिरण, बिल्ली. इन पशुओं के मुख तथा कउआ, टटा टीहरी, नील कंठ, कुही, बाज़, शिकरा, गिद्ध, बया, खंजन, चील, इत्यादि पक्षियों की चंचु के समान बनाई जाती है, सबकी बनावट में थोड़ा थोड़ा भेद रहता है, चित्र संकेत मात्र को थोड़े दिये गये हैं, बुद्धिमान

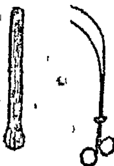
ु स्तन सम्बन्धी दुष्ट दुग्ध बिगडे हुए रुधिर के चूसने और अग्नि कर्मादि क्रियाओंकी सुगमता में काम आते इन यत्रों के मुख इन्द्रियों के छिद्र के समान और वैसेही म्बे चौडे होते हैं, जो यन्त्र कंठ के भीतर के किसी शल्य ो देखने के निमित्त काम में लाया जाता है उसकी अधिक ंवाई होती है प्रायः १२ अंगुल लंबा होना चाहिये ।



अर्श रोग सम्बन्धी यंत्र ।

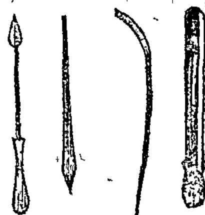
अर्श रोग में जो यन्त्र काम में आते हैं उनको अंगरे ज ः स्पेक्यूलम कहते है यह यन्त्र गाय के थन मो इसके दोनों और छिद्र होता है अर्श के यंत्र के समान ही होते हैं इसी ्यों की रक्षा के काममें भी आता है ।

ाका यन्त्राणि ।



ताल यन्त्र दो प्रकार के होते हैं इनकी लम्बाई बारह अंगुल है इनका आकार मछली के कांटे का सा होता है इसी से इसको एक ताल और द्विताल दो प्रकार का कहते हैं यह यंत्र कान, नाक, और नाडी गत शल्यों के निकालने में काम आता है, इसके प्रयोग में अधिक सावधानी की आवश्यकता है क्यों कि कानका पर्दा बहुत ही कोमल होता है।

नाडी यन्त्रों का वर्णन



नाडी यंत्रों के भेदों के नाम यह हैं:—

(१) भगंदर यंत्र, (२) अर्श यंत्र, (३) अर्बुद यंत्र, (४) व्रण यंत्र, (५) वस्ति यंत्र, (६) उत्तर वस्ति यंत्र, (७) मूत्र वृद्धि यंत्र, (८) वृकोदर यंत्र, (९) धूमानिरुद्ध यत्र (१०) प्रकाश यंत्र, (११) सन्निरुद्ध यंत्र, (१२) अलाबू यंत्र (१३) और शृंग यंत्र और इन्हीं के और भेदों करके ये नाडी यंत्र बीस प्रकार के होते हैं यह अनेक प्रयोजनों में काममें आते हैं कोई एक एक मुख वाले कोई दोनों ओर मुख वाले होते हैं ये यन्त्र स्रोतो गत शल्य के निकालने में काम आते हैं रोगी की परीक्षा में अस्थिगत

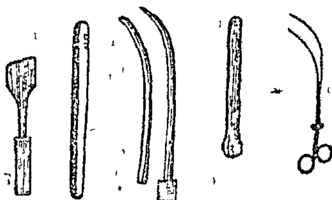
वायु स्तन सम्बन्धी दुष्ट दुग्ध बिगड़े हुए रुधिर के चूसने में और अग्नि कर्मादि क्रियाओंकी सुगमता में काम आते हैं इन यन्त्रों के मुख इन्द्रियों के छिद्र के समान और वैसेही लम्बे चौडे होते हैं, जो यन्त्र कंठ के भीतर के किसी शल्य को देखने के निमित्त काम में लाया जाता है उसकी अधिक लंबाई होती है प्रायः १२ अंगुल लंबा होना चाहिये।



अर्श रोग सम्बन्धी यंत्र।

अर्श रोग में जो यन्त्र काम में आते हैं उनको अंगरेजी में रैक्टम स्पैक्यूलम कहते हैं यह यन्त्र गाय के थन के सदृश होते हैं इसके दोनों ओर छिद्र होता है भंगदर के यन्त्र भी अर्श के यंत्र के समान ही होते हैं इसी प्रकार का यंत्र अङ्गुलियों की रक्षा के काममें भी आता है।

शलाका यन्त्राणि।



शलाका अर्थात् सलाई विविध प्रकार की होती हैं औ इनसे व्रण इत्यादि के सम्बन्ध में अनेक काम लिये जाते हैं यह यन्त्र क्षार कर्म, वृद्धि कर्म और अग्नि कर्म में भी आता है और इनसे दग्ध करने का भी काम लिया जाता है

वस्ति यन्त्र ।



यह यन्त्र गोल रस्से के आकार का होता है इसके मूल भाग में चौड़ा और मुख भाग में अरहर के दाने के समान एक छेद होता है एक पट्टी चमड़े की कोमल इस में लगी रहती है कई प्रकार के व्रणों के साफ करने के लिये इसका प्रयोग होता है ।

शस्त्रों का वर्णन ।

शस्त्र अनेक प्रकारके रोगों में काटने, चीरने, सीने, घावों के शल्य निकालने, व्रणों से राध और रुधिर निकालने और अनुलोमन करने के काममें आते हैं ॥

शस्त्र कर्म करने के समय शस्त्रों को इस भांति पकड़ना चाहिये, वृद्धि पत्र और भेदन शस्त्रों को डंडी और फने के बीचमें साधारणभागपर पकडना चाहिये और मंडलाग्रको लेखक कर्ममें कुछ ऊंचे हाथ से पकडना चाहिये हथेलीसे बेंटे को दाबकर अंगूठा और तर्जनी से व्रीहि मुखशस्त्रको पकड़ो कुठारिका शस्त्र को बायें हाथ से पकड़ दाहने हाथ की बीचवाली अंगूठी और [illegible] दाबकर कामकरो, आरा

कर पत्र और शेष शस्त्रों को भी उचित स्थान पर पकडना चाहिये टेढा भोंतरा, टूटाहुआ, खरदरी धार वाला बहुत मोटा, बहुत छोटा, ऐसे शस्त्रों को काममें लेना वर्जित है।

शस्त्रों के नाम।

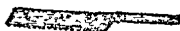
शस्त्र इक्कीस प्रकार के होते हैं जिनके नाम ये हैं:- (१) मंडलाग्र, (२) कर पत्र, (३) वृद्धि पत्र (४) नख शस्त्र, (५) मुद्रिका (६) उत्पल पत्रक, (७) अर्द्ध धार (८) सूची, (९) कुशपत्र, (१०) आटीमुख (११) शरीर मुख, (१२) अन्तर्मुख, (१३) त्रिकूर्चक, (१४) कुठारिका, (१५) व्रीहिमुख. (१६) आरा, (१७) वेतस पत्रक,(१८)वडिम.(१९) दन्तशंकु,(२०) एषणी (२१)कर्तरी

(१) मडलाग्र शस्त्र।



यह शस्त्र काटने और चीरनेके काममें आता है और पोथकी शुंडका और वर्त्मरोगमें प्रायः वर्त्ता जाता है।

(२) करपत्र शस्त्र।



यह शस्त्र हड्डियोंके काटने और चीरनेके काममें आता है

(३) वृद्धिपत्र शस्त्र।

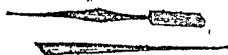




यह शस्त्र एक प्रकार का छुरा है व्रणों के तथा चर्मों के

छेदन भेदन में इनका प्रयोग होता है ।

(४) नख शस्त्र ।



यह नहरने कहलाते हैं किसी की धार टेढी किसी की सीधी होती है नख काटजानेके सिवायकांटे और शल्य भी इनके द्वारा निकाले जाते हैं ।

(५) मुद्रिका शस्त्र ।



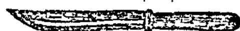
इस शस्त्र को अंगुली शस्त्र भी कहतेहैं इसका एक सिरा अंगूठा की तरह निकला हुआ होता है इसका फल धारदार होता है यह शस्त्र छेदन और भेदनके काममें आता है

(६) उत्पल पत्रक शस्त्र



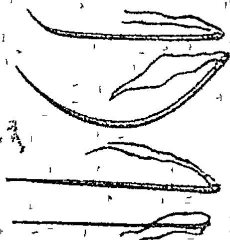
यह शस्त्र लम्बे मुख का होता है और छेदन और भेदन के काममे आता है ।

(७) अर्द्ध धार शस्त्र ।



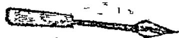
इस शस्त्र की धार बहुत पैनी होती है, और नोंक बहुत तेज होती है इसको नश्तर भी कहते हैं यह चीरने के कामों आता है ।

(८) सूची शस्त्राणि ।



यह कई प्रकार की सुइयांहैं जो जख्मों के सीने के काम में आतीहैं, मोटे मांस के सीने में तिकौनी सुई काममें आतीहैं हड्डी और जोडोंके निकटस्थ जख्मोंके सीनेकी सुई चन्द्राकार टेढ़ी होतीहैं इसीतरह मौके मौके के जख्मों में पृथक पृथक् सुइयां काममें आती हैं ।

(९) कुशपत्र शस्त्र ।



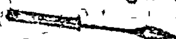
कुशपत्र शस्त्र स्राव के निमित्त काममें आताहै इसकी नोंक तेज और धारदार होती है ।

(१०) आटीमुख शस्त्र ।



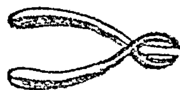
यह शस्त्र भी कुश पत्र के समान होता है परन्तु आकृति में भेद है काम इसका वही है जो कुश पत्रका है ।

(११) शरारी मुख शस्त्र ।



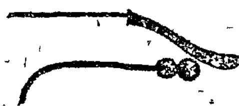
यह शस्त्र भी स्रावके काम में आता है और कुशपत्र शस्त्र से इसमें बहुत थोड़ा अन्तर है।

(१२) अन्तर्मुख शस्त्र।



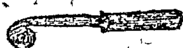
यह शस्त्र एक प्रकार की कैंची है और छेदन भेदन के काम में आती है।

(१३) त्रिकूर्चक शस्त्र।



यह शस्त्र एषणी स्त्राव कार्य्यमें उपयोगीहै इनके द्वारा रुका हुआ दूषित रुधिर और पीव व्रणोंमेंसे निकालाजाता है

(१४) कुठारिका शस्त्र।



इस शस्त्र से अस्थिके ऊपर जो सिरा लगी हुई हो वह वेधी जाती है इसको कुठारी भी कहते हैं इसका बेंटा लम्बा होता है।

(१५) व्रीहिमुख शस्त्र।



यह शस्त्र धारदार होता है और इसकी नोंक सुईके स-

मान पैनी होती है यह भेदन के काममें आती है।

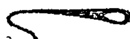
(१६) आरा शस्त्र।

यह शस्त्र हड्डियों के काटने के काम में आता है।

(१७) वेतसपत्रक शस्त्र।

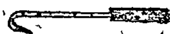
यह शस्त्र भी उत्पल पत्रक शस्त्र के समान लम्बे मुखका होता है और छेदन और भेदन के काममें आते हैं।

(१८) वडिस शस्त्र।



इसका मुख अंकुश के समान टेढ़ा होता है और कई प्रकारके भीतरी व्रणोंके छेदन करने में इसका प्रयोग होता है।

(१९) दन्त कुश शस्त्र।



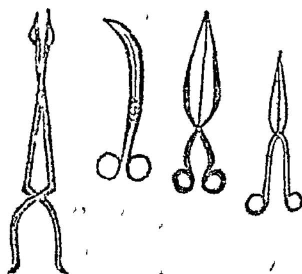
यह शस्त्र दन्तों के भीतरके शर्करा इत्यादि दूषित मलों के निकालने के काम में लाया जाता है।

(२०) एषणी शस्त्र।



नाड़ी व्रण की सूजन के भीतर की हालत देखने में इस शस्त्र का प्रयोग होता है यह शस्त्र सचिक्कन कोमल और गिडोये के प्रकार का होता है।

(२१) कर्त्तरी शस्त्राणी ।



ये अनेक प्रकार की कैचियां हैं नख, सूत्र, चर्म, और केशों के काटने में इनका प्रयोग किया जाता है ।

शस्त्रों का वर्णन ।

साधारण रीति से इन शस्त्रों को जर्राही के कार्य्य के लिये अवश्य पास रखना चाहिये:—

(१) सामान्य सलाई (२) रहनुमा सलाई (३) टेढ़ा चाकू (४) मोटी छुरी (५) हूक (६) मसूड़े के नश्तर (८) फस्द खोलने के नश्तर (९) चिमटी (१०) टेढ़ी सुई (११) कैंची (१२) लिन्ट और प्लास्टर (१३) स्पंज ।

(१) सामान्य सलाई ।

यह चांदी के तार की एक सलाई होती है जो लचक सक्ती है इससे जख्मों की गहराई और उनके भीतर यदि कोई विकार युक्त मवाद हो देखे जाते हैं ।

(२) रहनुमा सलाई ।

यह चांदी की नालीदार मोटी सलाई होती है यह ज़ा-

सूर में डालकर उस नालीके बीच नश्तर की नोंक रखकर नासूर चीरा जाता है।

(३) खमदार चाकू।

इसी चाकू से गहरे नासूर खोले जाते हैं नालीदार सलाई की नालीमें इस की नोंक रखकर चीरना शुरु करतेहैं।

(४) भोंटी छुरी।

यह छुरी मरहम या प्लास्टरको फैलानेके काम आती है

(५) हुक।

यह लोहे के तार का टेढ़ा हुक होता है जब किसी रगसे खून निकलता हो तो इसके द्वारा रगको उठाकर पकड़ते हैं-

(मसूढ़े के नश्तर)

इससे मसूढ़े चीरे जाते हैं।

(७) फोड़े के नश्तर।

इसके दोनों तरफ तेज़ धार होती है इससे फोड़े चीरेजातेहैं

(८) फस्द खोलने के नश्तर।

इनसे फस्द खोली जाती है और टीका लगाया जाता है

(९) चिमटी

यह कमानीदार या बिना कमानी के दो तीन प्रकारकी होती है जख्म में से दूषित चीजों को पकड़कर निकालने और डिरैसिंग को जख्म पर से उतारने के काम आती हैं।

(१०) टेढी सुई।

जख्मों के सीने के काम में आती हैं।

(११) कैंची।

चमडा इत्यादि के कतरने के काम मे आती है।

(१२) लिन्ट और प्लास्टर।

लिन्ट जख्मों के साफ करनेके लिये उनपर गद्दियां रखने के लिये या मरहम की पट्टियां बनाकर लगाने के लिये या जख्मों के ढकने के लिये काममें आती है और प्लास्टर भी ऐसे ही काममें आता है-

(१३) स्पंज।

चोटके स्थानपर पानी धारने या टपकाने के लिये काममें आता है।

पट्टी बांधना और खपाचैं लगाना।

जर्राहों को पट्टी बांधना और खपाचैं लगाना अवश्य जानना चाहिये पट्टी की गरज यहहै कि जो मरहम और खपाचें टूटे फुटे अंगोंपर लगाई जाती हैं वह स्थिर रहैं खिसक न जांय और अंगको आराम मिले और उसका हलना चलना बंद रहे और घावमें कोई बाहरी चीज न लगसके और जोड़ी हुई हाड्डियां और बैठाई रगें अपनी असली हालत पर आजांय।

पट्टी बांधने के नियम।

(१) पट्टी सदा साफ और नरम कपडे की बनानी चाहिये

(२) साधारण रीतिसे पट्टी कमसेकम तीन इंच चौडी और सातगज लम्बी होनी चाहिये उसको बांधने से पहिले लपेट लैना और सलवट दूर कर लैना चाहिये पट्टी को लपेटते समय इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि पट्टी के किनारे एकसे रहैं और उसकी लपेट ढीली न हो।

(३) पट्टी बांधते समय सबसे आवश्यक बात यह है

कि उसे ऐसे स्थान से बांधना शुरु किया जाय जहां से वह सरक न सके।

(४) पट्टी बांधते समय उस का रुख भीतर से बाहर की औंर ओर नीचे से ऊपर की ओर होना चाहिये।

(५) पट्टी बांधते समय उसके लपेटे के बीच में कोई स्थान खाली न रहने देना चाहिये।

(६) जिस अंग पर पट्टी बांधनी हो अगर वह एक ढाल का हो तो उस पर पट्टी के सीधे पेच लगाते जाय किन्तु जहां पर अंग की मोटाई आदि में फरक हो वहां पर बलदार पेच लगाना चाहिये बल देने का नियम यह है कि जहां बल देना हो उस स्थान के ऊपरी मुंह पर अपना बायां अंगूठा रखकर दायें हाथ से पट्टी को उलटादें॥

(७) जोडों के स्थान पर अर्थात् घुटने या कुहनी के जोडे पर पट्टी बांधते समय इस प्रकार से लपेट ते हैं कि जोड़ के स्थान पर अंगरजी के आठ के अंक सदृश आकृति बनजाय इसको डाक्टर लोग फ़िगर साफ एट वैन्डेज कहते हैं।

(८) कन्धे और कुल्हे के जोड़ पर भी उसी प्रकार की पट्टी बांधते हैं।

(९) जब एक पट्टी बदली जाय तो जिस अंग पर यह बंधी हुई थी उसको गरम पानी और साबुन से खुब धोकर सुखा देना चाहिये।

(१०) जब सर पर पट्टी बांधनी हो तो बालों में कंघी कर लेनी चाहिये।

(११) जब पट्टी इस अभिप्राय से बांधी जाय कि अभीष्ठ अंग को सहारा मिले और उस पर दबाव पडे तो इस बात की बडी सवधानी रखनी चाहिये कि पट्टी बहुत कसकर न बांधी जाय क्यों कि बहुत कस कर पट्टी बांधने से रक्त संचालन का अवरोध होकर वह अंग मुरदार हो जाता है ।

❀ पट्टीयों की चौडाई ❀

सिर , हाथ , कलाई , और पांव पर लपेटने के लिये दो इंची चौडी और बाजू टांग के लिये ढाई इंच चौडी, जंघा के लिये ३ इंच चौडी छाती की पट्टी तेरह इंच से सोलह इंच तक चौडी होनी चाहिये , लम्बाई आवश्यकता नुसार कमती बढती होती है ।

चोट या जख्म खाये हुए मनुष्य का सबसे पहिला उपाय ।

आकस्मिक ऐसी घटना उपस्थित होने पर उचित और शीघ्र प्रबन्ध करने से पीड़ा बहुत कम होसक्ती है, चोट खाये हुए मनुष्य को आरामसे लिटाये रखना चाहिये और देख भाल कर शीघ्रता के साथ पता लगाना चाहिये कि कोन से अंग में किस प्रकार की चोट है दोनों ओर के हाथ पांव को मिलाना चाहिये जिससे हड्डी इत्यादि के टूटने का पता लग जाय यदि खून निकलता हो तो फौरन बंद कर देना चाहिये अर्थात् रुधिर के प्रवाह के रोकने के लिये पट्टी बांध देनी चाहिये इस प्रकार के साधारण उपायों के पश्चात् रोगी को सावधानी के साथ किसी पास के अस्पताल में ले जाना चाहिये ।

❀ बेहोशी की अवस्था में कर्तव्य ❀

बेहोश को तत्काल चित लिटाकर उसकी दोनों भुजा धड से मिलाकर और दोनों टांग सीधी करके एक दूसर के साथ मिला देना चाहिये यदि उसका चेहरा सुर्ख हो तो उसका सिर थोड़ा ऊंचा करदेना चाहिये जिससे सिर का खून नीचे को आवै यदि उसका मुख पीला मालूम हो तो उसका सिर उसके शरीर से थोड़ा नीचा कर देना चाहिये जिससे खून मस्तिष्क की ओर पहुंच जाय यदि वमन होने की सम्भावना हो तो उसके सिरको एक ओर घुमा देना चाहिये जिससे वमन होने वाली वस्तु हवाकी नाली में जाकर उसका दम बन्द न करदे जिससे मृत्यु होजाने का भय रहता है, उसकी गरदन, छाती और कमर के सब कपडे ढीले करदेने चाहिये जिससे सांस लेने और रक्त के संचालन में किसी प्रकार की बाधा न हो. फिर बेहोश के सिर और अन्यान्य अंगों को खूब देखना चाहिये कि कहां कैसी चोट है और उपयोगी चिकित्सा करनी चाहिये ।

❀ जख्मों का इलाज ❀

जख्मों के इलाज के कई एक साधारण नियम हैं ।

(१) खून के प्रवाह को बन्द करना (२) जख्मोंको साफ करना (३) जख्म के कटे हुये किनारों का परस्पर मिला देना (४) जो मवाद मौजूद हो उसको निकाल कर आगे को मवाद निकलने की राह वना देना (५) जख्म का हवा

से बचाये रखना और मवाद को सडने न देना (६) रोगी की स्वास्थ रक्षा का ध्यान रखना ।

(१) जब वेग के साथ रुधिर निकल रहा हो तो जख्म को नंगा करके जहां से खून आता हो वहां पर तत्काल अपनी अँगुली दृढ़ जमा देना चाहिये यदि कटी हुई रग के ठीक मुँह पर रक्खा जाय तो बहुत शीघ्र खून बहनाबन्द हो जाताहै, और खून बन्द होने से भय मिटजाता है ।

(२) जख्म में बत्ती मल मल या गाढे के टुकडे की ठूस दी जाय और उसके ऊपर साफ सा पत्थर का टुकडा रखकर ऊपर से रूमाल बांध दिया जाय ।

पसलियों का वर्णन ।

जिस मनुष्य की पसली टूट जाती है उसको सांस लेने में कसक मालूम होतीहै, और पसली के टूटे हुए सिरे इधर उधर को हिलते हुए मालूम होते हैं ।

पसली टूटने का इलाज ।

यदि एक या एकसे अधिक पसलियां टूटजावें तो फला लेन की पट्टी छः गज लंबी और चार इंच चौडी छातीके ओर पास खेंचकर बांधे कि सांस लेने में पसलियां हिलने न पावें और पट्टी के दोनों सिरे सीं देना चाहिये या हर लपेटा सीं दिया जाय ।

हंसली टूटने का इलाज ।

हंसली के टूटने पर बगल में दो तीन रूमाल या कपडे का गोला बना कर रखदे और चार दुमवाली पट्टी लगा-

कर कंधेपर गिरह देकर बांधदे फिर स्टिकिंग प्लास्टर का २ इंच चौड़ा टुकडा लेकर बाजू के गिर्द इसका एक लपेटा दे लेकिन चिपकने वाली सिलह बाहर की तरफ़ हो फिर इस लपेटे को सींकर बाकी टुकड़ा पीठ पर से गुज़ार कर दूसरी ओर के बाज़ू के पीछे से लाकर टूटी तरफ की कलाई को छातीपर रखकर उसपर प्लास्टर के सिरे को चिपकादें फिर एक और उतना बड़ा टुकडा लेकर उस से कलाई को स्थिर कर और तीसरा टुकडा कोहनी के नीचे से लाकर चिपकादे ताकि कोहनी उठीरहे। इस हड्डी के जुड़ने में ५ सप्ताह से अधिक समय लगता है।

टूटी बांह का इलाज।

बांहके लिये गद्दी और तीन तीन अँगुल चौडे स्प्लिन्ट लेकर एकतो कंधेसे कोहनी के झुकाव तक, एक कंधेकेपीछे से कोहनी के किनारे तक; एक बगल से कोहनी की भीतर वाली नौक तक और एक कंधे से कोहनी की बाहर वाली नौक तक बांधी जावे गद्दियां स्प्लिन्टसे दो इंच अधिक लंबी होनी चाहिये जिससे उनको उलटकर स्प्लिन्टके किनारेसीं दिये जावें, लकडी का स्प्लिन्ट न मिले तो गेहूं की नाली आदि काममें लाई जाती हैं॥

उंगलियों के टूटने का वर्णन।

जो उंगली टूटगई हों तो पतली लकडी का एक टुकड़ा या कडा टुकडा कागज के पट्ठे की उंगली के बराबर लेवे और सीधी तरफ़ उंगली पर रखकर एक इंच चौडी पट्टी से एक सिरेसे दूसरे सिरेतक बांधदेवे, हाथ एक महीने तक

गलेमें लटका रहनेदे और उस हाथसे काम न लैनाचाहिये

जांघ की हड्डी का वर्णन।

अगर जांघ कूल्हे वा घुटनेसे कुछ दूर पर टूट जाय तो स्प्लिन्ट जांघमें बांध दी जाय, रोगी को एक तख्ते पर लिटा दिया जाय और दो मोटी गद्दी ऐसी लंबी चौडी बनवाई जावें कि एक तो घुटने के भीतर और दूसरी उसीके टखने के नीचे अच्छी तरहसे आजावें और दोनों जांघ उन गद्दियों पर अच्छी तरह फैली रहें। एक आदमी दोनों कूल्हों को ऐसी रीतिसे पकड ले कि हिलने न पावै, दूसरा आदमी टूटी जांघको दोनों हाथोंसे तख्त पर पकडे रहे और धीरे धीरे उसको नीचे उतारे पर वह जांघ टेढ़ी न होने पावे। इस तरह दोनों जांघों को मिलाकर तीन गज लंबा रोलर उसपर लपेट दिया जावे।

❀ पांवकी उंगली का वर्णन ❀

पांवकी अंगुलीके टूट जाने पर कागज़का एक मोटा पट्ठा उंगली के भीतर का और रोलरसे बांध दिया जावै और रोगी को चार पाई पर लिटाकर रक्खें।

हड्डियों के टूटने की किस्में।

(१) सिम्पिल फ्रेक्चर, इस में केवल हड्डी टूटती है खाल में घाव नहीं होता।

(२) कम्पौंड फ्रेक्चर, इस में हड्डी टूटती है खाल फट जाती है। और टूटी हुई हड्डी के स्थान पर एक घाव होजाता है।

(३) डोप्रेस्ड फ्रेक्चर, हड्डी का दबजाना।

(४) फिशर्ड फ्रैक्चर, हड्डी का चिरजाना।

(५) कार्मीन्यूटेड फ्रैक्चर, हड्डीका टूटकर चूराहोजाना।

(६) मलटीपिल फ्रैक्चर, हड्डी का कई जगहसे टूटना।

(७) इम्पेक्टेड फ्रैक्चर, हड्डी के टूटे टुकड़े का दूसरी हड्डी में घुस जाना।

(८) लांजीट्यूडीनल फ्रैक्चर, हड्डी का लम्बाईमें टूटना।

(९) स्पाइरल फ्रैक्चर; हड्डी का बल खा जाना।

हड्डी टूटने के परिणाम

हड्डी के टूटने ने के २४ घंटे पीछे हलका ज्वर होजाता है हरारत १०० दर्जे तक रहताहै यह बुखार २ या ३ दिन में उतर जाता है टूटी हड्डी का इम्तिहान बड़ी सावधानी से करना चाहिये।

❀ जोड़ उतरना ❀

जिस तरफ का जोड़ उतरा हो उस तरफ की टांग छोटी होजाती हैं और जोडका हिलना और काम देना रुक जाता है अंतमें जोड़ में सूजन होकर पीप पड़ जाता है—यदि जोड़ जल्दी न चढ़ाया जाय तो उसकी हटी हुई जगह में चरबी भरजाती है और दूसरी जगह पेबंद लग जाता है जोड़ चढ़ाने के दो तरीके हैं एक यह कि हड्डी को इस तरकीब से मिलाना कि जिस राह से वह हटी है उसी राह से अपने असली स्थान पर चढ़े—दूसरे जब बीच में कोई वस्तु रुकी हुई हो तो उस को सावधानी से अलग करके हड्डी को चढ़ाया जाय।

हड्डियों का टूटजाना।

हड्डी चोट लगने से टूट जाती है कभी ऐसा होता है कि चोट एक जगह लगे और हड्डी दूसरी जगहकी टूटे जैसा हाथके बल गिरने से हँसली की हड्डी टूटजाती है कभी पट्ठों की खिंचावट से हड्डी टूटजाती है।

❀ टूटी हुई हड्डी का जोड़ना ❀

टूटी हड्डी वाले अंगको ढीला रखना चाहिये फिर टूटी हड्डी को एक दूसरे से मिलाना और मजबूत पकड़ना चाहिये फिर नीचे के टुकड़ेको नीचे की तरफ खेंचना चाहिये कि हड्डी के दोनों सिरे आमने सामने होजांय फिर पट्ठों को ठीक करके खपाचें बांध देना चाहिये–खपाचें बहुत कसकर न बांधना चाहिये न बहुत ढीली बांधना चाहिये कम्पौंड फ्रैक्चर हो तो जख्म को साफ करके ड्रेनेजट्यूब (पोली नली) लगाकर मवाद बहते रहने का बंदोबस्त करना चाहिये जख्म छोटाहो तो उसको चीरा देकर बड़ा कर देना चाहिये।

❀ फांसी लगना ❀

यदि कोई फांसी पर लटक रहाहो तो उसे तुरन्त उतार लेना चाहिये–फंदाकाट देना चाहिये फंदा काटनेमें गर्दन ऊंची उठा देनी चाहिये कि गले का बोझ घट जाय जब तक फंदा न कटे बदन को ऊंचा उठाये रखना चाहिये जब फंदा कट जाय तो गर्दन और छाती के कपड़े ढीले कर देना चाहिये अगर सांस बंद होगया होतो सांस जारी

कराना चाहिये—फांसी लटकने वाला खुद सांस ले रहाहो तो उसके मुख और छाती पर ठंडे पानीके छींट मारने चाहिये उसके अंगको ऊपर की तरफ मलना और सुगन्ध या एमोनिया सुखाना चाहिये।

❀ आग से जलना ❀

थोडा जला हो तो जली हुई जगह पर ठंडे पानीकी गद्दी रखकर उसे बराबर तर रक्खें या उस जगह पर क्लोडियन लगादें छाले पडगएहों तो छालोंमें सुराख करके पानी निकालदें और नीचे लिखी हुई औषधियां क्रमशः लगावें।

(१) सुहागा १ भाग; निशास्ता ५ भाग।

(१) जिंक आक्साइड १ भाग, जिंक आक्नाइड २ भाग।

(३) बोरिक एसिड १ भाग; जिंक आक्नाइड २ भाग।

जहां सर्प काटे उससे दो इंच ऊपर सूतली या डोरी से एक बन्द लगादे और उस बंद से चार इंच ऊपर एक या निशास्ता ५ भाग इनको मिलाकर छिडकें और इस पर साफ रुई रखकर पट्टी बांधदें।

विष चिकित्सा।

सर्प के काटने की चिकित्सा।

बाहरी चिकित्सा।

जहां सर्प काटे उससे दो इंच ऊपर सूतली या डोरी से एक बंद लगादे और उस बंद से चार इंच ऊपर एक या दो बंद और लगादे जिससे वहां का रक्त का प्रवाह रुक जाय और विष रुधिर में प्रविष्ट होकर मृत्यु का कारण न हो बन्द लगाने के अनन्तर सर्पके दांतों के निशान पर तेज चाकू आदि से तीन चार गहरे चीरे लगावै जिससे

वहां का ज़हरीला खून अच्छी तरहसे निकल जावै फिर ज़ख्म पर पानी धारें और यदि सम्भव हो तो वहां पर सिंगी लगावें जिससे ज़हरीला खून बिल कुल निकल जावै फिर उन चीरों में परमेंगेनट आफ़ पोटास भरदें और ऊपर से एक पट्टी बांधदें या रक्त निकलने के पश्चात् जख्म को तेजाब कास्टिक की बत्ती या दहकते हुए कोइले अथवा गरम लोहे से दाग दें या उस पर बारूद रखकर जलादें यदि अँगुली या अँगूठे के अग्र भाग पर सर्प ने काटा हो तो ऊपर के पोर से उसे काट डालें यदि शरीरके किसी और भागपर काटे कि जहां बन्द लगाना सम्भव न हो जैसे पीठ आदि पर तो काटे हुए स्थान पर एक चुटकी भरकर त्वचा और मांस का एक गोल टुकड़ा आध इंच का गहरा काट डालें और जखमको उपरोक्त विधिसे जलादें।

भीतरी चिकित्सा

लाइकर एमोनिया १५ बून्द या स्पिट एमोनिया ऐरोमेटिक २० बूंद एक औंस पानी में मिलाकर पाव पाव आध आध घन्टेमें वारम्बार देते रहें अथवा ह्विस्की या बरांडी दें यदि रोगी कमजोर होकर उसे मूर्छा आने लगे तो उसके हृदय पर और नाभि के नीचे और गरदन पर राई के प्लास्तर लगावें उसको सर्द स्थान मे रक्खें और पंखा करते रहैं और ओंघ या बेहोश होने लगेतो रोगीको कदापि सोने नदें वरिक दो आदमी उसे दोनो ओर से पकड़कर टहलाते रहैं यदि उसका स्वास रुकने लगे तो किसी युक्तिसें स्वांस जारी कराते रहैं यदि उसका शरीर ठंडा होजायतो

उसके जंघों बगलों और तलुओं में गरम पानी की बोतलें लगावें और उसे इसी प्रकार धैर्य बंधाते रहें।

❀ बावले कुत्ते का काटना ❀

जब पागल कुत्ता या और कोई पागल जानवर काट खाय तो काटे हुए स्थान से ऊपर टांग या बाजू को खूब जोर से बांधदें फिर तत्काल तेज़ छुरा से वहां दो तीन गहरे चीरे देकर और गरम पानी से धोकर घावों में परमेंगनेट आफ पुटास भरदें और फिर वहां पर गरम पानी अच्छी तरह से धोवें कि वह खूब धुलजाय और तत्पश्चात् घाव को सुखाकर नाइटरेट आफसिलवर या नाइटरेट आफ मरकरी या नाईट्रिक एसिड या कारबालिक एसिड या क्रोमक एसिड या दहकते हुए कोइले से या तेज गरम लोहे आदि से जलादें और तदनन्तर पोल्टिस और मरहम आदि उचित औषधिओं का प्रयोग करें इसकी चिकित्सा पारचर इनिस्टी स्यूच कसौली में अच्छी होती है।

❀ बिच्छू का डंक मारना ❀

पहिले सूई या किसी नोकदार चीज़ से बिच्छू का डंक निकाल कर उस पर इन चीजों में से कोइ चीज़ पानी में पीस कर लगादें।

लायकर अमोनिया, एपीकाकपोडर, डोरमपौडर, तमाकू, नमक, कपूर, अफीम, दिया सलाई का मसाला या तारपीन का तेल, मिट्टी का तेल, सिरका इत्यादि और स्पिट अमोनिया एरोमेटिक ३० बूंद या बरांडी तीन चार ड्राम पानी में मिलाकर पिलावें।

❀ कंखजूरे का काटना ❀

काटने के मुकाम पर एमोनिया, सोडा, फिटकिरी, नमक, या एपीकाक पौडर लगादें ।

❀ जहरीली मछलियों का काटना ❀

इसकी चिकित्सा वही है जो कंखजूरे की है ।

❀ मकड़ी का विष ❀

इसकी चिकित्सा वही है जो बिच्छू के विष पर वर्णन किया गया है ।

❀ भिड,ततैया,मक्खी, या मुहाल का डंक मारना ❀

यदि त्वचा के भीतर डंक रहगया हो तो सूई या मोचने से निकाल दें या एक चाबी के छिद्र दार सिरे को डंक के स्थान पर रखकर दबावें डंक निकाल देनेके अनन्तर वहां पर एमोनिया या सोडा या पोटास या दियासलाई का मसाला या नमक लगावें ।

❀ संखिया का विष ❀

संखिया खाने से एक घण्टे के भीतर पेट में दर्द, जलन और पेचिस होतीहै और रुधिर संयुत कै और दस्त आते हैं पेशाब बन्द होजाता है और प्रायः एक दिन में मृत्यु हो जाती है इसकी चिकित्सा यह है कि तुरन्त स्टामक पम्प या स्टामक ट्यूब से उदर को भली भांति धोवें या एक तोला राई महीन पीस कर गरम पानी में मिलाकर पिलावें या जिकसलफास ३० ग्रान आध पाव गरम पानी में मिला कर पिलावें जिससे अच्छी तरह वमन होजावे । और फिर गरम पानी बार २ पिलाकर अच्छी तरह खूब वमन करावें

और फिर यह औषधि पिलावें लाईकर फीराई पर प॰ क्लोराइड या टिंक्चर फीराई पर क्लोराइड (टिंक्चर स्टील) आधा औंस सोडियम कारबोनेट (या मामूली सोडा) आधे ग्लास या पाव सवा पाव पानी पर अलग मिलाकर फिर उन दोनों औषधियों को एक दूसरे में मिलाकर रोगी को पिलावें और यदि आवश्यकता जानें तो यह औषधि दो तीन वार पिलावें ।

❀ अफीम का विष ❀

इस विष से सिर में दर्द होताहै नींद आतीहै और धीरे धीरे चेतन शक्ति जाती रहतीहै, आंखों की पुतलियां सुकड़ कर बहुत छोटी होजातीहै अंधेरे उजाले का ज्ञान नहीं रहता चहरा नीला या पीला पड़ जाताहै बदन ठंडा और पसीना ठंडा आता है सांस की गति मंद पड़ जाती है और मुख से अफीम की गंध आती है, नाडी मंदी चलती है ।

चिकित्सा-तुरंत स्टामक ट्यूब लगा कर उदर को धो डालना चाहिये या डेढ तोला राई का चूर्ण पाव भर गरम पानी में मिलाकर या ३० ग्रेन जिंक सल्फास अध पाव गर्म पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये जिससे वमन आजाय (बहुधा अफीम का असर होजाने पर वमनकी औषधि निष्फल होजाती है और वमन नहीं होती) फिर वार वार गरम चाय या कहवा पिलावे अफीम का विष मारने के लिये पुटासियम पर मैंगनेट का बड़ा प्रभाव है इसकी मात्रा ५ रत्ती है ॥

इति

वृहद् जर्राही प्रकाश

पांचवां भाग

स्त्रियों के मुख्य रोगों की चिकित्सा ।

स्त्रियों को वहुधा रजो धर्म सम्बन्धिनी बीमारियां अत्यन्त दुखदाई होती हैं इन्हीं के परिणाम से प्रायः गर्भ स्थिर होने में कठिनाई होती है यदि गर्भ रहा भी तो सन्तान अल्पायु, रोगी, अंगहीन, और बलहीन होती है हैज़ की बीमारियां ऐसी बुरी हैं कि स्त्रीका जीवन मृत्यु के समान होजाता है और वह संसार के किसी काम की नहीं रहती इस प्रकारके रोग उन स्त्रियोंको अधिक होतेहै जो हाथपांव से कोई काम नहीं करतीं बैठी बैठी आराम तलब और नाजुक मिजाज़ हो जातीहैं और ऐसी स्त्रियां धनवान और अमीर घराने में बहुत होती हैं अपने शरीर को आरोग्य और दृढ रखने के हेतु से कुल कामिनियों को चाहिये कि काम काज करने और चलने फिरनेका अभ्यास रक्खैं और यदि कोई रोग उत्पन्न हो तो तुरन्त उसकी चिकित्सा का प्रयत्न करें जब रोग पुराना हो जाता है तो वहुत दिनोंमें अच्छा होता है और कभी २ असाध्य होजाता है रजो धर्म के ठीक न होने के कारण कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं जिनका कुछ वर्णन किया जायगा ।

❀ रजका बंद अथवा कम होना ❀

यह रोग दो प्रकार का है एक वह जिसमें रजका पैदा होना बन्द होजाता है दूसरा वह कि उसके प्रवाह में कोई रुकावट होजाती है पहिली प्रकारकी बीमारी सदैव निर्बल और नाजुक मिजाज स्त्रियों को हुआ करतीहै कारण उस का यह होताहै कि उनके शरीरमें इतना रुधिर नहीं पैदा होता जो उनके शरीर का पोषण करके रज को प्रवाहित कर सके अर्थात् रज रक्त पैदा ही नहीं होता-दूसरे प्रकार का रोग अर्थात् रजका रुक जाना यह कभी कभी बल-वान स्त्रियों को होजाता है उसका कारण रुधिर की ऊष्णता से मूत्रेन्द्रियमें जलन का पैदा होजाना है कभी क-भी गर्भाशय में घाव होजाने से ऐसा रोग होता है कभी सर्दी के लग जानेसे हैज रुक जाताहै कभी अचानक दिल को सदमा पहुंचने से यह रोग होजाता है कभी शोक और दुख के कारण होता है।

❀ चिकित्सा ❀

यदि स्त्री बलवान है तो उसको चलने फिरने का परि-श्रम करना चाहिये और पुरुषके अधिक प्रसंगसे रोक देना चाहिये यदि मल कठिनाई से और देरमें आता हो और कब्ज रहता हो तो कब्ज दूर होनेकी औषधि देना चाहिये जिस से दस्त साफ और खुलकर आने लगे और भोजन नरम और हलका और कम खाना चाहिये-मांस और मदिरा का सेवन करती है तो उस से परहेज करना चा-

हिये और रजके नियत समयसे दो दिन पहिले पर मैगनेट आफ पोटाश एक रत्ती लेकर रोटी के गूदे में मिला कर उसकी दो गोलियां बनावें और एक एक गोली तीन २ घंटे के अन्तर से देनी चाहिये-यदि स्त्री कमज़ोर और नाज़ुक है तो उसके भोजन का ऐसा प्रबंध करना चाहिये कि जो वस्तु वह खाय वह बल कारक और हलकी शीघ्रतासे पचजाने वाली हो दूध थोड़ा थोड़ा प्रमाण में उसको देना चाहिये और थोड़ी हवाखोरी कराना चाहिये-और बल वर्धक औषधियां जैसे सार, चांदी सोने की भस्म इत्यादि देनी चाहिये-यदि सर्दी के कारणसे रजका आना रुक गया हो तो कमर तक गर्म पानीमें बैठाना मुनासिब है-इस गरम पानी में यदि राई भी मिला दी जाय तो उत्तम है बिजुली के लगाने से भी बहुत फायदा होताहै सुहागा और हींग का सेवन करने से रज खुलकर आजाता है और भी इसके अनेक नुसखे हैं परन्तु उनका देना अनाड़ी आदमी का काम नहींहै इस लिये नहीं लिखे गये।

❀ रजका कष्ट के साथ आना ❀

यह रोग ऐसा फैला हुआहै कि बहुतही कम स्त्रियांइससे बची होंगी यह दर्द उस प्रकार का होताहै जैसा कि प्रसव काल में होताहै इसके लक्षण यहहैं कि रज नियत समय पर और नियत प्रमाणमें नहीं आता कभी अधिक आताहै परन्तु बहुधा कम और दर्दके साथ यह दर्द मूत्रेन्द्रिय और जांघों के भीतर की तरफ़ कमर और सीवन छाती और सिर में

होता है और जो रक्त निकलता है वह कभी जमा हुआ और कभी टुकड़े टुकड़े जमे हुए निकलते हैं कभी ऐसा प्रतीत होती है कि गर्भ गिर गया है भूख जाती रहती है या कम होजाती है इसके इलाज में बड़ी सावधानी करनी चाहिये और किसी हुशियार लेडी डाक्टर से " स्पीकुयम, वेजाइनी यंत्र द्वारा जो मूत्रेन्द्रिय में डाला जाता है परीक्षा करनी चाहिये उससे यह मालूम होजायगा कि यह रोग घाव के कारण है या किसी गर्भाशय की बीमारी के कारण है उसी के अनुसार चिकित्सा कराना चाहिये यदि जन्मकाल से ही गर्भाशय का मुख संकुचित हो तो उस को यन्त्रद्वारा चौड़ा कराना चाहिये इस रोग में भी कमर तक गरम पानी में आध घण्टे से एक घण्टे तक बैठना हितकारी है एपीकेक्वाना एक ग्रेन या आधी ग्रेन एक एक घण्टे के अन्तर से देना फायदेमन्द है कभी २ दश पन्द्रह बूंदें अफीम के अर्क की थोड़े गरम पानी के साथ मिलाकर उसकी पिचकारी गुदामें देना फायदा करती है।

❀ रजका रक्त अधिकता से आना ❀

यह रोग दो प्रकार का होता है एक वह कि जिसमें रज ही का रक्त अधिकता से निकलता है दूसरा वह कि जिस में गर्भाशय से उत्तम और लाल रंगका रुधिर खारिज होता है इसके लक्षण यह हैं कि हर मास के अन्त में प्रमाण से अधिक रक्त आने लगता है और कई दिन तक आता रहता है कभी कभी पूरे महीने तक आता रहता है कभी एक दो तीन सप्ताह के पश्चात् आने लगता है कभी बूंद

द आने लगता है इस रोग से स्त्री अत्यन्त दुर्बल होजा
ा है क्यों कि रुधिर अधिक निकल जाता है जंघा कमर
ौर पीठ में दर्द होता रहताहै कभी कभी सिर और छाती
भी बड़े जोर से दर्द होता है अत्यन्त कष्ट होता है बीच
ीच में कभी कभी सफेदी बहती है आंखोंके आगे धुन्द
तीत होता है हृदय धड़कता है कभी वायु गोले का रोग
सी रोग के कारण होजाता है चेहरा और पांव सूज जाते
कभी गर्भाशय बाहर निकल आता है इसके कारण ब-
धा यह हैं कि गर्भाशय में कोई जलन या घाव होता है
थवा बच्चों का अधिक पैदा होना, पुरुषका अ-
धिक प्रसंग करना रजकाल में सर्दी का लग जाना गर्भ
ाव होना भी होता है ।

❀ चिकित्सा ❀

रोगिनी को खुली हवा में रहना चाहिये मूत्रेन्द्रिय पर और उसके आर पास और कमर पर ठंडे जल के छींटे देती रहे पुरुष का प्रसंग त्यागदे यदि और कोई अनुचित व्यसन हो उसे छोड़दे यदि स्त्री बलवान है और उस के शरीर में रुधिर की अधिकता है और यही कारण रोग का है तो उसको जुल्लाब देना चाहिये और कुछ व्यायाम करना चाहिये यदि भीतर घाव है तो उसकी चिकित्सा पिचकारी द्वारा औषधि पहुंचा कर करनी चाहिये ठंडी जगह में रहना चाहिये बरफ का सेवन करना चाहिये बरफ का टुकड़ा कपड़े में लपेट कर मूत्रेन्द्रिय में रखना चाहिये कभी कभी हींग और अफीम की पिचकारी गुदा में लगाने

से खून का आना बंद हो जाता है हींग ३ ग्रीन अफीम २ ग्रीन पानी २ ड्राम, यदि उपदंश का रोग हो तो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ।

❀ सफेद पानी का निकलना ❀

इस रोग में बहुधा स्त्रियां कष्ट सहन करती हैं कदाचित कोई स्त्री इस रोग से बची होगी यह रोग युवा सुकुमारियों को अधिक होता है प्रथम अवस्था में स्त्रियां इसकी चिकित्साकी परवाह नहीं करती परन्तु बढकर यह रोग दुसाध्य होजाता है उस वक्त गरमी और जलन प्रतीत होने लगती है अधिक पुराना होजाने पर दर्द और जलन नहीं रहते परन्तु सफ़ेदी बदस्तूर जारी रहती है स्त्री बहुत दुर्बल हो जाती है दिल धडकता है कमर और पीठमें दर्द होने लगता है तपेदिक और सिल का रोग होजाताहै पाचन शक्ति नाम को भी नहीं रहती पानी कभी कभी कई रंग का बहता है कभी बे रंग होता है कभी दूध के तुल्य सफेद कभी पीला और कभी पीप के सदृश होता है दिन में कितने ही कपड़े तर होजाते हैं इस रोग के पैदा होने के कई एक कारण हैं बहुधा प्रसव के पश्चात् शुरू होता है सरदी में गर्म वस्त्रों का पूरे तौर पर न पहिनना जूते का न पहिनना रज का वारम्बार आना स्त्री पुरुष का अधिक काल तक एकत्र रहना इस रोग के पैदा होने का कारण है ।

❀ चिकित्सा ❀

प्रथम रोग का कारण निश्चय करें तत्पश्चात वह कारण दूर करें जो यह रोग प्रबल होगया हो गर्मी जलन और

द की अधिकता हो तो इसकी चिकित्सा करनी चाहिये रीर को भली प्रकार आराम से रखना चाहिये दस्त साफ ाने वाली कोई हलकी औषधि खानी चाहिये गुनगुने जल अपने अंग को धोना चाहिये पुरुष के संग से और ऐसी ातों से जो कामोद्दीपक हों परहेज करना चाहिये जब ह पुराना होजाय तो कब्ज करने वाले अरकों की पि- कारी लगानी चाहिये औषधियों का पिचकारी द्वारा भीतर क पहुंच जाना आवश्यक है सबसे उत्तम औषधि फिट करी है यदि इसका सेवन कुछदिन तक किया जाय तो ावश्य हितकारी हो पिचकारीकी कुछ परीक्षित औषधियां ीचे लिखी जाती हैः-

(१) नाइटरेट आफसिलवर १ ग्रेन पानी आधी छटांक

(२) अनार की छाल आधी छटांक, कीकर की छाल आधी छटांक पानी एक सेर, पानी में इन औषधियों को औटावें और छान कर पिचकारी करें पानी भीतर पहुं- चना चाहिये।

(३) सरफेट आफ जिंक एकड्राम, पानी एक १ पांइट दिन में तीन वार पिचकारी करें।

(४) पुटासी पर मेंगनीटास २ ग्रेन पानी एक १ ओंस यह औषधि उस वक्त काम देती है जब कि बदबूदार पानी निकल ने लगता है।

(५) अनार की छाल आध सेर बायविडंग ६ माशे, एक सेर पानी में डालकर जोश करें जब तीन पाव रहजाय तो उस से मूत्रेन्द्रिय को धोवें।

❀ खाने की औषधि ❀

समुन्दर सोख २ तोला छोटी और बड़ी माई २ तोला पलंग तोड २ तोला भावें के फूल २ तोला कमरकस २ तोला कच्ची खांड २ तोला सबको कूट छान कर चौदह पुडिया बनावें और सुबह और शाम खाना खाने के एक घण्टा पीछे एक एक पुडिया गाय के दूध के साथ खाना चाहिये।

❀ प्रसव काल का कष्ट दूर करने और सरलता से ❀
❀ पैदा होने के प्रयत्न ❀

नीचे लिखी हुई औषधि उस हालत में देनी चाहिये जब कि बच्चा होने में बहुत देर होगई हो या पेट में मरजाने की सम्भावना हो इसके प्रयोग से यदि बच्चा पेट में मर भी गया हो तो शीघ्र निकल आवेगा।

(१) अजमोद को घोट कर उसमें से रस निकालें और इस रस में सनके वस्त्र को तर करें और गर्भाशय के मुख तक उस वस्त्र को पहुंचादें।

(२) उपरोक्त रस के पिलाने से भी वही लाभ होताहै।

(३)गन्दना के रसको गरम पानी में मिलाकर पिलाने से भी फौरन लड़का बाहर आ जाता है।

(४) खजूर की गुठलियों को बारीक पीस कर मैदा करें उस में से आधा ड्राम १ तोला अंगरेजी शराब के साथ पिलादें।

(५) क्लोरल हीडरेट २० ग्रीन बच्चा होने से पहिले घण्टे घण्टे के बाद देना चाहिये।

❀ बच्चे का पेट के अन्दर मरजाना ❀

(१) इसके चिह्न यह हैं कि स्त्री की छातियां ढीली होकर नीचे को बैठ जाती हैं (२) स्त्री के पेटपर और नाभी के निकट अधिक सरदी मालूम होती है (३) पेशाब गदला हो जाता है यदि थोड़ी देर पेशाव को किसी पात्र में रक्खा जाय तो गदलापन नीचे बैठ जाताहै (४) बच्चे की हरकत अर्थात् हिलना डोलना बिलकुल बन्दहो जाता है (५) स्त्री का नाक में से दुर्गन्ध आती है (६) करवट बदलने पर लोहे के गोले की तरह बच्चा दूसरी ओर गिर पड़ता हुआ प्रतीत होता है इन लक्षणों से दाई को भली भांति निश्चय कर लेना चाहिये कि बच्चा मर गया है या ज़िन्दा है।

❀ चिकित्सा ❀

(१) जब निश्चय हो जाय कि बच्चा मर गया है तो अर्गी के क्वाना, २० ग्रीन लेकर स्त्रीको पिलादें।

(२) जूफ़ा २ तोला उबाल कर गाढ़ा गाढ़ा गरम गरम पिलावें मुरदा बच्चा फौरन बाहर आ जावैगा—यदि कोई टुकड़ा आंवलका भीतर रह जाय तो यह औषधि फिरदें और रोगन बादाम स्त्रीकी मूत्रेन्द्रिय और गर्भाशयके भीतर चारों ओर मलें और पेढूपर सेक करें इससे बच्चा बाहर आजायेगा यदि किसी औषधि और प्रयोग से बच्चा बाहर न निकले तो जर्राही इलाजसे बाहर निकलवाना चाहिये

❀ प्रसव के पश्चात् रुधिर का प्रवाह ❀

इस प्रकार का रक्त प्रवाह आंवल के निकलने समय या

बच्चा पैदा होने के कुछ घण्टे या कई दिन के पीछे हुआ करता है यह बड़ा भयंकर है यदि इसका उपाय तुरन्त न किया जाय तो वह स्त्री की मृत्यु का कारण होजाता।

❀ रोगके कारण ❀

प्रसव के पीछे गर्भाशयका ठीक तौर पर न सिकुडना और ढीला और फैला हुआ होना इस का एक कारण है आंवलका जल्दी निकालनेके लिये हाथसे पकड़कर खींच लेना दूसरा कारणहै तीसरा कारण आंवलका टुकड़ा गर्भाशय के भीतर रहजाना है।

❀ अन्यान्य कारण यह हैं ❀

बच्चे का जल्द पैदा हो जाना और उस वक्त गर्भाशय पर हाथ से दवाव न रखना जच्चा का जल्दी चलने फिरने लग जाना मल मूत्र के त्यागने के लिये जोर करना प्रसव कालमें गर्भाशय के भीतर घावका होजाना जच्चाका अधिक गरम मकान में रहना और अधिक गरम वस्तुओं का सेवन करना।

❀ रोग के चिह्न ❀

अधिक रुधिर निकल जाने से चहरा पीला और हाथ पांव ठंडे होजातेहैं पसीना ठंडा आताहै नाडी वारीक और तेज चलती है आंखों के सामने अंधेरा आजाता मूर्छा आजाती है शरीर कांपने लगता है।

❀ चिकित्सा ❀

स्त्री को आराम से चार पाई पर चित लिटावें और हि-

लने न दें मकान की सब खिड़कियां खोलदें दाई गर्भाशय के भीतर टटोल कर देखे यदि आंवल या झिल्लीके टुकड़े या रुधिर के छिछड़े मोजूद हों तो डोशसिरंज या एनीमासिरज द्वारा कार बोलक लोशनसे गर्भाशयको धोकर स्वच्छ कर दें गर्भाशय ढीला हो तो पेट को दबावें और हर हालत में १५ ग्रीन सफूफ अर्गट थोड़े पानीके साथ या १५ बून्द लिकुइड एक्स ट्राक्टआफ अर्गट एक औंस पानी में मिलाकर दो तीन वार आधा घण्टे बाददें पेडू पर बर्फ रक्खें और यदि रोगिनी कमजोर न हो तो सर्द पानी या बर्फ के पानी की पिचकारी गर्भाशय में करें परन्तु यदि रोगिनी कमज़ोर हो तो यह प्रयोग न करें यदि उपरोक्त प्रयोग से रक्त बन्द न हो तो टिंचर स्टील एक हिस्सा, पानी आठ हिस्सा मिलाकर मुत्रेन्द्रिय में पिचकारी करें या टिंचर आयोडियन एक हिस्सा पानी ५० हिस्सा मिलाकर पिचकारी करें—यदि रोगिनी कमज़ोर हो तो बरांडी वायग मिकचर या दुध में अंडा फेटकर दें पोर्ट वाइन भी फायदा करती है।

❀ छाती का पकजाना ❀

यदि छाती का टुनटुना साफ नहीं रक्खा जाय तो उस पर दुध जमकर फटजाता है और कष्ट होता है इस लिये बच्चे को दुध पिलाकर टुनटुने को गुनगुने पानी से धो देना चाहिये और छातियोंको भी दिनमें एकदो बार धोदेना चाहिये यदि घाव होजाय तो बच्चे को उस छाती का

दूध नहीं पिलाना चाहिये और उस पर यह मरहम लगाना चाहिये। जिंक अक्साइड एक ड्राम या विरिमथ एक ड्राम वैजेलीन एक औंस में मिलाकर मरहम बनावें।

❀ चेचक माता या शीतला ❀

यह एक प्रकार का ज्वर है इसके आदि में जाडा आता है फिर अधिक ज्वर आजाताहै और ज्वर के आने से ४८ घण्टे पीछे शरीर पर लाल लाल दाने निकल आते हैं इस रोग की छूत किसी दूसरे रोगी के वस्त्रों के स्पर्श करने से या हवा के द्वारा आरोग्य आदमी में असर कर जाती है यह रोग बच्चों को अधिक होता है जिनको टीका नहीं लगा होता है या अच्छा टीका नहीं लगता है उनको होजाता है इस रोग का बढाव प्रायः १२ दिन तक रहता है तीसरे चौथे दिन इन दानों में पानी भर जाता है पांचवें दिन प्रत्येक दाने के चारों ओर सुर्खी झलकने लगतीहै. छटे दिन नाक मुंह कंठ और पपोटों के भीतर दाने निकल आते हैं आठवें दिन दानों के भीतर का पानी गाढ़ा होकर पीप बन जाता है और उनकी नोंकें उभर आती है इस दिन फिर बड़े जोर का ज्वर होजाता हैं १०४ और १०५ दर्जे की हरारत हो जाती है दम लेने और निगलने में कष्ट होता है चहरा और आंखें सूज जातीहैं रोगी बर्राने लगताहै दशवें ग्यारवें दिन दाने मुरझाने लगते हैं ग्यारवें दिन से चौदवें दिन तक उनपर खुरंड बन जातेहैं इक्कीसवें दिन यह खुरंड उतर जाते हैं और फिर खाल पर से छिलका सा उतर जाता है इस रोग से कभी २ और रोग भी पैदा होजाते हैं इस

की छुत कपडों में लगी हुई कई वर्ष पीछे तक भी असर करती है रोगी को अलग कमरा में रखना चाहिये जहांतक होसके और लोगों को उससे अलग रहना चाहिये रोगीको हवादार कमरा में रखना चाहिये और उस कमरे का फालतू असवाब सब निकाल देना चाहिये यदि मकान तंग हो और अलग मकान में रखने की गुंजाइश न हो तो रोगीको सरकारी अस्पताल में पहुंचा देना चाहिये ताजा हवा के आने जाने के लिये कमरे की खिडकी खुली रखनी चाहिये यदि जाडे का मौसिम हो तो रोगी को कम्बल ओढाकर रक्खे मगर कमरे के दरवाजे खिडकी बिलकुल बन्द न रक्खें कमरे के दरवाजे पर एक मोटी सूती चादर औषधि में भिगोकर लटका दें जिससे कि उसकी वायु दूसरे कमरों में जाकर असर न करै चादर को तर करने के लिये क्लोरिलम या कानडेज फ्लोइड अच्छी औषधियां हैं, ऐसे रोगी के पास चिकित्सक अथवा दूसरे मनुष्य को अधिक देर तक नहीं ठहरना चाहिये और दूसरे रोगी को देखने से पहिले स्नान करके कपडे बदल लेना और अपने हाथों को मर्करी लोशन इत्यादि से साफ करलेना चाहिये और जहां तक होसके सफाई रखनी चाहिये जब रोगी अच्छा हो जाय और रोग मुक्त स्नान कराया जाय तो रोगी के सब अंगको और वालों को $\frac{1}{2000}$ की ताकत के मर्करी लोशन से खूब पाक और साफ कर लेना चाहिये इस रोग में यद्यपि यूनानी हकीमों के मत से औषधि दी जाती है परन्तु औषधि का सेवन अधिक हित कारी नहीं होता

डाक्टर लोग भी रोग का प्रभाव कम करने के लिये और तकलीफ घटाने के लिये औषधियां देते हैं परन्तु उनका प्रयोग विना किसी उत्तम चिकित्सक के नहीं करना चाहिये।

❀ मोती झरा ❀

यह भी छूत का रोग है इसमें पहिले हल्का ज्वर होता है और उसके २४ घण्टे पीछे पीठ और छातीपर सुर्ख सुर्ख दाने निकल आते हैं।

❀ रोग का कारण ❀

इस रोग की छूत का समय बचपन है दूध पीने वाले प्रायः ४ वर्ष से कम उमर के बच्चे बहुधा इस रोगमें ग्रस्त होते हैं चार वर्ष से लेकर १२ वर्ष तक की उमर के बच्चों को यह रोग बहुत कम होता है १२ वर्ष से अधिक उमर वालों को यह रोग कभी २ होताहै इस रोग की अवधि लगभग १२ दिन की होती है पहिले साधारण ज्वर होता है जिसके २४ घण्टे बाद गरदन, पीठ, और छाती पर कुछ सुर्ख दाने निकल आते हैं जिनमें १२ से २४ घण्टे के अंदर साफ पानी भर जाताहै तीसरे दिन दाने पककर पांचवें या छटवे दिन सूख जातेहैं और सातवें आठवें दिन खुरंड झड कर वहां गुलाबी दाग रह जातेहैं यदि सब दाने एकही वार निकल आयें तो रोग एक सप्ताह में ही दूर होजाताहै किन्तु दाने प्रायः दूसरे तीसरे दिन बल्कि कभी २ चौथे पाचवें दिन तक भी निकलते रहते हैं इसलिये रोग के दूर होने में अधिक देर लग जातीहै इस रोग के कारण और किसी रोग के होने की सम्भावना नहीं है।

❀ चिकित्सा ❀

दानों से निकलने से पाहिले रोग का पहचानना कठिन है ज्वर के प्रारम्भ काल २४ घण्टे वाद दाने पाहिले पीठ पर निकलते हैं पाचवें दिन सूख जाते हैं रोगी को आराम से एक साफ कमरा में रक्खें भोजन हाथ का शीघ्र पचने वाला दें यदि रोगी माता का दूध पीने वाला है तो उस की माता वा दाई को भी हलका शीघ्र पचने वाला भोजन देना चाहिये यदि बच्चे को कब्ज होतो दश या २० ग्रीन कम्पौंडपोडर आफरूवर्ष अथवा थोड़ा अंडी का तेल दें जिससे एक वा दो दस्त होजांय अगर ज्वर अधिक हो तो यह औषधि दें:-

(१) पुटासी एसीटास ४० ग्रीन, पुटासी नैटरास ३० ग्रीन, मैगनेशिया सलफाज४ड्राम, लाइकर एमोनिया एसीटेटस ४ ड्राम, स्पिरिटईथर नाइटर २ ड्राम, एकुवाकेफ ४ आम, इन सबको मिलाकर इनमें से बड़ी उमर के रोगी को आधी आधी छटाक दो दो घण्टे बाद पिलावें कम उमर के बच्चे को आधी खुराक दें दानों की खुजली दूर करने के लिये केफरवाटर से धोना चाहिये।

❀ खसरा ❀

यह एक प्रकार का छूत से लगने वाला ज्वर है इस में पहिले नज़ला और जुकाम होता है और चौथे दिन अंग पर बहुत छोटे २ लाल रंग के दाने निकल आते हैं।

❀ रोग के कारण ❀

इस रोग की छूत में एक प्रकार का कीट होताहै जो रोगी

के नाक, मुख; और पसीने के जल में पाया जाता है यह कीट सूक्ष्म दर्शी यंत्र द्वारा देखा गया है छूत का माद्दा वस्त्रों, भरतना, पुस्तकों, और चिठ्ठियों इत्यादि के द्वारा तनदुरुस्त मनुष्यों तक पहुंच सक्ता है यह रोग भी बहुधा बच्चों को होता है।

❀ रोग के लक्षण ❀

छूत लगने के १० दिन पीछे रोग के चिह्न आरम्भ हो जातेहैं प्रथम जाड़ेसे-ज्वर, सिरमें दर्द जुकाम होजाता है उबकाई और छींक आती हैं आवाज़ बैठ जाती है तीसरेसे पांचवे दिन तक पहिले चहरे पर फिर सब अंग पर दाने पैदा हो जाते हैं ज्वर घट जाता है सातवें आठवें दिन दाने मुरझा भूसीसी उडने लगती है दश दिनमें ज्वर जाता रहता है यदि और कोई रोग शामिल हुआ तो देर में जाता है कभी २ यह रोग असाध्य होजाता है वदन पर सियाह दाग पड़जाते हैं पेटमें दर्द और काले रंगके बदबूदार दस्त आते हैं और रोगी मरजाता है।

❀ चिकित्सा ❀

इस रोग के दिनों में जुकाम के लक्षण प्रतीत होते ही रोगी को अलग कमरेमें ठंडी हवा से बचाकर रक्खे बाहर न निकलने दे अन्य निरोग बच्चों को उस के पास आने जाने न दें प्यासमें ठंडा पानी या लेमूनेड दे ज्वरकी अधिकता में जब कि हरारत १०३ दरजे से अधिक हो हरारत घटाने के लिये ठंडे पानी या गुनगुने पानीमें स्पंज या नरम कपड़ा भिगोकर निचोड़ कर उससे वदन को पोंछ दें

कब्ज हो तो उमर के अनुसार अंडी का तेल दें सरदी लग जाने से दाने ठिठर जांय और अच्छी तरहसे न निकलें तो गरम पानी से ऐसे रोगीको स्नान भी कराया जाता है खुजली के दूर करने के लिये चेहरेपर वेजेलीन, और शेष अंगपर कारवालिक आयल लगावें बेचैनी और कमज़ोरीकी हालतमें थोड़ी ह्विस्की पानी में मिलाकर पिलावें खाना हलका और शीघ्र पचने वाला दूध साबूदाना इत्यादि दें।

❋ कनफेड़ या गल सुए ❋

यह भी एक प्रकार का छूतसे लगने वाला वबाई बुखार है जो बहुधा नई उमर के लड़कों लड़कियों को हुआ करता है और जिसमें कानके पीछे की गिलटियां सूज जाती हैं कभी२ जवान उमरके आदमीको भी यह रोग होजाताहै।

❋ रोग के लक्षण ❋

छूत लगने से ८ दिनसे २२ दिन पीछे रोग के लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं पहिले साधारण ज्वर होता है फिर पहिले एक तरफ कान के पीछे दर्द होकर वरम होजाता है और एक दो दिन बाद दूसरी ओर वरम होजाता है गाल और गरदन फूलकर एक होजातेहैं मुंह खोलने और खाने पीने में कष्ट होता है अब ज्वर कुछ अधिक होजाता है जवान आदमियों में कभी यह रोग अंडकोष की ओर चला जाता है और जवान स्त्रियों में छाती और गर्भाशय की ओर झुक जाता है कभी कभी इस रोग से रोगी एक कान से बहिरा हो जाता है।

❀ चिकित्सा ❀

रोगी को सरदीसे बचाये रक्खें और चार पांच दिन तक विस्तर पर लिटायें रहें उदर को मलसे स्वच्छ करने के लिये कुछ औषधि देकर कब्ज न होनेदें उदर इस औषधि से स्वच्छ होता है (१) मेगनेशिया सलफास ४ ड्राम टिंक्चर सना २ ड्राम, पानी ४ औंस तक सब को मिलाकर प्रातः काल पिलावैं—तत्पश्चात् (२) सिरप फेरी आयोडाई १ ड्राम,एक औंस पानी में मिलाकर सुबह श्याम देते रहैं।

यदि रोग अंडकोष की ओर चला जाय तो कानके पीछे असल रोगके स्थान पर राई या प्लास्टर लगाकर सूजिश पैदा करैं जिससे रोग अपने असल स्थानपर आजावे यदि वरम अधिक हो तो उस पर कई जौंके लगवावे नहीं तो टिंकचर आयोडियन दिन में तीन चार बार लगाया करैं या उसे फलालैन से सेंक कर उस पर बेलाडाना ग्लीसरीन का लेप कर के ऊपर से गरम रुई रख कर बांधदें और यदि गांठों में पीप पड़जाय तो चीरा देकर उस की उचित चिकित्सा करैं भोजन हलका जल्द पचने वाला जैसे बारलीवाटर, दूध, आरारोट साबूदाना आदि दें।

❀ ताऊन, प्लेग या महामारी ❀

यह एक प्रकार का छूत से लगने वाला तीव्र वबाई ज्वर है जिसमें अंगकी बगल और जांघ और कान के नीचे की गिलटियां सूज जाती और पकजाती है अथवा फोडे निकल आते है इस रोग का कारण डाक्टर लोगों ने एक कीट खियाल किया है इस रोग के अनेक रूप हैं यह रोग अ

त्यन्त भय नक और प्राण घतक है यदि वेहोशी और कम्प वायु उत्पन्न होजाय और वमन बारम्बार वेगसे हो मूत्र रुक जाय और ऐसेही और कठिन चिह्न पाये जांय तो रोगीका बचना कठिन है परन्तु आठ दशदिन तक जिन्दा रहे तो बच भी जाता है—

❀ रोग से बचने का उपाय ❀

घर और घर को साफ रक्खें मकान में सफेदी करावें पाखाना और मोरियां साफ रक्खें उनमें फिनैल छिड़क वाते रहैं और असबाब और कपड़ों को धूप लग वाते रहैं और यह रोग बहुधा चूहों के द्वारा फैलताहै इस लिये यथा शक्ति चूहों से मकान को साफ रखना चाहिये मरे हुए चूहों को हाथ से स्पर्श नहीं करना चाहिये लम्बे चिमटे से पकड़वा कर अलग मिट्टीका तेल उसपर डलवा कर जलादें यदि किसी गांव में ताऊन फैल जाय तो गांवको छोड़कर खुले मैदानों में जाकर रहना चाहिय।

रोगी को तनदुरुस्त आदमियों से अलग रखना चाहिये यदि कोई बाधा न हो तो प्लेग के अस्पताल में भेज देना चाहिये और कोई मनुष्य बार २ उसके पास न आवै जिस घरमें ताऊन फैला हो उसको डेढ महीने तक खाली रखना चाहिये जब ताऊन का असर न मालूम हो तब उस मकान को इस औषधि से धुलवाना चाहिये।

मर्करी लोशन, जिसके बनाने की तरकीब नीचे लिखी जाती है मकान के साफ करने की बड़ी उपयोगी औषधिहै

❀ नुसखा ❀

पारकिलोराइड आफ़ मर्करी अर्थात् रस कपूर ४ ड्राम, हाइड्रा क्लोरिक एसिड अर्थात् नमक का तेजाब, एनी लियन विल्ड अर्थात् नीला रंग ५ ग्रीन, पानी २ गेलन, रसकपूर को पानी में मिलाकर पीछे तेजाब नमक का और रंग मिलावे यदि तेजाब नमक न मिले तो उसके स्थान में खाने का नमक आधी छटांक डाल दें और फिर काममें लावें यह दवा ववाई कीट के नाश करने के लिये बड़ी ही लाभदायक है।

❀ चिकित्सा ❀

जब कोई मनुष्य इस रोग में ग्रसित होजाय तो यह औषधि लाभदायक होगी।

(१) नुसखा

लाइकर एमोनिया एसीटेटस १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक २० बूंद स्पिरिट ईथर नाईटर २० बूंद. स्पिरिट क्लारो फार्म ५ बूंद. टिंचर डजी टेलम ५ बूंद, ब्रांडी २ ड्राम एकुआ कैमफर १ औंस, एसि एक खुराक हर छटे घंटे दें यह औषधि तेज ज्वर में बहुत हितकारक है।

(२) नुसखा

लाइकर हाईड्रार जीरा हपरक्लोराई डाई १० बूंद, टिंचर सिन कोना ४०, बूंद टिंचर स्ट्रोफेनथस ४ बूंद, स्पिरिट कैमफर १० बूंद, एकुवा कैमफर १ औंस।

ऐसी एक खुराक दिन में तीन चार बार दें नया नुस्खा

त्यन्त भय नक और प्राण घतक है यदि बेहोशी और कम्प वायु उत्पन्न होजाय और वमन बारम्बार वेगसे हो मूत्र रुक जाय और ऐसेही और कठिन चिह्न पाये जांय तो रोगीका बचना कठिन है परन्तु आठ दशदिन तक जिन्दा रहे तो बच भी जाता है—

❀ रोग से बचने का उपाय ❀

घर और घर को साफ रक्खें मकान में सफेदी करावें पाखाना और मोरियां साफ रक्खें उनमें फिनैल छिड़क वाते रहैं और असवाब और कपड़ों को धूप लग वाते रहैं और यह रोग बहुधा चूहों के द्वारा फैलताहै इस लिये यथा शक्ति चूहों से मकान को साफ रखना चाहिये मरे हुए चूहों को हाथ से स्पर्श नहीं करना चाहिये लम्बे चिमटे से पकड़वा कर अलग मिट्टीका तेल उसपर डलवा कर जलादें

यदि किसी गांव में ताऊन फैल जाय तो गांवको छोड़कर खुले मैदानों में जाकर रहना चाहिये।

रोगी को तनदुरुस्त आदमियों से अलग रखना चाहिये यदि कोई बाधा न हो तो प्लेग के अस्पताल में भेज देना चाहिये और कोई मनुष्य बार २ उसके पास न आवे जिस घरमें ताऊन फैला हो उसको डेढ महीने तक खाली रखना चाहिये जब ताऊन का असर न मालूम हो तब उस मकान को इस औषधि से धुलवाना चाहिये।

मर्करी लोशन, जिसके बनाने की तरकीब नीचे लिखी जाती है मकान के साफ करने की बड़ी उपयोगी औषधिहै

❀ नुसखा ❀

पारकिलोराइड आफ़ मर्करी अर्थात् रस कपूर ४ ड्राम, हाइड्रा क्लोरिक एसिड अर्थात् नमक का तेजाब, एनी लिंयन विल्ड अर्थात् नीला रंग ५ ग्रीन, पानी ३ गेलन, रसकपूर को पानी में मिलाकर पीछे तेजाब नमक का और रंग मिलावे यदि तेजाब नमक न मिले तो उसके स्थान में खाने का नमक आधी छटांक डाल दें और फिर काममें लावें यह दवा ववाई कीट के नाश करने के लिये बड़ी ही लाभदायक है।

❀ चिकित्सा ❀

जब कोई मनुष्य इस रोग में ग्रसित होजाय तो यह औषधि लाभदायक होगी।

(१) नुसखा

लाइकर एमोनिया एसीटेटस १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक २० बूंद स्पिरिट ईथर नाइटर २० बूंद, स्पिरिट क्लोरो फार्म ५ बूंद, टिंचर हैंजी टेलन ५ बूंद, ब्रांडी २ ड्राम एकुआ कैमफर १ औंस, एसि एक खुराक हर छटे घंटे दें यह औषधि तेज ज्वर में बहुत हितकारक है।

(२) नुसखा

लाइकर हाईड्रार क्लोरा हपरक्लोराईडाई १० बूंद, टिंचर सिन कौना ४०, बूंद टिंचर स्ट्रफेनथस ४ बूंद, स्पिरिट केमफर १० बूंद, एकुवा कैमफर १ औंस।

ऐसी एक खुराक दिन में तीन चार बार दें जब बुखार

कुछ हलका हो तभी यह औषधि देना अति लाभकारी है।

(३) नुखसा

स्पारिट एमोनिया एरोमेटिक ३० बूंद, टिंचर लवन्डर ३० बूंद. टिंचर काराडिममक म्पौंड ३० बूंद स्पिरिट क्लोरो फारम बूंद २० बूंद वरांडी २ ड्राम, एक्वा केमफर १ औंस ऐसी एक खुराक हर चौथे घण्टे दें।

(४) नुखसा

एमोनिया कार्ब ४ ग्रीन; स्पिरिट ईथर १५ बूंद, स्पिरिट क्लोरो फारम ३० बूंद, टिंचर स्ट्रो फेनथर ४ बूंद, टिंचर लवन्डर ३० बूंद, एकवा केमफर १ औंस ऐसी एक खुराक दिनमें तीन चार बार दें।

* नुसखा यूनानी *

निरविसी, नरकचूर, हलदी लाल, चन्दन, सफेद चन्दन गिले मखतूम, कपूर जहर मुहरा, ये सब चीज सम भाग लेकर कपूर और जहर मुहरा को गुलाब जलमें घिसलें शेष औषधियों को महीन पीसकर छान लें और ईसप गोलके लुवाब निकाल कर सब चीजों को उसमें सानकर गोलियां बना ले इसकी मात्रा डेढ़ माशा है और सन्ध्या और प्रभात दोनों काल में सेवन करना चाहिये जाडे के दिनहों तब जल के साथ और गरमियों में गुलाब के साथ सेवन करना चाहिये प्यास और ज्वरकी अधिकताकेसमय अर्कका सर्न्: अर्क गावजवा, अर्क सन्दल और गुलाब समान भाग मिलाकर और बर्फमें ठंडा करके पिलावें या केवड़ा, नारंगी,

नीबू, सेब, खट्टा अनार, या सन्दल इनमें से जिस चीज़ का शर्बत मिल जाय उस को पानी में मिला कर बर्फ से ठंडा करके पिलावें दिलकी कमज़ोरी और हाथ पैर की जलन दूर करने के लिये चन्दन और कपूर गुलाब जल में घिसकर और उसमें कपूर तर करके छाती पर रक्खें और दवाउल मुश्क या ताक़ूयी इत्य खिलावें।

दर्द सर और बकवाद के दूर करने के लिये सिर का, गुलाब और गुलरोगन में कपड़ा तरकर के रोगीके सिरपर रक्खें और चन्दन या समके इत्र या कपूर का लखलखा सुघावें—गिलटियों पर बकायन या नीम के पत्तों की पुलटिस बांधें या आक का पत्ता या घीगुवार का गूदा गर्म करके बांधें जब गिलटियों में पीप पड़ जाय तो नश्तर देकर उस को साफ करादें और घाव के भरने का मामूली इलाज करें।

इति श्री जर्राही प्रकाश पांचों भाग समाप्तम्।